Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan

सामाजिक विज्ञान QUESTION BANK

10वीं

RECORDED VIDEOS | LIVE CLASSES | PDF NOTES | e-BOOKS | QUIZ | TEST SERIES
GET IT ON Google Play
DOWNLOAD MISSION GYAN MOBILE APP

विषय-सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
भारत और समकालीन विश्व–2 (इतिहास)		
1.	यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय	1-14
2.	भारत में राष्ट्रवाद	15-24
3.	भूमंडलीकृत विश्व का बनना	25-31
4.	औद्योगीकरण का युग	32-43
5.	मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया	44-53
समकालीन भारत – 2 (भूगोल)		
1.	संसाधन एवं विकास	54-59
2.	वन एवं वन्य जीव संसाधन	60-63
3.	जल संसाधन	64-70
4.	कृषि	71-77
5.	खनिज तथा ऊर्जा संसाधन	78-81
6.	विनिर्माण उद्योग	82-87
7.	राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ	88-92
लोकतांत्रिक राजनीति – 2 (राजनीति विज्ञान)		
1.	सत्ता की साझेदारी	93-96
2.	संघवाद	97-101
3.	जाति, धर्म और लैंगिक मसले	102-106
4.	राजनीतिक दलों की जरूरत क्यों?	107-112
5.	लोकतंत्र के परिणाम	113-117
आर्थिक विकास की समझ		
1.	विकास	118-121
2.	भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक	122-125
3.	मुद्रा और साख	126-129
4.	वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था	130-131
5.	उपभोक्ता अधिकार	132-133

भारत और
समकालीन विश्व–2
(इतिहास)

1 यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

फ्रेडरिक सॉरयू, विश्वव्यापी प्रजातांत्रिक और सामाजिक गणराज्यों का स्वप्न–राष्ट्रों के बीच संधि, 1848

परिचय

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सॉर्यू के चित्र में जर्मन लोगों द्वारा थामा गया काला, लाल और सुनहरा झंडा किसका प्रतीक था?

(अ) रूढ़िवादी उम्मीदों का
(ब) उदारवादी उम्मीदों का
(स) साम्राज्यवादी उम्मीदों का
(द) सैनिकवादी उम्मीदों का **(ब)**

2. फ्रेडरिक सॉर्यू के 1848 के चित्रों में सपनों का संसार किससे बना था और जुलूस का नेतृत्व कौन कर रहे थे?

(अ) राजा–सामंत; फ्रांस–जर्मनी
(ब) जनतांत्रिक–सामाजिक गणतंत्र; अमेरिका–स्विट्ज़रलैंड
(स) अमीर वर्ग; ब्रिटेन–इटली
(द) धार्मिक संस्थाएँ; रूस–ऑस्ट्रिया **(ब)**

3. स्वतंत्रता की प्रतिमा के हाथों में क्या था और सामने किसके अवशेष थे?

(अ) मशाल व घोषणापत्र; निरंकुश संस्थानों के
(ब) ध्वज व तराजू; पुराने उद्योगों के
(स) ग्रंथ व ध्वज; आक्रमणकारियों के
(द) तलवार व मुकुट; कलाकृतियों के **(अ)**

4. उन्नीसवीं सदी में यूरोप में राष्ट्रवाद के प्रभाव से कौन–सा परिवर्तन हुआ तथा चित्रकार ने ईसा मसीह, संतों और फ़रिश्तों को किसका प्रतीक माना?

(अ) सामंतवाद का उदय; धार्मिक संघर्ष
(ब) राष्ट्र–राज्य का उदय; राष्ट्रों के बीच भाईचारे
(स) तानाशाही का उदय; यूरोपीय संप्रभुता
(द) आधुनिक राज्यों का उदय; युद्ध और अशांति **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. 1848 में, एक फ्रांसिसी कलाकार ने .... चार चित्रों की एक श्रृंखला बनाई। *(RBSE – 2025)*

उत्तर : 'जनतांत्रिक और सामाजिक गणतंत्रों' से

2. फ्रांसीसी क्रांति के दौरान कलाकार स्वतंत्रता को .... का रूप प्रदान किया करते थे।

उत्तर : महिला

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. फ्रेडरिक सॉर्यू की श्रृंखला के पहले चित्र में लोगों के मार्च (जुलूस) की क्या विशेषताएँ दिखाई गई हैं?

उत्तर : 1. जुलूस में यूरोप और अमेरिका के लोग शामिल दिखाए गए हैं।
2. इसमें सभी उम्र और सामाजिक वर्गों के स्त्री–पुरुष हिस्सा ले रहे हैं।
3. सभी लोग एक लंबी कतार में स्वतंत्रता की प्रतिमा की वंदना करते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

2. सॉर्यू के 'कल्पनादर्श' (युटोपिया) में विभिन्न राष्ट्रों के लोगों की पहचान किस प्रकार की गई है?

उत्तर : 1. दुनिया के लोग अलग–अलग राष्ट्रों के समूहों में बँटे हुए हैं।
2. उनकी पहचान विशेष राष्ट्रीय ध्वजों ,कपड़ों और विशिष्ट राष्ट्रीय पोशाक से भी होती है।

3. जर्मन–भाषी रियासतों की 1848 में क्या मुख्य चाह या आकांक्षा थी?

उत्तर : 1. अनेक जर्मन–भाषी रियासतों को एक प्रजातांत्रिक संविधान के अंतर्गत लाना।
2. इन सभी रियासतों को मिलाकर एक एकीकृत राष्ट्र–राज्य के रूप में गठित करना।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

4. सॉर्यू के चित्र में जर्मन लोगों के पीछे अन्य कौन–से देशों के लोग कतार में शामिल दिखाए गए हैं?

उत्तर : 1. ऑस्ट्रिया और दो सिसिलियों की राजशाही के लोग।
2. लॉम्बार्डी और पोलैंड
3. इंग्लैंड, आयरलैंड, हंगरी और रूस

Trick ऑसी लोग, लॉपो क्षेत्र, इंआहंरू देश

- **ऑसी** = ऑस्ट्रिया + सिसिलियाँ
- **लॉपो** = लॉम्बार्डी + पोलैंड
- **इंआहंरू** = इंग्लैंड + आयरलैंड + हंगरी + रूस

फ्रांसीसी दार्शनिक – अर्नेस्ट रेनन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. अर्नेस्ट रेनन ने 'राष्ट्र क्या है?' (Qu'est&ce qu'une nation?) शीर्षक निबंध किस आधार पर लिखा था?
(अ) 1882 में सॉर्बोन विश्वविद्यालय में दिए गए अपने व्याख्यान के आधार पर
(ब) फ्रांसीसी क्रांति के दौरान हुए शोध के आधार पर
(स) नेपोलियन के शासनकाल के दौरान लिखे गए लेखों के आधार पर
(द) एक गुप्त संगठन की बैठकों के आधार पर **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. रेनन के अनुसार, राष्ट्र एक लंबे प्रयासों, ... और .... का चरम बिंदु होता है।

उत्तर : त्याग, निष्ठा

2. जनमत–संग्रह (Plebiscite) का अर्थ एक .... मतदान है जिसके जरिए सभी लोगों से किसी प्रस्ताव पर राय पूछी जाती है।

उत्तर : प्रत्यक्ष।

3. रेनन के अनुसार, शौर्य–वीरता युक्त अतीत .... वह सामाजिक पूँजी है जिस पर राष्ट्रीय विचार आधारित होता है।

उत्तर : महान पुरुषों के नाम और गौरव

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. अर्नेस्ट रेनन के अनुसार, एक राष्ट्र होने के लिए कौन सी प्रमुख शर्तें आवश्यक हैं?

उत्तर : 1. अतीत में समान गौरव का होना।
2. वर्तमान में समान इच्छा और संकल्प का होना।
3. साथ मिलकर महान काम करना और भविष्य में भी ऐसा करने की इच्छा रखना।

2. रेनन ने राष्ट्रों के अस्तित्व को 'स्वतंत्रता की गारंटी' क्यों कहा है?

उत्तर : 1. उनका मानना था कि राष्ट्रों की विविधता स्वतंत्रता को बनाए रखती है।
2. यदि दुनिया का केवल एक मालिक और एक कानून होता, तो मानवीय स्वतंत्रता समाप्त हो जाती।
3. राष्ट्रों का अस्तित्व विभिन्न संस्कृतियों और विचारों के पनपने के लिए स्वतंत्र वातावरण प्रदान करता है।

3. अर्नेस्ट रेनन के अनुसार राष्ट्र क्या है? *(RBSE – 2022)*

उत्तर : 1. व्याख्यान बाद में "(Qu'est&ce qu'une nation?)" (राष्ट्र क्या है?) शीर्षक से प्रसिद्ध निबंध के रूप में प्रकाशित हुआ।
2. रेनन ने राष्ट्र को समान भाषा, नस्ल, धर्म, या क्षेत्र के आधार पर परिभाषित करने की धारणा को खारिज किया।
3. उनके अनुसार, राष्ट्र लंबे प्रयासों, त्याग और निष्ठा का परिणाम है।
4. अतीत में शौर्य, गौरव और महान पुरुषों का योगदान राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक है।
5. वर्तमान में समान इच्छा, संकल्प और मिलकर महान कार्य करने की भावना राष्ट्र की बुनियाद है।

Trick राष्ट्र भाषा, नस्ल, धर्म और क्षेत्र से नहीं, बल्कि प्रयास, त्याग, निष्ठा तथा अतीत के गौरव और वर्तमान की सामूहिक इच्छा से बनता है।

फ्रांसीसी क्रांति और राष्ट्र का विचार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. फ्रांसीसी क्रांति के बाद सत्ता किसके हाथों में हस्तांतरित हो गई?
(अ) निरंकुश राजा के
(ब) पादरी वर्ग के
(स) फ्रांसीसी नागरिकों के समूह में
(द) पड़ोसी देशों के शासकों के **(स)**

2. फ्रांसीसी क्रांतिकारियों ने सामूहिक पहचान की भावना जगाने के लिए किस कदम का प्रयोग किया?
(अ) शस्त्र
(ब) la patrie (पितृभूमि) और 'le citoyen' (नागरिक)

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

(स) पोशाक
(द) अ एवं स **(ब)**

3. 1790 के दशक में फ्रांसीसी सेनाओं ने राष्ट्रवाद के विचार का प्रसार किन देशों में किया?
(अ) केवल रूस और चीन में
(ब) हॉलैंड, बेल्जियम, स्विट्जरलैंड और इटली में
(स) केवल इंग्लैंड में
(द) केवल अमेरिका में **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. फ्रांस में पेरिस की .... राष्ट्र की साझा भाषा बन गई।

उत्तर : फ्रेंच

2. यूरोप के विभिन्न शहरों में छात्रों और शिक्षित मध्य–वर्गों ने .... की स्थापना की।

उत्तर : जैकोबिन क्लबों

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. क्रांतिकारियों ने फ्रांसीसी लोगों में 'सामूहिक पहचान' की भावना पैदा करने के लिए कौन–से कदम उठाए?

उत्तर : 1. पितृभूमि (la patrie) और नागरिक (le citoyen) जैसे विचारों का प्रचार किया।
2. एक नया फ्रांसीसी तिरंगा झंडा चुना गया।
3. एस्टेट जेनरल का नाम बदलकर 'नेशनल एसेंबली' किया गया।
4. नई स्तुतियाँ रची गईं और शपथें ली गईं।
5 एक समान प्रशासनिक व्यवस्था और समान कानून लागू किए गए।

Trick "प–झ–न–श–का"

- प = पितृभूमि और नागरिक का प्रचार
- झ = झंडा (तिरंगा)
- न = नेशनल एसेंबली
- श = शपथें और स्तुतियाँ
- का = कानून और प्रशासन एक समान

2. फ्रांसीसी सेनाओं का विदेशों में राष्ट्रवाद के प्रसार में क्या योगदान था?

उत्तर : 1. फ्रांसीसी सेनाएँ अपने क्रांतिकारी युद्धों के साथ राष्ट्रवाद के विचार को विदेशों में ले गईं।
2. हॉलैंड, बेल्जियम, स्विट्जरलैंड और इटली में सेनाओं के प्रवेश से राष्ट्रवाद का विचार वहाँ फैलने लगा।
3. नेपोलियन ने अपने नियंत्रण वाले क्षेत्रों में ऐसे सुधार लागू किए जिन्होंने राष्ट्रवाद की नींव मजबूत की।

नेपोलियन संहिता

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. नेपोलियन की संहिता ने कौन सा मुख्य विशेषाधिकार समाप्त कर दिया था?
(अ) संपत्ति का अधिकार
(ब) जन्म पर आधारित विशेषाधिकार
(स) व्यापार करने का अधिकार
(द) शिक्षा का अधिकार **(ब)**

2. नेपोलियन के शासन के प्रति शुरुआती उत्साह धीरे–धीरे दुश्मनी में क्यों बदल गया?
(अ) क्योंकि उसने करों को कम कर दिया था।
(ब) क्योंकि उसने सेंसरशिप और जबरन भर्ती जैसे दमनकारी कदम उठाए थे।
(स) क्योंकि वह लोगों को स्वतंत्रता देना चाहता था।
(द) क्योंकि उसने व्यापार पर पूरी तरह रोक लगा दी थी। **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. नेपोलियन ने किसानों को .... और .... से मुक्ति दिलाई।

उत्तर : भू–दासत्व, जागीरदारी शुल्कों

2. नेपोलियन के शासन का स्वागत करने वाले शहरों में ...., ..., ... और .... प्रमुख थे।

उत्तर : ब्रसेल्स, मेंज, मिलान, वॉरसा

3. नेपोलियन ने शहरों में –––– के नियंत्रणों को हटा दिया था।

उत्तर : कारीगरों के श्रेणी संघों

4. 1804 की नागरिक संहिता को आमतौर पर......... के नाम से जाना जाता है। *(RBSE – 2026)*

उत्तर : नेपोलियन संहिता

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. नेपोलियन की संहिता का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। *(RBSE-2024)*

उत्तर : नेपोलियन संहिता 1804 (नागरिक संहिता)

1. **जन्माधारित विशेषाधिकारों की समाप्ति–**
- सामंती और जन्माधारित विशेषाधिकारों को समाप्त किया।
- सभी को कानून के समक्ष समान बनाया।

2. **संपत्ति के अधिकार–**
- निजी संपत्ति के अधिकार को सुरक्षित किया।

3. **कानूनी प्रणाली का सरलीकरण–**
- समान और सरल कानून लागू किए,
- जिससे न्याय प्रक्रिया स्पष्ट और व्यवस्थित हुई।

4. **भू–दासत्व की समाप्ति–**

- किसानों को भू–दासत्व और जागीरदारी शुल्क से मुक्त किया।
- **धार्मिक सहिष्णुता** – सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता का सिद्धांत लागू

5. **योग्यता आधारित प्रशासन–** वंशानुगत पदों को हटाकर योग्यता के आधार पर नियुक्तियाँ की गईं।

सीमाएँ–

1. राजनीतिक स्वतंत्रता सीमित की
2. पितृसत्तात्मक अधिकार बहाल किए, जिससे महिलाओं के अधिकारों पर प्रतिबंध लगा।

Trick

विशेष → संपत्ति → सरल कानून → भू–दासत्व → धर्म → योग्यता राजनीति → महिलाएँ

2. स्थानीय लोगों की फ्रांसीसी शासन के प्रति प्रतिक्रिया 'मिली–जुली' क्यों थी?

उत्तर : 1. शुरुआत में फ्रांसीसी सेनाओं का 'स्वतंत्रता का तोहफ़ा' देने वालों के रूप में स्वागत हुआ।

2. लेकिन जल्द ही लोगों को समझ आया कि नई प्रशासनिक व्यवस्था राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं दे रही है।

3. बढ़े हुए कर, सेंसरशिप और सेना में जबरन भर्ती ने प्रशासनिक सुधारों के फायदों को दबा दिया।

यूरोप में राष्ट्रवाद का निर्माण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. अठारहवीं सदी के मध्य में यूरोप के नक्शे में किस प्रकार की इकाइयाँ नहीं थीं?

(अ) राजशाहियाँ (ब) राष्ट्र राज्य

(स) डचियाँ (द) कैंटन **(ब)**

2. हैब्सबर्ग साम्राज्य में हंगरी के आधे लोग कौन सी भाषा बोलते थे?

(अ) जर्मन (ब) पोलिश

(स) मैग्यार (द) इतालवी **(स)**

3. हैब्सबर्ग साम्राज्य के भीतर कार्निओला क्षेत्र में कौन से लोग निवास करते थे?

(अ) स्लोवेन्स (ब) क्रोएट

(स) राउमन (द) स्लोवाक **(अ)**

4. हैब्सबर्ग साम्राज्य में कुलीन वर्ग द्वारा कौन सी भाषा मुख्य रूप से बोली जाती थी?

(अ) केवल इतालवी

(ब) मैग्यार और क्रोएट

(स) जर्मन और पोलिश

(द) स्लोवाक और राउमन **(स)**

5. हैब्सबर्ग साम्राज्य के विभिन्न और विविध समूहों को आपस में क्या जोड़ता था?

(अ) एक समान संस्कृति

(ब) एक समान भाषा

(स) सम्राट के प्रति निष्ठा

(द) समान जातीय समूह **(स)**

रिक्तस्थान –

1. अठारहवीं सदी में यूरोप के देश ...., ... और .... जैसी इकाइयों में बँटे हुए थे।

उत्तर : राजशाहियों, डचियों, कैंटनों

2. हैब्सबर्ग साम्राज्य में इतालवी भाषी प्रांतों के रूप में .... और .... शामिल थे।

उत्तर : लॉम्बार्डी, वेनेशिया

3. गालीसिया में कुलीन वर्ग .... भाषा बोलता था।

उत्तर : पोलिश

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. अठारहवीं सदी के मध्य में यूरोप की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति कैसी थी?

उत्तर : 1. यूरोप के देश आधुनिक 'राष्ट्र राज्यों' के रूप में नहीं थे।

2. वे राजशाहियों, डचियों और कैंटनों में बँटे थे, जिनके शासकों के अपने स्वायत्त क्षेत्र थे।

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

3. लोगों में कोई सामूहिक पहचान या समान संस्कृति नहीं थी।
4. वे अक्सर अलग–अलग भाषाएँ बोलते थे और विभिन्न जातीय समूहों से संबंधित थे।

Trick राजा रानी साथ भागे

रा → राष्ट्र राज्य नहीं थे
रा → राजशाहियाँ, डचियाँ, कैंटन
सा → सामूहिक पहचान/समान संस्कृति का अभाव
भा → भाषाएँ और जातीय भिन्नता

2. हैब्सबर्ग साम्राज्य की विविधता का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर : 1. यह साम्राज्य कई अलग–अलग क्षेत्रों और जनसमूहों को जोड़कर बना था।
2. इसमें ऑस्ट्रिया, टिरॉल, सुडेटनलैंड और बोहेमिया जैसे क्षेत्र शामिल थे।
3. इसमें इतालवी भाषी प्रांत (लॉम्बार्डी और वेनेशिया) और हंगरी जैसे विविध भाषाई क्षेत्र शामिल थे।
4. साम्राज्य में कुलीन वर्ग की भाषाओं (जर्मन, पोलिश) के अलावा, भारी संख्या में खेती करने वाले विभिन्न जातीय समूह जैसे बोहेमियन, स्लोवाक, स्लोवेन्स, क्रोएट और राउमन शामिल थे।

Trick साम्राज्य → क्षेत्र → भाषाएँ → जातीय समूह

कुलीन वर्ग और नया मध्यम वर्ग

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. कुलीन वर्ग के लोग उच्च वर्गों के बीच बातचीत के लिए किस भाषा का प्रयोग करते थे?
(अ) जर्मन (ब) अंग्रेजी
(स) फ्रेंच (द) लैटिन **(स)**

2. पूर्वी और मध्य यूरोप में विशाल जागीरों पर खेती कौन करता था?
(अ) भूदास (ब) अमीर व्यापारी
(स) औद्योगिक श्रमिक (द) स्वतंत्र जमींदार **(अ)**

3. नए मध्य वर्ग में कौन से समूह शामिल थे?
(अ) केवल कृषक और मजदूर
(ब) केवल बड़े राजा और डची शासक
(स) उद्योगपति, व्यापारी और सेवा क्षेत्र के लोग
(द) केवल विदेशी यात्री **(स)**

रिक्तस्थान –

1. इंग्लैंड में औद्योगीकरण .... के मध्य में आरंभ हुआ था।

उत्तर : अठारहवीं सदी

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. कुलीन वर्ग की साझा जीवन शैली की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं?

उत्तर : 1. यह वर्ग क्षेत्रीय विभाजनों के आर–पार एक साझा जीवन शैली से बँधा था।
2. वे ग्रामीण इलाकों में बड़ी जायदाद और शहरों में हवेलियों के मालिक थे।
3. राजनीतिक कार्यों और उच्च वर्गों के बीच संवाद के लिए वे 'फ्रेंच भाषा' का उपयोग करते थे।
4. उनके परिवारों के बीच वैवाहिक संबंध बहुत आम थे।

Trick जीजा फ्रेंच विवाह में आए

जी → जीवन शैली साझा थी
जा → जायदाद और हवेलियों के मालिक
फ्रें → फ्रेंच भाषा का उपयोग
वि → विवाहिक संबंध आम थे

2. नए मध्य वर्ग का उदय कैसे हुआ और इसमें कौन–कौन शामिल था?

उत्तर : 1. औद्योगिक उत्पादन और व्यापार में हुई वृद्धि से शहरों का विकास हुआ, जिसने वाणिज्यिक वर्गों को जन्म दिया।
2. इसके परिणामस्वरूप नए सामाजिक समूह अस्तित्व में आए, जिनमें श्रमिक वर्ग और मध्य वर्ग शामिल थे।
3. मध्य वर्ग मुख्य रूप से उद्योगपतियों, व्यापारियों और सेवा क्षेत्र के लोगों से मिलकर बना था।

उदारवादी राष्ट्रवाद के मायने क्या थे ?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. उदारवादी किस प्रकार की सरकार पर जोर देते थे?
(अ) केवल कुलीनतंत्र (ब) केवल कुलीनतंत्र
(स) निरंकुश राजतंत्र
(द) पादरी वर्ग द्वारा नियंत्रित सरकार **(ब)**

2. 1834 में प्रशा की पहल पर किस संघ की स्थापना हुई थी?
(अ) हैम्बर्ग संघ (ब) फ्रैंकफर्ट संघ
(स) जॉलवेराइन (द) यूरोपियन फेडरेशन **(स)**

3. उन्नीसवीं सदी में कपड़े को मापने का पैमाना क्या था?

(अ) मीटर (ब) सेंटीमीटर

(स) ऐले (elle) (द) यार्ड **(स)**

रिक्तस्थान –

1. फ्रांसीसी क्रांति के बाद उदारवाद .... और .... के विशेषाधिकारों की समाप्ति का पक्षधर था।

उत्तर : निरंकुश शासक, पादरी वर्ग

2. नेपोलियन के प्रशासनिक कदमों से अनगिनत छोटे प्रदेशों से .... राज्यों का महासंघ बना था।

उत्तर : 39

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. नए मध्य वर्ग के लिए 'उदारवाद' का क्या अर्थ था?

उत्तर : 1. व्यक्ति के लिए आजादी।
2. कानून के समक्ष सबकी बराबरी।
3. ऐसी सरकार का समर्थन जो सहमति से बनी हो।
4. निजी संपत्ति के स्वामित्व की अनिवार्यता।

2. आर्थिक विनिमय में बाधक किन परिस्थितियों को उदारवादी खत्म करना चाहते थे?

उत्तर : 1. राज्य द्वारा चीजों और पूंजी के आवागमन पर लगाए गए नियंत्रण।
2. अलग–अलग शहरों में भिन्न–भिन्न मुद्रा प्रणालियाँ होना।
3. विभिन्न नाप–तौल प्रणालियाँ, जिससे व्यापार में समय लगता था (जैसे 'ऐले' की लंबाई में अंतर)।
4. सीमा शुल्क की अधिकता (जैसे व्यापारी को बार–बार शुल्क देना पड़ता था)।

3. उदारवादी राष्ट्रवाद की विशेषताएँ लिखिये।*(RBSE-2022)*

उत्तर : 1. उदारवाद का मतलब व्यक्तिगत स्वतंत्रता और कानून के समक्ष समानता था।
2. यह सहमति से सरकार और संवैधानिक शासन का समर्थन करता था।
3. आर्थिक रूप से, राज्य द्वारा लगाए गए व्यापारिक प्रतिबंधों को हटाने पर जोर दिया गया।
4. राष्ट्र–राज्य को समान नागरिक अधिकारों वाले समुदाय के रूप में देखा गया।
5. उदारवाद में सीमाएँ थीं, जैसे कि मतदान अधिकार केवल संपत्ति– स्वामित्व वाले पुरुषों तक सीमित थे।

4. उदारवादी राष्ट्रवाद के क्या मायने थे ? समझाइए। *(RBSE-2024)*

उत्तर : उदारवादी राष्ट्रवाद (Liberal Nationalism)
1. 'लिबर' लैटिन शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'आजाद'।
2. व्यक्ति की स्वतंत्रता और कानून के समक्ष समानता पर जोर दिया।
3. राजनीतिक रूप से, सहमति से सरकार और निरंकुशता की समाप्ति का समर्थन किया।
4. संविधान के माध्यम से व्यक्तिगत अधिकारों की गारंटी की बात कही।
5. वंशानुगत विशेषाधिकारों का विरोध किया और योग्यता पर आधारित समाज की वकालत की।
6. आर्थिक रूप से, बाजारों की स्वतंत्रता, व्यापारिक प्रतिबंधों का उन्मूलन, और माल और पूंजी के निर्बाध प्रवाह का समर्थन किया।
7. मतदान का अधिकार केवल संपत्ति–स्वामी पुरुषों तक सीमित था, जिससे महिलाएँ और गरीब वर्ग बाहर रह गए।

1815 के बाद एक नया रूढ़िवाद

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 1815 में नेपोलियन की हार के बाद यूरोपीय सरकारें किस भावना से प्रेरित थीं?

(अ) उदारवाद

(ब) राष्ट्रवाद

(स) रूढ़िवाद

(द) साम्यवाद **(स)**

2. 1815 की वियना संधि (Congress of Vienna) की मेजबानी किसने की थी?

(अ) नेपोलियन बोनापार्ट

(ब) ड्यूक मैटरनिख

(स) लुई सोलहवाँ

(द) जार अलेक्जेंडर **(ब)**

3. 1815 की वियना संधि का मुख्य उद्देश्य क्या था?

(अ) नेपोलियन द्वारा किए गए बदलावों को खत्म करना

(ब) फ्रांस का विस्तार करना

(स) यूरोप में लोकतंत्र स्थापित करना

(द) सामंतवाद को बढ़ावा देना **(अ)**

4. 1815 के बाद स्थापित रूढ़िवादी शासन व्यवस्थाओं की मुख्य विशेषता क्या थी?

(अ) वे प्रेस की पूर्ण आजादी के पक्षधर थे

(ब) वे उदारवादी विचारों का सम्मान करते थे

(स) वे निरंकुश थे और असहमति बर्दाश्त नहीं करते थे

(द) वे लोकतंत्र को बढ़ावा देते थे **(स)**

मिशन ज्ञान
पढ़ो जब चाहो, जहाँ चाहो, जैसे चाहो!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

रिक्तस्थान –

1. वियना संधि के तहत फ्रांसीसी क्रांति के दौरान हटाए गए .... वंश को सत्ता में बहाल किया गया।

उत्तर : बूर्बो

2. सरकारों ने अखबारों और किताबों पर नियंत्रण रखने के लिए .... के नियम बनाए।

उत्तर : सेंसरशिप

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. रूढ़िवादी लोग नेपोलियन द्वारा शुरू किए गए परिवर्तनों के बारे में क्या सोचते थे?

उत्तर : 1. वे क्रांति से पहले के दौर में पूरी तरह वापसी नहीं चाहते थे।
2. उन्होंने समझा था कि आधुनिकीकरण राजतंत्र जैसी पारंपरिक संस्थाओं को और अधिक मजबूत बना सकता है।
3. वे मानते थे कि कुशल नौकरशाही, गतिशील अर्थव्यवस्था और सामंतवाद की समाप्ति राज्य की ताकत को कारगर बना सकते हैं।

2. 1815 की वियना संधि के तहत फ्रांस की सीमाओं पर क्या बदलाव किए गए?

उत्तर : 1. फ्रांस की सीमाओं पर नए राज्य कायम किए गए ताकि भविष्य में फ्रांस का विस्तार न हो सके।
2. उत्तर में 'नीदरलैंड्स का राज्य' स्थापित किया गया, जिसमें बेल्जियम शामिल था।
3. दक्षिण में पीडमॉण्ट के साथ जेनोआ को जोड़ दिया गया।

3. वियना संधि की कोई दो विशेषताएं बताइये। *(RBSE-2023)*

उत्तर : 1. नेपोलियन से पहले की राजशाही को बहाल किया (जैसे, फ्रांस में बूर्बो वंश)।
2. फ्रांस को कमजोर करने और पड़ोसी देशों (प्रशा, ऑस्ट्रिया, रूस) को मजबूत करने के लिए यूरोपीय सीमाओं का पुनर्गठन।
3. नीदरलैंड्स का राज्य और 39 राज्यों का जर्मन परिसंघ बनाया।
4. यूरोप में शक्ति संतुलन बनाए रखने का प्रयास।
5. राष्ट्रवादी और उदारवादी आंदोलनों को दबाया गया।
6. पारंपरिक संस्थानों को संरक्षित करने के लिए रूढ़िवादी विचारधारा पर आधारित।

Trick **राजा सीमा पर नीली शक्ति से राष्ट्र रूठे**

राजा → राजशाही
सीमा → सीमाओं का पुनर्गठन
नीली → नीदरलैंड्स/जर्मन परिसंघ
शक्ति → शक्ति संतुलन
राष्ट्र → राष्ट्रवादी आंदोलन
रूठे → रूढ़िवादी विचारधारा

4. रूढ़िवाद क्या है? *(RBSE-2022)*

उत्तर : ऐसा राजनीतिक दर्शन जो परंपरा, स्थापित संस्थानों और रिवाजों पर जोर देता है और तेज बदलावों की बजाय क्रमिक और धीरे–धीरे विकास को प्राथमिकता देता है।

क्रांतिकारी

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. ज्युसेपी मेत्सिनी का जन्म कहाँ हुआ था?
(अ) मार्सेई (ब) बर्न
(स) जेनोआ (द) वियना **(स)**

2. मेत्सिनी ने बर्न में किस गुप्त संगठन की स्थापना की थी?
(अ) यंग इटली (ब) यंग यूरोप
(स) कार्बोनारी (द) लिगुरिया संघ **(ब)**

3. ज्यूसेपी मेत्सिनी किस देश के प्रसिद्ध क्रांतिकारी थे ? *(RBSE-2025)*
(अ) इंग्लैण्ड (ब) ऑस्ट्रिया
(स) इटली (द) फ्रांस **(स)**

4. ड्यूक मैटरनिख ने किसे 'हमारी सामाजिक व्यवस्था का सबसे खतरनाक दुश्मन' कहा था?
(अ) नेपोलियन (ब) लुई फिलिप
(स) ज्युसेपी मेत्सिनी (द) विस्मार्क **(स)**

5. मेत्सिनी के अनुसार राष्ट्रों की प्राकृतिक इकाई क्या थी?
(अ) राजशाही (ब) राष्ट्र
(स) साम्राज्य (द) डचियाँ **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. क्रांतिकारी होने का मतलब उन .... व्यवस्थाओं का विरोध करना था जो वियना कांग्रेस के बाद स्थापित की गई थीं।

उत्तर : राजतंत्रीय

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. 1815 के बाद क्रांतिकारियों के क्या मुख्य लक्ष्य थे?

उत्तर : 1. वियना कांग्रेस के बाद स्थापित राजतंत्रीय व्यवस्थाओं का विरोध करना।

2. स्वतंत्रता और मुक्ति के लिए प्रतिबद्ध होकर संघर्ष करना।

3. राष्ट्र–राज्यों की स्थापना करना, जिसे वे आजादी के संघर्ष का अनिवार्य हिस्सा मानते थे।

2. ज्युसेपी मेत्सिनी के एकीकरण के मॉडल की क्या विशेषता थी?

उत्तर : 1. उसका मानना था कि इटली को छोटे राज्यों और प्रदेशों के पैबंद के रूप में नहीं रहना चाहिए।

2. उसने एक एकीकृत गणतंत्र के निर्माण का सपना देखा था।

3. उसने 'यंग इटली' और 'यंग यूरोप' जैसे संगठनों के माध्यम से अपने विचारों का प्रसार किया।

4. उसने राजतंत्र का घोर विरोध किया और प्रजातांत्रिक गणतंत्रों का समर्थन किया।

3. उदारवादियों की 1848 की क्रांति का क्या अर्थ लगाया जाता है? उदारवादियों ने किन राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विचारों को बढ़ावा दिया?

उत्तर : क्रांति का अर्थ –

1. राष्ट्र–राज्य की स्थापना – संविधानवाद और राष्ट्रीय एकीकरण पर आधारित राष्ट्र–राज्य का निर्माण।

2. संसदीय लोकतंत्र – राजतंत्र को सीमित कर संसदीय व्यवस्था लागू करना।

3. मध्यवर्गीय नेतृत्व – शिक्षित वर्ग द्वारा जन–असंतोष का उपयोग कर निरंकुश सत्ता को चुनौती देना।

प्रमुख विचार –

1. राजनीतिक – संविधान, प्रेस की स्वतंत्रता, संगठन बनाने की आजादी और पुरुषों के लिए मताधिकार की माँग।

2. सामाजिक – शिक्षित मध्यवर्ग का वर्चस्व; मजदूरों / कारीगरों की उपेक्षा और महिलाओं को राजनीतिक अधिकारों से वंचित रखना।

3. आर्थिक – सामंतवाद का अंत और औद्योगिक विकास हेतु एकीकृत आर्थिक बाज़ार की आवश्यकता।

क्रांतियां का युग

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 1830 में फ्रांस में हुई क्रांति का मुख्य परिणाम क्या था?

(अ) निरंकुश राजतंत्र की बहाली
(ब) बूर्बो राजाओं की पुनर्स्थापना
(स) संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना
(द) फ्रांस का ऑटोमन साम्राज्य में विलय **(स)**

2. 'जब फ्रांस छींकता है तो बाकी यूरोप की सर्दी–जुकाम हो जाता है' यह टिप्पणी किसने की थी?

(अ) लुई फिलिप (ब) लॉर्ड बायरन
(स) मैटरनिख (द) नेपोलियन **(स)**

3. 1830 की जुलाई क्रांति के फलस्वरूप कौन सा देश यूनाइटेड किंगडम ऑफ़ द नीदरलैंड्स से अलग हो गया?

(अ) इटली (ब) बेल्जियम
(स) पोलैंड (द) यूनान **(ब)**

4. यूनान (ग्रीस) पंद्रहवीं सदी से किसका हिस्सा था?

(अ) ब्रिटिश साम्राज्य (ब) रूसी साम्राज्य
(स) ऑटोमन साम्राज्य (द) जर्मन महासंघ **(स)**

5. यूनान को एक स्वतंत्र राष्ट्र की मान्यता किस संधि द्वारा मिली?

(अ) वियना की संधि (ब) कुस्तुनतुनिया की संधि
(स) पेरिस की संधि (द) जर्मन संधि **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. 1830–1848 के बीच यूरोप में उदारवादी–राष्ट्रवादी क्रांतियों का नेतृत्व .... वर्ग के लोगों ने किया।

उत्तर : शिक्षित मध्यवर्गीय

2. अंग्रेज कवि .... ने यूनान के स्वतंत्रता संग्राम के लिए धन इकट्ठा किया और युद्ध में भाग लिया।

उत्तर : लॉर्ड बायरन

3. प्राचीन यूनानी संस्कृति के प्रति सहानुभूति रखने वाले लोगों ने यूनान को .... का पालना बताया।

उत्तर : यूरोपीय सभ्यता

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. 1830 की जुलाई क्रांति ने पूरे यूरोप को कैसे प्रभावित किया?

उत्तर : 1. इसने यूरोप के अन्य क्षेत्रों में उदारवाद और राष्ट्रवाद की लहर को और मजबूत किया।

2. ब्रसेल्स में विद्रोह भड़कने से बेल्जियम यूनाइटेड किंगडम ऑफ़ द नीदरलैंड्स से अलग हो गया।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

3. इसने रूढ़िवादी व्यवस्थाओं के खिलाफ अन्य देशों (जैसे इटली, जर्मनी, पोलैंड) के राष्ट्रवादियों को भी प्रेरित किया।

2. यूनान के स्वतंत्रता संग्राम को किन कारकों से बल मिला?

उत्तर : 1. पश्चिमी यूरोप के अनेक लोगों का समर्थन, जो प्राचीन यूनानी संस्कृति के प्रति सहानुभूति रखते थे।

2. कवियों और कलाकारों द्वारा यूनान को 'यूरोपीय सभ्यता का पालना' बताकर उसके पक्ष में जनमत जुटाना।

3. लॉर्ड बायरन जैसे व्यक्तित्वों का प्रत्यक्ष सहयोग और धन जुटाना।

4. ऑटोमन साम्राज्य के विरुद्ध आजादी की प्रबल इच्छा।

रोमानी कल्पना और राष्ट्रीय भावना

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'वॉक्सगाइस्ट' (Volkgeist) का अर्थ क्या है?

(अ) राष्ट्र की सच्ची आत्मा
(ब) राजा के प्रति निष्ठा
(स) औद्योगिक विकास
(द) वैज्ञानिक तर्क **(अ)**

2. पोलैंड में राष्ट्रीय भावनाओं को जीवित रखने के लिए किसका उपयोग किया गया?

(अ) रूसी भाषा और शिक्षा का
(ब) केवल सैन्य शक्ति का
(स) संगीत और भाषा का
(द) ऑस्ट्रियाई प्रशासनिक व्यवस्था का **(स)**

3. कैरोल कुर्पिस्की ने किस माध्यम से राष्ट्रीय संघर्ष का गुणगान किया?

(अ) नाटकों और उपन्यासों से
(ब) केवल भाषणों से
(स) ऑपेरा और संगीत से
(द) रूसी भाषा के प्रचार से **(स)**

रिक्तस्थान –

1. जर्मन दार्शनिक .... ने दावा किया कि सच्ची जर्मन संस्कृति उसके आम लोगों में निहित थी।

उत्तर : योहान गॉटफ्रीड

2. पोलैंड में .... और .... जैसे लोकनृत्यों को राष्ट्रीय प्रतीकों में बदल दिया गया था।

उत्तर : पोलेनेस, माजुरका

3. रूसी कब्जे के बाद स्कूलों में पोलिश भाषा को हटाकर .... भाषा लादी गई।

उत्तर : रूसी

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. रूमानीवाद का राष्ट्रवाद के विकास में क्या योगदान था?

उत्तर : 1. इसने तर्क और विज्ञान के स्थान पर भावनाओं, अंतर्दृष्टि और रहस्यवादी भावनाओं पर बल दिया।

2. इसने एक साझा–सामूहिक विरासत और सांस्कृतिक अतीत को राष्ट्र का आधार बनाया।

3. इसने लोकगीतों, जन–काव्य और लोकनृत्यों के माध्यम से राष्ट्र की सच्ची आत्मा (वॉक्सगाइस्ट) को खोजने का प्रयास किया।

4. इसने भाषा और संगीत को राष्ट्रीय संदेश के प्रसार का साधन बनाया।

2. पोलैंड में भाषा का उपयोग राष्ट्रवादी विरोध के हथियार के रूप में कैसे किया गया?

उत्तर : 1. रूसी सरकार द्वारा पोलिश भाषा पर प्रतिबंध लगाने के बाद, इसका उपयोग राष्ट्रवादी विरोध का प्रतीक बन गया।

2. चर्च के आयोजनों और धार्मिक शिक्षा में पोलिश भाषा का प्रयोग जारी रखा गया।

3. पादरियों और बिशपों ने रूसी भाषा के प्रचार के आदेश को मानने से इनकार कर दिया, जिसके लिए उन्हें कठोर दंड (साइबेरिया निर्वासन) झेलना पड़ा।

4. पोलिश भाषा के माध्यम से लोगों ने अपनी सांस्कृतिक पहचान को रूसी प्रभुत्व के विरुद्ध जीवित रखा।

ग्रिम बंधुओं

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. ग्रिम बंधुओं का जन्म किस शहर में हुआ था?

(अ) बर्लिन (ब) हनाऊ
(स) म्यूनिख (द) फ्रैंकफर्ट **(ब)**

2. ग्रिम बंधुओं ने लोक कथाओं का अपना पहला संग्रह कब प्रकाशित किया?

(अ) 1785 (ब) 1786
(स) 1812 (द) 1833 **(स)**

3. ग्रिम बंधु लोक कथाओं के संग्रह को किसका हिस्सा मानते थे?

(अ) केवल बच्चों के मनोरंजन का
(ब) फ्रांसीसी प्रभुत्व का विरोध और जर्मन राष्ट्रीय पहचान गढ़ने का
(स) कानून की पढ़ाई पूरी करने का
(द) वैज्ञानिक खोजों का **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. ग्रिम बंधु .... के वर्चस्व को जर्मन संस्कृति के लिए खतरा मानते थे।

उत्तर : फ्रांस

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. ग्रिम बंधुओं ने लोक कथाओं को एकत्रित करने का कार्य कैसे किया?

उत्तर : 1. वे छह साल तक लगातार गाँव–गाँव गए।
2. वे आम लोगों से मिलते थे और उनसे चर्चा करते थे।
3. पीढ़ियों से चली आ रही जो भी लोक कथाएँ उनकी जानकारी में आती थीं, उन्हें वे लिखकर संजो लेते थे।

2. ग्रिम बंधुओं की लोक कथाओं के संग्रह का क्या उद्देश्य था?

उत्तर : 1. इसका उद्देश्य जर्मन संस्कृति और लोक परंपराओं को सुरक्षित करना था।
2. वे इसके माध्यम से फ्रांसीसी प्रभुत्व का विरोध करना चाहते थे।
3. वे एक साझा जर्मन राष्ट्रीय पहचान गढ़ना चाहते थे।

3. यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास में संस्कृति के योगदान के तीन उदाहरण लिखिए।

उत्तर : 1. **राष्ट्र का मानवीकरण** – कलाकारों ने राष्ट्र को नारी रूप में चित्रित किया, जैसे मारीआन (फ्रांस) और जर्मेनिया (जर्मनी)।
2. **सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग** – लाल टोपी, टूटी जंजीर और तराजू जैसे प्रतीकों से स्वतंत्रता और न्याय के विचार व्यक्त किए गए।
3. **राष्ट्रीय प्रतीकों का प्रसार** – प्रतिमाओं, सिक्कों, डाक टिकटों और ओक वृक्ष के मुकुट के माध्यम से राष्ट्रीय भावना और एकता को बढ़ावा मिला।

भूख कठिनाइयों और जन विद्रोह

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 1848 में पेरिस में हुए विद्रोह का तात्कालिक परिणाम क्या रहा?

(अ) लुई फिलिप को भागने पर मजबूर होना पड़ा
(ब) राजा ने विद्रोहियों की सभी शर्तें मान लीं
(स) औद्योगिक क्रांति पूरी तरह समाप्त हो गई
(द) सेना ने शांतिपूर्ण समाधान निकाल लिया **(अ)**

2. 1848 में फ्रांसीसी राष्ट्रीय सभा (National Assembly) ने क्या निर्णय लिया?

(अ) केवल अमीरों को मताधिकार दिया
(ब) 21 वर्ष से ऊपर सभी वयस्क पुरुषों को मताधिकार प्रदान किया
(स) राजा की शक्तियों को और बढ़ा दिया
(द) बुनकरों को काम करना बंद करने का आदेश दिया **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. यूरोप के उन इलाकों में जहाँ कुलीन वर्ग सत्ता में था, कृषक .... शुल्कों और जिम्मेदारियों के बोझ तले दबे थे।

उत्तर : सामंती

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. सिलेसिया में बुनकरों के विद्रोह की मुख्य घटनाएँ क्या थीं?

उत्तर : 1 बुनकरों ने ठेकेदारों की कोठी पर जाकर मजदूरी बढ़ाने की मांग की।
2 बुनकरों के एक गुट ने भंडारगृह में घुसकर कपड़े का भंडार लूट लिया।
3. अंततः सेना के साथ टकराव में ग्यारह बुनकरों की गोली मारकर हत्या कर दी गई।

1848 उदारवादियों की क्रांति

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. फ्रैंकफर्ट संसद ने जर्मन राष्ट्र के संविधान का प्रारूप तैयार करके ताज किसे पहनाने की पेशकश की थी?

(अ) लुई फिलिप को
(ब) ऑस्ट्रिया के चांसलर को
(स) प्रशा के राजा फ्रेडरीख विल्हेम चतुर्थ को
(द) ड्यूक मैटरनिख को **(स)**

रिक्तस्थान –

1. 18 मई 1848 को .... निर्वाचित प्रतिनिधियों ने फ्रैंकफर्ट संसद में अपना स्थान ग्रहण किया।

उत्तर : 831

2. हैब्सबर्ग शासकों ने .... के लोगों को ज्यादा स्वायत्तता प्रदान की।

उत्तर : हंगरी

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. 1848 की उदारवादी क्रांति की प्रमुख मांगें क्या थीं?

उत्तर : 1. संविधानवाद और राष्ट्रीय एकीकरण की स्थापना।
2. एक ऐसे राष्ट्र राज्य का निर्माण जो संविधान पर आधारित हो।
3. प्रेस की स्वतंत्रता और संगठन बनाने की आजादी।
4. संसदीय शासन प्रणाली।

शिक्षा ज्ञान पढ़ो जब चाहे, जहाँ चाहे, जैसे चाहे!

2. फ्रैंकफर्ट संसद?

उत्तर : 1. 18 मई 1848 को फ्रैंकफर्ट संसद सेंट पॉल चर्च में आयोजित हुई थी।

2. प्रतिनिधियों ने प्रशा के राजा फ्रेडरीख विल्हेम चतुर्थ को ताज पहनाने की पेशकश की थी, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया था।

3. राष्ट्रवादी संघर्षों में महिलाओं की भूमिका

उत्तर : 1. नारीवादी दृष्टिकोण (लुइजे ऑटो–पीटर्स के विचार था कि स्वतंत्रता को केवल पुरुषों तक सीमित नहीं रखा जा सकता।

2. यदि स्वतंत्रता पूरी मानवता के लिए है, तो वह पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान होनी चाहिए।

जर्मनी और इटली का निर्माण

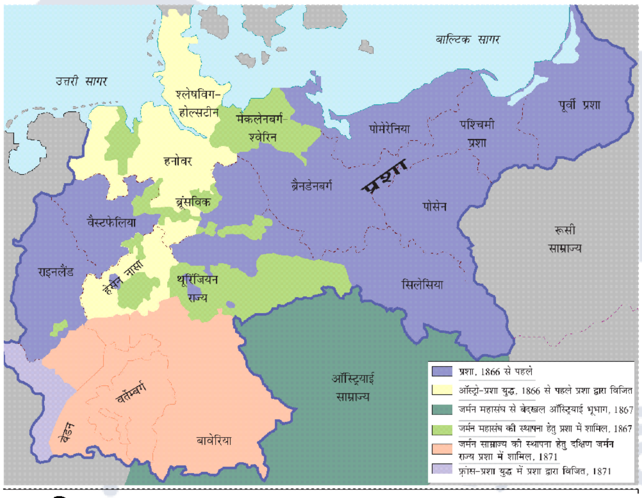

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. नए जर्मन साम्राज्य की घोषणा कहाँ की गई थी?

(अ) बर्लिन के राजमहल में

(ब) फ्रैंकफर्ट के सेंट पॉल चर्च में

(स) वर्साय के महल के शीशमहल (हॉल ऑफ मिरर्स) 1871

(द) हनाऊ के नगर भवन में **(स)**

2. 1871 में राजा विलियम प्रथम को किस देश का सम्राट घोषित किया गया ? *(RBSE-2024)*

(अ) इटली (ब) फ्रांस

(स) जर्मनी (द) अमेरिका **(स)**

रिक्तस्थान –

1. प्रशा के बड़े भूस्वामियों को .... के नाम से जाना जाता था।

उत्तर : जुंकर्स (Junkers)

2. नए जर्मन राज्य ने मुद्रा, बैंकिंग और न्यायिक व्यवस्थाओं के .... पर काफी जोर दिया।

उत्तर : आधुनिकीकरण

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. जर्मनी के एकीकरण में ऑटो वॉन बिस्मार्क की भूमिका क्या थी?

उत्तर : 1. बिस्मार्क इस प्रक्रिया के जनक थे।

2. उन्होंने प्रशा की सेना और नौकरशाही की सहायता ली।

3. उन्होंने ऑस्ट्रिया, डेन्मार्क और फ्रांस के साथ तीन युद्धों में प्रशा को जीत दिलाई।

4. उन्होंने प्रशा की शक्ति के प्रभुत्व को नए जर्मन राज्य का आधार बनाया।

2. जर्मनी के एकीकरण के बाद प्रशा का प्रभाव नए राज्य पर कैसे दिखाई दिया?

उत्तर : 1. नए जर्मन साम्राज्य की घोषणा प्रशा के राजा के नेतृत्व में की गई।

2. प्रशा द्वारा उठाए गए कदम और कार्रवाइयाँ बाकी जर्मनी के लिए एक मॉडल बन गईं।

3. नए राज्य ने प्रशा की मुद्रा, बैंकिंग और कानूनी प्रणालियों के आधार पर आधुनिकीकरण किया।

3. जर्मन एकीकरण की प्रक्रिया का संक्षेप में पता लगाएँ।

उत्तर : 1. बिस्मार्क इस प्रक्रिया के जनक थे।

2. उन्होंने प्रशा की सेना और नौकरशाही की सहायता ली।

3. उन्होंने ऑस्ट्रिया, डेन्मार्क और फ्रांस के साथ तीन युद्धों में प्रशा को जीत दिलाई।

4. उन्होंने प्रशा की शक्ति के प्रभुत्व को नए जर्मन राज्य का आधार बनाया।

5. सभा ने प्रशा के काइजर विलियम प्रथम के नेतृत्व में नए जर्मन साम्राज्य की घोषणा की थी।

इटली

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 1861 में किसे एकीकृत इटली का राजा घोषित किया गया?

(अ) विक्टर इमेनुएल द्वितीय

(ब) ज्युसेपे मेत्सिनी

(स) ज्युसेपे गैरीबॉल्डी

(द) कावूर **(अ)**

2. गैरीबॉल्डी के नेतृत्व में सशस्त्र स्वयंसेवकों ने किस क्षेत्र में प्रवेश कर स्पेनी शासकों को हटाने में सफलता पाई?

(अ) उत्तरी इटली

(ब) सार्डिनिया–पीडमॉण्ट

(स) दक्षिण इटली और दो सिसिलियों के राज्य

(द) ऑस्ट्रियाई इलाक़ों में **(स)**

3. 'यंग इटली' नामक भूमिगत संगठन की स्थापना किसने की थी ? *(RBSE-2026)*

(अ) कैबूर (ब) गैरीबॉल्डी

(स) इमेनुएल द्वितीय (द) ज्युसेपे मेत्सिनी **(द)**

रिक्तस्थान –

1. सार्डिनिया–पीडमॉण्ट ने 1859 में .... बलों को हराने में सफलता पाई।

उत्तर : ऑस्ट्रियाई

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. ज्युसेपे मेत्सिनी?

उत्तर : 1. ज्यूसेपे मैजिनी ने राष्ट्रवादी आंदोलनों को प्रेरित किया (यंग इटली)।

2. मेत्सिनी ने अपने उद्देश्यों के प्रसार के लिए 'यंग इटली' नामक संगठन की स्थापना की थी।

2. काउंट कैमिलो दे कावूर?

उत्तर : 1. कावूर ने फ्रांस के साथ एक चतुर कूटनीतिक संधि की।

2. इस संधि के माध्यम से सार्डिनिया–पीडमॉण्ट 1859 में ऑस्ट्रियाई बलों को हराने में कामयाब हुआ।

3. इटली के एकीकरण की प्रक्रिया में ज्युसेपे गैरीबॉल्डी की भूमिका क्या थी?

उत्तर : 1. गैरीबॉल्डी ने सशस्त्र स्वयंसेवकों के एक बड़े दल का नेतृत्व किया।

2. उसने 1860 में दक्षिण इटली और दो सिसिलियों के राज्य में प्रवेश किया।

3. उसने स्पेनी शासकों को हटाने के लिए स्थानीय किसानों का समर्थन हासिल करने में सफलता प्राप्त की।

4. इटली के एकीकरण का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। *(RBSE-2023)*

उत्तर : 1. इटली कई राज्यों में विभाजित था (जैसे, सार्डिनिया – पीडमॉण्ट, लोम्बार्डी, वेनेशिया)।

2. मेत्सिनी ने राष्ट्रवादी आंदोलनों को प्रेरित किया (यंग इटली)।

3. सार्डिनिया– ने काउंट कावूर के नेतृत्व में कूटनीति और गठबंधनों का उपयोग कर उत्तर इटली को एकीकृत किया।

4. ग्यूसेपे गैरीबाल्डी और रेड शर्ट्स ने दक्षिणी इटली को मुक्त कराया।

5. दक्षिणी क्षेत्रों को सार्डिनिया–पीडमॉण्ट में मिलाया गया।

6. 1861 में विक्टर इमैनुएल द्वितीय को इटली का राजा घोषित किया गया।

7. वेनेशिया (1866) और रोम (1870) को शामिल कर एकीकरण पूरा हुआ।

8. एकीकरण के बाद क्षेत्रीय और आर्थिक असमानताएँ बनी रहीं।

ब्रिटेन की अजीब दास्तान

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 1688 में अंग्रेज संसद ने किससे ताकत छीन ली?

(अ) चर्च (ब) जनता

(स) राजतंत्र (द) सेना **(स)**

2. आयरलैंड में अंग्रेजों ने किस धर्म मानने वालों को प्रभुत्व बढ़ाने में सहायता की?

(अ) कैथोलिक (ब) प्रोटेस्टेंट

(स) बौद्ध (द) यहूदी **(ब)**

3. वोल्फ टोन ने किस विद्रोह का नेतृत्व किया?

(अ) 1688 का विद्रोह (ब) 1707 का विद्रोह

(स) 1798 का विद्रोह (द) 1801 का विद्रोह **(स)**

4. ब्रिटिश झंडे को किस नाम से जाना जाता है?

(अ) ट्राईकलर (ब) यूनियन जैक

(स) रेड फ्लैग (द) ब्लू क्रॉस **(ब)**

5. ब्रिटेन के राष्ट्रीय गान का नाम क्या है?

(अ) वंदे मातरम् (ब) गॉड सेव अवर नोबल किंग

(स) ला मार्सिले (द) रूल ब्रिटानिया **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. 1707 के एक्ट ऑफ यूनियन से 'यूनाइटेड किंगडम ऑफ .... का गठन हुआ।

उत्तर : ग्रेट ब्रिटेन

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. ब्रिटेन में राष्ट्र–राज्य का निर्माण कैसे हुआ?

उत्तर : 1. यह अचानक हुई क्रांति का परिणाम नहीं था।

2. यह एक लंबी प्रक्रिया का परिणाम था।

3. राजनीतिक और सामाजिक विकास के माध्यम से राष्ट्र–राज्य बना।

2. अठारहवीं सदी से पहले ब्रिटिश द्वीपसमूह के लोगों की पहचान कैसी थी?

उत्तर : 1. लोगों की पहचान नृजातीय थी।

2. अंग्रेज, वेल्श, स्कॉट और आयरिश अलग समूह थे।

3. सभी की अपनी सांस्कृतिक और राजनीतिक परंपराएँ थीं।

3. 1707 के एक्ट ऑफ यूनियन का क्या परिणाम हुआ?

उत्तर : 1. इंग्लैंड और स्कॉटलैंड का संघ हुआ।

2. 'यूनाइटेड किंगडम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन' बना।

3. इंग्लैंड का प्रभुत्व बढ़ गया।

4. स्कॉटलैंड के लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर : 1. उनकी संस्कृति को दबाया गया।

2. गेलिक भाषा पर रोक लगाई गई।

3. राष्ट्रीय पोशाक पहनने से मना किया गया।

4. कई लोगों को अपना वतन छोड़ना पड़ा।

राष्ट्र की दृश्य–कल्पना

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी में कलाकारों ने राष्ट्र को किस रूप में प्रस्तुत किया?

(अ) पशु के रूप में (ब) मानव रूप में/ नारी रूप

(स) राजा के रूप में (द) सैनिक के रूप में **(ब)**

2. न्याय को किस रूप में व्यक्त किया गया?

(अ) तलवार पकड़े महिला

(ब) आँखों पर पट्टी बाँधे महिला

(स) मुकुट पहने महिला

(द) झंडा पकड़े महिला **(ब)**

3. मारियान किन आदर्शों का प्रतीक थी?

(अ) युद्ध और विजय

(ब) धर्म और संस्कृति

(स) स्वतंत्रता और गणतंत्र

(द) व्यापार और उद्योग **(स)**

4. जर्मेनिया किस राष्ट्र का रूपक बन गई थी ? *(RBSE-2022)*

(अ) ब्रिटेन (ब) फ्रांस

(स) जर्मनी (द) रूस **(स)**

रिक्तस्थान –

1. फ्रांसीसी क्रांति के दौरान .... का प्रतीक लाल टोपी थी।

उत्तर : स्वतंत्रता

2. न्याय को आँखों पर पट्टी बाँधे और .... लिए महिला के रूप में दिखाया गया।

उत्तर : तराजू

3. जर्मेनिया बलूत वृक्ष के पत्तों का .... पहनती है।

उत्तर : मुकुट

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. कलाकारों ने राष्ट्र को किस प्रकार प्रस्तुत किया?

उत्तर :1. राष्ट्र का मानवीकरण किया गया।

2. उसे मानव रूप में चित्रित किया गया।

3. राष्ट्र को नारी रूप में दर्शाया गया।

2. फ्रांसीसी क्रांति में नारी रूप का उपयोग क्यों किया गया?

उत्तर : 1. स्वतंत्रता को व्यक्त करने के लिए।

2. न्याय और गणतंत्र के विचारों को दर्शाने के लिए।

3. आदर्शों को प्रतीकों के माध्यम से समझाने के लिए।

3. मारीआन की प्रतिमाएं सार्वजनिक चौकों पर क्यों लगाई गईं? प्रतीक थे। *(RBSE-2022)*

उत्तर : 1. **स्वतंत्रता और गणराज्य का प्रतीक** – मैरिएन स्वतंत्रता, समानता, और बंधुत्व के क्रांतिकारी आदर्शों का प्रतीक थी।

2. **राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा** – मूर्तियों को सार्वजनिक स्थलों पर स्थापित किया गया ताकि लोग राष्ट्र के साथ जुड़ाव महसूस करें।

3. **राष्ट्रीय पहचान का निर्माण** – मैरिएन की छवि सिक्कों और डाक टिकटों पर अंकित कर जनता के बीच गणराज्य की पहचान को मजबूत किया गया।

4. **राष्ट्रवाद का प्रचार** – मूर्तियाँ राष्ट्र को साकार रूप में प्रस्तुत करती थीं और जनता में राष्ट्रवादी भावना फैलाने का माध्यम थीं।

4. जर्मेनिया व मारीआन रूपक की तुलना कीजिए।

(RBSE-2025)

उत्तर : जर्मेनिया –
- जर्मन राष्ट्र का रूपक थी।
- उसे दृश्य अभिव्यक्तियों में दिखाया गया।
- वह बलूत वृक्ष के पत्तों का मुकुट पहनती थी।

मारीआन –
1. फ्रांस के जन–राष्ट्र का प्रतीक।
2. स्वतंत्रता और गणतंत्र की प्रतीक।
3. उसका रूप नारी के रूप में दर्शाया गया।

राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 1871 के बाद यूरोप में गंभीर राष्ट्रवादी तनाव का मुख्य स्रोत कौन सा क्षेत्र था?

(अ) जर्मनी (ब) बाल्कन क्षेत्र
(स) इटली (द) फ्रांस **(ब)**

2. बाल्कन क्षेत्र के निवासियों को आमतौर पर क्या पुकारा जाता था?

(अ) जर्मन (ब) स्लाव
(स) रोमन (द) मैग्यार **(ब)**

3. राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद के मिलन का क्या परिणाम हुआ?

(अ) शांति की स्थापना
(ब) 1914 में प्रथम विश्व युद्ध
(स) यूरोपीय संघ का गठन
(द) उपनिवेशों का अंत **(स)**

रिक्तस्थान –

1. बाल्कन क्षेत्र में शामिल देशों में रोमानिया, बुल्गेरिया, अल्बेनिया, यूनान और .... प्रमुख थे।

उत्तर : सर्बिया

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. बाल्कन क्षेत्र की स्थिति विस्फोटक क्यों हो गई थी?

उत्तर : 1. इस क्षेत्र में अत्यधिक भौगोलिक और जातीय भिन्नता थी।
2. रूमानी राष्ट्रवाद के विचारों का प्रसार हो रहा था।
3. ऑटोमन साम्राज्य का विघटन हो रहा था।
4. बाल्कन के राज्य एक–दूसरे के प्रति ईर्ष्या रखते थे और इलाका हथियाना चाहते थे।
5. सबसे संवेदनशील और तनावपूर्ण क्षेत्र बना दिया था।

2. यूरोपीय शक्तियों के बीच बाल्कन क्षेत्र को लेकर प्रतिस्पर्धा क्यों थी?

उत्तर : 1. यूरोपीय शक्तियाँ व्यापार, उपनिवेश तथा नौसैनिक और सैन्य शक्ति के लिए प्रतिस्पर्धा कर रही थीं।
2. रूस, जर्मनी, इंग्लैंड और ऑस्ट्रो–हंगरी बाल्कन क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहते थे।
3. इन प्रतिस्पर्धाओं के कारण बाल्कन क्षेत्र में कई युद्ध हुए।

3. यूनानी स्वतंत्रता युद्ध?

उत्तर : 1. पंद्रहवीं सदी से यूनान ऑटोमन साम्राज्य का हिस्सा था।
2. यूनानियों का आजादी के लिए संघर्ष 1821 में आरंभ हो गया।

यूनान में राष्ट्रवादियों को निर्वासन में रह रहे यूनानियों के साथ पश्चिमी यूरोप के अनेक लोगों का भी समर्थन मिला।

2 भारत में राष्ट्रवाद

पहला विश्वयुद्ध, खिलाफ़त और असहयोग

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. प्रथम विश्व युद्ध की शुरूआत कब हुई ?

(Model Paper – 2024 & 2026)

(अ) 1914 (ब) 1918
(स) 1929 (द) 1939 **(अ)**

2. बारदोली सत्याग्रह का नेतृत्व किसने किया?

(Model Paper – 2024)

(अ) महात्मा गाँधी (ब) सरदार वल्लभभाई पटेल
(स) भगत सिंह (द) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद **(ब)**

3. गांधीजी की संघर्ष–पद्धति को क्या कहा गया?

(अ) असहयोग (ब) सत्याग्रह
(स) स्वदेशी (द) बहिष्कार **(ब)**

4. जलियांवाला बाग हत्याकांड कब हुआ था?

(RBSE – 2023)

(अ) 9 अप्रैल, 1919 (ब) 10 अप्रैल, 1919
(स) 13 अप्रैल, 1919 (द) 19 अप्रैल, 1919 **(स)**

5. "हिन्द स्वराज" पुस्तक के लेखक कौन है–

(Model Paper – 2023)

(अ) जवाहरलाल नेहरू (ब) नेल्सन मंडेला
(स) महात्मा गांधी (द) भगत सिंह **(स)**

6. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब हुई थी?

(RBSE – 2022)

(अ) 1885 ई. (ब) 1895 ई.
(स) 1905 ई. (द) 1915 ई. **(अ)**

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. उपनिवेशों में राष्ट्रवाद के उदय की प्रक्रिया उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन से जुड़ी हुई क्यों थी।

उत्तर : 1. विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष करते हुए लोगों ने अपनी आपसी एकता को पहचाना।
2. साझा कठिनाइयों और शोषण ने अलग–अलग वर्गों तथा समुदायों को एक–दूसरे से जोड़ दिया।
3. औपनिवेशिक शासन से मुक्ति की इच्छा ने लोगों में राष्ट्र के प्रति लगाव और राष्ट्रीय चेतना पैदा की।
4. इसी कारण उपनिवेशवाद के विरुद्ध चलने वाला आंदोलन धीरे–धीरे राष्ट्रीय आंदोलन का रूप लेता गया।

2. जलियावाला बाग हत्याकांड की घटना को संक्षेप में लिखिये।

(RBSE – 2022)

उत्तर : 1. जलियाँवाला बाग हत्याकांड 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर में हुआ।
2. उस दिन बहुत से लोग वैसाखी मेले में भाग लेने और दमनकारी कानूनों का विरोध करने के लिए वहाँ एकत्र हुए थे।
3. जलियाँवाला बाग चारों ओर से बंद था और वहाँ मौजूद लोगों को मार्शल लॉ लागू होने की जानकारी नहीं थी।
4. जनरल डायर हथियारबंद सैनिकों के साथ वहाँ पहुँचा और बाहर निकलने के रास्ते बंद कर दिए।
5. उसके आदेश पर सैनिकों ने निहत्थी भीड़ पर अंधाधुंध गोलियाँ चला दीं।
6. इस गोलीबारी में सैकड़ों लोग मारे गए।
7. जनरल डायर का उद्देश्य लोगों में भय और आतंक पैदा करना था।

Trick
13 बैसाखी → बंद बाग → डायर → द्वार बंद → गोलीबारी → सैकड़ों मौतें → आतंक

निबंधात्मक प्रश्न –

1. असहयोग आंदोलन से पूर्व की घटनाओं की व्याख्या कीजिए।

(RBSE – 2025)

उत्तर : असहयोग आंदोलन से पूर्व की घटनाएँ –

1. प्रथम विश्वयुद्ध का प्रभाव कर वृद्धि, महँगाई, भर्ती, खाद्य संकट, फ्लू महामारी।
2. गांधीजी का आगमन जनवरी 1915 में भारत लौटे, अहिंसा व सत्याग्रह अपनाया।
3. प्रारंभिक सत्याग्रह चंपारण (1917), खेड़ा (1917), अहमदाबाद (1918)।
4. रॉलट एक्ट का विरोध 1919, बिना मुकदमा जेल, 6 अप्रैल हड़ताल।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

5. सरकारी दमन नेताओं की गिरफ्तारी, गांधीजी पर रोक, अमृतसर गोलीकांड।
6. जलियाँवाला बाग 13 अप्रैल 1919, जनरल डायर की गोलीबारी।
7. खिलाफत आंदोलन मार्च 1919, खिलाफत समिति, अली बंधु।
8. हिंदू–मुस्लिम एकता संयुक्त राष्ट्रीय आंदोलन का प्रयास।
9. असहयोग की स्वीकृति कलकत्ता 1920, नागपुर 1920, अंतिम मंजूरी।

2. शहरों से चलकर असहयोग आंदोलन किस प्रकार देहात में भी फैल गया? *(Model Paper – 2023)*

उत्तर : 1. स्थानीय संघर्षों का जुड़ाव –
युद्ध के बाद किसानों और आदिवासियों के स्थानीय संघर्ष असहयोग आंदोलन से जुड़ गए।

2. अवध का किसान आंदोलन –
नेतृत्व – बाबा रामचंद्र
प्रमुख मुद्दे –
- भारी लगान
- बेगार
- ज़मींदारों का दमन

3. अवध किसान सभा –
स्थापना – अक्टूबर 1920
विस्तार – गाँवों में 300 से अधिक शाखाएँ

4. गूडेम पहाड़ियों का आदिवासी आंदोलन –
क्षेत्र – आंध्र प्रदेश
नेतृत्व – अल्लूरी सीताराम राजू
विरोध –
- वन कानून
- बेगार

संघर्ष का स्वरूप – गुरिल्ला संघर्ष

5. असम के बागानी मज़दूर –
- अधिकारियों की अवज्ञा की।
- बागान छोड़ दिए।
- अपने गाँवों की ओर चल पड़े।

Trick
"असहयोग देहात पहुँचा क्योंकि किसान लगान से, आदिवासी वन कानून से और मज़दूर बागान से परेशान थे।"

3. "सत्याग्रही केवल अहिंसा के सहारे भी अपने संघर्ष में सफल हो सकता है" गांधीजी के विचारों के आधार पर कथन को स्पष्ट कीजिए। *(RBSE – 2026)*

उत्तर : 1. आधार – सत्य की शक्ति एवं सत्य की खोज।
2. संघर्ष का स्वरूप – अन्याय के विरुद्ध, बिना शारीरिक बल के।
3. मुख्य साधन – आत्मबल, प्रेम और अहिंसा।
4. आचरण – प्रतिशोध, आक्रामकता एवं हिंसा से दूरी।
5. उद्देश्य – उत्पीड़क का विनाश नहीं, उसकी चेतना को झिंझोड़ना।
6. पद्धति – बलपूर्वक नहीं, सत्य को समझाकर स्वीकार कराना।
7. विश्वास – अंततः सत्य की विजय होती है।

4. महात्मा गांधी के नेतृत्व में हुए प्रमुख आंदोलनों की विवेचना कीजिए। *(RBSE – 2026)*

उत्तर : महात्मा गांधी के नेतृत्व में हुए प्रमुख आंदोलना

1. चंपारण सत्याग्रह, 1917
क्षेत्र – बिहार का चंपारण।
मुद्दा – दमनकारी बागान व्यवस्था।
उद्देश्य – किसानों को अन्याय के विरुद्ध संगठित करना।

2. खेड़ा सत्याग्रह, 1917
कारण – फसल खराब होना एवं प्लेग महामारी।
समस्या – किसान लगान चुकाने में असमर्थ।
माँग – लगान वसूली में ढील।

3. अहमदाबाद मिल मजदूर आंदोलन, 1918
क्षेत्र – अहमदाबाद।
संबंधित वर्ग – सूती कपड़ा मिल मजदूर।
स्वरूप – मजदूरों के समर्थन में सत्याग्रह।

4. रॉलट सत्याग्रह, 1919
कारण – रॉलट एक्ट का विरोध।
प्रावधान – बिना मुकदमे राजनीतिक कैदियों को दो वर्ष तक जेल।
स्वरूप – राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह।
परिणाम – हिंसा फैलने पर आंदोलन वापस।

5. असहयोग–खिलाफत आंदोलन, 1921
उद्देश्य – खिलाफत का समर्थन एवं स्वराज की प्राप्ति।
कार्यक्रम –
- सरकारी पदवियों की वापसी।
- सरकारी नौकरियों, स्कूलों और अदालतों का बहिष्कार।
- परिषदों एवं विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार।

परिणाम – चौरी–चौरा की हिंसा के बाद फरवरी 1922 में आंदोलन वापस।

6. सविनय अवज्ञा आंदोलन, 1930
कारण – नमक कर एवं औपनिवेशिक कानूनों का विरोध।
प्रमुख घटना – दांडी यात्रा।
6 अप्रैल 1930 – नमक कानून का उल्लंघन।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

प्रमुख गतिविधियाँ –
- नमक एवं वन कानूनों का उल्लंघन।
- विदेशी कपड़ों का बहिष्कार।
- लगान एवं चौकीदारी कर देने से इनकार।

7. गांधी–इरविन समझौता एवं पुनः आंदोलन

समझौता – 5 मार्च 1931

परिणाम –
- सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस।
- दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भागीदारी।

पुनः आरंभ – वार्ता विफल होने और सरकारी दमन के बाद।

स्थिति – 1934 तक आंदोलन की गति धीमी।

8. भारत छोड़ो आंदोलन, 1942

कारण –
- क्रिप्स मिशन की असफलता।
- द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रभाव।

माँग – अंग्रेज भारत छोड़ें।

8 अगस्त 1942 – बंबई में आंदोलन का समर्थन।

नारा – करो या मरो।

भागीदारी – छात्र, मजदूर, किसान एवं महिलाएँ।

Trick 1917–1918–1918–1919–1921/22–1930–1931–1942

17 किसान, 18 किसान–मजदूर, 19 काला कानून, 21 असहयोग, 30 नमक, 31 समझौता, 42 भारत छोड़ो।

Trick "बागान–लगान–मजदूर–कानून–बहिष्कार–नमक–समझौता–करो मरो।"

1. चंपारण = नील/बागान
2. खेड़ा = लगान
3. अहमदाबाद = मजदूर
4. रॉलट = काला कानून
5. असहयोग = बहिष्कार
6. सविनय अवज्ञा = नमक
7. गांधी–इरविन = समझौता
8. भारत छोड़ो = करो या मरो

5. रॉलट एक्ट और उसके विरुद्ध चलाए गए सत्याग्रह का वर्णन कीजिए।

उत्तर : रॉलट एक्ट और उसके विरुद्ध चलाए गए सत्याग्रह

1. रॉलट एक्ट का पारित होना
- रॉलट एक्ट 1919 में प्रस्तावित किया गया।
- भारतीय सदस्यों के भारी विरोध के बावजूद इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल ने इसे पारित कर दिया।

2. प्रमुख प्रावधान
- सरकार को राजनीतिक गतिविधियों को कुचलने के व्यापक अधिकार मिले।
- राजनीतिक कैदियों को बिना मुकदमा चलाए दो वर्ष तक जेल में रखा जा सकता था।

3. आंदोलन की रणनीति
- आंदोलन को अहिंसक नागरिक अवज्ञा के रूप में चलाया जाना था।
- इसकी शुरुआत 6 अप्रैल की राष्ट्रव्यापी हड़ताल से हुई।

4. हड़ताल का प्रभाव
- रेलवे वर्कशॉप्स के कामगार हड़ताल पर चले गए।
- दुकानें बंद कर दी गईं।
- सरकार को रेलवे और टेलीग्राफ जैसी संचार सुविधाओं के बाधित होने का भय हुआ।

5. सरकारी दमन
- अंग्रेजी सरकार ने राष्ट्रवादियों के विरुद्ध दमन शुरू किया।
- अमृतसर के कई स्थानीय नेताओं को हिरासत में लिया गया।
- गांधीजी के दिल्ली प्रवेश पर रोक लगा दी गई।

6. अमृतसर की घटनाएँ
- 10 अप्रैल को अमृतसर में शांतिपूर्ण जुलूस पर पुलिस ने गोली चला दी।
- इसके बाद हिंसक घटनाएँ हुईं।
- स्थिति नियंत्रित करने के लिए मार्शल लॉ लागू कर दिया गया।

Trick "रॉलट ने कैद बढ़ाई, छह को हड़ताल कराई; अंग्रेजों ने दमन किया, दस को गोली चलाकर मार्शल लॉ लगाया।"

"छह को बंद, दस को दमन।"

Trick **"1919 में कानून, 2 साल जेल, 6 को हड़ताल, 10 को गोली।"**

"रॉलट ने बिना मुकदमे 2 साल कैद बढ़ाई, गांधीजी ने 6 अप्रैल को हड़ताल कराई; दुकानें और रेलवे रुके, अंग्रेजों ने दमन किया, 10 अप्रैल अमृतसर में गोली चली और मार्शल लॉ लगा।"

5. गांधीजी ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन क्यों किया और इसे असहयोग आंदोलन से कैसे जोड़ा?

उत्तर : 1. व्यापक जनआंदोलन की आवश्यकता

- रॉलट सत्याग्रह मुख्यतः शहरों और कस्बों तक सीमित रहा।
- गांधीजी पूरे भारत में व्यापक जनाधार वाला आंदोलन खड़ा करना चाहते थे।

2. हिंदू–मुस्लिम एकता

- गांधीजी हिंदुओं और मुसलमानों को निकट लाना आवश्यक मानते थे।
- उन्हें लगा कि खिलाफत का मुद्दा दोनों समुदायों को एकजुट कर सकता है।

3. खिलाफत प्रश्न की पृष्ठभूमि

- प्रथम विश्वयुद्ध में ऑटोमन तुर्की की हार हुई।
- ऑटोमन सम्राट पर कठोर शांति संधि थोपे जाने की आशंका थी।
- ऑटोमन सम्राट को इस्लामी विश्व का आध्यात्मिक नेता 'खलीफा' माना जाता था।

4. खिलाफत समिति का गठन

- खलीफा की तात्कालिक शक्तियों की रक्षा के लिए मार्च 1919 में बंबई में खिलाफत समिति बनाई गई।
- मोहम्मद अली और शौकत अली ने गांधीजी से बातचीत की।
- युवा मुस्लिम नेता संयुक्त जनकार्रवाई की संभावना तलाश रहे थे।

5. राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ाव

- गांधीजी ने खिलाफत आंदोलन को व्यापक राष्ट्रीय संघर्ष से जोड़ने का प्रयास किया।
- सितंबर 1920 के कलकत्ता अधिवेशन में उन्होंने कांग्रेस नेताओं को खिलाफत आंदोलन के समर्थन के लिए राजी किया।

6. असहयोग आंदोलन का निर्णय

- खिलाफत के समर्थन तथा स्वराज की प्राप्ति के लिए असहयोग आंदोलन शुरू करने का निर्णय लिया गया।

आंदोलन के भीतर अलग–अलग धाराएँ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. किस प्रांत में परिषद चुनावों का बहिष्कार नहीं किया गया?

(अ) पंजाब (ब) बंगाल

(स) मद्रास (द) गुजरात **(स)**

2. चौरी–चौरा काण्ड कब हुआ था? *(RBSE – 2022)*

(अ) 1920 (ब) 1922

(स) 1930 (द) 1942 **(ब)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. पिकेटिंग से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : 1. यह प्रदर्शन या विरोध का एक तरीका है।

2. इसमें लोग दुकान, फैक्ट्री या कार्यालय का प्रवेश मार्ग रोकते हैं।

3. उद्देश्य उस संस्था या व्यापार का विरोध करना होता है।

2. असम के बागानी मजदूरों की स्वराज संबंधी समझ और उनके साथ हुई घटनाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर : असम के बागानी मजदूर और स्वराज

1. स्वराज का अर्थ बागान की चारदीवारी से मुक्ति था।
2. वे स्वतंत्र आवाजाही और गाँवों से संपर्क चाहते थे।
3. 1859 के इनलैंड इमिग्रेशन एक्ट ने उन्हें बाँध रखा था।
4. असहयोग आंदोलन से प्रेरित होकर हजारों मजदूर बागान छोड़ गए।
5. हड़तालों के कारण वे रास्ते में फँस गए।
6. पुलिस ने उन्हें पकड़कर कठोर दमन किया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. असहयोग आंदोलन के प्रमुख कारण–

उत्तर : 1. प्रथम विश्वयुद्ध का प्रभाव

- रक्षा व्यय और करों में वृद्धि हुई।
- वस्तुओं की कीमतें लगभग दोगुनी हो गईं।
- जबरन सैनिक भर्ती, फसल खराब होने, खाद्य संकट और फ्लू महामारी से जनता की कठिनाइयाँ बढ़ीं।

2. रॉलट एक्ट

- सरकार को राजनीतिक गतिविधियाँ कुचलने का अधिकार मिला।
- राजनीतिक कैदियों को बिना मुकदमे दो वर्ष तक जेल में रखा जा सकता था।

3. जलियाँवाला बाग हत्याकांड

- 13 अप्रैल 1919 को जनरल डायर ने निहत्थी भीड़ पर गोलियाँ चलवा दीं।
- इससे अंग्रेजी शासन के प्रति जनाक्रोश बढ़ा।

4. सरकारी दमन

- सत्याग्रहियों को अपमानित किया गया और कोड़े मारे गए।
- लोगों को सड़कों पर घिसटकर चलने के लिए मजबूर किया गया।
- कुछ गाँवों पर बम बरसाए गए।

5. खिलाफत प्रश्न

- तुर्की की हार के बाद खलीफा की शक्तियों की रक्षा के लिए खिलाफत आंदोलन शुरू हुआ।
- गांधीजी ने इसके माध्यम से हिंदू–मुस्लिम एकता स्थापित करने का प्रयास किया।

6. स्वराज की प्राप्ति

- गांधीजी का मानना था कि ब्रिटिश शासन भारतीयों के सहयोग पर निर्भर है।
- सहयोग वापस लेने से ब्रिटिश शासन कमजोर हो सकता था और स्वराज प्राप्त किया जा सकता था।

7. कांग्रेस की स्वीकृति

- सितंबर 1920 के कलकत्ता अधिवेशन में असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव स्वीकार हुआ।
- दिसंबर 1920 के नागपुर अधिवेशन में इसके कार्यक्रम को अंतिम स्वीकृति मिली।

असहयोग आंदोलन के प्रमुख प्रभाव

1. शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार

- हजारों विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल–कॉलेज छोड़ दिए।
- अनेक शिक्षकों और प्रधानाध्यापकों ने त्यागपत्र दे दिए।

2. न्यायालयों एवं परिषदों का बहिष्कार

- वकीलों ने मुकदमे लड़ना बंद कर दिया।
- मद्रास को छोड़कर अधिकांश प्रांतों में परिषद चुनावों का बहिष्कार हुआ।

3. विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार

- विदेशी वस्तुओं और कपड़ों का बहिष्कार किया गया।
- विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई।
- शराब की दुकानों पर पिकेटिंग की गई।

4. विदेशी कपड़ों के आयात में कमी

- 1921 से 1922 के बीच विदेशी कपड़ों का आयात आधा रह गया।
- इसका मूल्य 102 करोड़ रुपये से घटकर 57 करोड़ रुपये हो गया।

5. स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन

- लोगों ने भारतीय कपड़े पहनना शुरू किया।
- भारतीय कपड़ा मिलों और हथकरघों का उत्पादन बढ़ा।

6. ग्रामीण क्षेत्रों में विस्तार

- अवध के किसान, गूडेम पहाड़ियों के आदिवासी और असम के बागानी मजदूर आंदोलन से जुड़े।
- आंदोलन शहरों से निकलकर ग्रामीण क्षेत्रों तक फैल गया।

7. किसानों एवं आदिवासियों में जागृति

- किसानों ने भारी लगान, बेगार और जमींदारों के दमन का विरोध किया।
- आदिवासियों ने वन कानूनों और बेगार के विरुद्ध संघर्ष किया।

8. आंदोलन का धीमा पड़ना

- खादी महँगी थी।
- वैकल्पिक भारतीय शिक्षण एवं न्यायिक संस्थाओं का विकास धीमा रहा।
- विद्यार्थी, शिक्षक और वकील सरकारी संस्थानों में लौटने लगे।

9. आंदोलन की वापसी

- चौरी–चौरा में शांतिपूर्ण जुलूस हिंसक संघर्ष में बदल गया।
- आंदोलन में हिंसा बढ़ने के कारण गांधीजी ने फरवरी 1922 में इसे वापस ले लिया।

Trick

युद्ध + रॉलट + जलियाँवाला + दमन + खिलाफत + स्वराज + कांग्रेस

शिक्षा + न्याय + विदेशी वस्तु + आयात कमी + स्वदेशी + गाँव + किसान/आदिवासी + धीमा + वापसी

1919 = रॉलट एक्ट और जलियाँवाला बाग
13 अप्रैल 1919 = जलियाँवाला बाग हत्याकांड
सितंबर 1920 = कलकत्ता अधिवेशन में प्रस्ताव
दिसंबर 1920 = नागपुर अधिवेशन में अंतिम स्वीकृति
फरवरी 1922 = गांधीजी ने आंदोलन वापस लिया

"1919 में अन्याय, 1920 में आंदोलन की तैयारी, 1922 में वापसी।"

निबंधात्मक प्रश्न –

1. विभिन्न राजनीतिक नेता पृथक् निर्वाचिका के सवाल पर क्यों बँटे हुए थे?

(Model Paper – 2023)

उत्तर : 1. दलित नेताओं का दृष्टिकोण

- डॉ. अंबेडकर तथा अन्य दलित नेता पृथक् निर्वाचिका के पक्ष में थे।
- उनके अनुसार दलितों की सामाजिक समस्याओं का समाधान राजनीतिक सशक्तीकरण से संभव था।

2. अलग प्रतिनिधित्व की माँग

- दलितों के लिए पृथक् निर्वाचन क्षेत्र बनाए जाने की माँग की गई।
- इन क्षेत्रों से केवल दलित प्रतिनिधियों को विधायी परिषदों में चुना जाना था।

पढ़ो जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

3. गांधीजी का विरोध

- गांधीजी पृथक् निर्वाचिका के विरुद्ध थे।
- उनका मानना था कि इससे दलितों के सामाजिक एकीकरण की प्रक्रिया धीमी होगी।

4. पूना पैक्ट, 1932

- सितंबर 1932 में पूना पैक्ट हुआ।
- दलितों को आरक्षित सीटें दी गईं।
- मतदान सामान्य निर्वाचन क्षेत्रों के माध्यम से होना तय हुआ।

5. मुस्लिम नेताओं की आशंका

- उन्हें हिंदू बहुसंख्यक प्रभुत्व में मुस्लिम संस्कृति और पहचान खोने का भय था।
- इसलिए वे पृथक् निर्वाचिका और आरक्षित प्रतिनिधित्व चाहते थे।

6. जिन्ना की शर्त

- केंद्रीय सभा में मुसलमानों के लिए आरक्षित सीटें।
- मुस्लिम बहुल प्रांतों में जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व।
- इन शर्तों पर पृथक् निर्वाचिका की माँग छोड़ने की बात कही गई।

7. हिंदू महासभा का विरोध

- हिंदू महासभा ने ऐसे समझौतों का विरोध किया।
- इससे कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच समझौते की संभावनाएँ समाप्त हो गईं।

सविनय अवज्ञा की ओर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. गाँधी इरविन समझौता कब हुआ? *(Model Paper – 2023)*

(अ) 5 जनवरी 1930 (ब) 5 मार्च 1931
(स) 15 फरवरी 1931 (द) 5 मार्च 1930 **(ब)**

2. भारत छोड़ो आंदोलन कब शुरू हुआ था? *(RBSE – 2022)*

(अ) जून 1942 (ब) जुलाई 1942
(स) अगस्त 1942 (द) सितम्बर 1942 **(स)**

3. महात्मा गांधी ने कौन–से गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया था? *(RBSE – 2023)*

(अ) प्रथम (ब) द्वितीय
(स) तृतीय (द) इनमें से कोई नहीं **(ब)**

4. स्वराज पार्टी का गठन किन नेताओं ने किया?

(अ) जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस
(ब) सी.आर. दास और मोतीलाल नेहरू
(स) गांधीजी और वल्लभ भाई पटेल
(द) पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास और जी.डी. बिड़ला **(ब)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. साइमन कमीशन भारत क्यों आया? *(Model Paper – 2022 & 24)*

उत्तर : 1. 1928 में ब्रिटिश सरकार ने भारत भेजा था।
2. उद्देश्य – भारत में संवैधानिक सुधारों की समीक्षा करना और आगे के लिए सुझाव देना था।
3. कमीशन को यह देखना था कि भारत में जो संवैधानिक व्यवस्था लागू है, उसमें क्या परिवर्तन किए जा सकते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं की भूमिका क्या थी?

उत्तर : सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं की भूमिका

1. हजारों महिलाएँ घरों से बाहर आईं।
2. उन्होंने गांधीजी के भाषण सुने।
3. जुलूसों में भाग लिया।
4. नमक बनाया।
5. विदेशी कपड़ों की पिकेटिंग की।
6. शराब की दुकानों की पिकेटिंग की।
7. अनेक महिलाओं ने जेल यात्राएँ कीं।

2. भगत सिंह की क्रांति संबंधी अवधारणा क्या थी?

उत्तर : भगत सिंह की क्रांति संबंधी अवधारणा

1. वे केवल बम और पिस्तौल की उपासना नहीं करते थे।
2. वे समाज में व्यापक क्रांति चाहते थे।
3. स्वतंत्रता को मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार मानते थे।
4. श्रमिक वर्ग को समाज का वास्तविक पोषक मानते थे।
5. जनता की सर्वोपरि सत्ता स्थापित करना उनका लक्ष्य था।
6. वे महान आदर्शों के लिए बलिदान देने को तैयार थे।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. सविनय अवज्ञा आन्दोलन का विस्तार से वर्णन कीजिए। *(Model Paper – 2025 & RBSE 2022 & 23)*

उत्तर : सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930–34)

1. पृष्ठभूमि –

- 1926 के बाद कृषि उत्पादों की कीमतों में गिरावट आई।
- किसानों के लिए लगान का भुगतान करना कठिन हो गया।
- साइमन कमीशन के विरोध से राजनीतिक असंतोष बढ़ा।
- इरविन की डोमीनियन स्टेटस संबंधी घोषणा अस्पष्ट थी।
- दिसंबर 1929 के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज को स्वीकार किया गया।
- 26 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।

मिशन ज्ञान
पढ़ो जब चाहो, जहाँ चाहो, जैसे चाहो!

2. गांधीजी की ग्यारह माँगें

- 31 जनवरी 1930 को गांधीजी ने वायसराय इरविन के सामने ग्यारह माँगें रखीं।
- इनमें नमक कर समाप्त करना प्रमुख माँग थी।
- माँगें अस्वीकार होने पर सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने का निर्णय लिया गया।

3. दांडी यात्रा

- गांधीजी ने 78 स्वयंसेवकों के साथ साबरमती से दांडी तक यात्रा की।
- यात्रा की दूरी लगभग 240 किलोमीटर थी।
- 6 अप्रैल 1930 को नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा गया।
- इसके साथ आंदोलन का औपचारिक आरंभ हुआ।

4. प्रमुख कार्यक्रम

- नमक कानून का उल्लंघन।
- नमक कारखानों के सामने प्रदर्शन।
- विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार।
- शराब की दुकानों पर पिकेटिंग।
- लगान और चौकीदारी कर का भुगतान न करना।
- सरकारी पदों से त्यागपत्र देना।
- वन कानूनों की अवज्ञा करना।

5. सरकारी दमन

- प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं को गिरफ्तार किया गया।
- अब्दुल गफ्फार खान और गांधीजी की गिरफ्तारी के बाद विरोध तेज हुआ।
- सत्याग्रहियों, महिलाओं और बच्चों पर दमन किया गया।
- लगभग एक लाख लोगों को गिरफ्तार किया गया।

6. गांधी–इरविन समझौता

- 5 मार्च 1931 को गांधी–इरविन समझौता हुआ।
- गांधीजी दूसरे गोलमेज सम्मेलन में शामिल हुए।
- सरकार राजनीतिक कैदियों को रिहा करने पर सहमत हुई।
- सम्मेलन असफल होने के बाद 1932 में आंदोलन पुनः प्रारंभ हुआ।
- 1934 तक आंदोलन मंद पड़ गया।

7. सामाजिक भागीदारी

- संपन्न तथा गरीब किसानों ने भाग लिया।
- व्यवसायी और कुछ औद्योगिक मजदूर भी शामिल हुए।
- महिलाओं ने जुलूस, नमक निर्माण, पिकेटिंग और जेल–यात्रा में सक्रिय भागीदारी की।

Trick **"SALT से सविनय अवज्ञा याद।"**

S - Sabarmati से यात्रा
A - April 6 को नमक कानून तोड़ा
L - Lagaan और चौकीदारी कर न देना
T - Tyagpatra सरकारी पदों से

Trick **"26 स्वतंत्रता, 31 माँग, 6 नमक, 5 समझौता।"**

26 जनवरी 1930 = स्वतंत्रता दिवस
31 जनवरी 1930 = 11 माँगें
6 अप्रैल 1930 = नमक कानून तोड़ा
5 मार्च 1931 = गांधी–इरविन समझौता

2. शहरों में असहयोग आंदोलन किस प्रकार फैला ? समझाइए।

(RBSE 2024)

उत्तर : 1. शहरी मध्यवर्ग की भागीदारी

- आंदोलन की शुरुआत शहरी मध्यवर्ग के सक्रिय सहयोग से हुई।

2. शिक्षा संस्थानों का बहिष्कार

- हजारों विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल–कॉलेज छोड़े।
- प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों ने पदों से इस्तीफा दिया।

3. न्यायिक असहयोग

- वकीलों ने सरकारी अदालतों में मुकदमे लड़ना बंद किया।

4. राजनीतिक बहिष्कार

- मद्रास को छोड़कर अधिकांश प्रांतों में विधान परिषद चुनावों का बहिष्कार हुआ।

5. विदेशी वस्तुओं का विरोध

- विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया।
- विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई।
- शराब की दुकानों के सामने पिकेटिंग की गई।

6. व्यापारियों की भूमिका

- व्यापारियों ने विदेशी वस्तुओं का व्यापार और विदेशी व्यापार में निवेश करने से इनकार किया।

7. स्वदेशी को प्रोत्साहन

- आयातित कपड़ों के स्थान पर भारतीय कपड़े अपनाए गए।
- भारतीय कपड़ा मिलों और हथकरघों का उत्पादन बढ़ा।

3. भारत छोड़ो आंदोलन का विस्तार से वर्णन कीजिए।

(RBSE 2024)

उत्तर : भारत छोड़ो आंदोलन का विस्तार से वर्णन

1. आंदोलन की पृष्ठभूमि

- क्रिप्स मिशन की असफलता से भारतीयों में निराशा और असंतोष बढ़ गया।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रभावों के कारण भारत में व्यापक असंतोष उत्पन्न हुआ।
- इन परिस्थितियों में महात्मा गांधी ने अंग्रेजों के पूरी तरह भारत छोड़ने पर जोर दिया।

2. भारत छोड़ो प्रस्ताव

- 14 जुलाई 1942 को वर्धा में कांग्रेस कार्यसमिति ने ऐतिहासिक 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित किया।
- इस प्रस्ताव में सत्ता का तत्काल भारतीयों को हस्तांतरण करने की माँग की गई।
- साथ ही अंग्रेजों से भारत छोड़ने के लिए कहा गया।

3. आंदोलन का आरंभ

- 8 अगस्त 1942 को बंबई में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने भारत छोड़ो प्रस्ताव का समर्थन किया।
- इस अवसर पर पूरे देश में व्यापक स्तर पर अहिंसक जन–संघर्ष चलाने का आह्वान किया गया।
- महात्मा गांधी ने इसी अवसर पर प्रसिद्ध 'करो या मरो' का नारा दिया।

4. आंदोलन का प्रसार

- भारत छोड़ो आंदोलन का आह्वान देश के अधिकांश भागों में तेजी से फैल गया।
- लोगों ने स्वतः ही आंदोलन में भाग लेना शुरू कर दिया।
- आंदोलन के कारण अनेक स्थानों पर राज्य–व्यवस्था ठप्प हो गई।
- लोगों ने हड़तालें कीं।
- राष्ट्रीय गीतों और नारों के साथ प्रदर्शन तथा जुलूस निकाले गए।

5. जनभागीदारी

- यह वास्तव में एक व्यापक जन–आंदोलन था।
- इसमें हजारों साधारण लोगों ने भाग लिया।
- छात्रों, मजदूरों और किसानों ने आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई।
- जयप्रकाश नारायण, अरुणा आसफ अली और राममनोहर लोहिया जैसे नेताओं ने भी सक्रिय भागीदारी की।
- अनेक महिलाओं ने आंदोलन में योगदान दिया, जिनमें–
  बंगाल की मातंगिनी हाजरा
  असम की कनकलता बरुआ
  उड़ीसा की रमा देवी प्रमुख थीं।

6. अंग्रेजी सरकार का दमन

- अंग्रेजों ने आंदोलन को दबाने के लिए अत्यधिक बल का प्रयोग किया।
- कठोर दमन के बावजूद आंदोलन को तुरंत समाप्त नहीं किया जा सका।
- अंग्रेजी सरकार को इसे दबाने में एक वर्ष से अधिक समय लग गया।

Trick — **"14 जुलाई वर्धा में बात, सत्ता दो भारत के हाथ।"**

14 जुलाई 1942
वर्धा
सत्ता भारतीयों को सौंपने की माँग

Trick — J-A-L

J = Jayprakash Narayan
A = Aruna Asaf Ali
L = Lohia

Trick — **"बंगाल की माता, असम की कनक, उड़ीसा की रमा।"**

मातंगिनी हाजरा	बंगाल
कनकलता बरुआ	असम
रमा देवी	उड़ीसा

सामूहिक अपनेपन का भाव

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'वन्दे मातरम्' किसकी स्तुति में लिखा गया था?
(अ) ब्रिटिश शासन की
(ब) मातृभूमि की
(स) स्वदेशी उद्योगों की
(द) प्राचीन राजाओं की **(ब)**

2. रमा देवी व कनकलता बरुआ किस क्षेत्र से थीं?
(अ) महाराष्ट्र/गुजरात
(ब) उड़ीसा/असम
(स) उत्तर प्रदेश/उड़ीसा
(द) तमिलनाडु/बंगाल **(ब)**

3. नटेसा शास्त्री की पुस्तक का नाम क्या था?

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

(अ) आनन्दमठ
(ब) भारतवर्ष का इतिहास
(स) द फोकलोर्स ऑफ सदर्न इंडिया
(द) हिंद स्वराज **(स)**

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने भारत माता की कल्पना के निर्माण में क्या योगदान दिया?

उत्तर : 1. उन्होंने 1870 के दशक में 'वन्दे मातरम्' लिखा।
2. गीत मातृभूमि की स्तुति के रूप में लिखा गया था।
3. इसे बाद में 'आनन्दमठ' उपन्यास में शामिल किया।
4. गीत स्वदेशी आंदोलन में खूब गाया गया।
5. इससे राष्ट्र को माता के रूप में देखने की भावना मजबूत हुई।

2. भारत छोड़ो आंदोलन के प्रमुख नेताओं के नाम लिखिए।

उत्तर : 1. जयप्रकाश नारायण।
2. अरुणा आसफ अली।
3. राम मनोहर लोहिया।
4. मातांगिनी हाजरा।
5. कनकलता बरुआ।
6. रमा देवी।

Trick

"जरा मत कर राम"
ज → जयप्रकाश नारायण
रा → अरुणा आसफ अली
म → राम मनोहर लोहिया
त → मातांगिनी हाजरा
क → कनकलता बरुआ
र → रमा देवी

निबंधात्मक प्रश्न –

1. "भारत के इतिहास की पुनर्व्याख्या राष्ट्रवाद की भावना पैदा करने का एक और साधन थी।" कथन की व्याख्या कीजिए। *(Model Paper – 2026)*

उत्तर : 1. राष्ट्रीय गौरव की आवश्यकता
- उन्नीसवीं सदी के अंत में भारतीयों ने राष्ट्रीय गर्व के लिए इतिहास को नए ढंग से प्रस्तुत करना आवश्यक समझा।

2. **औपनिवेशिक धारणा का विरोध**
- अंग्रेज भारतीयों को पिछड़ा और आदिम बताते थे।
- उनका तर्क था कि भारतीय स्वयं शासन करने में सक्षम नहीं हैं।

3. **गौरवशाली अतीत की खोज**
- भारतीयों ने अपने प्राचीन और समृद्ध इतिहास की खोज प्रारंभ की।
- प्राचीन भारत को कला, वास्तुकला, विज्ञान, गणित, धर्म, संस्कृति, कानून, दर्शन, हस्तकला और व्यापार में उन्नत बताया गया।

4. **पतन और पराधीनता**
- राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने बताया कि गौरवशाली युग के बाद भारत का पतन हुआ और वह पराधीन हो गया।

5. **राष्ट्रवाद पर प्रभाव**
- प्राचीन उपलब्धियों से लोगों में राष्ट्रीय गर्व उत्पन्न हुआ।
- ब्रिटिश शासन की दुर्दशा से मुक्ति के लिए संघर्ष की प्रेरणा मिली।

2. राष्ट्रवाद का विचार भारतीय लोक कथाओं को पुनर्जीवित करने के आंदोलन से भी मजबूत हुआ । कथन की व्याख्या कीजिए। *(RBSE – 2023 & 2025)*

उत्तर : 1. लोक साहित्य का संग्रह
- उन्नीसवीं सदी के अंत में राष्ट्रवादियों ने लोक कथाओं, लोकगीतों और जनश्रुतियों का संग्रह शुरू किया।
- वे भाटों और चारणों से सामग्री एकत्र करने के लिए गाँव–गाँव गए।

2. **सांस्कृतिक संरक्षण**
- लोक कथाओं को भारतीय परंपरागत संस्कृति की सच्ची अभिव्यक्ति माना गया।
- विदेशी प्रभाव से दूषित होती संस्कृति को बचाने के लिए लोक परंपराओं का संरक्षण आवश्यक समझा गया।

3. **राष्ट्रीय पहचान का विकास**
- लोक साहित्य ने लोगों को अपनी साझा संस्कृति और राष्ट्रीय पहचान समझने में सहायता दी।
- इससे गौरवशाली अतीत के प्रति गर्व की भावना उत्पन्न हुई।

4. **प्रमुख प्रयास**
- **रवीन्द्रनाथ टैगोर** – बंगाल में लोक–गाथाओं, बालगीतों और मिथकों का संग्रह तथा लोक परंपराओं का पुनर्जीवन।
- **नटेसा शास्त्री** – तमिल लोक कथाओं का चार खंडों में "द फोकलोर्स ऑफ सदर्न इंडिया" नाम से प्रकाशन।

5. **लोक कथाओं का महत्त्व**
- लोक कथाओं को राष्ट्रीय साहित्य माना गया।
- इन्हें लोगों के वास्तविक विचारों और विशेषताओं की विश्वसनीय अभिव्यक्ति समझा गया।

3. भारत में राष्ट्रवाद के विकास के कारणों का विस्तार से वर्णन कीजिए। *(Model Paper – 2025 & 26)*

उत्तर : 1. **औपनिवेशिक दमन**

- अंग्रेजी शासन के उत्पीड़न और दमन ने विभिन्न वर्गों को एकजुट किया।

2. **आर्थिक संकट**

- प्रथम विश्वयुद्ध से कर, कीमतें और आर्थिक कठिनाइयाँ बढ़ीं।
- जबरन सैनिक भर्ती, फसल खराब होने और महामारी से असंतोष फैला।

3. **गांधीजी का नेतृत्व**

- सत्याग्रह और अहिंसा ने जनता को संघर्ष का नया मार्ग दिया।

4. **दमनकारी घटनाएँ**

- रॉलट एक्ट और जलियाँवाला बाग हत्याकांड से अंग्रेजी शासन के प्रति आक्रोश बढ़ा।

5. **जन–आंदोलनों का विस्तार**

- खिलाफत और असहयोग आंदोलनों ने हिंदू–मुस्लिम एकता और जनभागीदारी बढ़ाई।
- किसानों, आदिवासियों, मजदूरों, विद्यार्थियों और महिलाओं की भागीदारी से आंदोलन व्यापक हुआ।

6. **स्वराज की चेतना**

- साइमन कमीशन के विरोध और पूर्ण स्वराज की माँग ने राष्ट्रीय चेतना मजबूत की।

7. **प्रमुख राष्ट्रीय आंदोलन**

- दांडी यात्रा, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलन ने स्वतंत्रता संघर्ष को जन–आंदोलन बनाया।

8. **राष्ट्रीय प्रतीकों की भूमिका**

- भारत माता, वन्दे मातरम्, तिरंगा, चरखा, लोककथाएँ और गौरवशाली इतिहास ने राष्ट्रवाद को सुदृढ़ किया।

4. भारत माता और जर्मेनिया की छवि की तुलना–

उत्तर : 1. **राष्ट्र का मानवीकरण**

- दोनों छवियाँ अपने–अपने राष्ट्र का मानवीय रूप प्रस्तुत करती हैं।
- भारत माता भारत की तथा जर्मेनिया जर्मन राष्ट्र की प्रतीक है।

2. **मातृभूमि का स्वरूप**

- भारत माता को माँ के रूप में चित्रित किया गया है।
- इससे श्रद्धा, अपनापन और बलिदान की भावना उत्पन्न होती है।

3. **अबनीन्द्रनाथ टैगोर की भारत माता**

- **स्वरूप** – शांत, गंभीर, दैवी और संन्यासिनी।
- हाथों में शिक्षा, भोजन, वस्त्र और माला दर्शाए गए हैं।

4. **शक्ति का प्रतीक**

- दूसरी छवि में भारत माता के हाथ में त्रिशूल है।
- हाथी और शेर शक्ति तथा सत्ता के प्रतीक हैं।

3 भूमंडलीकृत विश्व का बनना

आधुनिक युग से पहले

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. कथन–कारण *(RBSE – 2026)*

कथन – भारतीय उपमहाद्वीप सोलहवीं सदी में हिंद महासागर के व्यापारिक प्रवाहों का महत्त्वपूर्ण केंद्र था।

कारण – उसकी भौगोलिक स्थिति एशिया के विभिन्न भागों और यूरोप को जोड़ती थी।

उत्तर : कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

2. कथन–कारण *(RBSE – 2026)*

कथन – पुर्तगाली और स्पेनिश सेनाओं ने केवल परंपरागत हथियारों के कारण अमेरिका पर विजय प्राप्त की।

कारण – यूरोपीय सैनिक अपने साथ चेचक जैसी बीमारियों के कीटाणु अमेरिका ले गए थे।

उत्तर : कथन गलत है, लेकिन कारण सही है। यूरोपीय विजेताओं का सबसे शक्तिशाली हथियार चेचक जैसी बीमारी के कीटाणु थे।

3. कथन–कारण *(RBSE – 2022)*

कथन – आलू, मक्का, टमाटर और मिर्च लगभग पाँच सौ वर्ष पहले यूरोप और एशिया में उपलब्ध नहीं थे।

कारण – ये खाद्य पदार्थ मूल रूप से अमेरिका से आए थे।

उत्तर : कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

4. कथन–कारण *(RBSE – 2026)*

कथन – पेरू और मैक्सिको की चाँदी ने यूरोप की संपदा बढ़ाई।

कारण – इस चाँदी ने एशिया के साथ यूरोप के व्यापार को गति प्रदान की।

उत्तर : कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. अमेरिका में फैलकर पूरे समुदायों को नष्ट करने वाली बीमारी का नाम बताइए। *(RBSE – 2023, 2025, 2026)*

उत्तर : चेचक।

2. सोलहवीं सदी के मध्य में अमेरिका में चेचक किसके माध्यम से पहुँची? *(RBSE – 2025)*

उत्तर : स्पेनिश सैनिकों और अधिकारियों के माध्यम से।

3. सन् 1845 से 1849 के आलू अकाल से सबसे अधिक प्रभावित देश कौन–सा था? *(RBSE – 2025 & 2026)*

उत्तर : आयरलैंड।

4. आयरलैंड में आलू अकाल का प्रमुख कारण क्या था? *(RBSE – 2022)*

उत्तर : बीमारी के कारण आलू की फसल नष्ट हो गई थी, जबकि आयरलैंड के गरीब काश्तकार भोजन के लिए आलू पर अत्यधिक निर्भर थे।

5. आलू ने यूरोप के गरीब लोगों के जीवन में क्या परिवर्तन किया? *(RBSE – 2025)*

उत्तर : आलू के उपयोग से गरीबों का भोजन बेहतर हुआ और उनकी औसत आयु बढ़ने लगी।

6. सिंधु घाटी सभ्यता 3000 ईसा पूर्व में समुद्री व्यापार द्वारा किस क्षेत्र से जुड़ी हुई थी? *(RBSE – 2026)*

उत्तर : पश्चिमी एशिया से।

7. पूर्व–आधुनिक विश्व में वैश्विक व्यापारिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान का सबसे जीवंत उदाहरण क्या था?

उत्तर : सिल्क मार्ग अथवा रेशम मार्ग।

8. सिल्क मार्ग से चीन की कौन–सी प्रमुख वस्तु पश्चिम की ओर भेजी जाती थी?

उत्तर : चीनी रेशम।

9. बौद्ध धर्म के कई दिशाओं में प्रसार के प्रमुख कारण क्या थे? *(RBSE – 2024)*

उत्तर : सिल्क मार्ग, व्यापारिक संपर्क तथा व्यापारियों, यात्रियों और बौद्ध भिक्षुओं की गतिविधियाँ।

10. 'बुक ऑफ मार्वल्स' किससे संबंधित है? *(RBSE – 2025)*

उत्तर : मार्को पोलो से।

11. एल डोराडो से क्या अभिप्राय है? *(RBSE – 2025)*

उत्तर : दक्षिण अमेरिका में स्थित सोने का काल्पनिक अथवा किंवदंती–प्रसिद्ध शहर।

12. अठारहवीं सदी में अमेरिका में उत्पादित कपास और चीनी मुख्य रूप से किस बाजार के लिए थीं? *(RBSE – 2025)*

उत्तर : यूरोपीय बाजार के लिए।

13. सोलहवीं सदी में दुनिया के 'सिकुड़ने' का क्या अर्थ है? *(RBSE – 2023 & 2026)*

उत्तर : इसका अर्थ दूर–दराज के क्षेत्रों का समुद्री मार्गों, व्यापार, यात्राओं, वस्तुओं, ज्ञान और संस्कृतियों के माध्यम से तेजी से एक–दूसरे से जुड़ना है।

14. अठारहवीं सदी तक विश्व के सबसे धनी देशों में किन दो देशों की गणना होती थी?

उत्तर : चीन और भारत।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पूर्व–आधुनिक काल में व्यापार और लंबी दूरी की यात्राओं ने बीमारियों के प्रसार में किस प्रकार सहायता की? *(RBSE – 2026)*

उत्तर : 1. यात्री, व्यापारी, पुजारी और तीर्थयात्री अपनी यात्राओं में वस्तुओं और विचारों के साथ कीटाणु तथा बीमारियाँ भी एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते थे।
2. यूरोपीय सैनिक चेचक जैसी बीमारियाँ अमेरिका ले गए।
3. अमेरिका के मूल निवासियों में इन बीमारियों के विरुद्ध प्रतिरोधक क्षमता नहीं थी।

2. अमेरिका के उपनिवेशीकरण में चेचक जैसी बीमारियों ने किस प्रकार सहायता की? *(RBSE – 2023 & 2026)*

उत्तर : 1. स्पेनिश सैनिक अपने साथ चेचक के कीटाणु अमेरिका ले गए।
2. लंबे समय तक दुनिया से अलग रहने के कारण अमेरिका के मूल निवासियों में रोग प्रतिरोधक क्षमता नहीं थी।
3. चेचक ने अनेक समुदायों को नष्ट कर दिया।
4. इससे स्थानीय प्रतिरोध कमजोर हुआ।
5. परिणामस्वरूप यूरोपीय विजेताओं के लिए अमेरिका पर अधिकार करना आसान हो गया।

3. भोजन लंबी दूरी के सांस्कृतिक आदान–प्रदान का उदाहरण कैसे है? *(RBSE – 2024 & 2026)*

उत्तर : 1. माना जाता है कि नूडल्स चीन से पश्चिम पहुँचे और उनसे स्पैघेत्ती का विकास हुआ।
2. अरब यात्रियों के माध्यम से पास्ता सिसली पहुँचा।
3. आलू, मक्का, टमाटर, मिर्च, मूँगफली और शकरकंद जैसे खाद्य पदार्थ अमेरिका से यूरोप तथा एशिया पहुँचे।

3. उन्नीसवीं सदी तक यूरोपीय लोग अमेरिका की ओर क्यों पलायन करते थे? *(RBSE – 2025 & 2026)*

उत्तर : यूरोप की परिस्थितियाँ–
- यूरोप में गरीबी, भूख, भीड़ और बीमारियाँ व्यापक थीं।
- धार्मिक टकरावों के कारण असंतुष्ट लोगों को दंडित किया जाता था।

अमेरिका के आकर्षण –
- विशाल भूमि।
- फसलें।
- खनिज संसाधन।
- रोजगार के अवसर।

4. यूरोपीय खोजों और प्रवेश ने व्यापार, ज्ञान तथा परंपराओं के प्रसार को कैसे प्रभावित किया? *(RBSE – 2023 & 2024)*

उत्तर : 1. यूरोपीय जहाजियों ने एशिया का समुद्री मार्ग खोजा और अमेरिका पहुँचे।
2. इससे दूरस्थ क्षेत्रों के बीच वस्तुओं और लोगों की आवाजाही बढ़ी।
3. अमेरिका की फसलें और खनिज दूसरे क्षेत्रों में पहुँचे।
4. हिंद महासागर के पुराने व्यापारिक प्रवाहों का विस्तार हुआ।
5. इन व्यापारिक प्रवाहों की दिशा यूरोप की ओर भी मुड़ गई।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. सिल्क मार्गों ने व्यापार और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के माध्यम से विश्व को किस प्रकार जोड़ा? *(RBSE – 2026 & Model Paper – 2023)*

उत्तर : सिल्क मार्गों ने व्यापार और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के माध्यम से विश्व को जोड़ा –

1. सिल्क मार्ग जमीन और समुद्र से होकर गुजरने वाले व्यापारिक मार्गों का विशाल जाल था।
2. इन मार्गों ने एशिया के विभिन्न क्षेत्रों को आपस में जोड़ा।
3. इन्होंने एशिया को यूरोप और उत्तरी अफ्रीका से भी जोड़ा।
4. वस्तुओं का व्यापार –
   - चीनी रेशम और पॉटरी दूसरे क्षेत्रों में पहुँचती थी।
   - भारत तथा दक्षिण–पूर्व एशिया के कपड़े और मसाले अन्य क्षेत्रों में पहुँचते थे।
   - यूरोप से सोना और चाँदी एशिया आते थे।
5. धर्म और संस्कृति का प्रसार –
   - ईसाई मिशनरी विभिन्न क्षेत्रों में पहुँचे।
   - मुस्लिम धर्मोपदेशक विभिन्न क्षेत्रों में पहुँचे।
   - बौद्ध भिक्षु भी इन मार्गों से विभिन्न क्षेत्रों में गए।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें

> **Trick** "सिल्क = S-I-L-K"
>
> S - Sea और land routes
> I - India और China की वस्तुएँ
> L - Link between Asia, Europe, Africa
> K – Knowledge/culture का प्रसार

उन्नीसवीं शताब्दी (1815–1914)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. ब्रिटिश भारतीय सरकार ने गेहूँ और कपास की खेती हेतु 'केनाल कॉलोनी' कहाँ बसाई थी?

(RBSE – 2023 & Model Paper – 2025 & 2026)

(अ) केरल (ब) बिहार
(स) पंजाब (द) मध्य प्रदेश **(स)**

2. अफ्रीका में 1890 के दशक में रिंडरपेस्ट नामक बीमारी कहाँ तेजी से फैली?

(RBSE – 2022, 2024, 2026 & Model Paper – 2025)

(अ) यूरोप (ब) अफ्रीका
(स) अमेरिका (द) ऑस्ट्रेलिया **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. भारत से विदेशों में भेजे जाने वाले अनुबंधित श्रमिक .... नाम से जाने जाते थे। *(Model Paper – 2022 & 23)*

उत्तर : गिरमिटिया मजदूर।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. कॉर्न लॉ क्या थे?

उत्तर : ब्रिटिश सरकार द्वारा मक्का और अन्य खाद्यान्नों के आयात पर लगाई गई पाबंदियों से संबंधित कानूनों को कॉर्न लॉ कहा जाता था।

2. भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के प्रमुख गंतव्य कौन–से थे?

उत्तर : त्रिनिदाद, गुयाना, सूरीनाम, मॉरिशस और फिजी। कुछ मजदूर सीलोन, मलाया और असम के चाय बागानों में भी भेजे गए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. ब्रिटेन में कॉर्न लॉ क्यों समाप्त किए गए?

(RBSE – 2023)

उत्तर : 1. ब्रिटेन में जनसंख्या बढ़ने से भोजन की माँग और कीमतें बढ़ गई थीं।
2. महँगे भोजन से शहरी निवासी परेशान थे।
3. उद्योगपति श्रमिकों के लिए सस्ता भोजन चाहते थे।
4. उद्योगपतियों और शहरी निवासियों के दबाव में सरकार को कॉर्न लॉ समाप्त करने पड़े।

2. सन् 1885 में यूरोपीय शक्तियाँ बर्लिन में क्यों मिली थीं?

उत्तर : 1. अफ्रीका के क्षेत्रों को आपस में बाँटने के लिए।
2. अफ्रीकी क्षेत्रों पर औपनिवेशिक अधिकार स्थापित करने के लिए।

3. यूरोपीय शक्तियाँ अफ्रीका की ओर क्यों आकर्षित हुईं?

उत्तर : 1. अफ्रीका में विशाल भूक्षेत्र थे।
2. वहाँ खनिजों के बड़े भंडार थे।
3. यूरोपीय लोग वहाँ बागानी खेती स्थापित करना चाहते थे।
4. वे खदानों से खनिज निकालकर यूरोप भेजना चाहते थे।

3. भारत और ब्रिटेन के व्यापार के संदर्भ में 'होम चार्जेज' क्या थे? *(Model Paper – 2026)*

उत्तर : भारत और ब्रिटेन के व्यापार के संदर्भ में 'होम चार्जेज'–

1. भारत के साथ व्यापार से ब्रिटेन को मिलने वाले अधिशेष से होम चार्जेज का भुगतान किया जाता था।
2. होम चार्जेज में निम्नलिखित शामिल थे –
   - ब्रिटिश अधिकारियों और व्यापारियों द्वारा अपने देश भेजी गई निजी रकम।
   - भारत के बाहरी कर्ज पर ब्याज।
   - ब्रिटिश अधिकारियों की पेंशन।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमय के तीन प्रकार के प्रवाहों को भारत से संबंधित उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर :

1. व्यापार का प्रवाह –

- इसका अर्थ वस्तुओं का एक देश से दूसरे देश जाना है।
- भारत निम्नलिखित वस्तुओं का निर्यात करता था–
  - ♦ कपड़े।
  - ♦ मसाले।

2. श्रम का प्रवाह

- भारतीय गिरमिटिया मजदूर निम्नलिखित स्थानों पर गएरू
  - ♦ मॉरिशस।
  - ♦ फिजी।
  - ♦ कैरीबियाई द्वीप।

मिशन ज्ञान
पढ़ें सब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

3. **पूँजी का प्रवाह**

- इसका अर्थ अल्प या दीर्घ अवधि के लिए विदेशों में निवेश करना है।
- भारतीय साहूकार और चेट्टियार निर्यातोन्मुखी खेती के लिए कर्ज देते थे।

Trick **माल गया, मजदूर गया, मनी गई।**

माल = व्यापार
मजदूर = श्रम
मनी = पूँजी

"मॉ–फि–कै में मजदूर गए भाई।"

मॉ = मॉरिशस
फि = फिजी
कै = कैरीबियाई द्वीप

2. ब्रिटेन में जनसंख्या वृद्धि के आर्थिक प्रभाव बताइए।

उत्तर : 1. भोजन की माँग और कीमतों में वृद्धि
2. खाद्यान्न आयात पर पाबंदी
3. शहरी निवासियों और उद्योगपतियों पर प्रभाव
4. कॉर्न लॉ की समाप्ति

3. कॉर्न लॉ समाप्त होने के परिणामों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : 1. सस्ते खाद्य पदार्थों का आयात
2. ब्रिटिश किसानों पर प्रभाव
3. बेरोजगारी और पलायन
4. उपभोग में वृद्धि
5. अन्य क्षेत्रों में खेती का विस्तार

4. उन्नीसवीं सदी की विश्व अर्थव्यवस्था के निर्माण में तकनीक की भूमिका समझाइए। *(RBSE – 2022 & 2023)*

उत्तर : 1. रेलवे
2. भाप के जहाज
3. टेलिग्राफ
4. परिवहन लागत में कमी
5. रेफ्रिजरेशन वाले जहाज

5. रिंडरपेस्ट ने अफ्रीकी लोगों और अर्थव्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया? *(RBSE – 2022, 2023, 2024)*

उत्तर : 1. बीमारी का प्रसार
2. मवेशियों की मृत्यु –इसने लगभग 90 प्रतिशत मवेशियों को मार दिया।
3. आजीविका पर प्रभाव –पशुओं पर निर्भर अफ्रीकियों की आजीविका समाप्त हो गई।
4. पशुओं पर औपनिवेशिक नियंत्रण
5. मजदूरी की बाध्यता आजीविका नष्ट होने के कारण अफ्रीकियों को मजदूरी करने के लिए बाध्य होना पड़ा।

6. भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की दशा का वर्णन कीजिए।
(RBSE – 2023 & Model Paper – 2024)

उत्तर : भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की दशा –

1. **अनुबंध के अंतर्गत विदेश भेजना–** उन्हें निम्नलिखित कार्यों के लिए भेजा जाता था–
   - चीनी रेशम और पॉटरी दूसरे क्षेत्रों में पहुँचती थी।
   - बागानों में कार्य।
   - खदानों में कार्य।
   - निर्माण कार्य।
2. **गलत जानकारी –**
   - भर्ती एजेंट उन्हें काम के बारे में गलत जानकारी देते थे।
   - यात्रा की परिस्थितियों के बारे में गलत जानकारी दी जाती थी।
   - जीवन की परिस्थितियों के बारे में भी गलत जानकारी दी जाती थी।
3. **अपहरण** – कई मजदूरों का अपहरण भी किया जाता था।
4. **कठोर कार्य परिस्थितियाँ –**
   - कार्यस्थलों पर स्थितियाँ कठोर थीं।
   - मजदूरों के पास बहुत कम कानूनी अधिकार थे।
5. **वेतन कटौती और दंड**
6. **नई दास प्रथा** – इन परिस्थितियों के कारण इसे 'नई दास प्रथा' कहा गया।

7. गिरमिटिया मजदूरों ने सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के कौन–से नए रूप विकसित किए? *(RBSE – 2023)*

उत्तर : 1. संस्कृतियों का मिश्रण – गिरमिटिया मजदूरों ने भारतीय और स्थानीय संस्कृतियों को मिलाकर नए रूप विकसित किए।
2. 'होसे' उत्सव – त्रिनिदाद में मुहर्रम का जुलूस 'होसे' नामक उत्सव बन गया।
3. चटनी म्यूजिक – त्रिनिदाद और गुयाना में चटनी म्यूजिक का विकास हुआ।
4. रास्ताफारियानवाद – रास्ताफारियानवाद में भारतीय और कैरीबियाई संस्कृतियों के संपर्क की झलक दिखाई देती है।

8. उन्नीसवीं सदी की विश्व अर्थव्यवस्था में भारतीय व्यापार की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

RECORDED VIDEOS | LIVE CLASSES | PDF NOTES | e-BOOKS | QUIZ | TEST SERIES
DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

उत्तर : **1. निर्यात के स्वरूप में परिवर्तन** – सूती कपड़ों का निर्यात घटा, कच्चे माल का निर्यात बढ़ा।

2. प्रमुख निर्यात – भारत से कच्चे कपास का बड़े पैमाने पर निर्यात हुआ। नील का निर्यात हुआ। अफीम का निर्यात हुआ।

3. भारत–ब्रिटेन व्यापार

4. ब्रिटेन का व्यापार अधिशेष

5. ब्रिटेन भारत के साथ व्यापार अधिशेष की स्थिति में रहता था।

6. इस अधिशेष से वह अपने व्यापारिक घाटे का भुगतान करता था।

7. इसी अधिशेष से होम चार्जेज का भुगतान किया जाता था।

महायुद्धों के बीच अर्थव्यवस्था

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. प्रथम विश्वयुद्ध का प्रारम्भ कब हुआ था?
(Model Paper – 2024 & 2026)

(अ) 1904 ई. (ब) 1914 ई.
(स) 1918 ई. (द) 1939 ई. **(ब)**

2. प्रथम विश्वयुद्ध में मित्र राष्ट्रों के खेमे में कौन–सा राष्ट्र शामिल नहीं था?
(RBSE – 2023 & Model Paper – 2025)

(अ) ब्रिटेन (ब) फ्रांस
(स) जर्मनी (द) रूस **(स)**

3. विश्वव्यापी आर्थिक महामंदी की शुरुआत कब हुई?
(RBSE – 2022 & Model Paper – 2023)

(अ) 1919 ई. (ब) 1929 ई.
(स) 1933 ई. (द) 1935 ई. **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. प्रथम महायुद्ध मुख्य रूप से .... महाद्वीप में लड़ा गया। *(RBSE – 2023)*

उत्तर : यूरोप

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. प्रथम विश्वयुद्ध को पहला आधुनिक औद्योगिक युद्ध क्यों कहा गया? *(Model Paper – 2023)*

उत्तर : इसमें मशीनगनों, टैंकों, हवाई जहाजों और रासायनिक हथियारों का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया गया था।

2. बृहत उत्पादन का प्रसिद्ध प्रणेता कौन था?
(RBSE – 2023)

उत्तर : हेनरी फोर्ड।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. प्रथम विश्वयुद्ध के यूरोप की अर्थव्यवस्था और समाज पर क्या प्रभाव पड़े? *(RBSE – 2022 & 2024)*

उत्तर : प्रथम विश्वयुद्ध के यूरोप की अर्थव्यवस्था और समाज पर प्रभाव –

1. जनहानि प्रथम विश्वयुद्ध में 90 लाख से अधिक लोग मारे गए। लगभग 2 करोड़ लोग घायल हुए।
2. श्रमशक्ति और पारिवारिक आय पर प्रभाव – मृतकों और घायलों में अधिकतर कामकाजी आयु के पुरुष थे। इससे श्रमशक्ति घट गई। पारिवारिक आय भी घट गई।
3. उद्योगों का पुनर्गठन।
4. महिलाओं की भूमिका – पुरुषों के मोर्चे पर जाने के बाद महिलाओं ने उनके कार्य सँभाले।
5. ब्रिटेन और अमेरिका की आर्थिक स्थिति–ब्रिटेन ने अमेरिका से भारी कर्ज लिया। अमेरिका प्रमुख कर्जदाता देश बन गया।

2. प्रथम विश्वयुद्ध का ब्रिटिश अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर : i. ब्रिटेन की बाजार स्थिति कमजोर होना।
ii. जापान से प्रतिस्पर्धा
iii. विदेशी कर्ज
iv. उत्पादन और रोजगार पर प्रभाव

3. आर्थिक महामंदी के प्रमुख कारणों की व्याख्या कीजिए।
(RBSE – 2025 & Model Paper – 2024)

उत्तर : आर्थिक महामंदी के प्रमुख कारण –

1. **कृषि क्षेत्र में अति उत्पादन** –
   - महामंदी का पहला कारण कृषि क्षेत्र में अति उत्पादन था।
   - कृषि उत्पादों की कीमतें गिर गईं।
   - किसानों ने आय बनाए रखने के लिए उत्पादन और बढ़ा दिया।
   - इससे कीमतें और नीचे चली गईं।
2. अमेरिकी ऋणों में कमी
   - अनेक देश अमेरिकी कर्ज पर निर्भर थे।
   - संकट शुरू होते ही अमेरिका ने विदेशों को ऋण देना कम कर दिया।
3. **आयात शुल्क में वृद्धि**
   - अमेरिका ने आयात शुल्क बढ़ा दिया।
   - इससे विश्व व्यापार बुरी तरह प्रभावित हुआ।

4. महामंदी का विश्व अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा?

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जो चाहें!

उत्तर : महामंदी का विश्व अर्थव्यवस्था पर प्रभाव –

1. आर्थिक गतिविधियों में गिरावट
2. **कृषि क्षेत्र पर प्रभाव** – कृषि उत्पादों की कीमतें नीचे चली गईं।
3. **यूरोप पर प्रभाव** –
- यूरोप के अनेक बैंक बंद हो गए।
- मुद्राओं का मूल्य गिर गया।
4. **परिवारों पर प्रभाव**
- परिवार कर्ज नहीं चुका सके।
- उनकी संपत्तियाँ कुर्क कर ली गईं।
5. **अमेरिका पर प्रभाव**
- अमेरिका में हजारों बैंक बंद हुए।
- हजारों कंपनियाँ बंद हुईं।
- बेरोजगारी तेजी से बढ़ी।

5. महामंदी ने भारतीय अर्थव्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया? *(RBSE – 2022 & 2024)*

उत्तर : भारतीय अर्थव्यवस्था पर महामंदी का प्रभाव–

1. **आयात–निर्यात में कमी**
- 1928 से 1934 के बीच भारत का आयात और निर्यात लगभग आधा रह गया।
2. **कृषि उत्पादों की कीमतों में गिरावट**
- गेहूँ की कीमत लगभग 50 प्रतिशत गिर गई।
- कच्चे पटसन की कीमत 60 प्रतिशत से अधिक गिर गई।
3. **किसानों की स्थिति**
- किसानों की आय कम हुई।
- सरकार ने लगान में छूट नहीं दी।
4. **शहरी लोगों पर प्रभाव**
- निश्चित आय वाले शहरी लोगों पर प्रभाव अपेक्षाकृत कम पड़ा।

Trick — "महामंदी में भारत का व्यापार आधा हुआ, गेहूँ 50% गिरा, पटसन **60%** से अधिक गिरा, किसान की आय घटी पर लगान नहीं घटा, और निश्चित आय वाले शहरी लोग कम प्रभावित हुए।"

Trick — **"व्यापार आधा, गेहूँ आधा, पटसन ज्यादा गिरा; किसान की आय घटी, लगान वही रहा; शहर कम प्रभावित हुए।"**

विश्व अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण – युद्धोत्तर काल

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. द्वितीय विश्वयुद्ध कितने वर्षों तक चला? *(RBSE – 2024)*

(अ) दो वर्ष
(ब) चार वर्ष
(स) छह वर्ष
(द) आठ वर्ष **(स)**

2. द्वितीय विश्वयुद्ध में कौन–सा राष्ट्र धुरी शक्तियों में शामिल नहीं था? *(RBSE – 2025)*

(अ) नात्सी जर्मनी
(ब) जापान
(स) ब्रिटेन
(द) इटली **(स)**

3. ब्रेटन वुड्स नामक स्थान किस देश में स्थित है? *(RBSE – 2022, 2023 & 2025)*

(अ) ब्रिटेन
(ब) संयुक्त राज्य अमेरिका
(स) फ्रांस
(द) जर्मनी **(ब)**

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक को अन्य किस नाम से जाना जाता है? *(RBSE – 2023)*

उत्तर : विश्व बैंक।

2. 'वीटो' से क्या अभिप्राय है? *(RBSE – 2026)*

उत्तर : वीटो अथवा निषेधाधिकार वह अधिकार है जिसके द्वारा किसी एक सदस्य की असहमति किसी प्रस्ताव को खारिज करने का आधार बन जाती है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. द्वितीय विश्वयुद्ध में शामिल प्रमुख धुरी शक्तियों के नाम बताइए। *(RBSE – 2026)*

उत्तर : द्वितीय विश्वयुद्ध की प्रमुख धुरी शक्तियाँ थी –

1. नात्सी जर्मनी।
2. जापान।
3. इटली।

2. स्थिर और परिवर्तनशील विनिमय दर में अंतर बताइए। *(RBSE – 2023)*

उत्तर : स्थिर और परिवर्तनशील विनिमय दर में अंतर–

स्थिर विनिमय दर	परिवर्तनशील विनिमय दर
मुद्रा की विनिमय दर निश्चित रहती है।	वनिमय दर माँग और आपूर्ति के अनुसार बदलती रहती है।
सरकार उतार–चढ़ाव नियंत्रित करती है।	दर विदेशी मुद्रा बाजार द्वारा निर्धारित होती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. ब्रेटन वुड्स समझौते से क्या अभिप्राय है और इसकी जुड़वाँ संस्थाएँ कौन–सी थीं?

(RBSE – 2023 & Model Paper – 2023)

उत्तर : 1. **ब्रेटन वुड्स समझौते का अर्थ –**
- जुलाई 1944 में अमेरिका के न्यू हैम्पशर स्थित ब्रेटन वुड्स में युद्धोत्तर अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था पर समझौता हुआ।

2. **जुड़वाँ संस्थाएँ**
- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष।
- अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक।

3. **संस्थाओं का नामकरण** – इन दोनों संस्थाओं को ब्रेटन वुड्स की जुड़वाँ संस्थाएँ कहा जाता है।
4. **विनिमय दर व्यवस्था** – निश्चित विनिमय दरों पर आधारित थी।

2. ब्रेटन वुड्स संस्थानों की स्थापना क्यों की गई?

(RBSE – 2023)

उत्तर : 1. **मुख्य उद्देश्य**
- औद्योगिक विश्व में आर्थिक स्थिरता बनाए रखना।
- पूर्ण रोजगार बनाए रखना।

2. **अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का उद्देश्य**
- सदस्य देशों के विदेशी व्यापार में होने वाले लाभ और घाटे से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष स्थापित किया गया।

3. **विश्व बैंक का उद्देश्य**
- युद्धोत्तर पुनर्निर्माण के लिए धन उपलब्ध कराने हेतु विश्व बैंक की स्थापना की गई।

Trick **स्थि–रो–लाभ–युद्ध**

स्थि = आर्थिक स्थिरता
रो = रोजगार
लाभ = व्यापार में लाभ–घाटा
युद्ध = युद्ध के बाद पुनर्निर्माण

3. ब्रेटन वुड्स व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

(RBSE – 2024)

उत्तर : 1. **निश्चित विनिमय दर** – ब्रेटन वुड्स व्यवस्था निश्चित विनिमय दरों पर आधारित थी।
2. **मुद्राओं का डॉलर से संबंध** – विभिन्न देशों की मुद्राओं को अमेरिकी डॉलर से निश्चित दर पर बाँधा गया था।
3. **डॉलर और सोना** – डॉलर का मूल्य सोने से जुड़ा था।
4. **संस्थाओं की स्थापना** –
- इसके अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का गठन किया गया।
- विश्व बैंक का गठन किया गया।

5. **निर्णय प्रक्रिया पर नियंत्रण** –
- इन संस्थानों की निर्णय प्रक्रिया पर पश्चिमी औद्योगिक देशों का नियंत्रण था।
- अमेरिका को वीटो का अधिकार प्राप्त था।

Trick **दर + डॉलर + सोना + संस्था + नियंत्रण**

निश्चित विनिमय **दर**
मुद्राओं का **डॉलर** से संबंध
डॉलर का **सोने** से संबंध
IMF और World Bank की स्थापना
निर्णय प्रक्रिया पर पश्चिमी देशों और अमेरिका का **नियंत्रण**

4. ब्रेटन वुड्स व्यवस्था के अंत के कारण बताइए।

(RBSE – 2024)

उत्तर : 1. अमेरिका की वित्तीय शक्ति में कमजोरी
2. डॉलर की विश्वसनीयता में कमी
3. निश्चित विनिमय दर की विफलता
4. विकासशील देशों पर प्रभाव
5. विश्व अर्थव्यवस्था का विस्तार

5. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ चीन और अन्य एशियाई देशों में उत्पादन क्यों ले गईं? *(RBSE – 2016)*

उत्तर : 1. **कम मजदूरी**
- चीन और एशिया के अनेक देशों में मजदूरी तुलनात्मक रूप से कम थी।
- इससे उत्पादन लागत घटती थी।

2. **चीन की नई आर्थिक नीतियाँ**
- चीन की नई आर्थिक नीतियों के बाद वह विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ गया।

3. **अन्य प्रमुख कारण** – विशाल बाजार। सस्ता श्रम। निवेश के अवसर।
4. **परिणाम** – इन कारणों से बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने चीन और अन्य एशियाई देशों में उत्पादन और निवेश शुरू किया।

शिक्षा ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

4 औद्योगीकरण का युग

औद्योगिक क्रांति से पहले

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. औद्योगीकरण का एक प्रमुख सकारात्मक प्रभाव क्या था? *(RBSE – 2026)*

(अ) बेरोजगारी (ब) प्रदूषण
(स) गरीबी (द) उत्पादन में वृद्धि **(द)**

2. नए औद्योगिक युग का पहला प्रतीक किसे कहा गया है? *(RBSE – 2023)*

(अ) ऊन (ब) कपास
(स) रेशम (द) जूट **(ब)**

3. स्पिनिंग जेनी मशीन का निर्माण किसने किया? *(RBSE – 2024 & Model Paper – 2026)*

(अ) मैथ्यू बूल्टन (ब) जेम्स हरग्रीव्ज
(स) जेम्स वॉट (द) न्यूकॉमेन **(ब)**

4. भाप के इंजन से संबंधित वैज्ञानिक कौन था? *(RBSE – 2024)*

(अ) जेम्स वॉट (ब) जेम्स हरग्रीव्ज
(स) माइकल वुल्फ (द) अरस्तु **(अ)**

5. जेम्स वॉट द्वारा सुधारे गए भाप के इंजन का उत्पादन किसने किया? *(Model Paper – 2025)*

(अ) न्यूकॉमेन (ब) माइकल वुल्फ
(स) मैथ्यू बूल्टन (द) विल थोर्न **(स)**

रिक्तस्थान –

1. सूती कपड़ा उद्योग में .... एक मुख्य कच्चा माल है। *(Model Paper – 2026)*

उत्तर : कच्चा कपास।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. आदि–औद्योगीकरण से क्या अभिप्राय है? *(RBSE – 2023)*

उत्तर : कारखानों की स्थापना से पहले अंतरराष्ट्रीय बाजार के लिए घरों तथा छोटी कार्यशालाओं में होने वाला बड़े पैमाने का उत्पादन आदि–औद्योगीकरण कहलाता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. औद्योगीकरण किसे कहते हैं? *(RBSE – 2024)*

उत्तर : बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन के विस्तार की प्रक्रिया को औद्योगीकरण कहते हैं।

प्रमुख घटक –

- कारखानों में उत्पादन।
- घरेलू इकाइयों में उत्पादन।
- आपके निर्धारित प्रारूप में।

2. आदि–औद्योगिक व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : **1. उत्पादन का स्थान** – उत्पादन कारखानों में नहीं होता था। किसान और कारीगर अपने घरों में वस्तुएँ बनाते थे।

2. सौदागरों का नियंत्रण – शहरों में रहने वाले सौदागर उत्पादन को नियंत्रित करते थे। वे किसानों और कारीगरों को पेशगी रकम देते थे।

3. पारिवारिक श्रम – परिवार के सभी सदस्य उत्पादन में भाग लेते थे। इससे परिवार के पूरे श्रम का उपयोग होता था।

4. अंतरराष्ट्रीय बाजार – वस्तुओं का उत्पादन अंतरराष्ट्रीय बाजार के लिए किया जाता था।

5. उत्पादन नेटवर्क – उत्पादन के अलग–अलग चरण अलग–अलग लोगों द्वारा पूरे किए जाते थे। यह व्यवस्था व्यावसायिक आदान–प्रदान के विस्तृत नेटवर्क का हिस्सा थी।

Trick **मा–गि–नि–ए–गाँ**

मा = माँग बढ़ी
गि = गिल्ड शक्तिशाली थे
नि = नियंत्रण करते थे
ए = एकाधिकार था
गाँ = गाँवों की ओर गए

"माँग बढ़ी, गिल्ड ने नियंत्रण किया, एकाधिकार से परेशान होकर सौदागर गाँव गए।"

RECORDED VIDEOS | LIVE CLASSES | PDF NOTES | e-BOOKS | QUIZ | TEST SERIES

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

3. सत्रहवीं शताब्दी में यूरोपीय शहरों के सौदागर गाँवों की ओर क्यों जाने लगे?

उत्तर : **1. विश्व व्यापार का विस्तार** – विश्व व्यापार के विस्तार से वस्तुओं की माँग बढ़ने लगी। उपनिवेशों की स्थापना ने भी नई माँग पैदा की।

2. शहरी गिल्डों का प्रभाव – शहरों में दस्तकारी और व्यापारिक गिल्ड बहुत शक्तिशाली थे। वे उत्पादन तथा उत्पादकों पर नियंत्रण रखते थे।

3. गिल्डों द्वारा नियंत्रण – गिल्ड वस्तुओं की कीमत तय करते थे। वे प्रतिस्पर्धा को नियंत्रित करते थे। नए व्यापारियों को व्यवसाय में प्रवेश नहीं करने देते थे।

4. एकाधिकार – शासकों ने कुछ गिल्डों को विशेष वस्तुओं के उत्पादन और व्यापार का एकाधिकार दिया था।

5. गाँवों की ओर रुख – शहरों में कारोबार करना कठिन होने के कारण सौदागर गाँवों में गए। उन्होंने किसानों और कारीगरों को पेशगी देकर उत्पादन करवाया।

3. किसान और कारीगर सौदागरों के लिए काम करने को क्यों तैयार हो गए?

उत्तर : **1. साझा जमीनों का समाप्त होना** – खुले खेत समाप्त होते जा रहे थे। कॉमन्स अथवा साझा जमीनों की बाड़ाबंदी की जा रही थी।

2. कृषि आय में कमी – छोटे खेतों से पूरे परिवार का पालन–पोषण संभव नहीं था। खेती से होने वाली आय सिमट रही थी।

3. अतिरिक्त आमदनी की आवश्यकता – गरीब किसान और कारीगर आय के नए साधन खोज रहे थे। सौदागरों के लिए उत्पादन उन्हें अतिरिक्त आय देता था।

4. पेशगी रकम – सौदागर उत्पादन के लिए पहले से धन देते थे। इससे किसानों को काम शुरू करने में सहायता मिलती थी।

5. खेती और उत्पादन साथ–साथ – किसान गाँव में रहकर अपने खेत भी सँभाल सकते थे। खाली समय में पूरा परिवार उत्पादन कर सकता था।

Trick

"जमीन गई → आय घटी → जरूरत बढ़ी → पेशगी मिली → उत्पादन शुरू।"

4. गिल्ड क्या थे? उन्होंने नए व्यापारियों का प्रवेश कठिन कैसे बनाया?

उत्तर : **1. गिल्ड का अर्थ** – गिल्ड उत्पादकों और कारीगरों के संगठित समूह थे।

2. गिल्डों के प्रमुख कार्य – कारीगरों को प्रशिक्षण देना। उत्पादन पर नियंत्रण रखना। उत्पादकों की गतिविधियों की निगरानी करना। वस्तुओं की कीमत तय करना। प्रतिस्पर्धा को नियंत्रित करना।

3. नए व्यापारियों पर प्रभाव – गिल्ड नए लोगों को व्यवसाय में प्रवेश नहीं करने देते थे। कुछ गिल्डों को शासकों से विशेष वस्तुओं के उत्पादन और व्यापार का एकाधिकार प्राप्त था। इसलिए नए व्यापारी शहरों में स्वतंत्र रूप से कारोबार नहीं कर सकते थे।

5. आदि–औद्योगिक कपड़ा उत्पादन की प्रक्रिया समझाइए।

उत्तर : **उत्पादन प्रक्रिया**

1. **ऊन की खरीद** – कपड़ा व्यापारी स्टेप्लर से ऊन खरीदता था।
2. **कताई** – ऊन को सूत कातने वालों के पास भेजा जाता था। वे ऊन से धागा तैयार करते थे।
3. **बुनाई** – तैयार धागा बुनकरों को दिया जाता था। बुनकर उससे कपड़ा तैयार करते थे।
4. **फुलिंग** – बुना हुआ कपड़ा फुलरों के पास भेजा जाता था।
5. **रंगाई** – कपड़ा रंगसाजों के पास भेजा जाता था। वहाँ उसे रंगा जाता था।
6. **फिनिशिंग** – कपड़े की अंतिम फिनिशिंग लंदन में होती थी।
7. **निर्यात** – निर्यातक व्यापारी तैयार कपड़े को अंतरराष्ट्रीय बाजार में बेचते थे।

6. ब्रिटेन में प्रौद्योगिकीय परिवर्तन धीमी गति से क्यों हुए–

उत्तर : 1. मशीनों की ऊँची कीमत।

2. **रखरखाव की समस्या** – मशीनें बार–बार खराब हो जाती थीं, मरम्मत पर अधिक खर्च आता था।

3. दावों के अनुरूप कार्य न करना

4. **सस्ते श्रमिकों की उपलब्धता** – ब्रिटेन में मजदूरों की कोई कमी नहीं थी।

5. **उद्योगपतियों की सावधानी** – व्यापारी और उद्योगपति नई तकनीक अपनाने में सावधानी बरतते थे।

7. उन्नीसवीं सदी के मध्य का सामान्य मजदूर मशीन चलाने वाला न होकर परंपरागत कारीगर क्यों था?

उत्तर : 1. मशीन – आधारित उद्योगों की सीमित भूमिका।

2. घरेलू उत्पादन की प्रधानता

3. हाथ के कौशल की आवश्यकता

4. मौसमी उद्योग

5. हाथ से बनी वस्तुओं की माँग

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. औद्योगीकरण का अर्थ केवल फैक्ट्री उद्योगों का विकास है? विवेचना कीजिए।

(Model Paper – 2026)

उत्तर : औद्योगीकरण को प्रायः बड़े कारखानों और मशीनों के विकास से जोड़कर देखा जाता है। अध्याय की विषयवस्तु बताती है कि औद्योगीकरण इससे अधिक व्यापक प्रक्रिया थी।

1. **कारखानों से पहले उत्पादन** – कारखानों की स्थापना से पहले भी बड़े पैमाने पर उत्पादन होता था। वस्तुएँ अंतरराष्ट्रीय बाजार के लिए बनाई जाती थीं। इस अवस्था को आदि–औद्योगीकरण कहा गया।
2. **घरेलू उत्पादन** – किसान और कारीगर अपने घरों में उत्पादन करते थे।
3. **विकेंद्रित उत्पादन व्यवस्था** – उत्पादन के अलग–अलग चरण अलग–अलग लोगों द्वारा पूरे किए जाते थे। कताई, बुनाई, फुलिंग, रंगाई और फिनिशिंग अलग–अलग स्थानों पर होती थी।
4. **परंपरागत उद्योगों का अस्तित्व** – नए कारखाने परंपरागत उद्योगों को पूरी तरह समाप्त नहीं कर पाए।
5. **गैर–मशीनी क्षेत्रों का विकास** – खाद्य प्रसंस्करण। निर्माण कार्य। पॉटरी।
6. **भारत में लघु उत्पादन** – भारत में छोटी कार्यशालाएँ और घरेलू इकाइयाँ औद्योगिक उत्पादन का महत्त्वपूर्ण भाग थीं।
7. **हथकरघा उद्योग** – मशीन निर्मित धागे से कताई उद्योग प्रभावित हुआ। इसके बावजूद हथकरघा बुनकर उत्पादन करते रहे। फ्लाई शटल जैसी तकनीक से हथकरघा उत्पादन बढ़ा।

Trick "ऊन खरीदी, सूत काता, कपड़ा बुना, फुलिंग–रंगाई हुई, लंदन में फिनिश और विदेश में बिक्री।"

2. अठारहवीं सदी के आविष्कारों से उत्पादन प्रक्रिया पर क्या प्रभाव पड़ा?

(RBSE – 2025 & Model Paper – 2025)

उत्तर : अठारहवीं सदी में उत्पादन के विभिन्न चरणों से संबंधित अनेक आविष्कार हुए। इन आविष्कारों ने कपड़ा उद्योग की उत्पादन क्षमता बढ़ाई।

1. **उत्पादन के चरणों में सुधार** – आविष्कारों से निम्न प्रक्रियाओं की कार्यकुशलता बढ़ीकृ कार्डिंग। ऐंठना। कताई। धागा लपेटना।
2. **प्रति मजदूर उत्पादन में वृद्धि** – एक मजदूर पहले की तुलना में अधिक उत्पादन करने लगा। उत्पादन की गति तेज हुई।
3. **धागे की गुणवत्ता में सुधार** – पहले से अधिक मजबूत धागे तैयार होने लगे। रेशों की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ।
4. **स्पिनिंग जेनी का प्रभाव** – जेम्स हरग्रीव्ज ने 1764 में स्पिनिंग जेनी बनाई। एक मजदूर एक ही पहिये से कई तकलियाँ चला सकता था। एक साथ कई धागे तैयार होने लगे। मजदूरों की आवश्यकता कम हुई।
5. **सूती कपड़ा मिल की रूपरेखा** – रिचर्ड आर्कराइट ने सूती कपड़ा मिल की रूपरेखा प्रस्तुत की। महँगी मशीनों को एक स्थान पर स्थापित किया जाने लगा।
6. **उत्पादन का केंद्रीकरण** – उत्पादन की विभिन्न प्रक्रियाएँ एक छत के नीचे आ गईं। सभी प्रक्रियाएँ एक मालिक के नियंत्रण में हो गईं।
7. निगरानी और गुणवत्ता नियंत्रण – उत्पादन की निगरानी आसान हुई। वस्तुओं की गुणवत्ता पर नियंत्रण संभव अपपप. भाप के इंजन में सुधार दृ जेम्स वॉट ने न्यूकॉमेन के भाप के इंजन में सुधार किया।

3. इंग्लैंड में कारखानों के क्रमिक विकास का वर्णन–

उत्तर : इंग्लैंड में कारखानों के क्रमिक विकास –

1. **प्रारंभिक कारखाने** – इंग्लैंड में पहले कारखाने 1730 के दशक में खुले।
2. **कारखानों की संख्या में वृद्धि** – अठारहवीं सदी के अंत में कारखानों की संख्या तेजी से बढ़ी।
3. **कपास का महत्त्व** – कपास नए औद्योगिक युग का पहला प्रतीक बनी। ब्रिटेन में कच्चे कपास का आयात तेजी से बढ़ा।

4. **उत्पादन प्रक्रिया में आविष्कार** – कार्डिंग, ऐंठने, कताई और लपेटने की प्रक्रिया में सुधार हुआ। प्रति मजदूर उत्पादन बढ़ा। मजबूत धागे और रेशे तैयार होने लगे।
5. **रिचर्ड आर्कराइट का योगदान** – रिचर्ड आर्कराइट ने सूती कपड़ा मिल की रूपरेखा प्रस्तुत की।
6. **उत्पादन का केंद्रीकरण** – पहले कपड़ा उत्पादन पूरे देहात में फैला हुआ था।
7. **कारखाना व्यवस्था के लाभ** – उत्पादन की निगरानी संभव
8. **औद्योगिक भूदृश्य** – उन्नीसवीं सदी की शुरुआत तक कारखाने इंग्लैंड के भूदृश्य का अभिन्न अंग बनें।

Trick **का–ऐं–क–ल**

का = कार्डिंग
ऐं = ऐंठना
क = कताई
ल = लपेटना

4. **ब्रिटेन में औद्योगीकरण की प्रक्रिया और गति का वर्णन कीजिए।**

उत्तर : ब्रिटेन में औद्योगीकरण अचानक और समान गति से नहीं हुआ। अलग–अलग उद्योगों में विकास की गति अलग थी।

1. **कपास उद्योग का विकास** – औद्योगीकरण के पहले चरण में कपास उद्योग सबसे तेजी से बढ़ा।
2. **लोहा और इस्पात उद्योग** – बाद में लोहा और इस्पात उद्योग कपास उद्योग से आगे निकल गए।
3. **रेलवे का प्रभाव** – 1840 के दशक से इंग्लैंड में रेलवे का विस्तार हुआ।
4. **परंपरागत उद्योगों की निरंतरता** – नए उद्योग परंपरागत उद्योगों को पूरी तरह समाप्त नहीं कर पाए।
5. **तकनीकी उद्योगों में सीमित मजदूर** – उन्नीसवीं सदी के अंत में तकनीकी रूप से विकसित उद्योगों में कुल मजदूरों के 20 प्रतिशत से कम लोग काम करते थे।
6. **गैर–मशीनी क्षेत्रों का विकास** – खाद्य प्रसंस्करण। निर्माण।
7. **तकनीकी परिवर्तन की धीमी गति** – नई मशीनें महँगी
8. **भाप के इंजन का सीमित प्रयोग** – उन्नीसवीं सदी की शुरुआत तक इंग्लैंड में भाप के केवल 321 इंजन थे।

Trick

"कपास से लोहा, रेलवे आया;
परंपरागत उद्योग रहे, 20% मजदूर
तकनीकी में गए, गैर–मशीनी बढ़े,
तकनीक धीमी और भाप सीमित रही।"

हाथ का श्रम और वाष्प शक्ति

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. **ब्रिटेन की महिला कामगारों ने स्पिनिंग जेनी मशीनों पर हमले क्यों किए?**

उत्तर : **1.** स्पिनिंग जेनी का प्रभाव – स्पिनिंग जेनी ने कताई की प्रक्रिया तेज कर दी। एक मजदूर एक साथ कई तकलियाँ चला सकता था।

2. महिला कामगारों की आशंका – हाथ से ऊन कातने वाली महिलाओं की माँग कम होने लगी। उन्हें रोजगार समाप्त होने का भय था। मशीन के कारण शारीरिक श्रम की आवश्यकता घट रही थी।

3. प्रतिक्रिया – महिला कामगारों ने स्पिनिंग जेनी का विरोध किया। उन्होंने मशीनों पर हमले किए।

2. **बाजार में श्रम की बहुतायत से मजदूरों की जिंदगी किस प्रकार प्रभावित हुई?** *(RBSE – 2023 & 2025)*

उत्तर : 1. रोजगार की कमी
2. सामाजिक संपर्कों का महत्त्व
- नौकरी मिलने की संभावना रिश्तेदारी और जान–पहचान पर निर्भर करती थी।
- कारखाने में काम करने वाला परिचित व्यक्ति नौकरी दिलाने में सहायक होता था।

3. आवास की समस्या
4. कम मजदूरी
5. अनिश्चित आय
6. गरीबी

3. **रोजगार की मौसमी प्रकृति ने मजदूरों को किस प्रकार प्रभावित किया?**

उत्तर : 1. काम की सीमित अवधि
2. गाँवों की ओर वापसी
3. शहरों में अस्थायी काम
4. आय की असुरक्षा

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

उपनिवेशों में औद्योगीकरण

रिक्तस्थान –

1. मशीन उद्योगों के युग से पहले अंतरराष्ट्रीय कपड़ा बाजार में भारत के रेशमी और .... उत्पादों का दबदबा था। *(RBSE – 2024)*

उत्तर : सूती।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 1860 के दशक में किस देश के गृहयुद्ध के कारण भारत से कच्चे कपास का निर्यात बढ़ा? *(RBSE – 2023)*

उत्तर : अमेरिका।

2. किसी एक प्रमुख पूर्व–औपनिवेशिक भारतीय बंदरगाह का नाम लिखिए।

उत्तर : सूरत।

3. सूरत बंदरगाह भारत को किन क्षेत्रों से जोड़ता था।

उत्तर : सूरत बंदरगाह भारत को खाड़ी और लाल सागर के बंदरगाहों से जोड़ता था।

4. सूरत और हुगली के पतन के बाद कौन–से दो नए बंदरगाह विकसित हुए?

उत्तर : बंबई और कलकत्ता।

5. हेनरी पतूलो ने भारतीय कपड़े के विषय में क्या कहा था?

उत्तर : हेनरी पतूलो ने कहा था कि भारतीय कपड़े की माँग कभी कम नहीं हो सकती, क्योंकि संसार के किसी अन्य देश में इतना अच्छा कपड़ा नहीं बनता।

6. व्यापार के एकाधिकार से क्या अभिप्राय है–

उत्तर : किसी वस्तु के व्यापार पर एक कंपनी का पूर्ण नियंत्रण होना तथा अन्य व्यापारियों को स्वतंत्र रूप से खरीद–बिक्री करने से रोकना व्यापार का एकाधिकार कहलाता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. प्रारंभ में ईस्ट इंडिया कंपनी को कपड़े की नियमित आपूर्ति प्राप्त करने में कठिनाई क्यों होती थी?

उत्तर : प्रारंभ में ईस्ट इंडिया कंपनी को कपड़े की नियमित आपूर्ति प्राप्त करने में कठिनाई –

1. अनेक खरीदार –भारतीय कपड़ा खरीदने के लिए फ्रांसीसी, डच और पुर्तगाली व्यापारी सक्रिय थे। स्थानीय व्यापारी भी कपड़ा खरीदते थे।
2. खरीदारों में प्रतिस्पर्धा
3. बुनकरों की स्वतंत्रता
4. कंपनी का कमजोर नियंत्रण –बंगाल और कर्नाटक में कंपनी की राजनीतिक सत्ता स्थापित नहीं हुई थी। कंपनी व्यापार पर एकाधिकार नहीं कर सकती थी।

2. ईस्ट इंडिया कंपनी भारत से कपड़ा निर्यात बढ़ाने के लिए उत्सुक क्यों थी?

उत्तर : 1. ब्रिटिश कपास उद्योग की प्रारंभिक अवस्था
2. भारतीय कपड़ों की माँग – यूरोप में भारत के महीन सूती और रेशमी कपड़ों की भारी माँग थी। भारतीय वस्त्र अपनी गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध थे।
3. लाभदायक व्यापार
4. नियमित आपूर्ति की आवश्यकता

3. ईस्ट इंडिया कंपनी ने गुमाश्तों को क्यों नियुक्त किया?

उत्तर : नियुक्ति के उद्देश्य –

1. पुराने व्यापारियों को हटाना
2. **प्रत्यक्ष नियंत्रण** – बुनकरों पर कंपनी का सीधा नियंत्रण स्थापित करना।
3. **निगरानी** – बुनकरों के काम पर नजर रखना। यह सुनिश्चित करना कि माल समय पर तैयार हो।
4. **माल का संग्रह** –, तैयार कपड़ा बुनकरों से इकट्ठा करना।
5. **गुणवत्ता की जाँच** – सूती और रेशमी कपड़ों की गुणवत्ता जाँचना।
6. **अन्य खरीदारों से रोकना** – बुनकरों को दूसरे व्यापारियों को माल बेचने से रोकना।
7. **नियमित आपूर्ति** – कंपनी के लिए कपड़े की नियमित और सस्ती आपूर्ति सुनिश्चित करना।

4. गुमाश्तों और बुनकरों के बीच संघर्ष क्यों होता था?

उत्तर : गुमाश्तों और बुनकरों के बीच संघर्ष –

1. **सामाजिक संबंधों का अभाव** – गुमाश्ता बाहर के लोग थे। उनका बुनकरों के गाँवों से कोई सामाजिक संबंध नहीं था।
2. **दंभपूर्ण व्यवहार** – गुमाश्ता बुनकरों के साथ कठोर और अहंकारी व्यवहार करते थे।
3. **बल का प्रयोग** – वे सिपाहियों और चपरासियों को साथ लेकर आते थे। माल समय पर तैयार न होने पर बुनकरों को दंडित करते थे।
4. **शारीरिक प्रताड़ना** – बुनकरों को पीटा जाता था। उन पर कोड़े बरसाए जाते थे।
5. **कम कीमत** – बुनकरों को तैयार माल की बहुत कम कीमत मिलती थी।
6. **मोल–भाव की समाप्ति** – बुनकर कीमत पर मोल–भाव नहीं कर सकते थे। वे अपना माल दूसरे खरीदार को भी नहीं बेच सकते थे।

5. कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार का बुनकरों पर क्या प्रभाव पड़ा?

RECORDED VIDEOS | LIVE CLASSES | PDF NOTES | e-BOOKS | QUIZ | TEST SERIES
DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

उत्तर : कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार का बुनकरों पर प्रभाव–

1. **व्यापारिक स्वतंत्रता की समाप्ति** – बुनकर किसी अन्य खरीदार को माल नहीं बेच सकते थे। उन्हें केवल कंपनी को ही कपड़ा देना पड़ता था।
2. **मोल–भाव की शक्ति में कमी** – बुनकर कीमत तय करने या मोल–भाव करने की स्थिति में नहीं रहे।
3. **कम कीमत** – कंपनी द्वारा दी जाने वाली कीमत बहुत कम थी।
4. **कर्ज का बंधन** – बुनकरों को पेशगी और कर्ज दिया जाता था। कर्ज के कारण वे कंपनी से बँध गए।
5. **उत्पादन का दबाव** – उन्हें निर्धारित समय में माल तैयार करना पड़ता था। विलंब होने पर दंड दिया जाता था।
6. **पलायन** – कई बुनकर गाँव छोड़कर दूसरे स्थानों पर चले गए। उन्होंने अपने रिश्तेदारों के गाँवों में करघे लगाए।
7. **प्रतिरोध** – कुछ बुनकरों ने कंपनी और उसके अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह किया। कुछ ने कर्ज लौटाने से इनकार कर दिया।
8. **पेशे का त्याग** – कई बुनकरों ने करघे बंद कर दिए। वे खेतिहर मजदूरी करने लगे।

6. अमेरिकी गृहयुद्ध का भारतीय बुनकरों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर : अमेरिकी गृहयुद्ध का भारतीय बुनकरों पर प्रभाव–

1. **अमेरिकी कपास की आपूर्ति बंद** – अमेरिकी गृहयुद्ध के कारण अमेरिका से ब्रिटेन को कच्चे कपास की आपूर्ति रुक गई।
2. **भारत से निर्यात में वृद्धि** – ब्रिटेन ने भारत से अधिक कच्चा कपास मँगाना शुरू किया। भारत से कपास का निर्यात तेजी से बढ़ा।
3. **कीमतों में वृद्धि** – भारत में कच्चे कपास की कीमत बहुत बढ़ गई।
4. **कच्चे माल की कमी** – भारतीय बुनकरों को अच्छी गुणवत्ता का कपास मिलना कठिन हो गया।
5. **उत्पादन लागत में वृद्धि** – बुनकरों को मनमानी और ऊँची कीमत पर कच्चा कपास खरीदना पड़ा।
6. **बुनकरी पर संकट –स** बढ़ी हुई लागत के कारण बुनकरी से जीवन चलाना कठिन हो गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. मशीन उद्योगों के युग से पहले अंतरराष्ट्रीय कपड़ा बाजार में भारत की स्थिति का परीक्षण कीजिए।

(RBSE – 2026)

उत्तर : मशीन उद्योगों के युग से पहले अंतरराष्ट्रीय कपड़ा बाजार में भारत की स्थिति का परीक्षण –

1. **भारतीय वस्त्रों का दबदबा –**
2. **महीन कपास** – अनेक देशों में मोटा कपास पैदा होता था।
3. **स्थल व्यापार** – आर्मीनियन और फारसी व्यापारी भारतीय वस्तुओं का व्यापार करते थे। पंजाब से वस्त्र अफगानिस्तान, पूर्वी फारस और मध्य एशिया तक ले जाए जाते थे। कपड़ों के थान ऊँटों पर लादकर पहाड़ी दर्रों और रेगिस्तानों के पार पहुँचाए जाते थे।
4. **समुद्री व्यापार** – भारत के पूर्व–औपनिवेशिक बंदरगाहों से फलता–फूलता समुद्री व्यापार होता था।
5. **सूरत बंदरगाह** – सूरत भारत को खाड़ी और लाल सागर के बंदरगाहों से जोड़ता था।
6. **मछलीपटनम और हुगली** – मछलीपटनम और हुगली का दक्षिण–पूर्व एशिया के बंदरगाहों से व्यापार होता था।
7. **भारतीय व्यापारियों की भूमिका** – भारतीय व्यापारी और बैंकर निर्यात व्यापार में सक्रिय
8. **आपूर्ति सौदागर** – आपूर्ति सौदागर बुनकरों को पेशगी देते थे।
9. **निर्यात व्यापार का नेटवर्क** – बंदरगाह नगर देश के भीतरी क्षेत्रों से जुड़े थे।

Trick "बुनकर से विदेश तक"

बुनकर → सौदागर →
व्यापारी → बंदरगाह → विदेश

"बुनकर ने बनाया, सौदागर ने पैसा लगाया, व्यापारी ने विदेश पहुँचाया।

2. ईस्ट इंडिया कंपनी और मैनचेस्टर के कपड़े ने भारतीय सूती वस्त्र उद्योग को किस प्रकार प्रभावित किया?

(Model Paper – 2025)

उत्तर : भारतीय सूती वस्त्र उद्योग को पहले ईस्ट इंडिया कंपनी के नियंत्रण और बाद में मैनचेस्टर के मशीन निर्मित कपड़ों से गंभीर संकट का सामना करना पड़ा।

ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रभाव –

1. **व्यापारियों और दलालों को हटाना** – कंपनी ने भारतीय व्यापारियों और आपूर्ति सौदागरों को व्यापार से हटाया।
2. **गुमाश्ता व्यवस्था** – बुनकरों की निगरानी के लिए गुमाश्ता नियुक्त किए गए।

3. **पेशगी और कर्ज** – बुनकरों को कच्चा माल खरीदने के लिए पेशगी दी जाती थी।
4. **व्यापारिक स्वतंत्रता का अंत** – बुनकर अन्य खरीदारों को माल नहीं बेच सकते थे।
5. **कम कीमत और दमन** – कंपनी बुनकरों को बहुत कम कीमत देती थी।

मैनचेस्टर के कपड़े का प्रभाव –

1. **भारतीय निर्यात में गिरावट** – उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में भारतीय कपड़ों का निर्यात घटने लगा।
2. **भारतीय बाजार में ब्रिटिश कपड़ा** – मैनचेस्टर का मशीन निर्मित कपड़ा भारत में बड़ी मात्रा में आने लगा।
3. **स्थानीय बाजार का सिकुड़ना** – भारतीय बुनकर सस्ते मशीन निर्मित कपड़े से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सके।
4. **दोहरा संकट** – भारतीय बुनकरों के सामने दो समस्याएँ थीं – निर्यात बाजार का पतन।
5. **अमेरिकी गृहयुद्ध का प्रभाव** – ब्रिटेन ने भारत से अधिक कच्चा कपास मँगाया।
6. **बुनकरों की प्रतिक्रिया** – अनेक बुनकर गाँव छोड़ गए।

फैक्ट्रियों का आना

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. **बंबई में पहली कपड़ा मिल किस वर्ष स्थापित हुई?**

(RBSE – 2024 & 2025 & Model Paper – 2025)

(अ) 1852 (ब) 1854

(स) 1860 (द) 1862 **(ब)**

2. **बंगाल में देश की पहली जूट मिल किस वर्ष प्रारंभ हुई?**

(RBSE – 2024)

(अ) 1855 (ब) 1854

(स) 1860 (द) 1872 **(अ)**

3. **भारत का पहला लौह एवं इस्पात संयंत्र कहाँ स्थापित हुआ?**

(RBSE – 2022 & 2023)

(अ) मुंबई (ब) जमशेदपुर

(स) अहमदाबाद (द) बोकारो **(ब)**

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. **'चीन व्यापार' से क्या अभिप्राय था?**

उत्तर : भारत से अफीम चीन भेजी जाती थी और उसके बदले चीन से चाय खरीदकर इंग्लैंड भेजी जाती थी।

2. **छह संयुक्त उद्यम कंपनियाँ किसने स्थापित की थीं?**

उत्तर : द्वारकानाथ टैगोर ने।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. **जॉबर कौन था? उसके प्रमुख कार्य बताइए।**

उत्तर : जॉबर का अर्थ – जॉबर मिल का पुराना और विश्वसनीय कर्मचारी होता था। विभिन्न क्षेत्रों में उसे सरदार या मिस्त्री भी कहा जाता था।

1. **मजदूरों की भर्ती** – अपने गाँव और आसपास के क्षेत्रों से मजदूरों को शहर लाना।
2. **नौकरी दिलाना** – नए मजदूरों को मिल में काम का भरोसा देना।
3. **शहर में बसाना** – मजदूरों को शहर में रहने और जमने में सहायता देना।
4. **आर्थिक सहायता** – संकट के समय मजदूरों को धन देना।
5. **मध्यस्थता** – मजदूरों और मिल मालिकों के बीच मध्यस्थ का काम करना।
6. **बाद की स्थिति** – जॉबर मजदूरों पर प्रभावशाली हो गए। वे सहायता के बदले पैसे और उपहार माँगने लगे। उन्होंने मजदूरों के जीवन पर नियंत्रण स्थापित कर लिया।

2. **मिलों की संख्या बढ़ने के बाद भी मजदूरों के लिए नौकरी पाना कठिन क्यों था?**

उत्तर : 1. रोजगार चाहने वालों की अधिकता – मिलों में उपलब्ध नौकरियों की तुलना में रोजगार चाहने वाले अधिक थे।

2. **नियंत्रित प्रवेश** – मिलों में प्रवेश सभी के लिए खुला नहीं था।
3. **जॉबर की भूमिका** – नए मजदूरों की भर्ती प्रायः जॉबर करता था। वह अपने गाँव और परिचित लोगों को प्राथमिकता देता था।
4. **सामाजिक संपर्कों का महत्त्व** – जान–पहचान और रिश्तेदारी न होने पर नौकरी मिलना कठिन था।
5. **पैसे और उपहार** – बाद में जॉबर नौकरी दिलाने के बदले पैसे और उपहार माँगने लगे।

3. **औपनिवेशिक शासन ने भारतीय व्यापारियों पर कौन–से प्रतिबंध लगाए?**

उत्तर : 1. तैयार माल के निर्यात पर रोक – भारतीय व्यापारियों को अपना तैयार माल यूरोप में बेचने से रोक दिया गया।

2. कच्चे माल तक सीमित व्यापार – भारतीय व्यापारी मुख्यतः निम्न वस्तुओं का निर्यात कर सकते थेकृ कच्चा कपास।

3. अंग्रेजी आवश्यकताओं की पूर्ति – भारतीय व्यापार को उन वस्तुओं तक सीमित किया गया जिनकी अंग्रेजों को आवश्यकता थी।

4. जहाजरानी से बाहर करना – भारतीय व्यापारियों को धीरे–धीरे जहाजरानी व्यवसाय से बाहर कर दिया गया।

5. यूरोपीय एजेंसियों का नियंत्रण – पूँजी भारतीय वित्तपोषक उपलब्ध कराते थे।

6. वाणिज्यिक परिसंघों से बहिष्कार – यूरोपीय व्यापारियों के संगठनों में भारतीय व्यवसायियों को शामिल नहीं किया जाता था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. प्रारंभिक भारतीय उद्यमियों ने उद्योगों के लिए पूँजी कहाँ से प्राप्त की? *(RBSE – 2026)*

उत्तर : 1. चीन व्यापार – भारतीय व्यापारियों ने चीन व्यापार में अंग्रेजों के सहायक के रूप में काम किया। वे धन और माल की आपूर्ति करते थे। माल को जहाजों तक पहुँचाते थे।

2. अफीम व्यापार – भारत से अफीम चीन भेजी जाती थी। इस व्यापार से भारतीय व्यापारियों ने धन कमाया।

3. चाय का व्यापार – चीन से चाय खरीदी जाती थी। चाय इंग्लैंड भेजी जाती थी। इस व्यापार से भी पूँजी प्राप्त हुई।

4. कच्चे कपास का निर्यात – कुछ व्यापारियों ने इंग्लैंड को कच्चा कपास निर्यात करके धन कमाया।

5. बर्मा से व्यापार – मद्रास के कुछ सौदागर बर्मा से व्यापार करते थे।

6. मध्य–पूर्व और पूर्वी अफ्रीका – कुछ व्यापारियों के मध्य–पूर्व और पूर्वी अफ्रीका से व्यापारिक संबंध थे।

7. आंतरिक व्यापार – अनेक व्यापारिक समूह भारत के अंदर ही व्यापार करते थे। वे एक स्थान से दूसरे स्थान तक माल पहुँचाते थे।

8. साहूकारी – व्यापारी ब्याज पर धन देते थे। व्यापारियों को पूँजी उपलब्ध कराते थे।

9. धन का हस्तांतरण – वे एक शहर से दूसरे शहर तक धन पहुँचाते थे।

> **Trick** "भारत से अफीम चीन गई, चीन से चाय इंग्लैंड गई, बीच में भारतीय व्यापारियों की पूँजी बनी।"

2. उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में भारत में उद्योगों का विकास किस प्रकार हुआ?

उत्तर : 1. बंबई का सूती उद्योग – बंबई में पहली कपड़ा मिल 1854 में स्थापित हुई। दो वर्ष बाद इसमें उत्पादन शुरू हुआ। 1862 तक बंबई में चार सूती मिलें काम करने लगीं। इनमें 94,000 तकलियाँ और 2,150 करघे थे।

2. बंगाल का जूट उद्योग – बंगाल में पहली जूट मिल 1855 में खुली। दूसरी जूट मिल 1862 में शुरू हुई।

3. कानपुर का औद्योगिक विकास – 1860 के दशक में कानपुर में एल्गिन मिल स्थापित हुई।

4. अहमदाबाद का कपड़ा उद्योग – कानपुर की मिल के लगभग एक वर्ष बाद अहमदाबाद में पहली कपड़ा मिल शुरू हुई।

5. मद्रास का उद्योग – 1874 में मद्रास में पहली कताई और बुनाई मिल खुली।

6. औद्योगिक निवेश के स्रोत – विदेशी व्यापार से धन कमाने वाले व्यापारियों ने उद्योगों में निवेश किया।

7. लौह एवं इस्पात उद्योग – भारत का लौह और इस्पात उद्योग कपड़ा उद्योग के बाद विकसित हुआ।

8. भारी उद्योग की सीमा – औद्योगिक मशीनरी, रेलवे और लोकोमोटिव का अधिकांश आयात किया जाता था।

> **Trick** "54 बंबई कपड़ा, 55 बंगाल जूट, 60s कानपुर एल्गिन, फिर अहमदाबाद कपड़ा, 74 मद्रास कताई–बुनाई; व्यापारियों ने निवेश किया, लोहा बाद में आया और भारी मशीनें विदेश से आईं।"

3. प्रारंभिक भारतीय उद्यमियों ने पूँजी, तकनीक और श्रमिकों का प्रबंध किस प्रकार किया? *(RBSE – 2026)*

उत्तर : 1. पूँजी का प्रबंध – विदेशी व्यापार से – चीन व्यापार। अफीम और चाय का व्यापार। कच्चे कपास का निर्यात। बर्मा से व्यापार।

2. आंतरिक स्रोतों से – भारत के भीतर माल का व्यापार। माल की ढुलाई। साहूकारी। व्यापारियों को धन देना। एक शहर से दूसरे शहर तक धन पहुँचाना।

3. **तकनीक का प्रबंध** – मशीनों का आयात – औद्योगिक मशीनरी विदेशों से आयात की जाती थी। रेलवे उपकरण और लोकोमोटिव भी आयात किए जाते थे।

4. **श्रमिकों का प्रबंध** – गाँवों से प्रवास – मजदूर आसपास के गाँवों और जिलों से आते थे।

4. प्रारंभिक भारतीय उद्योगपतियों की उपलब्धियों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर : 1. **व्यापारिक पूँजी का निर्माण** – भारतीय व्यापारियों ने चीन व्यापार से, अफीम और चाय के व्यापार से, कच्चे कपास के निर्यात से, बर्मा, मध्य–पूर्व और पूर्वी अफ्रीका के व्यापार से तथा आंतरिक व्यापार और साहूकारी से धन कमाया।

2. **द्वारकानाथ टैगोर** – चीन व्यापार से धन अर्जित किया। छह संयुक्त उद्यम कंपनियाँ स्थापित कीं।

3. **जमशेदजी जीजीभोये** – चीन व्यापार और जहाजरानी से जुड़े थे।

4. **डिनशॉ पेटिट** – चीन व्यापार और कच्चे कपास के निर्यात से धन

5. **जमशेदजी नुसरवानजी टाटा** – चीन व्यापार और कच्चे कपास के निर्यात से पूँजी अर्जित की।

6. **सेठ हुकुमचंद** – चीन के साथ व्यापार किया। जूट उद्योग में निवेश किया। कलकत्ता में जूट मिल स्थापित की।

7. **बिड़ला परिवार** – जी.डी. बिड़ला के पिता और दादा भी चीन व्यापार से जुड़े थे।

8. **अन्य व्यापारिक समुदाय** – मद्रास के कुछ व्यापारी बर्मा से व्यापार करते थे। कुछ के मध्य–पूर्व और पूर्वी अफ्रीका से संबंध थे।

9. **औद्योगिक विकास में योगदान** – बंबई में सूती मिलों की स्थापना हुई। बंगाल में जूट मिलें खुलीं।

Trick द्वा–जी–पे–टा–हु–बि

द्वा = द्वारकानाथ टैगोर
जी = जमशेदजी जीजीभोये
पे = डिनशॉ पेटिट
टा = जमशेदजी नुसरवानजी टाटा
हु = सेठ हुकुमचंद
बि = बिड़ला परिवार

"द्वा–जी–पे–टा–हु–बि ने व्यापार से पूँजी बनाई और उद्योगों को बढ़ाया।"

5. द्वारकानाथ टैगोर के औद्योगिक योगदान का वर्णन कीजिए।

उत्तर : 1. **पूँजी का स्रोत** – द्वारकानाथ टैगोर ने चीन के साथ व्यापार से धन अर्जित किया।

2. **संयुक्त उद्यम कंपनियाँ** – 1830 और 1840 के दशकों में उन्होंने छह संयुक्त उद्यम कंपनियाँ स्थापित कीं।

3. **खनन** – खनन उद्योग में निवेश किया।

4. **बैंकिंग** – बैंकिंग क्षेत्र में पूँजी लगाई।

5. **बागान और बीमा** – बागान और बीमा व्यवसाय में निवेश किया।

6. **औद्योगिक विचार** – उनका विश्वास था कि भारत पश्चिमीकरण और औद्योगीकरण के रास्ते पर चलकर विकास कर सकता है।

6. ब्रिटिश आर्थिक नियंत्रणों के बावजूद भारतीय उद्यमी अपना अस्तित्व किस प्रकार बनाए रखने में सफल हुए?

उत्तर : 1. **चीन व्यापार में भागीदारी** – भारतीय व्यापारी अंग्रेजों के सहायक के रूप में चीन व्यापार में शामिल हुए।

2. **वैकल्पिक विदेशी व्यापार** – मद्रास के कुछ व्यापारियों ने बर्मा से व्यापार किया। कुछ ने मध्य–पूर्व और पूर्वी अफ्रीका से संबंध बनाए रखे।

3. **आंतरिक व्यापार** – कुछ व्यापारियों ने भारत के अंदर माल का व्यापार जारी रखा। वे एक स्थान से दूसरे स्थान तक माल पहुँचाते थे।

4. **साहूकारी और वित्त** – भारतीय व्यापारी ब्याज पर धन देते थे। व्यापारियों को पूँजी उपलब्ध कराते थे।

5. **प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा से बचाव** – प्रारंभिक भारतीय मिलों ने मैनचेस्टर के कपड़े से सीधी प्रतिस्पर्धा नहीं की।

6. **हथकरघा बुनकरों का बाजार** – भारतीय मिलों का धागा हथकरघा बुनकर खरीदते थे।

7. **चीन को धागे का निर्यात** – भारतीय सूती धागे का कुछ भाग चीन भेजा जाता था।

8. **स्वदेशी आंदोलन का लाभ** – भारतीय वस्तुओं की माँग बढ़ी।

9. **उत्पादन नीति में परिवर्तन** – चीन को धागे का निर्यात घटने पर भारतीय उद्योगपतियों ने कपड़ा उत्पादन शुरू किया। 1900 से 1912 के बीच सूती कपड़े का उत्पादन दोगुना हुआ।

मिशन ज्ञान
पढ़ो अब चाहे, जहाँ चाहे, जैसे चाहे!

औद्योगिक विकास का अनूठापन

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. फ्लाई शटल क्या है? *(CBSE - 2020 & RBSE – 2024)*

उत्तर : फ्लाई शटल रस्सियों और पुलियों से चलने वाला बुनाई का यांत्रिक औजार है। इससे बुनकर बड़े करघे चला सकते थे, चौड़ा कपड़ा बना सकते थे तथा अधिक तेजी से उत्पादन कर सकते थे।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

2. बीसवीं सदी के पहले दशक में भारत के औद्योगीकरण में कौन–से परिवर्तन आए?

उत्तर : बीसवीं सदी के पहले दशक तक भारतीय औद्योगीकरण का स्वरूप बदलने लगा था।

1. **स्वदेशी आंदोलन** – स्वदेशी आंदोलन को गति मिली। राष्ट्रवादियों ने विदेशी कपड़ों के बहिष्कार का आह्वान किया।
2. **उद्योगपतियों का संगठन** – भारतीय औद्योगिक समूह अपने सामूहिक हितों की रक्षा के लिए संगठित हुए।
3. **सरकारी संरक्षण की माँग** – उद्योगपतियों ने आयात शुल्क बढ़ाने की माँग की। सरकार से अन्य रियायतें देने का दबाव बनाया।
4. **चीन को धागे के निर्यात में गिरावट** – 1906 के बाद चीन भेजे जाने वाले भारतीय धागे के निर्यात में कमी आई।
5. **विदेशी प्रतिस्पर्धा** – चीन के बाजार में चीन और जापान की मिलों के उत्पाद छा गए।
6. **उत्पादन में परिवर्तन** – भारतीय उद्योगपतियों ने धागे की जगह कपड़ा बनाना शुरू किया।
7. **सूती कपड़े के उत्पादन में वृद्धि** – 1900 से 1912 के बीच भारत में सूती कपड़े का उत्पादन दोगुना हो गया।

2. प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारत का औद्योगिक उत्पादन तेजी से क्यों बढ़ा?

उत्तर : प्रथम विश्व युद्ध ने भारतीय उद्योगों के लिए नई परिस्थितियाँ और नए अवसर पैदा किए।

1. **ब्रिटिश कारखानों की व्यस्तता** – ब्रिटिश कारखाने सेना की आवश्यकताओं के लिए युद्ध सामग्री बनाने में व्यस्त हो गए।
2. **मैनचेस्टर के आयात में कमी** – भारत में मैनचेस्टर के माल का आयात कम हो गया।
3. **घरेलू बाजार का विस्तार** – भारतीय कारखानों को अचानक विशाल घरेलू बाजार मिल गया।
4. **सेना की आवश्यकताएँ** – भारतीय कारखानों में निम्न वस्तुओं का उत्पादन होने लगा – जूट की बोरियाँ।
5. **नए कारखाने** – युद्धकालीन माँग पूरी करने के लिए नए कारखाने स्थापित किए गए।
6. **पुरानी मिलों का अधिक उपयोग** – पुराने कारखाने कई पालियों में चलने लगे।
7. **श्रमिकों की संख्या में वृद्धि** – बड़ी संख्या में नए मजदूरों को काम पर रखा गया।
8. **काम के घंटों में वृद्धि** – प्रत्येक मजदूर को पहले से अधिक समय तक काम करना पड़ा।

3. प्रथम विश्व युद्ध के बाद मैनचेस्टर भारतीय बाजार में अपनी पुरानी स्थिति क्यों प्राप्त नहीं कर पाया?

उत्तर :
1. **भारतीय उद्योगों की मजबूत स्थिति** – युद्ध के दौरान भारतीय कारखानों ने घरेलू बाजार में अपना स्थान बना लिया। भारतीय उद्योगपति स्थानीय माँग पूरी करने लगे।
2. **ब्रिटेन की आर्थिक कमजोरी** – ब्रिटेन अपनी अर्थव्यवस्था का आधुनिकीकरण नहीं कर पाया। उसकी औद्योगिक स्थिति कमजोर हो गई।
3. **विदेशी प्रतिस्पर्धा** – ब्रिटेन अमेरिका, जर्मनी और जापान से प्रतिस्पर्धा में पिछड़ गया।
4. **कपास उत्पादन में गिरावट** – ब्रिटेन का कपास उत्पादन बहुत कम रह गया।
5. **सूती कपड़ों के निर्यात में कमी** – ब्रिटेन से होने वाले सूती कपड़ों के निर्यात में भारी गिरावट आई।
6. **घरेलू बाजार पर भारतीय नियंत्रण** – स्थानीय उद्योगपतियों ने विदेशी उत्पादों को हटाकर भारतीय बाजारों पर कब्जा कर लिया। उन्होंने धीरे–धीरे अपनी स्थिति मजबूत कर ली।

4. बीसवीं सदी में हथकरघा कपड़े का उत्पादन किस प्रकार बढ़ा?

उत्तर : मशीन निर्मित वस्तुओं की प्रतिस्पर्धा के बावजूद बीसवीं सदी में हथकरघा उत्पादन में वृद्धि हुई।

1. **तकनीकी सुधार** – बुनकरों ने नई तकनीक को पूरी तरह अस्वीकार नहीं किया। उन्होंने उत्पादन बढ़ाने वाली तकनीक अपनाई।
2. **फ्लाई शटल का प्रयोग** – बीसवीं सदी के दूसरे दशक तक बुनकर फ्लाई शटल वाले करघे इस्तेमाल करने लगे।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

3. **उत्पादन की गति** – फ्लाई शटल से बुनाई की गति बढ़ी। कम समय में अधिक कपड़ा तैयार होने लगा।
4. **उत्पादकता में वृद्धि** – प्रति कामगार उत्पादन बढ़ा। मजदूर बड़े करघे चला सकते थे।
5. **चौड़े कपड़े का उत्पादन** – फ्लाई शटल से चौड़े अरज का कपड़ा बनाना आसान हुआ।
6. **श्रम की आवश्यकता में कमी** – समान उत्पादन के लिए कम श्रमिकों की आवश्यकता हुई।
7. **अन्य छोटे सुधार** – बुनकरों ने कई छोटे तकनीकी सुधार भी किए। इनसे मिलों के साथ प्रतिस्पर्धा करने में सहायता मिली।
8. **क्षेत्रीय विस्तार** – 1941 तक भारत के 35 प्रतिशत से अधिक हथकरघों में फ्लाई शटल लगे थे। त्रावणकोर, मद्रास, मैसूर, कोचीन और बंगाल में इनका प्रयोग बहुत अधिक था।
9. **उत्पादन में वृद्धि** – 1900 से 1940 के बीच हथकरघा कपड़े का उत्पादन लगभग तीन गुना हो गया।

3. प्रथम विश्व युद्ध के बाद मैनचेस्टर भारतीय बाजार में अपनी पुरानी स्थिति क्यों प्राप्त नहीं कर पाया?

उत्तर : 1. **नई तकनीक का प्रयोग** – बुनकरों ने फ्लाई शटल वाले करघे अपनाए।

2. **छोटे तकनीकी सुधार** – बुनकरों ने कई छोटे सुधार किए। इनसे उत्पादन लागत बढ़ाए बिना उत्पादन बढ़ाया गया।
3. **विशेष और महीन कपड़े** – कुछ बुनकर महीन तथा विशेष प्रकार के कपड़े बनाते थे। मशीनें इनकी आसानी से नकल नहीं कर सकती थीं।
4. **विशेष डिजाइनों की माँग** – हाथ से बुने कपड़ों के बारीक डिजाइन मिलों में नहीं बनाए जा सकते थे।
5. **बनारसी और बालूचरी साड़ियाँ** – इन साड़ियों की माँग खाते–पीते वर्ग में बनी रही। अकालों के समय भी इनकी बिक्री पर कम प्रभाव पड़ता था।
6. **बुने हुए बॉर्डर** – मिलें बुने हुए बॉर्डर वाली साड़ियों की नकल नहीं कर सकती थीं।
7. **मद्रास की लुंगियाँ** – मद्रास की प्रसिद्ध लुंगियों का स्थान मशीन निर्मित कपड़ा आसानी से नहीं ले सका।
8. **स्थिर उपभोक्ता वर्ग** – बेहतर किस्म का कपड़ा अमीर वर्ग खरीदता था। इस वर्ग की माँग में कम उतार–चढ़ाव आता था।

बस्तुओं के लिए बाजार

रिक्तस्थान –

1. भारतीय निर्माताओं द्वारा बनाए गए विज्ञापन ....के राष्ट्रवादी संदेश के वाहक बन गए थे। *(RBSE – 2023)*

उत्तर : स्वदेशी।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. मैनचेस्टर के उद्योगपति कपड़ों के बंडलों पर लेबल क्यों लगाते थे

उत्तर : 1. **कंपनी की पहचान** – लेबल से खरीदारों को कंपनी का नाम पता चलता था।

2. **उत्पादन–स्थल की जानकारी** – लेबल पर वस्तु के उत्पादन की जगह लिखी होती थी।
3. **अलग पहचान** – उत्पाद को दूसरी कंपनियों के उत्पादों से अलग पहचान मिलती थी।
4. **गुणवत्ता का प्रतीक** – लेबल वस्तु की गुणवत्ता का प्रमाण माना जाता था।
5. **विश्वास पैदा करना** – 'मेड इन मैनचेस्टर' देखकर खरीदार कपड़े की गुणवत्ता पर विश्वास करते थे।
6. **बिक्री बढ़ाना** – आकर्षक लेबलों के माध्यम से ग्राहकों को वस्तु खरीदने के लिए प्रेरित किया जाता था।

2. विज्ञापनों में भारतीय देवी–देवताओं की तस्वीरें क्यों लगाई जाती थीं?

उत्तर : 1. **विदेशी वस्तु को परिचित बनाना** – भारतीय देवी–देवताओं की छवियाँ विदेशी वस्तुओं को भारतीयों के लिए जानी–पहचानी बनाती थीं।

2. **धार्मिक स्वीकृति का भाव** – निर्माता यह दिखाने का प्रयास करते थे कि ईश्वर भी उस वस्तु की खरीद का समर्थन करता है।
3. **विश्वास उत्पन्न करना** – धार्मिक छवियों से उत्पाद के प्रति विश्वास बढ़ता था।
4. **सम्मान पैदा करना** – देवी–देवताओं की तस्वीरों से वस्तु के प्रति धार्मिक सम्मान उत्पन्न होता था।
5. **ग्राहकों को आकर्षित करना** – कृष्ण, लक्ष्मी, सरस्वती और कार्तिक जैसी लोकप्रिय छवियों से भारतीय ग्राहक आकर्षित होते थे।

3. भारतीय निर्माताओं के विज्ञापनों में कौन–सा राष्ट्रवादी संदेश दिया जाता था? *(RBSE – 2023)*

उत्तर : **1. मुख्य संदेश** – लोगों से भारत में बनी वस्तुएँ खरीदने की अपील की जाती थी।

2. राष्ट्र और उपभोग का संबंध – विज्ञापनों का संदेश था कि राष्ट्र की परवाह करने वाले व्यक्ति को भारतीय उत्पादों का प्रयोग करना चाहिए।

3. विदेशी वस्तुओं का विरोध – भारतीय वस्तुओं की खरीद को विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार से जोड़ा गया।

4. स्वदेशी का प्रचार – विज्ञापन स्वदेशी आंदोलन के राष्ट्रवादी संदेश के वाहक बने।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. विज्ञापनों ने नए उपभोक्ता और नए बाजार बनाने में किस प्रकार सहायता की?

उत्तर : **1. नई आवश्यकताओं का निर्माण** – विज्ञापनों ने वस्तुओं को आवश्यक और वांछनीय बनाया। उन्होंने लोगों की सोच बदली। नई उपभोक्ता आवश्यकताएँ पैदा कीं।

2. उत्पादों के बाजार का विस्तार – विज्ञापनों ने विभिन्न वस्तुओं की जानकारी अधिक लोगों तक पहुँचाई। इससे उनके बाजार का विस्तार हुआ।

3. लेबलों का प्रयोग – कपड़ों के बंडलों पर लेबल लगाए जाते थे। लेबल से कंपनी का नाम पता चलता था। उत्पादन–स्थल की जानकारी मिलती थी।

4. गुणवत्ता का विश्वास – लेबल गुणवत्ता का प्रतीक बन गए। 'मेड इन मैनचेस्टर' देखकर खरीदार वस्तु पर विश्वास करते थे।

5. आकर्षक तस्वीरें – लेबलों पर सुंदर और आकर्षक चित्र बनाए जाते थे। इनसे ग्राहकों का ध्यान उत्पाद की ओर जाता था।

6. देवी–देवताओं की छवियाँ – कृष्ण, लक्ष्मी और सरस्वती जैसी छवियों का प्रयोग किया गया। विदेशी वस्तुओं को भारतीयों के लिए परिचित बनाया गया। वस्तु को धार्मिक स्वीकृति प्राप्त होने का भाव दिया गया।

7. कैलेंडरों का प्रयोग – उन्नीसवीं सदी के अंत में निर्माता कैलेंडर छपवाने लगे। कैलेंडर पढ़े–लिखे और अशिक्षित दोनों लोगों को समझ आते थे।

8. निरंतर प्रचार

9. शाही और ऐतिहासिक व्यक्तित्व – सम्राटों, नवाबों और ऐतिहासिक व्यक्तियों की तस्वीरें इस्तेमाल की गईं।

10. भारतीय विज्ञापन और राष्ट्रवाद – भारतीय निर्माताओं ने विज्ञापनों में राष्ट्रवादी संदेश दिया। । विज्ञापन स्वदेशी संदेश के वाहक बने।

5 मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

शुरुआती छपी किताबें

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. चीन में लगभग 594 ई. से किताबें किस विधि से छापी जाने लगीं?

(अ) धातु के अक्षरों से

(ब) पत्थर पर खुदाई करके

(स) स्याही लगे काठ के ब्लॉक से

(द) बिजली से चलने वाली मशीन से **(स)**

2. पारंपरिक चीनी किताबें किस शैली में बनाई जाती थीं?

(अ) पेपरबैक शैली (ब) एकॉर्डियन शैली

(स) जिल्दबंद शैली (द) पत्रिका शैली **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. जापान की सबसे पुरानी छपी पुस्तक .... है।

उत्तर : डायमंड सूत्र

2. शंघाई पश्चिमी शैली के स्कूलों की जरूरतों को पूरा करने वाला नया .... केंद्र बना।

उत्तर : प्रिंट–संस्कृति

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. खुशनवीसी का अर्थ क्या है?

उत्तर : सुलेखन या सुंदर अक्षरों में कलात्मक लिखाई।

2. चीन में छपी सामग्री का सबसे बड़ा उत्पादक कौन था?

उत्तर : चीनी राजतंत्र।

3. जापान में छपाई की तकनीक कौन लेकर आए?

उत्तर : चीनी बौद्ध प्रचारक।

4. उन्नीसवीं सदी के अंत में चीन में किस छपाई ने हाथ की छपाई की जगह लेना शुरू किया?

उत्तर : मशीनी या यांत्रिक छपाई।

5. मुद्रण की पहली तकनीक किन देशों में विकसित हुई? कोई दो देशों के नाम लिखिए। *(RBSE – 2026)*

उत्तर : मुद्रण की सबसे पहली तकनीक चीन, जापान और कोरिया में विकसित हुई।

कोई दो देश – 1. चीन, 2. जापान

2. सुलेखन किसे कहते हैं? *(RBSE – 2024)*

उत्तर : हाथ से सुंदर–सुडौल अक्षरों में सही–सही और कलात्मक ढंग से लिखने की कला को सुलेखन या खुशनवीसी कहते हैं।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. चीन में शुरुआती छपाई की प्रक्रिया समझाइए।

उत्तर : 1. चीन में लगभग 594 ई. से छपाई शुरू हुई।

2. स्याही लगे काठ के ब्लॉक पर कागज रगड़कर किताबें छापी जाती थीं।

3. पतले कागज के दोनों तरफ छपाई संभव नहीं थी।

4. इसलिए किताबें एकॉर्डियन शैली में मोड़कर और सिलकर बनाई जाती थीं।

> **Trick** "ब्लॉक पर स्याही, कागज पर रगड़ाई, मोड़कर किताब बनाई।"

2. सत्रहवीं सदी में चीन के नए पाठक वर्ग की रुचियाँ क्या थीं?

उत्तर : 1. काल्पनिक किस्से पढ़ना।

2. कविताएँ और आत्मकथाएँ पढ़ना।

3. शास्त्रीय साहित्यिक कृतियों के संकलन पढ़ना।

4. रूमानी नाटक पढ़ना।

3. जापान में मुद्रण संस्कृति की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर : 1. छपाई की तकनीक चीन से जापान पहुँची।

2. 868 ई. में डायमंड सूत्र छपी।

3. इसमें पाठ के साथ काठ पर खुदे चित्र थे।

4. मध्यकालीन जापान में कवि और गद्यकार दोनों छपते थे।

5. किताबें सस्ती और सुलभ थीं।

> **Trick** "डायमंड सूत्र ने जापान की छपाई को चमका दिया।"

4. एदो की शहरी संस्कृति में मुद्रित सामग्री का क्या महत्व था?

उत्तर : 1. एदो में हाथ से मुद्रित सामग्री का व्यापक प्रसार था।
2. महिलाओं, संगीत, हिसाब–किताब और शिष्टाचार पर किताबें मिलती थीं।
3. चाय अनुष्ठान, फूलसाजी और रसोई से जुड़ी किताबें भी उपलब्ध थीं।
4. इससे शहरी जीवन और पढ़ने की संस्कृति का विकास दिखता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. चीन का राजतंत्र लंबे समय तक मुद्रित सामग्री का सबसे बड़ा उत्पादक कैसे बना रहा? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर : 1. चीन में सिविल सेवा परीक्षाओं के माध्यम से अधिकारियों की नियुक्ति होती थी।
2. चीन की नौकरशाही बहुत विशाल थी।
3. चीनी राजतंत्र इन परीक्षाओं के लिए बड़ी संख्या में पुस्तकें छपवाता था।
4. परीक्षार्थियों को अध्ययन के लिए मुद्रित पुस्तकों की आवश्यकता होती थी।
5. सोलहवीं सदी में परीक्षा देने वालों की संख्या बढ़ गई।
6. परीक्षार्थियों की संख्या बढ़ने के साथ छपी पुस्तकों की संख्या भी बढ़ गई।
7. इस प्रकार चीनी राजतंत्र लंबे समय तक मुद्रित सामग्री का सबसे बड़ा उत्पादक बना रहा।

यूरोप में मुद्रण का आना

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. ग्यारहवीं सदी में चीनी कागज यूरोप किस रास्ते पहुँचा?
(अ) समुद्री मार्ग (ब) रेशम मार्ग
(स) दक्षिणी मार्ग (द) मसाला मार्ग **(ब)**

2. मार्को पोलो चीन से छपाई का ज्ञान लेकर किस देश लौटा?
(अ) फ्रांस (ब) जर्मनी
(स) इटली (द) इंग्लैंड **(स)**

3. गुटेन्बर्ग ने अपना प्रिंटिंग यंत्र कब तक पूरा कर लिया था?
(अ) 1295 तक (ब) 1448 तक
(स) 1558 तक (द) 1780 तक **(ब)**

4. 'वेलम' शब्द का क्या अर्थ है? *(RBSE – 2025)*
(अ) ताम्र–पत्र (ब) चर्म–पत्र
(स) ताड़–पत्र (द) कागज **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. योहान गुटेन्बर्ग ने 1430 के दशक में .... में नई मुद्रण तकनीक विकसित की।

उत्तर : स्ट्रैसबर्ग

2. गुटेन्बर्ग की पहली छपी किताब .... थी।

उत्तर : बाइबिल

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. वेलम क्या था?

उत्तर : जानवरों के चमड़े से बनी लेखन सतह।

2. गुटेन्बर्ग प्रेस का मॉडल किस मशीन से लिया गया?

उत्तर : जैतून प्रेस से।

3. गुटेन्बर्ग की बाइबिल की लगभग कितनी प्रतियाँ छपीं?

उत्तर : लगभग 180 प्रतियाँ।

4. कम्पोजीटर किसे कहते हैं?

उत्तर : छपाई के लिए इबारत कम्पोज करने वाले व्यक्ति को।

5. जोहानिस गुटेन्बर्ग ने किस यंत्र का आविष्कार किया था? *(RBSE प्रवेशिका – 2023)*

उत्तर : जोहानिस गुटेन्बर्ग ने मूवेबल टाइप प्रिंटिंग मशीन अर्थात् प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किया था। उन्होंने 1448 तक अपने यंत्र को पूरा कर लिया था और इस पर सबसे पहले बाइबिल छापी थी।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. यूरोप में मुद्रण तकनीक के आने की प्रक्रिया लिखिए।

उत्तर : 1. चीन से कागज रेशम मार्ग द्वारा यूरोप पहुँचा।
2. कागज ने पांडुलिपियों के उत्पादन को आसान बनाया।
3. मार्को पोलो चीन से वुडब्लॉक छपाई का ज्ञान लेकर इटली लौटा।
4. इटली से यह तकनीक धीरे–धीरे यूरोप में फैल गई।

2. यूरोप में पांडुलिपियों से किताबों की बढ़ती माँग पूरी क्यों नहीं हो पाती थी?

उत्तर : 1. पांडुलिपियों की नकल उतारना महँगा था।
2. इसमें अधिक समय और श्रम लगता था।
3. पांडुलिपियाँ नाजुक होती थीं।
4. उन्हें लाने–ले जाने और सुरक्षित रखने में कठिनाई थी।
5. इसलिए उनका प्रसार सीमित रहता था।

मिशन ज्ञान
पढ़ो जब चाहो, जहाँ चाहो, जैसे चाहो!

3. गुटेन्बर्ग के अनुभवों ने प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार में कैसे मदद की?

उत्तर : 1. उसने बचपन से तेल और जैतून पेरने की मशीनें देखी थीं।

2. उसने पत्थर पॉलिश करना सीखा।

3. उसने सुनारी और शीशे को आकार देने की कला सीखी।

4. इन अनुभवों से उसने धातु के अक्षरों और प्रेस का विकास किया।

4. शुरुआती छपी किताबें पांडुलिपियों जैसी क्यों दिखती थीं?

उत्तर : 1. धातुई अक्षर हाथ की सजावटी शैली की नकल करते थे।

2. हाशियों पर फूल–पत्तियों की डिज़ाइन बनाई जाती थी।

3. चित्र अक्सर हाथ से पेंट किए जाते थे।

4. अमीरों के लिए खाली जगह छोड़ी जाती थी ताकि वे अपनी पसंद से सजावट करा सकें।

5. गुटेन्बर्ग प्रेस को 'मूवेबल टाइप प्रिंटिंग मशीन' क्यों कहा गया?

उत्तर : 1. इसमें रोमन वर्णमाला के 26 अक्षरों के टाइप बनाए गए।

2. इन अक्षरों को इधर–उधर कर शब्द बनाए जा सकते थे।

3. हर बार नई तख्ती उकेरने की जरूरत कम हो गई।

4. इससे किताबें पहले की तुलना में तेज़ी से छपने लगीं।

Trick

"26 अक्षर हिले, शब्द बने,
तख्ती बची और छपाई तेज हुई।"

26–हि–श–त–ते

26 = रोमन वर्णमाला के 26 अक्षर
हि = अक्षरों को हिलाया/इधर–उधर किया
श = शब्द बनाए गए
त = नई तख्ती की जरूरत कम हुई
ते = तेज छपाई हुई

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. यूरोप में पुस्तकों की बढ़ती माँग को हस्तलिखित पांडुलिपियाँ पूरा क्यों नहीं कर सकीं?

उत्तर : 1. पांडुलिपियों की नकल हाथ से उतारी जाती थी।

2. उनकी नकल तैयार करना बहुत खर्चीला था।

3. यह कार्य समयसाध्य और श्रमसाध्य था।

4. पांडुलिपियाँ नाजुक होती थीं।

5. उन्हें लाने–ले जाने में कठिनाई होती थी।

6. उन्हें सुरक्षित रखना भी मुश्किल था।

7. उनका प्रसार सीमित था।

8. इसलिए हस्तलिखित पांडुलिपियाँ पुस्तकों की बढ़ती माँग को पूरा नहीं कर सकती थीं।

मुद्रण क्रांति और उसका असर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. मुद्रण क्रांति का सबसे बड़ा प्रभाव किस पर पड़ा?

(अ) केवल खेती पर
(ब) लोगों की जिंदगी, ज्ञान और सत्ता से संबंधों पर
(स) केवल युद्धों पर
(द) केवल व्यापारिक जहाजों पर **(ब)**

2. मुद्रण से पहले आम लोग मुख्य रूप से किस संस्कृति में जीते थे?

(अ) मौखिक संस्कृति
(ब) डिजिटल संस्कृति
(स) औद्योगिक संस्कृति
(द) वैज्ञानिक संस्कृति **(अ)**

3. मार्टिन लूथर ने किस संस्था की कुरीतियों की आलोचना की?

(अ) रोमन कैथलिक चर्च
(ब) ईस्ट इंडिया कंपनी
(स) फ्रांसीसी राजशाही
(द) चीनी राजतंत्र **(अ)**

4. "मुद्रण ईश्वर की दी हुई महानतम देन है, सबसे बड़ा तोहफा।" यह कथन किसने कहा? *(RBSE – 2026)*

(अ) मेनोकियो (ब) इरैस्मस
(स) मार्टिन लूथर (द) गुटेन्बर्ग **(स)**

रिक्तस्थान –

1. छापेखाने के आने से एक नया .... वर्ग पैदा हुआ।

उत्तर : पाठक

2. लोकगीत का ऐतिहासिक आख्यान ....कहलाता है।

उत्तर : गाथा–गीत

3. मार्टिन लूथर ने अपनी .... स्थापनाएँ लिखीं।

उत्तर : पिच्चानवे

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. मार्टिन लूथर ने चर्च को किसके लिए चुनौती दी?

उत्तर : शास्त्रार्थ के लिए।

2. इन्क्वीज़ीशन क्या था?

उत्तर : धर्म–विरोधियों की पहचान और सजा देने वाली रोमन कैथलिक संस्था।

3. रोमन कैथलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना करते हुए किस धर्म–सुधारक ने अपनी पंचानवे स्थापनाएँ लिखीं?

(RBSE – 2024)

उत्तर : धर्म–सुधारक मार्टिन लूथर ने रोमन कैथलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना करते हुए अपनी पंचानवे स्थापनाएँ लिखीं।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. मुद्रण क्रांति से लोगों की जिंदगी में क्या बदलाव आए?

उत्तर : 1. पुस्तक उत्पादन के नए तरीके विकसित हुए।
2. सूचना और ज्ञान से लोगों का संबंध बदला।
3. संस्था और सत्ता को देखने का दृष्टिकोण बदला।
4. लोकचेतना में परिवर्तन आया।
5. विचारों के प्रसार की गति बढ़ी।

2. छपाई से नया पाठक वर्ग कैसे बना?

उत्तर : 1. किताबों की कीमत कम हुई।
2. किताब बनाने में समय और श्रम कम लगा।
3. अधिक संख्या में प्रतियाँ छापना संभव हुआ।
4. बाजार किताबों से भर गया।
5. किताबें समाज के व्यापक वर्गों तक पहुँचीं।

Trick **"कम–कम–ज्यादा–ज्यादा"**

"तीन चीजें कम हुईं, दो चीजें ज्यादा हुईं – कीमत, समय, श्रम कम; प्रतियाँ और पाठक ज्यादा।"

3. मौखिक संस्कृति और मुद्रित संस्कृति में मेल कैसे हुआ?

उत्तर : 1. बहुत से लोग पढ़ नहीं सकते थे।
2. मुद्रकों ने लोकगीत और लोककथाएँ छापीं।
3. सचित्र किताबें ग्रामीण सभाओं और शहरों में गाई–सुनाई जाती थीं।
4. छपी सामग्री मौखिक रूप में भी फैलती थी।
5. श्रोता और पाठक वर्ग एक–दूसरे में मिल गए।

4. प्रिंट को लेकर लोगों में डर क्यों था?

उत्तर : 1. छपे शब्द का प्रसार बहुत व्यापक था।
2. नियंत्रण न होने पर बागी विचार फैल सकते थे।
3. अधार्मिक विचारों के फैलने की आशंका थी।
4. धर्मगुरु, शासक और कई लेखक इससे चिंतित थे।
5. मूल्यवान साहित्य की सत्ता कमजोर होने का डर था।

5. मार्टिन लूथर और मुद्रण का संबंध समझाइए।

उत्तर : 1. लूथर ने रोमन कैथलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना की।
2. उसने पिच्चानवे स्थापनाएँ लिखीं।
3. उसकी छपी प्रति विटेनबर्ग चर्च के दरवाजे पर लगाई गई।
4. लूथर के लेख बड़ी संख्या में छपे और पढ़े गए।
5 इससे प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार को बल मिला।

Trick **आ–95–वि–छ–प्रो**

आ = आलोचना
95 = पिच्चानवे स्थापनाएँ
वि = विटेनबर्ग चर्च
छ = छपे लेख
प्रो = प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. "सोलहवीं शताब्दी के यूरोप में मुद्रण क्रांति ने लोगों के जीवन को बदल दिया।" कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर : 1. **पुस्तकें सस्ती हुईं** – छपाई के कारण पुस्तकों की कीमत कम हो गई।
2. **उत्पादन तेज हुआ** – पुस्तक तैयार करने में लगने वाला समय और श्रम कम हो गया।
3. **प्रतियों की संख्या बढ़ी** – एक पुस्तक की बड़ी संख्या में प्रतियाँ छापना संभव हुआ।
4. **नया पाठक वर्ग बना** – पुस्तकें समाज के व्यापक वर्गों तक पहुँचने लगीं।
5. **विचारों का प्रचार हुआ** – लोग अपने विचारों को छापकर बड़ी संख्या में फैला सकते थे।
6. **वाद–विवाद की संस्कृति विकसित हुई** – धार्मिक और स्थापित सत्ता के विचारों को चुनौती मिलने लगी।
7. **लोकचेतना बदली** – सूचना, ज्ञान, संस्थाओं और सत्ता के प्रति लोगों का दृष्टिकोण बदल गया।

Trick "सस्ती और तेज छपाई से प्रतियाँ बढ़ीं, पाठक बने, विचार फैले, वाद–विवाद हुआ और लोकचेतना बदली।

2. "मुद्रण ने पाठक जनता और श्रोता जनता को एक–दूसरे के निकट ला दिया।" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 1. यूरोप के बहुत से लोग पढ़ना नहीं जानते थे, लेकिन दूसरों द्वारा पढ़ी गई सामग्री सुन सकते थे।
2. मुद्रकों ने लोकगीत और लोककथाएँ छापना शुरू किया।
3. पुस्तकों को आकर्षक बनाने के लिए उनमें चित्र दिए जाते थे।
4. छपी सामग्री को ग्रामीण सभाओं और शहरी शराबघरों में गाया–सुनाया जाता था।
5. मौखिक संस्कृति मुद्रित संस्कृति में प्रवेश कर गई।
6. छपी सामग्री का प्रसार मौखिक रूप में भी होने लगा।
7. इस प्रकार पाठक और श्रोता वर्ग एक–दूसरे में घुल–मिल गए।

3. रोमन कैथलिक चर्च ने प्रकाशकों और पुस्तक–विक्रेताओं पर नियंत्रण क्यों लगाया?

उत्तर : 1. छपी पुस्तकों के कारण लोग धर्म की अलग–अलग व्याख्याओं से परिचित होने लगे।
2. मेनोकियो जैसे लोगों ने बाइबिल के नए अर्थ निकालने शुरू कर दिए।
3. चर्च को धर्म–विरोधी विचारों के प्रसार का डर था।
4. ऐसे विचार चर्च की धार्मिक सत्ता को चुनौती दे रहे थे।
5. इसलिए चर्च ने प्रकाशकों और पुस्तक–विक्रेताओं पर पाबंदियाँ लगाईं।
6. सन् 1558 से प्रतिबंधित पुस्तकों की सूची भी रखी जाने लगी।

पढ़ने का जुनून

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. इंग्लैंड में पेनी चौपबुक्स बेचने वालों को क्या कहा जाता था?

(अ) कम्पोजीटर (ब) चौपमेन
(स) कातिब (द) उलमा **(ब)**

2. फ्रांस में सस्ते कागज और नीली जिल्द वाली छोटी किताबें क्या कहलाती थीं?

(अ) बिब्लियोथीक ब्ल्यू (ब) गैली
(स) डायमंड सूत्र (द) संवाद कौमुदी **(अ)**

3. अठारहवीं सदी के आरंभ से किसका प्रकाशन शुरू हुआ?

(अ) केवल पांडुलिपियों का
(ब) पत्रिकाओं का
(स) केवल ताड़पत्रों का
(द) केवल नक्शों का **(ब)**

4. मर्सिए ने छापाखाने को किसका सबसे ताकतवर औजार कहा?

(अ) प्रगति का (ब) युद्ध का
(स) साम्राज्य का (द) खेती का **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. छपाई ने वाद–विवाद–संवाद की नयी .... को जन्म दिया।

उत्तर : संस्कृति

2. इंग्लैंड में पेनी चौपबुक्स बेचने वाले फेरीवालों को .... कहा जाता था।

उत्तर : चेपमेन

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. चेपमेन क्या थी?

उत्तर : पॉकेट बुक आकार की सस्ती किताब।

2. मर्सिए किस बात को लेकर आश्वस्त था?

उत्तर : छापाखाना निरंकुशवाद को कमजोर कर सकता है।

3. मुद्रण संस्कृति ने फ्रांसीसी क्रांति के लिए क्या तैयार किया?

उत्तर : अनुकूल परिस्थितियाँ।

4. पंचांग किसे कहते हैं?

उत्तर : चाँद और सूरज की गति, ज्वार–भाटा के समय तथा दैनिक जीवन से जुड़ी महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ देने वाले वार्षिक प्रकाशन को पंचांग कहते हैं।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. नए पाठकों के लिए किस प्रकार की सामग्री छपने लगी?

उत्तर : 1. पंचांग।
2. लोक–गाथाएँ और लोकगीत।
3. मनोरंजन–प्रधान सामग्री।
4. प्रेम कहानियाँ।
5. अतीत की गाथाएँ और इतिहास।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

2. वैज्ञानिक और दार्शनिक विचार आम जनता तक कैसे पहुँचे?

उत्तर : 1. वैज्ञानिकों ने अपने आविष्कार प्रकाशित किए।
2. प्राचीन और मध्यकालीन ग्रंथ संकलित किए गए।
3. नक्शे और वैज्ञानिक खाके छपे।
4. न्यूटन जैसे वैज्ञानिकों के लिए पाठक वर्ग तैयार हुआ।
5. टॉमस पेन, वॉल्तेयर और रूसो के विचार लोकप्रिय हुए।

3. मुद्रण संस्कृति और फ्रांसीसी क्रांति के संबंध में तीन मुख्य तर्क लिखिए।

उत्तर : 1. छपाई से ज्ञानोदय के चिंतकों के विचार फैले।
2. लोगों ने परंपरा, अंधविश्वास और निरंकुशवाद पर सवाल उठाए।
3. वाद–विवाद–संवाद की नयी संस्कृति बनी।
4. राजशाही और उसकी नैतिकता का मजाक उड़ाने वाला साहित्य फैला।
5. कार्टूनों और व्यंग्य चित्रों ने लोगों को राजतंत्र के खिलाफ सोचने को प्रेरित किया।

Trick
"Pen से Revolution"
कलम और छपाई ने राजशाही के खिलाफ सोच जगाई।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. मुद्रण संस्कृति ने फ्रांसीसी क्रांति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ किस प्रकार तैयार कीं?

उत्तर : 1. छपाई से ज्ञानोदय के चिंतकों के विचारों का प्रसार हुआ।
2. छपाई ने लोगों के बीच वाद–विवाद और संवाद की नई संस्कृति को जन्म दिया।
3. पुराने मूल्यों, संस्थाओं और नियमों पर सार्वजनिक रूप से चर्चा होने लगी।
4. 1780 के दशक तक राजशाही और उसकी नैतिकता का मजाक उड़ाने वाला बहुत–सा साहित्य प्रकाशित हो चुका था।
5. कार्टूनों और व्यंग्य–चित्रों में दिखाया जाता था कि सामान्य जनता कठिनाइयों में जीवन बिता रही है, जबकि राजशाही और कुलीन वर्ग भोग–विलास में डूबे हुए हैं।
6. इस प्रकार मुद्रण संस्कृति ने फ्रांसीसी क्रांति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ तैयार कीं।

उन्नीसवीं सदी

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. ग्रिम बंधुओं ने किसके बीच से लोककथाएँ जमा कीं?
(अ) व्यापारियों के बीच से
(ब) किसानों के बीच से
(स) सैनिकों के बीच से
(द) मुद्रकों के बीच से **(ब)**

2. पेनी मैग्जीन का प्रकाशन इंग्लैंड में किस अवधि में हुआ?
(अ) 1450–1550 (ब) 1812–1815
(स) 1832–1850 (द) 1920–1930 **(स)**

3. रिचर्ड एम. हो. ने कौन–सा प्रेस कारगर बनाया?
(अ) शक्ति चालित बेलनाकार प्रेस
(ब) हाथ से चलने वाला ताड़पत्र प्रेस
(स) केवल लकड़ी का प्रेस
(द) डिजिटल प्रेस **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. महिलाओं के लिए .... मैगजींस और गृहस्थी सिखाने वाली निर्देशिकाएँ छपती थीं।

उत्तर : पेनी

2. सदी के अंत तक .... प्रेस आ गया था, जिससे छह रंगों की छपाई संभव हुई।

उत्तर : ऑफसेट

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. उन्नीसवीं सदी में बच्चे पाठक क्यों बने?

उत्तर : प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य होने लगी।

2. फ्रांस में 1857 का प्रेस किस उद्देश्य से बना?

उत्तर : बाल–पुस्तकें छापने के लिए।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. ग्रिम बंधुओं की लोककथाओं में छपाई के बाद क्या परिवर्तन हुआ?

उत्तर : 1. लोककथाएँ किसानों से एकत्र की गईं।
2. सामग्री का संपादन किया गया।
3. 1812 में संकलन प्रकाशित हुआ।
4. बच्चों के लिए अनुपयुक्त सामग्री हटाई गई।
5. ग्रामीण लोककथाओं को नया रूप मिला।

पढ़ो जब चाहो, जहाँ चाहो, जैसे चाहो!

> **Trick** "किसानों से कथाएँ लीं, संपादन किया, 1812 में छापा, बच्चों वाली बनाई और नया रूप दिया।"
>
> कि – सं – 1812 – ब – न
>
> कि = किसानों से लोककथाएँ एकत्र
>
> सं = सामग्री का संपादन
>
> 1812 = संकलन प्रकाशित
>
> ब = बच्चों के लिए अनुपयुक्त सामग्री हटाई
>
> न = नया रूप मिला

2. उन्नीसवीं सदी में महिलाएँ पाठिका और लेखिका के रूप में कैसे उभरीं?

उत्तर : 1. महिलाओं के लिए पत्रिकाएँ छपने लगीं।
2. गृहस्थी और सही चाल–चलन की निर्देशिकाएँ आईं।
3. उपन्यासों में महिलाएँ प्रमुख पाठक मानी गईं।
4. जेन ऑस्टिन, ब्रॉण्ट बहनें और जॉर्ज इलियट जैसी लेखिकाएँ प्रसिद्ध हुईं।
5. लेखन में स्वतंत्र सोच वाली नारी की छवि उभरी।

3. मजदूर वर्ग ने पढ़ने और लिखने का उपयोग कैसे किया?

उत्तर : 1. किराए के पुस्तकालयों से मजदूरों को शिक्षा मिली।
2. सफेद–कॉलर मजदूर, दस्तकार और निम्नवर्गीय लोग पढ़ने लगे।
3. काम के दिन छोटे होने से उन्हें समय मिला।
4. उन्होंने आत्म–सुधार के लिए पढ़ना शुरू किया।
5. राजनीतिक पर्चे और आत्मकथाएँ लिखीं।

4. उन्नीसवीं सदी में छपाई तकनीक में कौन–कौन से सुधार हुए?

उत्तर : 1. प्रेस धातु से बनने लगे।
2. शक्ति चालित बेलनाकार प्रेस विकसित हुआ।
3. प्रति घंटे 8000 शीट छापना संभव हुआ।
4. ऑफसेट प्रेस से छह रंगों की छपाई संभव हुई।
5. बिजली से चलने वाले प्रेस ने छपाई को तेज किया।

भारत का मुद्रण संसार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारत में मुद्रण युग से पहले किसकी समृद्ध परंपरा थी?
(अ) हस्तलिखित पांडुलिपियों की
(ब) डिजिटल किताबों की
(स) पेपरबैक उपन्यासों की
(द) सिनेमा पोस्टरों की **(अ)**

2. भारत में प्रिंटिंग प्रेस किसके साथ आया?
(अ) पुर्तगाली धर्म–प्रचारकों के साथ
(ब) फ्रांसीसी व्यापारियों के साथ
(स) जर्मन मुद्रकों के साथ
(द) चीनी बौद्ध प्रचारकों के साथ **(अ)**

3. भारत में सर्वप्रथम प्रिंटिंग प्रेस कहाँ स्थापित की गई? *(RBSE – 2024)*
(अ) महाराष्ट्र (ब) बंगाल
(स) बिहार (द) बिहार **(द)**

रिक्तस्थान –

1. भारत में पांडुलिपियाँ ताड़ के पत्तों या हाथ से बने .... पर लिखी जाती थीं।

उत्तर : कागज

2. 1674 ई. तक कोंकणी और कन्नड़ भाषाओं में लगभग .... किताबें छप चुकी थीं।

उत्तर : 50

3. हिक्की ने 1780 से .... गजट नामक साप्ताहिक पत्रिका शुरू की।

उत्तर : बंगाल

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत में पांडुलिपियाँ किन भाषाओं में मिलती थीं?

उत्तर : संस्कृत, अरबी, फारसी और क्षेत्रीय भाषाओं में।

2. भारत में पहली तमिल किताब कहाँ छपी?

उत्तर : कोचीन ,1579 में।

3. जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने 1780 में किस साप्ताहिक पत्रिका का संपादन शुरू किया? *(Model Paper – 2025)*

उत्तर : जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने 1780 में 'बंगाल गजट' नामक साप्ताहिक पत्रिका का संपादन शुरू किया। यह औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्र एक निजी अंग्रेजी उद्यम था।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत में मुद्रण युग से पहले पांडुलिपियों की परंपरा कैसी थी?

उत्तर : 1. हस्तलिखित पांडुलिपियों की पुरानी और समृद्ध परंपरा थी।
2. संस्कृत, अरबी, फारसी और क्षेत्रीय भाषाओं में पांडुलिपियाँ थीं।
3. वे ताड़ के पत्तों या हाथ से बने कागज पर लिखी जाती थीं।

4. कई पांडुलिपियों में सुंदर चित्र बनाए जाते थे।
5. उन्हें तख्तियों की जिल्द या सिलकर सुरक्षित रखा जाता था।

2. पांडुलिपियों का व्यापक दैनिक उपयोग क्यों नहीं होता था?

उत्तर : 1. वे नाजुक होती थीं।
2. वे महँगी होती थीं।
3. उन्हें सावधानी से संभालना पड़ता था।
4. लिपियों के अलग–अलग रूपों के कारण पढ़ना कठिन था।
5. इसलिए उनका उपयोग सीमित था।

3. भारत में छपाई के शुरुआती विकास को समझाइए।

उत्तर : 1. प्रिंटिंग प्रेस सोलहवीं सदी में गोवा आया।
2. इसे पुर्तगाली धर्म–प्रचारक लेकर आए।
3. जेसुइट पुजारियों ने कोंकणी सीखी।
4. कोंकणी और कन्नड़ में कई पुस्तकें छपीं।
5. कैथलिक पुजारियों ने तमिल और मलयालम किताबें छापीं।

Trick "गोवा में पुर्तगाली आए, जेसुइट ने कोंकणी सीखी, फिर कोंकणी–कन्नड़–तमिल–मलयालम छपीं।"

गो–पु–जे–कों–कं–त–म

गो = गोवा
पु = पुर्तगाली धर्म–प्रचारक
जे = जेसुइट पुजारी
कों = कोंकणी
कं = कन्नड़
त = तमिल
म = मलयालम

4. हिक्की के बंगाल गजट की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर : 1. यह 1780 से शुरू हुई साप्ताहिक पत्रिका थी।
2. इसका संपादन जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने किया।
3. यह निजी अंग्रेजी उद्यम था।
4. यह औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्र होने का दावा करती थी।
5. इसमें विज्ञापन और अंग्रेज अधिकारियों से जुड़ी खबरें छपती थीं।

5. पांडुलिपियों की कोई दो विशेषताएँ लिखिए। *(Model Paper – 2026)*

उत्तर : 1. पांडुलिपियाँ ताड़ के पत्तों या हाथ से बने कागज पर हाथ से नकल करके तैयार की जाती थीं।
2. वे नाजुक और काफी महँगी होती थीं।

6. भारत में पांडुलिपियों को पढ़ना आसान क्यों नहीं था?

उत्तर : 1. पांडुलिपियाँ बहुत नाजुक होती थीं।
2. वे काफी महँगी होती थीं।
3. उन्हें बहुत सावधानी से पकड़ना पड़ता था।
4. लिपियाँ अलग–अलग तरीकों से लिखी जाती थीं।
5. इसलिए उन्हें पढ़ना आसान नहीं था और उनका व्यापक दैनिक उपयोग नहीं होता था।

धार्मिक सुधार और सार्वजनिक बहसें

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में भारत में बहसें मुख्यतः किन मसलों पर तेज हुईं?
(अ) धार्मिक मसलों पर
(ब) समुद्री व्यापार पर
(स) केवल खेलों पर
(द) केवल रेल निर्माण पर **(अ)**

2. राममोहन राय ने 1821 से कौन–सा पत्र प्रकाशित किया?
(अ) समाचार चंद्रिका
(ब) संवाद कौमुदी
(स) जाम–ए–जहाँ नामा
(द) शम्सुल अखबार **(ब)**

3. रूढ़िवादियों ने राममोहन राय के विचारों से टक्कर लेने के लिए किस पत्र का सहारा लिया?
(अ) समाचार चंद्रिका (ब) बंगाल गजट
(स) पेनी मैग्जीन (द) बिब्लियोथीक ब्ल्यू **(अ)**

4. देवबंद सेमिनरी की स्थापना कब हुई?
(अ) 1579 (ब) 1810
(स) 1867 (द) 1926 **(स)**

5. रामचरितमानस का पहला मुद्रित संस्करण 1810 में कहाँ प्रकाशित हुआ?
(अ) कलकत्ता (ब) गोवा
(स) कोचीन (द) शंघाई **(अ)**

6. 'रामचरितमानस' पुस्तक किसने लिखी? *(RBSE – 2025)*
(अ) वाल्मीकि (ब) सूरदास
(स) कबीर (द) तुलसीदास **(द)**

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

रिक्तस्थान –

1. राममोहन राय ने 1821 से .... प्रकाशित किया।

उत्तर : संवाद कौमुदी

2. 1822 में जाम–ए–जहाँ नामा और .... अखबार प्रकाशित हुए।

उत्तर : शम्सुल अखबार

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. उलमा किसे कहते हैं?

उत्तर : इस्लामी कानून और शरिया के विद्वानों को।

2. फतवा क्या है?

उत्तर : इस्लामी कानून जानने वाले विद्वान द्वारा की गई वैधानिक घोषणा।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. उन्नीसवीं सदी में धार्मिक सुधार और सार्वजनिक बहसें क्यों बढ़ीं?

उत्तर : 1. औपनिवेशिक समाज में बदलाव आ रहे थे।
2. अलग–अलग समूह धर्म की अलग व्याख्या कर रहे थे।
3. कुछ लोग रीति–रिवाजों में सुधार चाहते थे।
4. कुछ लोग सुधारकों के विरोध में थे।
5. छपी पुस्तिकाओं और अखबारों ने बहसों को फैलाया।

2. प्रिंट ने धार्मिक बहसों को कैसे प्रभावित किया?

उत्तर : 1. नए विचारों का प्रचार–प्रसार हुआ।
2. बहस की शक्ल तय हुई।
3. व्यापक जन–समुदाय इसमें शामिल हो सका।
4. लोग अपने मत जाहिर कर सके।
5. मत–मतांतर से नए विचार उभरे।

3. बंगाल में धार्मिक–सामाजिक बहसों में कौन–कौन से मुद्दे प्रमुख थे?

उत्तर : 1. विधवा–दाह।
2. एकेश्वरवाद।
3. ब्राह्मण पुजारीवर्ग।
4. मूर्ति–पूजा।
5. समाज–सुधारकों और रूढ़िवादियों के तर्क।

4. उत्तर भारत में उलमा ने प्रिंट का उपयोग क्यों किया?

उत्तर : 1. वे मुस्लिम राजवंशों के पतन से चिंतित थे।
2. उन्हें धर्मांतरण का डर था।
3. कानून बदलने की आशंका थी।
4. उन्होंने सस्ते लिथोग्राफी प्रेस का उपयोग किया।
5. धार्मिक ग्रंथों के फारसी या उर्दू अनुवाद, अखबार और गुटके छापे।

5. धार्मिक पुस्तकों के प्रसार का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर : 1. धार्मिक पुस्तकें बड़ी संख्या में जनता तक पहुँचीं।
2. वे आसानी से कहीं भी पढ़ी जा सकती थीं।
3. अनपढ़ लोगों को भी सुनाकर समझाई जा सकती थीं।
4. विभिन्न धर्मों के बीच बहस बढ़ी।
5. समुदायों के अंदर और भारत के अलग–अलग हिस्सों में जुड़ाव भी बढ़ा।

प्रकाशन के नए रूप

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'स्त्री धर्म विचार' पुस्तक किसने लिखी? *(Model Paper – 2026)*

उत्तर : राम चड्ढा ने 'स्त्री धर्म विचार' पुस्तक लिखी थी। इस पुस्तक का उद्देश्य महिलाओं को आज्ञाकारी पत्नियाँ बनने की सीख देना था।

2. 'आमार जीबन' नामक आत्मकथा किसने लिखी? *(Model Paper – 2026)*

उत्तर : रशसुन्दरी देवी ने 'आमार जीबन' नामक आत्मकथा लिखी थी। यह 1876 में प्रकाशित बंगाली भाषा की पहली संपूर्ण आत्मकथा थी।

3. 'गुलामगिरी' (1871) नामक पुस्तक किसने लिखी? *(RBSE – 2025)*

उत्तर : ज्योतिबा फुले ने सन् 1871 में 'गुलामगिरी' पुस्तक लिखी। इसमें उन्होंने जाति–प्रथा के अत्याचारों के बारे में लिखा था।

4. रशसुन्दरी देवी ने 'आमार जीबन' नामक अपनी आत्मकथा किस भाषा में लिखी? *(RBSE – 2024)*

उत्तर : रशसुन्दरी देवी ने 'आमार जीबन' आत्मकथा बंगाली भाषा में लिखी थी।

5. 1880 के दशक में उच्च जाति की नारियों की दयनीय दशा के बारे में लिखने वाली महाराष्ट्र की दो महिलाओं के नाम लिखिए। *(Model Paper – 2023)*

उत्तर : 1. ताराबाई शिंदे, 2. पंडिता रमाबाई
इन दोनों ने उच्च जाति की महिलाओं की दयनीय दशा के बारे में जोश और रोष के साथ लिखा था।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. मुद्रण संस्कृति से गरीब जनता को क्या लाभ पहुँचा? उदाहरण दीजिए। *(RBSE – 2026)*

उत्तर : 1. मुद्रण संस्कृति के प्रसार से किताबें सस्ती हुईं।

2. गरीब लोग भी उन्हें खरीदकर पढ़ने लगे।

3. उदाहरण के लिए, उन्नीसवीं सदी के मद्रासी शहरों में काफी सस्ती किताबें चौक–चौराहों पर बेची जाती थीं।

4. इससे गरीब जनता तक भी ज्ञान, विचार और मनोरंजन की सामग्री पहुँची।

प्रिंट और प्रतिबंध

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट किस वर्ष लागू किया गया? *(RBSE – 2026)*

(अ) 1876 (ब) 1878

(स) 1880 (द) 1882 **(ब)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट से आप क्या समझते हैं? *(RBSE – 2025)*

उत्तर : सन् 1878 में लागू किया गया वर्नाक्यूलर या देसी प्रेस एक्ट ऐसा कानून था, जिसने सरकार को भारतीय भाषाओं के समाचार–पत्रों की खबरों और संपादकीयों को सेंसर करने का व्यापक अधिकार दिया।

किसी रिपोर्ट को विद्रोही मानने पर –

1. समाचार–पत्र को चेतावनी दी जाती थी।
2. चेतावनी न मानने पर समाचार–पत्र जब्त किया जा सकता था।
3. उसकी छपाई की मशीनें भी छीनी जा सकती थीं।

2. मुद्रण संस्कृति ने भारत में राष्ट्रवाद के विकास में क्या योगदान दिया? कोई दो बिंदु लिखिए। *(Model Paper – 2024)*

उत्तर : 1. राष्ट्रवादी समाचार–पत्रों ने औपनिवेशिक कुशासन की खबरें प्रकाशित कीं और राष्ट्रवादी शक्तियों की हौसला–अफजाई की।

2. समाचार–पत्रों ने औपनिवेशिक सरकार की नीतियों की आलोचना करके जनता में राष्ट्रवादी विचारों और जनमत का प्रसार किया।

3. सरकार द्वारा राष्ट्रवादी प्रेस को दबाने के प्रयासों का व्यापक विरोध हुआ।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

समकालीन

भारत –2

(भूगोल)

1 संसाधन एवं विकास

परिचय

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निम्न में से कौन–सा सही सुमेलित है –

1. उत्पत्ति के आधार पर – जैव एवं अजैव
2. समाप्ति के आधार पर – नवीकरणीय एवं अनवीकरणीय
3. स्वामित्व के आधार पर – व्यक्तिगत,सामुदायिक, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय
4. विकास स्तर के आधार पर – संभावी, विकसित, भंडार एवं संचित कोष

सही विकल्प का चयन करें–

(अ) केवल 1, 2 और 3
(ब) केवल 2, 3 और 4
(स) 1, 2, 3 और 4 (द) केवल 1 और 4 **(स)**

2. संसाधनों के संबंध में निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. मानव स्वयं एक महत्वपूर्ण संसाधन है।
2. मानव पर्यावरण में उपलब्ध पदार्थों को संसाधन में परिवर्तित करता है।
3. संसाधनों का निर्माण केवल प्रकृति करती है।

उपर्युक्त में से सही कथन है–

(अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3
(स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3 **(अ)**

3. नवीकरण योग्य संसाधन कौनसा नहीं है?

(Model Paper – 2026)

(अ) पवन (ब) धातु
(स) जल (द) वन **(ब)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. नवीकरणीय एवं गैर नवीकरणीय संसाधनों को परिभाषित कीजिए। *(RBSE – 2023)*

गैर नवीकरणीय साधन से आप क्या समझते हैं? *(RBSE – 2022)*

उत्तर : नवीकरणीय संसाधन (Renewable Resources) :
वे संसाधन जो भौतिक, रासायनिक अथवा यांत्रिक प्रक्रियाओं द्वारा पुनः प्राप्त या पुनर्जीवित किए जा सकते हैं, नवीकरणीय संसाधन कहलाते हैं।

उदाहरण – सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल एवं वन।

गैर–नवीकरणीय संसाधन (Non&Renewable Resources):
वे संसाधन जिनका निर्माण बहुत लंबे भूवैज्ञानिक काल में होता है और जो मानव जीवनकाल में पुनः प्राप्त नहीं किए जा सकते, गैर–नवीकरणीय संसाधन कहलाते हैं।

उदाहरण – कोयला, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस।

2. कल्पना करें कि तेल संसाधन खत्म होने पर इनका हमारी जीवन शैली पर क्या प्रभाव होगा?

(Model Paper – 2025)

उत्तर :
- तेल संसाधन समाप्त होने पर परिवहन, उद्योग तथा कृषि सहित अनेक गतिविधियाँ प्रभावित होंगी।
- ऊर्जा संकट उत्पन्न होगा, वस्तुओं का उत्पादन और परिवहन महँगा हो जाएगा तथा दैनिक जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

3. संसाधन बनने के लिए किन शर्तों का पूरा होना आवश्यक है?

उत्तर : किसी वस्तु को संसाधन बनने के लिए आवश्यक है कि–
- वह मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए।
- उसको बनाने की तकनीकी उपलब्ध हो,
- आर्थिक रूप से संभाव्य हो
- सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य हो

4. मानव को सबसे महत्वपूर्ण संसाधन क्यों माना जाता है?

उत्तर : मानव अपनी बुद्धि, ज्ञान, तकनीक तथा संस्थाओं की सहायता से पर्यावरण में उपलब्ध पदार्थों को उपयोगी संसाधनों में बदलता है। इसलिए मानव स्वयं सबसे महत्वपूर्ण संसाधन माना जाता है।

संसाधन विकास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. संसाधनों के अनियंत्रित उपयोग के परिणामस्वरूप निम्न में से कौन–कौन सी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं?

(अ) संसाधनों का ह्रास, अमीर – गरीब की खाई तथा वैश्विक पारिस्थितिक संकट
(ब) संसाधनों की वृद्धि, समानता तथा पर्यावरण संरक्षण
(स) केवल जनसंख्या वृद्धि
(द) केवल औद्योगिक विकास **(अ)**

शिक्षा ज्ञान – पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें जैसे चाहें!

2. 1992 के रियो डी जेनेरो में आयोजित पृथ्वी सम्मेलन में निम्न में से किन विषयों पर सहमति व्यक्त की गई?

(अ) जैव विविधता, जलवायु परिवर्तन तथा एजेंडा–21

(ब) केवल कृषि विकास

(स) केवल औद्योगीकरण

(द) केवल जनसंख्या नियंत्रण **(अ)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. सतत विकास से क्या अभिप्राय है ? *(RBSE – 2021)*

उत्तर : सतत विकास से अभिप्राय ऐसे विकास से है जिसमें वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए पर्यावरण को क्षति न पहुँचाई जाए तथा भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति की क्षमता भी सुरक्षित बनी रहे।

2. सतत् पोषणीय विकास पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। *(Model Paper – 2026)*

उत्तर : सतत् पोषणीय विकास वह विकास है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति की क्षमता को सुरक्षित रखता है तथा संसाधनों के संरक्षण और पर्यावरणीय संतुलन पर बल देता है।

3. संसाधन नियोजन की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर : भारत में संसाधनों का वितरण असमान है। कुछ क्षेत्रों में संसाधनों की प्रचुरता तो कुछ में कमी है। इसलिए संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग, संतुलित विकास तथा भावी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु संसाधन नियोजन आवश्यक है।

> **Trick** "असमान संसाधन → सही उपयोग → संतुलित विकास → भविष्य सुरक्षित"

4. सतत पोषणीय विकास से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : सतत पोषणीय विकास वह विकास है जिसमें पर्यावरण को क्षति पहुँचाए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति की जाए तथा भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं और संसाधनों को भी सुरक्षित रखा जाए।

> **Trick** "वर्तमान की पूर्ति, पर्यावरण की सुरक्षा, भविष्य की समृद्धि।"

5. एजेंडा–21 क्या है?

उत्तर : एजेंडा–21 वर्ष 1992 में रियो डी जेनेरो में आयोजित संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण एवं विकास सम्मेलन में स्वीकृत कार्ययोजना है, जिसका उद्देश्य वैश्विक स्तर पर सतत पोषणीय विकास को बढ़ावा देना है।

एजेंडा 21 का मुख्य उद्देश्य यह है कि प्रत्येक स्थानीय निकाय अपना स्थानीय एजेंडा 21 तैयार करे।

भारत में संसाधन नियोजन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारत में संसाधन नियोजन की प्रक्रिया में कौन–कौन से कार्य शामिल हैं?

(अ) संसाधनों की पहचान, सर्वेक्षण एवं मानचित्रण, तथा विकास योजनाओं का राष्ट्रीय योजनाओं से समन्वय

(ब) केवल संसाधनों का दोहन

(स) केवल मानचित्रण

(द) केवल पंचवर्षीय योजनाएँ बनाना **(अ)**

2. संसाधन विकास योजनाओं के सफल क्रियान्वयन के लिए किन तत्वों की आवश्यकता होती है?

(अ) उपयुक्त प्रौद्योगिकी, कौशल एवं संस्थागत ढाँचा

(ब) केवल पूँजी

(स) केवल श्रमिक

(द) केवल प्राकृतिक संसाधन **(अ)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. संसाधन नियोजन के प्रमुख सोपान कौन–कौन से हैं?

उत्तर : संसाधन नियोजन के प्रमुख सोपान–

- संसाधनों की पहचान एवं सूची बनाना।
- उनका गुणात्मक एवं मात्रात्मक आकलन करना।
- विकास हेतु उपयुक्त प्रौद्योगिकी व संस्थागत ढाँचा तैयार करना।
- संसाधन विकास योजनाओं का राष्ट्रीय योजनाओं से समन्वय स्थापित करना।

> **Trick** "पहचान → आकलन → तकनीक → समन्वय"

मिशन ज्ञान
पढ़ो जब चाहो, जहाँ चाहो, जैसे चाहें!

संसाधनों का संरक्षण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. गांधीजी के अनुसार संसाधन ह्रास के लिए कौन उत्तरदायी हैं तथा वे किस प्रकार के उत्पादन के पक्षधर थे?

(अ) लालची एवं स्वार्थी व्यक्ति, शोषणात्मक प्रौद्योगिकी तथा बड़े जनसमुदाय द्वारा उत्पादन
(ब) केवल जनसंख्या वृद्धि तथा मशीन उत्पादन
(स) केवल प्राकृतिक आपदाएँ
(द) केवल औद्योगीकरण **(अ)**

2. निम्न में से कौन–सा युग्म सही सुमेलित है?

(अ) क्लब ऑफ रोम – 1968, संसाधन संरक्षण की वकालत
(ब) शुमेसर – 1974, Small is Beautiful
(स) ब्रुन्ड्टलैंड आयोग – 1987, सतत् पोषणीय विकास की संकल्पना
(द) उपर्युक्त सभी **(द)**

3. संसाधन संरक्षण के संदर्भ में 1987 की ब्रुन्ड्टलैंड आयोग रिपोर्ट और 1992 के रियो पृथ्वी सम्मेलन का मुख्य योगदान क्या था?

(अ) सतत् पोषणीय विकास की अवधारणा तथा संसाधन संरक्षण को बढ़ावा देना
(ब) केवल औद्योगिक विकास को बढ़ावा देना
(स) केवल कृषि उत्पादन बढ़ाना
(द) केवल जनसंख्या नियंत्रण **(अ)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. ''स्माल इज ब्यूटीफुल'' पुस्तक की जांच कीजिए।

(RBSE – 2025)

उत्तर : 1974 में शुमेसर द्वारा लिखित श्स्माल इज ब्यूटीफुलश पुस्तक में संसाधन संरक्षण के संबंध में गांधीजी के विचारों एवं दर्शन को पुनः प्रस्तुत किया गया। इस पुस्तक ने संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग और संरक्षण के महत्व पर बल दिया।

2. क्लब ऑफ रोम और शुमेसर का संसाधन संरक्षण में क्या योगदान था?

उत्तर :
- 1968 में क्लब ऑफ रोम ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संसाधन संरक्षण की वकालत की।
- 1974 में शुमेसर ने अपनी पुस्तक Small is Beautiful में गांधीजी के संसाधन संरक्षण संबंधी विचारों को पुनः प्रस्तुत किया।

Trick ''68 में क्लब खोला, 74 में शुमेसर ने बोला''

3. ब्रुन्ड्टलैंड आयोग रिपोर्ट का संसाधन संरक्षण में क्या महत्व है?

उत्तर :
- 1987 की ब्रुन्ड्टलैंड आयोग रिपोर्ट ने सतत् पोषणीय विकास की संकल्पना प्रस्तुत की तथा संसाधनों के संरक्षण पर बल दिया।
- बाद में यह रिपोर्ट Our Common Future नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुई।

भू संसाधन और भू उपयोग

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भूमि को महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन क्यों माना जाता है तथा इसका उपयोग किन कार्यों में किया जाता है?

(अ) मानव जीवन, परिवहन, संचार, वनस्पति एवं आर्थिक क्रियाओं के आधार के रूप में
(ब) केवल कृषि के लिए
(स) केवल उद्योगों के लिए
(द) केवल आवास के लिए **(अ)**

2. भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में मैदान, पर्वत और पठारों का लगभग कितना प्रतिशत भाग है?

(अ) मैदान 43%, पर्वत 30%, पठार 27%
(ब) मैदान 30%, पर्वत 43%, पठार 27%
(स) मैदान 27%, पर्वत 43:, पठार 30%
(द) मैदान 50%, पर्वत 25%, पठार 25% **(अ)**

3. निम्न में से कौन–सा सुमेलित है?

(अ) मैदान – कृषि एवं उद्योग के लिए अनुकूल
(ब) पर्वत – नदियों के प्रवाह एवं पर्यटन के लिए महत्त्वपूर्ण
(स) पठार – खनिज, जीवाश्म ईंधन एवं वनों का भंडार
(द) उपर्युक्त सभी **(द)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. भूमि को सीमित संसाधन क्यों कहा जाता है?

उत्तर : भूमि एक सीमित प्राकृतिक संसाधन है जिस पर मानव जीवन, कृषि, उद्योग, परिवहन तथा संचार आधारित हैं। इसकी मात्रा निश्चित होने के कारण इसका उपयोग सावधानीपूर्वक और योजनाबद्ध ढंग से किया जाना चाहिए।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

2. भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले कारक कौन–कौन से हैं?

उत्तर : *भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले कारक–*

- **भौतिक कारक** – भू–आकृति, जलवायु, मृदा
- **मानवीय कारक** – जनसंख्या घनत्व, तकनीकी विकास, संस्कृति और परंपराएँ।

Trick **"भू–जल–मृदा, जन–तक–संस्कृति; यही भूमि उपयोग की प्रकृति।"**

भारत में भू–उपयोग

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल कितना है तथा भू–उपयोग के आँकड़े लगभग कितने प्रतिशत क्षेत्र के लिए उपलब्ध हैं?

(अ) 32.8 लाख वर्ग किमी तथा 93%
(ब) 30 लाख वर्ग किमी तथा 80%
(स) 32.8 लाख वर्ग किमी तथा 100%
(द) 35 लाख वर्ग किमी तथा 90% **(अ)**

2. शुद्ध (निवल) बोया गया क्षेत्र पंजाब और हरियाणा में लगभग कितना है तथा अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, मणिपुर और अंडमान–निकोबार में कितना है?

(अ) 80% से अधिक तथा 10% से कम
(ब) 60% तथा 20%
(स) 50% तथा 15%
(द) 70% तथा 25% **(अ)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत में भू–उपयोग संबंधी आँकड़े पूर्ण रूप से उपलब्ध क्यों नहीं हैं?

उत्तर : पूर्वोत्तर राज्यों के कुछ क्षेत्रों तथा जम्मू–कश्मीर के पाकिस्तान और चीन अधिकृत भागों में भूमि उपयोग का सर्वेक्षण नहीं होने के कारण सम्पूर्ण भू–उपयोग आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

2. पंजाब और हरियाणा में शुद्ध बोया गया क्षेत्र अधिक होने का क्या कारण है?

उत्तर : समतल मैदान, उपजाऊ मिट्टी, पर्याप्त सिंचाई सुविधाएँ और कृषि का उच्च विकास स्तर पंजाब तथा हरियाणा में शुद्ध बोए गए क्षेत्र को बहुत अधिक बनाते हैं।

भू–निम्नीकरण और संरक्षण उपाय

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भूमि निम्नीकरण का प्रमुख कारण क्या है तथा इसका परिणाम क्या होता है?

(अ) अति सिंचाई, जलभराव एवं लवणता में वृद्धि
(ब) वनोन्मूलन, बाढ़
(स) खनन, मरुस्थलीकरण
(द) अतिचारण, मृदा अपरदन **(अ)**

2. झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और ओडिशा में भूमि निम्नीकरण मुख्यतः किस कारण से होता है तथा कौन–सा क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित होता है?

(अ) खनन गतिविधियाँ, खनन क्षेत्र
(ब) अति सिंचाई, कृषि क्षेत्र
(स) बाढ़, नदी घाटियाँ
(द) अतिचारण, घासभूमियाँ **(अ)**

3. राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के शुष्क क्षेत्रों में भूमि निम्नीकरण का प्रमुख कारण क्या है?

(अ) अतिचारण के कारण वनस्पति आवरण का नष्ट होना
(ब) अति सिंचाई
(स) खनन (द) औद्योगीकरण **(अ)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. भू–निम्नीकरण से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : भूमि की गुणवत्ता और उत्पादकता में कमी आने की प्रक्रिया को भू–निम्नीकरण कहते हैं। यह प्राकृतिक तथा मानवीय दोनों कारणों से होता है और कृषि तथा पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

2. भू–संरक्षण के लिए कौन–कौन से उपाय अपनाए जाते हैं?

उत्तर : भू–संरक्षण हेतु वृक्षारोपण, नियंत्रित चराई, खनन क्षेत्रों का पुनर्वास, जल निकासी व्यवस्था में सुधार तथा वैज्ञानिक भूमि प्रबंधन जैसी विधियाँ अपनाई जाती हैं।

Trick **"पेड़ लगाओ, चराई घटाओ; खदान सुधारो, पानी निकालो, भूमि सँवारो।"**

3. खनन गतिविधियाँ भूमि को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?

उत्तर : खनन से भूमि की सतह क्षतिग्रस्त होती है, वनस्पति नष्ट होती है तथा गहरी खाइयाँ बन जाती हैं। इससे भूमि की गुणवत्ता घटती है और पर्यावरणीय असंतुलन उत्पन्न होता है।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

मृदा संसाधन और मृदा वर्गीकरण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. मृदा निर्माण की प्रक्रिया में जनक शैल, जलवायु तथा जैविक पदार्थों की क्या भूमिका होती है?

(अ) मृदा के गुण, बनावट एवं उर्वरता निर्धारित करते हैं
(ब) केवल रंग निर्धारित करते हैं
(स) केवल मोटाई निर्धारित करते हैं
(द) कोई भूमिका नहीं होती **(अ)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

4. मृदा निर्माण की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए–

(RBSE – 2024)

उत्तर : मृदा निर्माण एक दीर्घकालीन प्रक्रिया है।

- जनक शैलों के अपक्षय तथा उच्चावच, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति और समय के संयुक्त प्रभाव से मृदा का विकास होता है।
- इन कारकों में क्षेत्रीय भिन्नता के कारण भारत में अनेक प्रकार की मृदाएँ विकसित हुई हैं, जिनकी विशेषताएँ भी अलग–अलग होती हैं।

2. जलोढ़ मिट्टी की रासायनिक विशेषताओं और घटकों की पहचान कीजिए। *(RBSE – 2025)*

उत्तर : जलोढ़ मिट्टी के घटक – जलोढ़ मिट्टी में रेत (Sand), सिल्ट (Silt) तथा मृत्तिका (Clay) विभिन्न अनुपातों में पाई जाती है।

जलोढ़ मिट्टी की रासायनिक विशेषताएँ –

- जलोढ़ मिट्टी सामान्यतः पोटाश, फॉस्फोरस तथा चूना युक्त होती है।
- यह अत्यंत उपजाऊ मिट्टी मानी जाती है।
- गन्ना, चावल, गेहूँ, दलहन तथा अन्य खाद्यान्न फसलों की खेती के लिए उपयुक्त होती है।
- शुष्क क्षेत्रों में यह मिट्टी अपेक्षाकृत अधिक क्षारीय हो सकती है।

1. मृदा को महत्वपूर्ण संसाधन क्यों माना जाता है?

उत्तर : मृदा कृषि उत्पादन का आधार है तथा पौधों को पोषक तत्व, जल और आधार प्रदान करती है। मानव जीवन एवं खाद्य सुरक्षा के लिए इसका अत्यधिक महत्व है।

2. मृदा निर्माण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक कौन–कौन से हैं?

उत्तर : मृदा निर्माण में जनक शैल, उच्चावच, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, जैविक पदार्थ तथा समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके संयुक्त प्रभाव से विभिन्न प्रकार की मृदाओं का विकास होता है।

3. भारत में मृदाओं का वर्गीकरण किन आधारों पर किया जाता है?

उत्तर : भारत में मृदाओं का वर्गीकरण उनके रंग, मोटाई, बनावट, आयु, रासायनिक एवं भौतिक गुणों के आधार पर किया जाता है, जिससे उनकी विशेषताओं का अध्ययन किया जा सके।

भारतीय मृदा वर्गीकरण व मृदा संरक्षण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. जलोढ़ मृदा के संबंध में सही विकल्प चुनिए–

(अ) गंगा–ब्रह्मपुत्र मैदान में पाई जाती है, अत्यधिक उपजाऊ होती है तथा बांगर और खादर में विभाजित की जाती है।
(ब) केवल दक्कन पठार में पाई जाती है तथा कपास के लिए प्रसिद्ध है।
(स) लाल रंग की होती है तथा लौह अंश के कारण विकसित होती है।
(द) अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में निक्षालन से बनती है। **(अ)**

2. काली मृदा की प्रमुख विशेषताएँ एवं उपयोग क्या हैं?

(अ) बेसाल्ट शैलों से निर्मित, नमी धारण क्षमता अधिक तथा कपास के लिए उपयुक्त
(ब) रेतीली एवं लवणीय, खजूर के लिए उपयुक्त
(स) निक्षालित एवं अम्लीय, चाय के लिए उपयुक्त
(द) पर्वतीय क्षेत्रों में विकसित **(अ)**

3. मरुस्थलीय मृदा तथा वन मृदा का सही सुमेलित युग्म कौन–सा है?

(अ) मरुस्थलीय – रेतीली एवं लवणीय, वन मृदा – पर्वतीय क्षेत्रों में विकसित
(ब) मरुस्थलीय – कपास हेतु उपयुक्त, वन मृदा – डेल्टा क्षेत्रों में
(स) मरुस्थलीय – अम्लीय, वन मृदा – क्षारीय
(द) दोनों केवल राजस्थान में पाई जाती हैं **(अ)**

8. इनमें से किस राज्य में काली मृदा मुख्य रूप से पाई जाती है? *(Model Paper – 2025)*

(अ) हरियाणा (ब) महाराष्ट्र
(स) राजस्थान (द) झारखण्ड **(ब)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. लेटराइट मृदा का निर्माण कैसे होता है?

उत्तर : लेटराइट मृदा का निर्माण अधिक वर्षा और उच्च तापमान वाले क्षेत्रों में तीव्र निक्षालन प्रक्रिया से होता है। इसमें पोषक तत्वों की कमी होती है तथा उचित उर्वरक प्रयोग से खेती की जाती है।

2. मरुस्थलीय मृदा की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर : मरुस्थलीय मृदा सामान्यतः रेतीली एवं लवणीय होती है। इसमें ह्यूमस और नमी की मात्रा कम पाई जाती है, जबकि कुछ स्थानों पर सिंचाई द्वारा इसे कृषि योग्य बनाया जा सकता है।

3. समोच्च जुताई और सीढ़ीदार खेती मृदा संरक्षण में कैसे सहायक हैं?

उत्तर : समोच्च जुताई जल के बहाव की गति कम करती है, जबकि सीढ़ीदार खेती ढालों पर मिट्टी के कटाव को रोकती है। दोनों उपाय मृदा अपरदन को नियंत्रित करने में प्रभावी हैं।

4. पट्टी कृषि (Strip Farming) का क्या उद्देश्य है?

उत्तर : पट्टी कृषि में फसलों को पट्टियों में बोया जाता है जिससे वायु की गति कम होती है तथा मिट्टी उड़ने से बचती है। यह विशेष रूप से पवन अपरदन रोकने में उपयोगी है।

5. रक्षक मेखला (Shelter Belt) क्या है?

उत्तर : रक्षक मेखला वृक्षों की कतारों से निर्मित अवरोध है जो हवा की गति को कम करती है। इससे पवन अपरदन नियंत्रित होता है तथा रेतीले क्षेत्रों में भूमि संरक्षण होता है।

2 वन एवं वन्य जीव संसाधन

परिचय

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. पृथ्वी पर जैव–विविधता के संबंध में सही विकल्प चुनिए–

(अ) सूक्ष्म जीवाणुओं से लेकर वटवृक्ष, हाथी और ब्लू व्हेल तक विभिन्न जीवधारी पाए जाते हैं तथा सभी मिलकर जटिल पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते हैं।
(ब) पृथ्वी पर केवल बड़े जीवधारी ही पाए जाते हैं।
(स) मानव पारिस्थितिकी तंत्र से स्वतंत्र है।
(द) जैव–विविधता केवल वनों तक सीमित है। **(अ)**

2. वन पारिस्थितिकी तंत्र में महत्त्वपूर्ण क्यों हैं तथा उन पर कौन निर्भर करता है?

(अ) वन प्राथमिक उत्पादक हैं तथा अन्य सभी जीव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उन पर निर्भर करते हैं।
(ब) वन केवल ईंधन प्रदान करते हैं।
(स) वन केवल वर्षा बढ़ाते हैं।
(द) वन केवल पशुओं के लिए उपयोगी हैं। **(अ)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. जैव–विविधता में अंतर्निर्भरता का क्या महत्व है?

उत्तर : जैव–विविधता में विभिन्न जीव आकार और कार्य में भिन्न होते हुए भी जटिल अंतर्निर्भरताओं के माध्यम से एक–दूसरे से जुड़े रहते हैं, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बना रहता है।

2. जैव–विविधता क्या है? *(RBSE – 2024)*

उत्तर : पृथ्वी पर पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के पौधों, पशुओं तथा सूक्ष्म जीवों की विविधता को जैव–विविधता कहते हैं। ये सभी जीव एक–दूसरे से जुड़े होते हैं और मिलकर एक जटिल पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते हैं।

3. 'समुदाय द्वारा वन संरक्षण' को संक्षिप्त में समझाइए। *(RBSE – 2022)*

उत्तर : समुदाय द्वारा वन संरक्षण में स्थानीय लोग वनों और वन्य जीवों की रक्षा में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। वे वनों को नुकसान पहुँचाने से रोकते हैं तथा संरक्षण के पारंपरिक तरीकों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करते हैं।

भारत में वनस्पतिजात और प्राणिजात

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. विश्व की लगभग कितनी प्रतिशत जैव–विविधता भारत में पाई जाती है? *(RBSE – 2024)*

(अ) 7% (ब) 8%
(स) 9% (द) 10% **(ब)**

2. भारत की जैव विविधता के संबंध में सही विकल्प चुनिए–

(अ) भारत विश्व के सर्वाधिक जैव–विविधता सम्पन्न देशों में से एक है तथा यहाँ विश्व की लगभग 8% जैव उपजातियाँ पाई जाती हैं।
(ब) भारत में जैव विविधता बहुत कम है।
(स) भारत में केवल वनस्पतियाँ पाई जाती हैं।
(द) भारत में केवल प्राणिजात पाई जाती है। **(अ)**

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. वनस्पतिजात और प्राणिजात पर दबाव क्यों बढ़ रहा है?

उत्तर : पर्यावरण के प्रति मानव की असंवेदनशीलता तथा प्राकृतिक संसाधनों के बढ़ते उपयोग के कारण वनस्पतिजात और प्राणिजात पर निरंतर दबाव बढ़ रहा है, जिससे उनकी सुरक्षा चुनौतीपूर्ण हो गई है।

भारत में वन और वन्य जीवन का संरक्षण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारतीय वन्यजीवन (रक्षण) अधिनियम कब लागू किया गया? *(मॉडल पेपर – 2026)*

(अ) 1972 (ब) 1970
(स) 1960 (द) 1947 **(अ)**

2. भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम कब लागू किया गया? *(मॉडल पेपर – 2025)*

(अ) 1970 (ब) 1971
(स) 1972 (द) 1973 **(स)**

3. पौधों को पहली बार संरक्षित जातियों की सूची में कब शामिल किया गया? *(RBSE – 2025)*

(अ) 1991 (ब) 1992
(स) 1993 (द) 1994 **(अ)**

4. भारतीय वन्यजीवन (रक्षण) अधिनियम कब लागू किया गया तथा इसके प्रमुख उद्देश्य क्या थे?
(अ) 1972 - संकटग्रस्त जातियों का संरक्षण, शिकार प्रतिबंध तथा आवास संरक्षण
(ब) 1987 - कृषि विकास
(स) 1992 - वनारोपण
(द) 1968 - खनिज संरक्षण **(अ)**

5. भारतीय हाथी, काला हिरण, चिंकारा, गोडावन एवं हिम तेंदुए को कानूनी संरक्षण किस प्रकार प्रदान किया गया?
(अ) शिकार एवं व्यापार पर पूर्ण या आंशिक प्रतिबंध लगाकर
(ब) चिड़ियाघरों में रखकर
(स) केवल राष्ट्रीय उद्यान बनाकर
(द) केवल जनगणना करके **(अ)**

6. वन्य जीव अधिनियम 1980 और 1986 के तहत किन जीवों को संरक्षित जातियों में शामिल किया गया?
(अ) तितलियाँ, पतंगे, भृगों एवं एक ड्रैगनफ्लाई
(ब) केवल तितलियाँ
(स) केवल पतंगे
(द) केवल ड्रैगनफ्लाई **(अ)**

7. 1991 में संरक्षण के क्षेत्र में कौन–सा महत्वपूर्ण कदम उठाया गया?
(अ) पहली बार पौधों की 6 जातियों को संरक्षित सूची में रखा गया।
(ब) बाघ परियोजना शुरू की गई।
(स) राष्ट्रीय उद्यान स्थापित किए गए।
(द) वन्य जीव अधिनियम लागू किया गया। **(अ)**

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. राष्ट्रीय उद्यान और वन्य जीव पशुविहारों की स्थापना क्यों की गई?

उत्तर : राष्ट्रीय उद्यानों और वन्य जीव पशुविहारों की स्थापना वन्य जीवों के प्राकृतिक आवासों की रक्षा करने तथा संकटग्रस्त प्रजातियों को सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराने के लिए की गई।

2. सरकार द्वारा विशेष वन्य प्राणी संरक्षण परियोजनाएँ क्यों प्रारम्भ की गईं?

उत्तर : गंभीर खतरे में पड़े वन्य प्राणियों जैसे बाघ, गैंडा, हंगुल, घड़ियाल और एशियाई शेर को संरक्षण प्रदान करने तथा उनकी संख्या बढ़ाने के लिए विशेष परियोजनाएँ प्रारम्भ की गईं।

3. आनुवंशिक (Genetic) विविधता का संरक्षण क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर : आनुवंशिक विविधता वनस्पतियों और पशुओं की विभिन्न जातियों के अस्तित्व, बेहतर प्रजनन तथा पर्यावरणीय परिवर्तनों के प्रति अनुकूलन क्षमता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बाघ परियोजना

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. बाघों के विलुप्ति के कगार पर पहुँचने का प्रमुख कारण क्या था तथा उनकी खाल और हड्डियों का उपयोग कहाँ किया जाता था?
(अ) व्यापार के लिए शिकार; एशियाई देशों की परंपरागत औषधियों में
(ब) प्राकृतिक आपदाएँ; कृषि में
(स) जलवायु परिवर्तन; उद्योगों में
(द) रोग; पशुपालन में **(अ)**

2. भारत और नेपाल बाघ संरक्षण के संदर्भ में महत्वपूर्ण क्यों हैं तथा ये किसके मुख्य निशाने पर रहते हैं?
(अ) दुनिया के दो–तिहाई बाघों को आवास प्रदान करते हैं; शिकार, चोरी और गैर–कानूनी व्यापार करने वालों के
(ब) केवल राष्ट्रीय उद्यानों के कारण; पर्यटकों के
(स) केवल वनों के कारण; किसानों के
(द) केवल नदियों के कारण; उद्योगों के **(अ)**

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. 1973 में बाघ परियोजना प्रारम्भ करने की आवश्यकता क्यों पड़ी?

उत्तर : 20वीं शताब्दी के आरंभ में अनुमानित 55,000 बाघों की संख्या घटकर 1973 में केवल 1,827 रह गई थी। इसलिए बाघों को विलुप्त होने से बचाने के लिए बाघ परियोजना प्रारम्भ की गई।

2. सुन्दर वन राष्ट्रीय पार्क किस राज्य में स्थित है?
(मॉडल पेपर – 2025)

उत्तर : सुन्दरवन राष्ट्रीय उद्यान पश्चिम बंगाल में स्थित है तथा यह बाघ संरक्षण परियोजना (प्रोजेक्ट टाइगर) के प्रमुख उदाहरणों में से एक है।

RECORDED VIDEOS | LIVE CLASSES | PDF NOTES | e-BOOKS | QUIZ | TEST SERIES

www.missiongyan.com

3. 'प्रोजेक्ट टाईगर' का उद्देश्य क्या था?

उत्तर : बाघ संरक्षण केवल एक संकटग्रस्त जाति को बचाने का प्रयास नहीं था, बल्कि इसका उद्देश्य बड़े आकार के जैवजाति तंत्र और उसके आवास का भी संरक्षण करना था।

4. भारत में बाघ संरक्षण परियोजनाओं के उदाहरण लिखिए।

उत्तर : कॉरबेट राष्ट्रीय उद्यान (उत्तराखण्ड), सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान (पश्चिम बंगाल), बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान (मध्य प्रदेश), सरिस्का वन्य जीव पशुविहार (राजस्थान), मानस बाघ रिजर्व (असम) तथा पेरियार बाघ रिजर्व (केरल) बाघ संरक्षण परियोजनाओं के उदाहरण हैं।

वन और वन्य जीव संसाधनों के प्रकार और वितरण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. मध्य प्रदेश तथा पूर्वोत्तर राज्यों के वनों के संबंध में सही विकल्प चुनिए।

(अ) मध्य प्रदेश में स्थायी वनों का सर्वाधिक क्षेत्र है, जबकि पूर्वोत्तर राज्यों में अधिकतर वन अवर्गीकृत हैं।
(ब) मध्य प्रदेश में अवर्गीकृत वन सर्वाधिक हैं।
(स) पूर्वोत्तर राज्यों में केवल आरक्षित वन हैं।
(द) दोनों में केवल रक्षित वन हैं। **(अ)**

2. आरक्षित वन देश के कुल वन क्षेत्र में कितना भाग रखते हैं तथा संरक्षण की दृष्टि से उनका क्या महत्व है?

(अ) आधे से अधिक; सर्वाधिक मूल्यवान
(ब) एक–तिहाई; सामान्य महत्व
(स) एक–चौथाई; कम महत्व
(द) आधे से कम; अधिक महत्व **(अ)**

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

कथन (A) : देश के कुल वन क्षेत्र का लगभग एक–तिहाई भाग रक्षित वन है।

कथन (B) : रक्षित वनों को अधिक नष्ट होने से बचाने के लिए उनकी सुरक्षा की जाती है।

(अ) A और B दोनों सही हैं।
(ब) केवल A सही हैं।
(स) केवल B सही हैं।
(द) A और B दोनों गलत हैं। **(अ)**

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

कथन (A) : अवर्गीकृत वन सरकार, व्यक्तियों और समुदायों के स्वामित्व में हो सकते हैं।

कथन (B) : अवर्गीकृत वन केवल वन विभाग के स्वामित्व में होते हैं।

(अ) A और B दोनों सही हैं।
(ब) केवल A सही हैं।
(स) केवल B सही हैं।
(द) A और B दोनों गलत हैं। **(ब)**

5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

कथन (A) : जम्मू–कश्मीर, आंध्र प्रदेश, उत्तराखण्ड, केरल, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र में आरक्षित वनों का बड़ा अनुपात है।

कथन (B) : बिहार, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, ओडिशा और राजस्थान में रक्षित वनों का बड़ा अनुपात है।

(अ) A और B दोनों सही हैं।
(ब) केवल A सही हैं।
(स) केवल B सही हैं।
(द) A और B दोनों गलत हैं। **(अ)**

6. पवित्र पेड़ों के झुरमुटों का संरक्षण किस विश्वास पर आधारित है तथा इनकी क्या विशेषता है?

(अ) प्रकृति पूजा की परंपरा; वनों को मूल एवं कौमार्य रूप में सुरक्षित रखना
(ब) कृषि विकास; वनों का दोहन
(स) औद्योगिक विकास; वृक्ष कटाई
(द) शिकार परंपरा; वन्य जीवों का उपयोग **(अ)**

7. छोटानागपुर क्षेत्र की मुंडा और संथाल जनजातियाँ तथा ओडिशा–बिहार की जनजातियाँ किन वृक्षों की पूजा करती हैं?

(अ) महुआ–कदंब; इमली और आम
(ब) पीपल–वट; नीम और बबूल
(स) आम–नीम; महुआ और पीपल
(द) कदंब–वट; इमली और नीम **(अ)**

8. राजस्थान के बिश्नोई गाँवों के आसपास कौन–कौन से वन्य जीव समुदाय का अभिन्न हिस्सा माने जाते हैं?

(अ) काला हिरण, चिंकारा, नीलगाय और मोर
(ब) बाघ, शेर, हाथी और गैंडा
(स) बंदर, लंगूर, भालू और लोमड़ी
(द) घड़ियाल, मगरमच्छ, हिरण और हाथी **(अ)**

पढ़ो जब चाहो, जहाँ चाहो, जैसे चाहें!

9. **संयुक्त वन प्रबंधन कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत कब हुई तथा पहला प्रस्ताव किस राज्य ने पारित किया?**

(अ) 1988, ओडिशा (ब) 1973, उत्तराखण्ड

(स) 1972, बिहार (द) 1991, केरल **(अ)**

10. **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–**

कथन (A) : बीज बचाओ आंदोलन और नवदानय ने रासायनिक उर्वरकों के बिना विविध फसल उत्पादन की संभावना दिखाई।

कथन (B) : उन्होंने इसे आर्थिक रूप से व्यवहार्य भी सिद्ध किया।

(अ) A और B दोनों सही हैं।

(ब) केवल A सही हैं।

(स) केवल B सही हैं।

(द) A और B दोनों गलत हैं। **(अ)**

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. **चिपको आंदोलन किससे संबंधित है?**

(मॉडल पेपर – 2026)

उत्तर : चिपको आंदोलन वन कटाई को रोकने तथा सामुदायिक वनीकरण से संबंधित है। इसने हिमालय क्षेत्र में स्थानीय पौधों की जातियों के संरक्षण और वनों के बचाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. **अपने क्षेत्र में चिपको आंदोलन को लागू कीजिए।**

(RBSE – 2025)

उत्तर :
- चिपको आंदोलन ने यह सिद्ध किया कि स्थानीय समुदाय वन संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
- अपने क्षेत्र में इस आंदोलन को लागू करने के लिए लोगों को वृक्षों की रक्षा हेतु प्रेरित करना, वृक्ष कटाई का विरोध करना तथा स्थानीय पौधों की प्रजातियों के माध्यम से सामुदायिक वनीकरण कार्यक्रम चलाना आवश्यक है।
- इससे पर्यावरण संरक्षण और वन संवर्धन दोनों को बढ़ावा मिलेगा।

3. **वन्य जीवों की सुभेद्य जातियों पर टिप्पणी लिखिए।**

(RBSE – 2023)

उत्तर : सुभेद्य जातियाँ वे वन्य जीव जातियाँ हैं जिनकी संख्या लगातार घट रही है तथा यदि इन पर प्रतिकूल परिस्थितियाँ बनी रहीं तो निकट भविष्य में इनके संकटग्रस्त होने की संभावना रहती है। इसलिए इनके संरक्षण की आवश्यकता होती है।

4. **भारत में वन और वन्य जीव संसाधनों का प्रबंधन किसके द्वारा किया जाता है तथा इन्हें किन वर्गों में बाँटा गया है?**

उत्तर :
- सरकार एवं वन विभाग द्वारा प्रबंधन।
- वनों को तीन वर्गों में विभाजित किया है।
- आरक्षित, रक्षित और अवर्गीकृत वन।

5. **मध्य प्रदेश के वनों की क्या विशेषता है?**

उत्तर : मध्य प्रदेश में स्थायी वनों के अंतर्गत सर्वाधिक क्षेत्र पाया जाता है, जो राज्य के कुल वन क्षेत्र का लगभग 75 प्रतिशत भाग है।

6. **संयुक्त वन प्रबंधन में समुदायों को क्या लाभ मिलते हैं?**

उत्तर : समुदायों को गैर–इमारती वन उत्पादों पर हकदारी प्राप्त होती है तथा सफल संरक्षण के बाद प्राप्त इमारती लकड़ी के लाभ में भी वे भागीदार बनते हैं।

Download
MISSION GYAN
MOBILE APP
GET IT ON Google Play

पढ़े 100% FREE!
Live + Recorded Classes
Quiz, Worksheets
Class 1st to 12th
PDF Notes
Test Series

3 जल संसाधन

जल दुर्लभता और जल संरक्षण एवं प्रबंधन की आवश्यकता

निबंधात्मक प्रश्न –

1. "समय की माँग है कि हम अपने जल संसाधनों का संरक्षण और प्रबंधन करें" स्पष्ट कीजिए। *(RBSE – 2023)*

उत्तर : जल संसाधनों का संरक्षण और प्रबंधन

- जल की बढ़ती माँग, घटते भूजल स्तर, बढ़ते प्रदूषण तथा असमान वर्षा के कारण जल संकट बढ़ रहा है।
- इसलिए वर्षा जल संचयन, जल का विवेकपूर्ण उपयोग, प्रदूषण नियंत्रण तथा जल संसाधनों का संरक्षण एवं उचित प्रबंधन समय की आवश्यकता है।

2. पृथ्वी पर जल की प्रचुरता होने के बावजूद विश्व के अनेक क्षेत्रों में जल संकट क्यों उत्पन्न हो रहा है? जल दुर्लभता के कारणों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर : जल की उपलब्धता और वास्तविक स्थिति–

यद्यपि पृथ्वी का लगभग तीन–चौथाई भाग जल से ढका हुआ है, फिर भी उपयोग योग्य अलवणीय जल की मात्रा बहुत सीमित है। मानव उपयोग के लिए मुख्यतः सतही जल एवं भूजल ही उपलब्ध होते हैं। इन स्रोतों का निरंतर नवीकरण जलीय चक्र द्वारा होता रहता है, परन्तु बढ़ती मांग के कारण इन पर दबाव बढ़ता जा रहा है।

जल दुर्लभता के कारण –

1. **जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव**
   तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण घरेलू, कृषि तथा औद्योगिक क्षेत्रों में जल की मांग निरंतर बढ़ रही है। अधिक जनसंख्या के लिए अधिक खाद्यान्न उत्पादन की आवश्यकता होती है, जिससे सिंचाई हेतु जल का अत्यधिक उपयोग किया जाता है।
2. **कृषि एवं उद्योगों में बढ़ता उपयोग**
   सिंचित कृषि में जल की सबसे अधिक खपत होती है। इसके अतिरिक्त औद्योगीकरण और शहरीकरण के विस्तार से भी जल संसाधनों पर दबाव बढ़ा है। उद्योगों को उत्पादन प्रक्रियाओं के लिए बड़ी मात्रा में जल की आवश्यकता होती है।
3. **भूजल का अत्यधिक दोहन**
   कई क्षेत्रों में निजी कुओं और नलकूपों के माध्यम से भूजल का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है। इससे भूजल स्तर लगातार नीचे जा रहा है और जल उपलब्धता में कमी आ रही है।
4. **जल प्रदूषण**
   घरेलू एवं औद्योगिक अपशिष्ट, रासायनिक पदार्थ, कीटनाशक तथा उर्वरक जल स्रोतों को प्रदूषित कर रहे हैं। परिणामस्वरूप उपलब्ध जल का एक बड़ा भाग मानव उपयोग के लिए अनुपयुक्त हो जाता है।
5. **जल का असमान वितरण**
   वर्षा एवं जल संसाधनों का वितरण सभी क्षेत्रों में समान नहीं है। कुछ क्षेत्रों में पर्याप्त जल उपलब्ध है, जबकि अनेक क्षेत्रों में जल की गंभीर कमी पाई जाती है। यही असमानता जल संकट को और बढ़ाती है।

इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि, जल का अत्यधिक दोहन, प्रदूषण, औद्योगीकरण, शहरीकरण तथा जल संसाधनों के असमान वितरण के कारण विश्व के अनेक क्षेत्रों में जल दुर्लभता की समस्या उत्पन्न हो रही है।

> **Trick** जनसंख्या बढ़ी, खेत बढ़े, कारखाने बढ़े, पानी गंदा हुआ, भूजल घट गया।
>
> जनसंख्या → कृषि →
> उद्योग → प्रदूषण → भूजल दोहन

3. भारत में जल संकट के लिए कृषि, औद्योगीकरण, शहरीकरण तथा जल प्रदूषण किस प्रकार उत्तरदायी हैं? जल संरक्षण एवं प्रबंधन की आवश्यकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : कृषि क्षेत्र में जल का अत्यधिक उपयोग

सिंचित कृषि में जल का सर्वाधिक उपयोग होता है। अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए किसान निजी कुओं और नलकूपों का उपयोग कर रहे हैं। इससे भूजल का अत्यधिक दोहन हो रहा है तथा भूजल स्तर लगातार नीचे गिरता जा रहा है। ऐसी स्थिति में भविष्य में जल उपलब्धता कम हो सकती है तथा खाद्य सुरक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

औद्योगीकरण का प्रभाव

स्वतंत्रता के बाद देश में तीव्र औद्योगीकरण हुआ। उद्योगों की बढ़ती संख्या के कारण अलवणीय जल संसाधनों पर दबाव बढ़ा है। उद्योगों को उत्पादन कार्यों के लिए बड़ी मात्रा में जल तथा ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इससे जल संसाधनों का अधिक उपयोग होने लगा है।

शहरीकरण और जल संकट

शहरों की बढ़ती जनसंख्या तथा आधुनिक जीवन शैली के कारण जल की मांग निरंतर बढ़ रही है। अनेक आवासीय कॉलोनियों में जल आपूर्ति के लिए नलकूप लगाए जाते हैं, जिससे भूजल का अत्यधिक दोहन होता है। परिणामस्वरूप शहरों में जल संसाधनों की कमी बढ़ती जा रही है।

जल प्रदूषण की समस्या

कई क्षेत्रों में जल की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध होने के बावजूद जल दुर्लभता बनी रहती है। इसका मुख्य कारण जल की खराब गुणवत्ता है। घरेलू एवं औद्योगिक अपशिष्ट, रसायन, कीटनाशक तथा उर्वरक जल स्रोतों को प्रदूषित कर देते हैं, जिससे जल मानव उपयोग के लिए अनुपयुक्त हो जाता है।

जल संरक्षण एवं प्रबंधन की आवश्यकता

- जल संसाधनों के अतिशोषण और कुप्रबंधन से पारिस्थितिकी संकट उत्पन्न हो सकता है।
- इसलिए जल संरक्षण, विवेकपूर्ण उपयोग तथा जन–जागरूकता आवश्यक है।
- इसी उद्देश्य से अटल भूजल योजना तथा जल जीवन मिशन जैसी योजनाएँ संचालित की जा रही हैं, ताकि जल संसाधनों का संरक्षण हो सके और लोगों को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराया जा सके।

Trick **"कृषि ने निकाला, उद्योग ने बढ़ाया, शहर ने माँगा, प्रदूषण ने बिगाड़ा, योजनाओं ने बचाया।"**

4. यदि आपके क्षेत्र में भूजल स्तर लगातार गिर रहा हो तो अटल जल योजना के उद्देश्यों के आधार पर कौन–कौन से उपाय अपनाए जा सकते हैं?

उत्तर : यदि किसी क्षेत्र में भूजल स्तर लगातार गिर रहा हो, तो अटल भूजल योजना के उद्देश्यों के अनुसार जल संरक्षण एवं विवेकपूर्ण जल प्रबंधन के उपाय अपनाना आवश्यक है।

- इस योजना का मुख्य उद्देश्य जल की कमी वाले क्षेत्रों में भूजल के सतत उपयोग को बढ़ावा देना तथा लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाना है।
- अटल भूजल योजना के उद्देश्यों के अनुसार जल संरक्षण, भूजल पुनर्भरण, जन–जागरूकता, जनभागीदारी तथा जल के विवेकपूर्ण उपयोग के माध्यम से गिरते हुए भूजल स्तर की समस्या को कम किया जा सकता है।

जल संरक्षण को बढ़ावा

भूजल स्तर को बनाए रखने के लिए वर्षा जल का अधिकाधिक संग्रहण किया जाना चाहिए। वर्षा के जल को विभिन्न संरचनाओं के माध्यम से भूमि में पहुँचाकर भूजल का पुनर्भरण किया जा सकता है। इससे भूजल स्तर में सुधार होगा।

जल का विवेकपूर्ण उपयोग

कृषि, घरेलू तथा अन्य कार्यों में जल का उपयोग आवश्यकता के अनुसार ही किया जाना चाहिए। जल के अपव्यय को रोककर उपलब्ध जल संसाधनों का बेहतर प्रबंधन किया जा सकता है।

जन–जागरूकता और जनभागीदारी

अटल जल योजना का एक प्रमुख उद्देश्य लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाना है। इसलिए स्थानीय लोगों को जल संरक्षण के महत्व के प्रति जागरूक करना तथा सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देना आवश्यक है।

भूजल के अति–दोहन पर नियंत्रण

नलकूपों और कुओं के अत्यधिक उपयोग को नियंत्रित किया जाना चाहिए। भूजल के अनियंत्रित दोहन से जल स्तर और अधिक नीचे जा सकता है, इसलिए उसके संतुलित उपयोग पर बल दिया जाना चाहिए।

जल संसाधनों का सतत प्रबंधन

जल संसाधनों के संरक्षण, प्रबंधन तथा नियमित निगरानी द्वारा भविष्य के लिए जल उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकती है। इससे स्वास्थ्य, आजीविका, खाद्यान्न सुरक्षा तथा पर्यावरण संरक्षण में भी सहायता मिलेगी।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें!

5. **ग्रामीण क्षेत्रों में सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने में जल जीवन मिशन की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।**

उत्तर : जल जीवन मिशन

- भारत सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाने तथा उनके जीवनयापन को आसान बनाने के उद्देश्य से जल जीवन मिशन (JJM) की शुरुआत की है।
- यह मिशन ग्रामीण परिवारों को सुरक्षित एवं नियमित पेयजल उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने में भूमिका

- जल जीवन मिशन का मुख्य लक्ष्य प्रत्येक ग्रामीण परिवार को दीर्घकालिक आधार पर पाइप के माध्यम से पेयजल उपलब्ध कराना है।
- इस मिशन के अंतर्गत प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 55 लीटर पेयजल उपलब्ध कराने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।
- इससे ग्रामीण लोगों को स्वच्छ और सुरक्षित जल प्राप्त होता है, जिससे उनके स्वास्थ्य में सुधार होता है।

जीवन की गुणवत्ता में सुधार

- ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक परिवारों को पेयजल प्राप्त करने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती थी।
- जल जीवन मिशन के माध्यम से घरों तक जल पहुँचने से समय और श्रम की बचत होती है तथा लोगों के जीवन स्तर में सुधार आता है।
- विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों को इसका अधिक लाभ प्राप्त होता है।

स्वास्थ्य एवं सामाजिक लाभ

- स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से जलजनित रोगों की संभावना कम होती है।
- इससे लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा होती है तथा बेहतर जीवन परिस्थितियाँ विकसित होती हैं।
- सुरक्षित जल उपलब्ध होने से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता और स्वास्थ्य संबंधी स्थितियों में भी सुधार होता है।

जल संरक्षण से संबंध

- यह मिशन केवल जल आपूर्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि जल संसाधनों के संरक्षण और उनके विवेकपूर्ण उपयोग की आवश्यकता पर भी बल देता है।
- इससे भविष्य में जल की उपलब्धता बनाए रखने में सहायता मिलती है।

बहु–उद्देशीय नदी परियोजनाएँ और समन्वित जल संसाधन प्रबंधन

1. **सरदार सरोवर बाँध किस नदी पर बनाया गया है?**

(RBSE – 2022)

(अ) महानदी (ब) गंगा

(स) नर्मदा (द) गोदावरी **(स)**

निबंधात्मक प्रश्न –

1. **बहुउद्देशीय नदी परियोजनाओं की आवश्यकता की व्याख्या कीजिये।** *(मॉडल पेपर – 2026)*

उत्तर : बहुउद्देशीय नदी परियोजनाओं की आवश्यकता –

- बहुउद्देशीय नदी परियोजनाओं की आवश्यकता जल संसाधनों के समुचित उपयोग के लिए होती है।
- इनसे सिंचाई, जलविद्युत उत्पादन, बाढ़ नियंत्रण, पेयजल एवं औद्योगिक जलापूर्ति, अंतर्देशीय जल परिवहन तथा मत्स्य पालन जैसी अनेक सुविधाएँ प्राप्त होती हैं।
- ये परियोजनाएँ सूखा एवं बाढ़ की समस्या को कम करने, कृषि उत्पादन बढ़ाने तथा क्षेत्रीय एवं आर्थिक विकास को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

2. **भारत के जल संसाधन मंत्री के रूप में यदि आपको एक नदी घाटी परियोजना का मसौदा तैयार करने को कहा जाए तो आप किन–किन बिन्दुओं का ध्यान रखेंगे?**

(RBSE – 2022)

उत्तर : यदि मैं भारत का जल संसाधन मंत्री होता, तो नदी घाटी परियोजना का मसौदा तैयार करते समय निम्नलिखित बिंदुओं का ध्यान रखता –

- जल का समुचित एवं न्यायसंगत उपयोग सुनिश्चित किया जाए।
- पर्यावरण संरक्षण एवं जैव विविधता का ध्यान रखा जाए।
- विस्थापित लोगों का उचित पुनर्वास और मुआवजा दिया जाए।
- सिंचाई, पेयजल, जलविद्युत तथा बाढ़ नियंत्रण जैसे बहुउद्देशीय लाभों को प्राथमिकता दी जाए।**1.यदि किसी नदी पर नया बाँध बनाया जाए, तो उसके संभावित आर्थिक एवं पर्यावरणीय प्रभाव क्या हो सकते हैं?**

उत्तर : किसी नदी पर नया बाँध बनने से अनेक आर्थिक लाभ प्राप्त होते हैं, लेकिन इसके साथ कुछ पर्यावरणीय समस्याएँ भी उत्पन्न हो सकती हैं।

आर्थिक प्रभाव –

- बाँधों द्वारा जल का संचयन किया जाता है, जिससे सिंचाई की सुविधा बढ़ती है और कृषि उत्पादन में वृद्धि होती है।
- जल विद्युत उत्पादन से उद्योगों तथा घरेलू क्षेत्रों को ऊर्जा उपलब्ध होती है। बाँधों के माध्यम से पेयजल आपूर्ति, बाढ़ नियंत्रण, आंतरिक नौचालन तथा मत्स्य पालन को भी बढ़ावा मिलता है।
- सूखा प्रभावित क्षेत्रों में जल उपलब्धता बढ़ने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था और लोगों के जीवन स्तर में सुधार होता है।
- इसी कारण स्वतंत्रता के बाद बहुउद्देशीय परियोजनाओं को राष्ट्रीय विकास का आधार माना गया।

पर्यावरणीय प्रभाव

- नदियों पर बाँध बनने से उनका प्राकृतिक प्रवाह बाधित हो जाता है।
- इससे तलछट का बहाव कम हो जाता है तथा तलछट जलाशयों में जमा होने लगती है।
- नदी के प्राकृतिक पारितंत्र पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- बाँध नदियों को खंडों में विभाजित कर देते हैं, जिससे जलीय जीवों का आवागमन और प्रजनन प्रभावित होता है।

पारिस्थितिकीय समस्याएँ

- जलाशयों के निर्माण से वनस्पतियाँ और मिट्टियाँ जलमग्न हो जाती हैं।
- तलछट के बाढ़ मैदानों तक नहीं पहुँचने से भूमि की उर्वरता प्रभावित होती है।
- कई क्षेत्रों में अत्यधिक सिंचाई के कारण मृदा लवणीकरण जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
- इसके अतिरिक्त जलजनित रोगों, प्रदूषण तथा पारिस्थितिकी संकट की संभावना भी बढ़ जाती है।

इस प्रकार बाँध आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, किन्तु उनके पर्यावरणीय प्रभावों को ध्यान में रखते हुए जल संसाधनों का संतुलित एवं समन्वित प्रबंधन आवश्यक है।

Trick — **बाँध विकास भी देता है और विनाश भी।**

विकास = बिजली + सिंचाई + जल आपूर्ति + बाढ़ नियंत्रण

विनाश = प्रवाह अवरोध + तलछट + जलीय जीव हानि + लवणीकरण

3. भारत में प्राचीन काल से जल संरक्षण एवं सिंचाई के लिए विकसित जलीय कृतियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : भारत में प्राचीन काल से ही जल संरक्षण एवं सिंचाई को अत्यधिक महत्व दिया जाता रहा है। विभिन्न सभ्यताओं और शासकों ने जल के संग्रहण, संरक्षण तथा सिंचाई के लिए अनेक जलीय कृतियों का निर्माण कराया। ये कृतियाँ उस समय की वैज्ञानिक सोच तथा जल प्रबंधन की उत्कृष्ट परंपरा को दर्शाती हैं।

प्राचीन जल संरक्षण प्रणालियाँ

- ईसा से लगभग एक शताब्दी पूर्व इलाहाबाद के निकट श्रृंगवेरपुर में गंगा नदी की बाढ़ के जल को संरक्षित करने के लिए एक उत्कृष्ट जल संग्रहण तंत्र विकसित किया गया था।
- यह उस समय की उन्नत जल प्रबंधन प्रणाली का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

मौर्य काल में विकास

- चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में बड़े स्तर पर बाँधों, झीलों तथा सिंचाई तंत्रों का निर्माण कराया गया।
- इन संरचनाओं ने कृषि विकास और जल संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

दक्षिण एवं पश्चिम भारत की जलीय कृतियाँ

- कलिंग (ओडिशा), नागार्जुनकोंडा (आंध्र प्रदेश), बेन्नूर (कर्नाटक) तथा कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में उत्कृष्ट सिंचाई प्रणालियों के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
- ये क्षेत्र प्राचीन भारत की विकसित जल प्रबंधन परंपरा को दर्शाते हैं।

4. सरदार सरोवर परियोजना के उद्देश्यों एवं लाभों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : यह परियोजना गुजरात में नर्मदा नदी पर निर्मित की गई है।

- इसमें महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात तथा राजस्थान जैसे चार राज्य सम्मिलित हैं।
- इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य जल की कमी वाले क्षेत्रों को जल उपलब्ध कराना तथा सिंचाई सुविधाओं का विस्तार करना है।

परियोजना के उद्देश्य

- सरदार सरोवर परियोजना का प्रमुख उद्देश्य सूखा प्रभावित एवं मरुस्थलीय क्षेत्रों की जल आवश्यकताओं की पूर्ति करना है।

- इसके माध्यम से कृषि के लिए पर्याप्त सिंचाई जल उपलब्ध कराया जाता है।
- साथ ही जल संसाधनों का बेहतर प्रबंधन करके क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देना भी इसका महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

कृषि क्षेत्र में लाभ

- यह परियोजना गुजरात के 15 जिलों के 3112 गाँवों की लगभग 18.45 लाख हेक्टेयर भूमि को सिंचाई सुविधा प्रदान करती है।
- राजस्थान के बाड़मेर और जालौर जिलों की लगभग 2,46,000 हेक्टेयर भूमि को सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराती है।
- महाराष्ट्र के आदिवासी पहाड़ी क्षेत्रों में लिफ्ट सिंचाई के माध्यम से लगभग 37,500 हेक्टेयर भूमि की सिंचाई की जाती है।

सूखा प्रभावित क्षेत्रों को लाभ

- गुजरात का लगभग 75 प्रतिशत कमांड क्षेत्र तथा राजस्थान का संपूर्ण कमांड क्षेत्र सूखा प्रवण है।
- इस परियोजना के माध्यम से इन क्षेत्रों में सुनिश्चित जल उपलब्धता संभव हुई है, जिससे सूखे की समस्या को कम करने में सहायता मिली है।

वर्षा जल संग्रहण

1. खादीन राजस्थान के .... जिले में पाए जाते हैं। *(RBSE – 2024)*

उत्तर : जैसलमेर।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. राजस्थान में वर्षा जल संग्रहण के तरीकों की संक्षेप में व्याख्या कीजिए। (कोई दो) *(मॉडल पेपर – 2025)*

उत्तर : राजस्थान में वर्षा जल संग्रहण के तरीके –

1. टाँका

- टाँका राजस्थान की पारंपरिक छत वर्षा जल संग्रहण प्रणाली है।
- इसमें घरों की ढलवाँ छतों पर गिरने वाले वर्षा जल को पाइपों के माध्यम से भूमिगत टाँके में एकत्रित किया जाता है।
- यह जल वर्ष भर, विशेषकर ग्रीष्म ऋतु में, पेयजल के रूप में उपयोग किया जाता है।
- **टाँका मुख्यतः** बीकानेर, फलोदी और बाड़मेर क्षेत्रों में प्रचलित है।

2. जोहड़

- जोहड़ मिट्टी या पत्थरों से बनाई गई छोटी जल संचयन संरचना है, जिसमें वर्षा का जल एकत्रित किया जाता है।
- इससे भूजल स्तर बढ़ता है तथा सिंचाई एवं अन्य आवश्यक कार्यों के लिए जल उपलब्ध रहता है।
- यह राजस्थान के अनेक क्षेत्रों में जल संरक्षण का प्रभावी साधन है।

Trick **टाँका पीने का, जोहड़ जीने का।**

टाँका → पीने का पानी संग्रह
जोहड़ → जल संरक्षण, भूजल वृद्धि और खेती

2. निम्नांकित को स्पष्ट कीजिए। *(मॉडल पेपर – 2025)*

(i) जल जीवन मिशन

(ii) बाँस ड्रिप सिंचाई प्रणाली

उत्तर : (i) जल जीवन मिशन

- जल जीवन मिशन (JJM) भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण योजना है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों के प्रत्येक परिवार को नियमित रूप से सुरक्षित एवं पीने योग्य पाइप जल उपलब्ध कराना है।
- इस मिशन के अंतर्गत प्रत्येक ग्रामीण व्यक्ति को प्रतिदिन 55 लीटर पेयजल उपलब्ध कराने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।
- इसका उद्देश्य ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना, स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करना तथा लोगों का जीवनयापन आसान बनाना है।

(ii) बाँस ड्रिप सिंचाई प्रणाली

- बाँस ड्रिप सिंचाई प्रणाली मेघालय की लगभग 200 वर्ष पुरानी पारंपरिक सिंचाई तकनीक है।
- इसमें नदियों एवं झरनों के जल को बाँस से बने पाइपों द्वारा गुरुत्वाकर्षण की सहायता से खेतों तक पहुँचाया जाता है।
- अंत में जल का प्रवाह नियंत्रित करके 20 से 80 बूँद प्रति मिनट की दर से सीधे पौधों की जड़ों तक पहुँचाया जाता है।
- यह प्रणाली जल की बचत करती है तथा जल संरक्षण का उत्कृष्ट उदाहरण मानी जाती है।

RECORDED VIDEOS | LIVE CLASSES | PDF NOTES | e-BOOKS | QUIZ | TEST SERIES

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

Trick — **घर में नल, खेत में बाँस।**

घर में नल → जल जीवन मिशन
खेत में बाँस → बाँस ड्रिप सिंचाई प्रणाली

3. 'वर्षा जल संग्रहण' के महत्व एवं आवश्यकता का वर्णन कीजिये। *(मॉडल पेपर – 2026)*

उत्तर : 'वर्षा जल संग्रहण' के महत्व एवं आवश्यकता –

- वर्षा जल संग्रहण, जल संरक्षण की एक प्रभावी विधि है, जिसमें वर्षा के जल का संग्रह एवं पुनर्भरण किया जाता है।
- इसकी आवश्यकता भूजल स्तर बनाए रखने, जल संकट कम करने तथा सिंचाई एवं पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए होती है।
- इससे सूखे के समय जल की कमी कम होती है, जल का अपव्यय रुकता है तथा पर्यावरण संरक्षण और जल संसाधनों के सतत विकास को बढ़ावा मिलता है।

4. चित्र की सहायता से वर्षा जल संचयन प्रणाली को पहचान कर उस पर चर्चा कीजिए। *(RBSE – 2026)*

उत्तर : 'वर्षा जल संग्रहण' के महत्व एवं आवश्यकता –

- चित्र में छत आधारित वर्षा जल संग्रहण प्रणाली (Roof-top Rainwater Harvesting System) दर्शाई गई है।
- इस प्रणाली में भवन की छत पर गिरने वाले वर्षा जल को पाइपों के माध्यम से एकत्र कर भूमिगत टैंक में संग्रहित किया जाता है
- या रिचार्ज पिट के माध्यम से भूजल स्तर बढ़ाने के लिए जमीन में पहुँचाया जाता है।
- इससे जल संरक्षण होता है, भूजल स्तर में वृद्धि होती है तथा जल संकट को कम करने में सहायता मिलती है।

5. "टाँका" क्या है? *(RBSE – 2022)*

उत्तर : टाँका वर्षा जल संग्रहण की एक पारंपरिक भूमिगत संरचना है, जिसमें वर्षा का जल एकत्र कर पेयजल एवं घरेलू उपयोग के लिए सुरक्षित रखा जाता है।

6. भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित पारंपरिक वर्षा जल संग्रहण प्रणालियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने अपनी स्थानीय भौगोलिक, जलवायु एवं पारिस्थितिकीय परिस्थितियों के अनुसार जल संरक्षण की अनेक प्रणालियाँ विकसित की थीं। इनका उद्देश्य वर्षा जल का संग्रहण, संरक्षण तथा आवश्यकता के समय उसका उपयोग करना था।

हिमालयी क्षेत्रों की प्रणालियाँ

- पश्चिमी हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में 'गुल' अथवा 'कुल' नामक जल वाहिकाएँ बनाई जाती थीं।
- इनका उपयोग नदी या झरनों के जल का मार्ग बदलकर खेतों की सिंचाई के लिए किया जाता था।

राजस्थान की प्रणालियाँ

- पश्चिमी भारत, विशेषकर राजस्थान में छत वर्षा जल संग्रहण प्रणाली अत्यंत प्रचलित थी।
- यहाँ घरों की ढलवाँ छतों से वर्षा जल को पाइपों द्वारा भूमिगत टाँकों में एकत्रित किया जाता था।
- जैसलमेर क्षेत्र में खादीन तथा अन्य क्षेत्रों में जोहड़ वर्षा जल संग्रहण के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।
- ये प्रणालियाँ जल की कमी वाले क्षेत्रों में पेयजल एवं सिंचाई की आवश्यकताओं को पूरा करती थीं।

पश्चिम बंगाल की प्रणाली

- पश्चिम बंगाल के बाढ़ मैदानों में लोग खेतों की सिंचाई के लिए बाढ़ जल वाहिकाएँ बनाते थे।
- इनके माध्यम से बाढ़ के जल का उपयोग कृषि कार्यों में किया जाता था।

शुष्क एवं अर्धशुष्क क्षेत्रों की व्यवस्था

- शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्रों में वर्षा जल संग्रहण हेतु खेतों में विशेष प्रकार के गड्ढे बनाए जाते थे।
- इनमें वर्षा का जल एकत्रित करके मृदा की नमी बनाए रखी जाती थी तथा कृषि कार्यों में उसका उपयोग किया जाता था।

आधुनिक समय में उपयोग

- आज भी भारत के अनेक ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में वर्षा जल संग्रहण की परंपरा जीवित है।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहां चाहें जैसे चाहें

- कर्नाटक के मैसूरु जिले के गंडाथूर गाँव में लगभग सभी घरों में छत वर्षा जल संग्रहण की व्यवस्था है, जिसके कारण यह वर्षा जल संपन्न गाँव के रूप में प्रसिद्ध है।

7. अधिक वर्षा वाले क्षेत्र में भी जल संकट क्यों उत्पन्न हो सकता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : सामान्यतः यह माना जाता है कि अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में जल की कमी नहीं होती, लेकिन यह धारणा हमेशा सही नहीं होती।

- यदि वर्षा जल का उचित संग्रहण और प्रबंधन नहीं किया जाए तो अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में भी जल संकट उत्पन्न हो सकता है।
- मेघालय की राजधानी शिलांग इसका प्रमुख उदाहरण है।
- शिलांग, चेरापूँजी और मॉसिनराम जैसे विश्व के सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्रों से लगभग 55 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, फिर भी वहाँ पेयजल की गंभीर समस्या पाई जाती है।
- इसका मुख्य कारण वर्षा जल का पर्याप्त संरक्षण न होना तथा बढ़ती जल मांग है।
- इस समस्या के समाधान के लिए शिलांग में अधिकांश घरों में छत वर्षा जल संग्रहण प्रणाली अपनाई गई है।
- इस व्यवस्था के माध्यम से घरेलू जल आवश्यकताओं का लगभग 15 से 25 प्रतिशत भाग पूरा किया जाता है।
- यह उदाहरण दर्शाता है कि केवल अधिक वर्षा होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि जल का संरक्षण और उचित प्रबंधन भी आवश्यक है।

8. बाँस ड्रिप सिंचाई प्रणाली जल संरक्षण का एक प्रभावी उदाहरण क्यों है?

उत्तर : बाँस ड्रिप सिंचाई प्रणाली जल संरक्षण की एक अत्यंत प्रभावी पारंपरिक तकनीक है।

- इस प्रणाली में जल को सीधे पौधों की जड़ों तक पहुँचाया जाता है, जिससे जल का अपव्यय न्यूनतम होता है।
- इस विधि में बाँस के पाइपों द्वारा जल प्रवाह को नियंत्रित किया जाता है और अंत में केवल 20 से 80 बूँद प्रति मिनट की दर से जल पौधों तक पहुँचता है।
- इससे आवश्यकता अनुसार ही जल का उपयोग होता है तथा अतिरिक्त जल व्यर्थ नहीं बहता।
- यह प्रणाली विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में उपयोगी है, जहाँ गुरुत्वाकर्षण के माध्यम से बिना किसी अतिरिक्त ऊर्जा के जल को दूर–दूर तक पहुँचाया जा सकता है।
- कम लागत, स्थानीय संसाधनों का उपयोग तथा जल की बचत इस प्रणाली को जल संरक्षण का उत्कृष्ट उदाहरण बनाते हैं।

missiongyan®
DESH KA APNA SCHOOL
CBSE | RBSE | NEET | NDA | CDS | SSC | RAJASTHAN EXAMS
RECORDED COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

4 कृषि

कृषि के प्रकार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. **''झूम खेती'' क्या है?** *(RBSE – 2022)*
   (अ) स्थानांतरी कृषि
   (ब) वाणिज्यिक कृषि
   (स) रोपण कृषि
   (द) गहन जीविका कृषि **(अ)**

2. **कर्तन दहन कृषि को आंध्रप्रदेश में किस नाम से जाना जाता हैं ?** *(RBSE – 2025)*
   (अ) वालरे (ब) पोडू
   (स) खिल (द) कुरूवा **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. भूदान आंदोलन .... द्वारा प्रारम्भ किया गया। *(RBSE – 2025)*

उत्तर : विनोबा भावे

2. प्रारंभिक जीविका निर्वाह कृषि में ...., ... तथा .... जैसे आदिम कृषि उपकरणों का प्रयोग किया जाता है।

उत्तर : लकड़ी का हल, दाओ, खुदाई करने वाली छड़ी

3. प्रारंभिक जीविका निर्वाह कृषि मुख्यतः ...., ... तथा .... की अनुकूलता पर निर्भर करती है।

उत्तर : मानसून, मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता, पर्यावरणीय परिस्थितियों

4. ''स्लैश एंड बर्न'' कृषि को .... तथा .... कृषि भी कहा जाता है और इसका उद्देश्य परिवार के .... की पूर्ति करना होता है।

उत्तर : झूम, स्थानांतरणशील, भरण–पोषण

5. मेघालय, मिजोरम तथा नागालैंड में स्थानांतरणशील कृषि को .... कहा जाता है, जबकि बस्तर और अंडमान–निकोबार में इसे .... कहा जाता है।

उत्तर : झूम, दीपा

6. गहन जीविका कृषि उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ .... पर .... का दबाव अधिक होता है।

उत्तर : भूमि, जनसंख्या

7. गहन जीविका कृषि एक .... कृषि है जिसमें अधिक उत्पादन के लिए .... तथा .... का प्रयोग किया जाता है।

उत्तर : श्रम–गहन, जैव–रासायनिक निवेश, सिंचाई

8. जोतों का आकार .... अधिकारों के कारण .... तथा .... होता जा रहा है।

उत्तर : विरासत, छोटा, अलाभप्रद

9. वाणिज्यिक कृषि में ...., ... तथा .... के प्रयोग से अधिक उत्पादन प्राप्त किया जाता है।

उत्तर : उन्नत बीज, रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक

10. हरियाणा और पंजाब में .... एक वाणिज्यिक फसल है, जबकि ओडिशा में यही फसल .... फसल के रूप में उगाई जाती है।

उत्तर : चावल, जीविका

11. वाणिज्यिक कृषि का प्रमुख उद्देश्य .... के लिए उत्पादन करना तथा .... प्राप्त करना है।

उत्तर : बाजार, लाभ

12. रोपण कृषि में .... क्षेत्र में .... फसल उगाई जाती है तथा इसका उत्पादन .... में प्रयुक्त होता है।

उत्तर : विशाल, एकल, उद्योग

13. ओडिशा में स्थानांतरित कृषि को ...., ... या .... कहा जाता है।

उत्तर : पामाडाबी, कोमान, बरिंगा

14. पश्चिमी घाट में इसे .... कहा जाता है।

उत्तर : कुमारी

15. दक्षिण–पूर्वी राजस्थान में इसे .... या .... कहा जाता है।

उत्तर : वालरे, वाल्टरे

16. हिमालयी क्षेत्र में इसे .... कहा जाता है।

उत्तर : खिल

17. झारखंड में इसे .... कहा जाता है।

उत्तर : कुरुवा

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थानांतरित कृषि के स्थानीय नामों के रिक्त स्थान भरिए–

18. असम, मेघालय, मिजोरम और नागालैंड में इसे .... कहा जाता है।

उत्तर : झूम

19. मणिपुर में इसे .... कहा जाता है।

उत्तर : पामलू

20. छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले तथा अंडमान–निकोबार द्वीप समूह में इसे .... कहा जाता है।

उत्तर : दीपा

21. मध्य प्रदेश में इसे .... या .... कहा जाता है।

उत्तर : बेवर, दहिया

22. आंध्र प्रदेश में इसे .... या .... कहा जाता है।

उत्तर : पोडू, पेंडा

विश्व के विभिन्न देशों में स्थानांतरित कृषि के स्थानीय नामों के रिक्त स्थान भरिए–

23. मेक्सिको और मध्य अमेरिका में इसे .... कहा जाता है।

उत्तर : मिल्पा

24. वेनेजुएला में इसे .... कहा जाता है।

उत्तर : कोनुको

25. ब्राजील में इसे .... कहा जाता है।

उत्तर : रोका

26. मध्य अफ्रीका में इसे .... कहा जाता है।

उत्तर : मसोले

27. इंडोनेशिया में इसे .... तथा वियतनाम में .... कहा जाता है।

उत्तर : लदांग, रे

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. ''कर्तन–दहन'' कृषि क्या है? *(RBSE – 2023)*

उत्तर : वनों को काटकर और जलाकर भूमि साफ करने के बाद उस भूमि पर कुछ वर्षों तक खेती करने की कृषि पद्धति को कर्तन–दहन कृषि कहते हैं।

2. ''कर्तन दहन प्रणाली'' कृषि की व्याख्या कीजिये।

(मॉडल पेपर – 2026)

उत्तर :
- कर्तन–दहन प्रणाली ैै(सी ंदक ठनतद ।हतपबनसजनतम) प्रारंभिक जीविका निर्वाह कृषि का एक रूप है।
- इसमें वनस्पति एवं पेड़ों को काटकर (कर्तन) जला दिया जाता है तथा प्राप्त राख को प्राकृतिक उर्वरक के रूप में उपयोग करके कुछ वर्षों तक खेती की जाती है।
- भूमि की उर्वरता घटने पर किसान दूसरी जगह जाकर यही प्रक्रिया अपनाते हैं।
- भारत के उत्तर–पूर्वी राज्यों में इसे प्रायः झूम कृषि कहा जाता है।

3. प्रारंभिक जीविका निर्वाह कृषि में उत्पादकता कम क्यों होती है?

उत्तर :
- प्रारंभिक जीविका निर्वाह कृषि में किसान आधुनिक मशीनों, उन्नत बीजों, रासायनिक उर्वरकों तथा सिंचाई सुविधाओं का उपयोग नहीं करते हैं।
- खेती मुख्य रूप से प्राकृतिक उर्वरता और वर्षा पर निर्भर रहती है। भूमि का बार–बार परिवर्तन भी उत्पादन को प्रभावित करता है।
- इन कारणों से प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम होता है तथा कृषि की उत्पादकता निम्न बनी रहती है।

Trick

न मशीन, न बीज–खाद,
न सिंचाई, वर्षा भरोसे,
पैदावार घटाई।

4. गहन जीविका कृषि में सिंचाई और निवेश की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- गहन जीविका कृषि में सीमित भूमि से अधिक उत्पादन प्राप्त करना मुख्य उद्देश्य होता है।
- इसके लिए सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किया जाता है तथा उर्वरक, उन्नत बीज और अन्य कृषि निवेशों का उपयोग किया जाता है।
- इन उपायों से फसलों की वृद्धि बेहतर होती है, उत्पादन बढ़ता है तथा किसानों को अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।

मिशन ज्ञान
पढ़ो जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

> **Trick** "कम ज़मीन → पानी + पैसा → ज्यादा पैदावार → ज्यादा कमाई"

5. वाणिज्यिक कृषि और जीविका कृषि में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : वाणिज्यिक कृषि और जीविका कृषि में अंतर –

वाणिज्यिक कृषि	जीविका कृषि
उद्देश्य– बाजार में बिक्री के लिए अधिक उत्पादन करना	उद्देश्य– परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति उत्पादन करना
उन्नत बीज, उर्वरक और आधुनिक तकनीकों का अधिक उपयोग	पारंपरिक साधनों का प्रयोग अधिक
उत्पादन अपेक्षाकृत अधिक	उत्पादन अपेक्षाकृत कम

6. रोपण कृषि को कृषि और उद्योग के बीच का अंतरापृष्ठ (Interface) क्यों कहा जाता है?

उत्तर :
- रोपण कृषि में बड़े क्षेत्रों में एक ही फसल का उत्पादन किया जाता है।
- इस कृषि से प्राप्त अधिकांश उत्पादन सीधे उद्योगों में कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है।
- चाय, कॉफी, रबर और गन्ना इसके प्रमुख उदाहरण हैं।
- इसलिए यह कृषि उत्पादन और औद्योगिक उत्पादन के बीच महत्वपूर्ण संबंध स्थापित करती है, जिससे इसे कृषि और उद्योग का अंतरापृष्ठ कहा जाता है।

> **Trick** "खेत से फैक्ट्री का सीधा रास्ता = रोपण कृषि।"

शस्य प्रारूप

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. रबी फसलों का युग्म है? *(RBSE – 2022)*

(अ) गेहूँ – जौ

(ब) गेहूँ – चावल

(स) ज्वार – बाजरा

(द) सरसों – कपास **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. भारत की कृषि पद्धतियों और शस्य प्रारूपों में ...., ... तथा .... की विविधता परिलक्षित होती है।

उत्तर : भौतिक विविधताओं, संस्कृतियों, कृषि पद्धतियों

2. भारत में मुख्यतः ...., ... तथा .... तीन शस्य ऋतुएँ पाई जाती हैं।

उत्तर : रबी, खरीफ, जायद

3. रबी फसलों की बुवाई .... से .... के बीच तथा कटाई .... से .... के बीच की जाती है।

उत्तर : अक्टूबर, दिसंबर, अप्रैल, जून

4. शीत ऋतु में .... से होने वाली वर्षा रबी फसलों के .... में सहायक होती है।

उत्तर : पश्चिमी विक्षोभ, उत्पादन

5. खरीफ फसलें .... के आगमन के साथ बोई जाती हैं तथा .... में काट ली जाती हैं।

उत्तर : मानसून, सितंबर–अक्टूबर

6. असम, पश्चिम बंगाल और ओडिशा में धान की ...., ... तथा .... फसलें बोई जाती हैं।

उत्तर : ऑस, अमन, बोरो

7. रबी और खरीफ ऋतु के बीच .... ऋतु में बोई जाने वाली फसलों को .... फसलें कहा जाता है।

उत्तर : ग्रीष्म, जायद

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. रबी फसल का विश्लेषण कीजिए। *(RBSE – 2025)*

उत्तर :
- रबी फसलें शीत ऋतु में अक्टूबर – नवंबर में बोई जाती हैं तथा मार्च – अप्रैल में काटी जाती हैं।
- इनकी वृद्धि के लिए ठंडी जलवायु आवश्यक होती है।
- प्रमुख रबी फसलें गेहूँ, जौ, चना, मटर और सरसों हैं।

2. भारतीय कृषि में फसल विविधता का क्या महत्व है?

उत्तर :
- फसल विविधता किसानों को विभिन्न प्रकार के कृषि उत्पाद उपलब्ध कराती है।
- इससे खाद्यान्न, फल, सब्जियाँ, रेशेदार फसलें और मसाले प्राप्त होते हैं।
- विविध फसलें कृषि जोखिम को कम करती हैं तथा प्राकृतिक परिस्थितियों के अनुसार उत्पादन बनाए रखने में सहायता करती हैं।
- इससे किसानों की आय बढ़ती है और देश की खाद्य सुरक्षा भी मजबूत होती है।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

2. उत्तर भारत को रबी फसलों का प्रमुख क्षेत्र क्यों माना जाता है?

उत्तर :
- उत्तर भारत में शीत ऋतु की उपयुक्त जलवायु, उपजाऊ मिट्टी और पर्याप्त सिंचाई सुविधाएँ उपलब्ध हैं।
- पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में हरित क्रांति के प्रभाव से उन्नत बीजों और आधुनिक तकनीकों का व्यापक उपयोग हुआ है।
- इन अनुकूल परिस्थितियों के कारण यह क्षेत्र रबी फसलों के उत्पादन में अग्रणी माना जाता है।

3. जायद फसलों का कृषि प्रणाली में क्या महत्व है?

उत्तर :
- जायद फसलें रबी और खरीफ फसलों के बीच के समय में उगाई जाती हैं।
- इससे भूमि का उपयोग अधिक प्रभावी ढंग से हो पाता है और किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है।
- तरबूज, खरबूजा, खीरा तथा सब्जियाँ बाजार में अच्छी मांग रखती हैं।
- इसलिए जायद फसलें कृषि उत्पादन और आय दोनों को बढ़ाने में सहायक होती हैं।

प्रमुख खाद्यान्न फसलें

रिक्तस्थान –

1. भारत विश्व में .... के बाद .... का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है तथा चावल एक .... फसल है।

उत्तर : चीन, चावल, खरीफ

2. चावल की खेती के लिए .... सेल्सियस से अधिक तापमान, ... सेमी से अधिक वर्षा तथा .... जलवायु की आवश्यकता होती है।

उत्तर : 25, 100, गर्म एवं आर्द्र

3. नहरों तथा .... की सघनता के कारण .... तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भी चावल उगाया जाता है।

उत्तर : नलकूपों, पंजाब, हरियाणा

4. गेहूँ भारत की .... सबसे महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसल है तथा यह एक .... फसल है।

उत्तर : दूसरी, रबी

5. गेहूँ की खेती के लिए .... से .... सेमी वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है।

उत्तर : 50, 75

6. भारत में उगाए जाने वाले प्रमुख मोटे अनाज ...., ... तथा .... हैं।

उत्तर : ज्वार, बाजरा, रागी

7. रागी में ...., ... तथा .... प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

उत्तर : लोहा, कैल्शियम, सूक्ष्म पोषक तत्व

8. मक्का एक .... फसल है जिसका उपयोग .... तथा .... दोनों रूपों में किया जाता है।

उत्तर : खरीफ, खाद्यान्न, चारा

9. मक्का की खेती .... से .... तापमान तथा .... मिट्टी में अच्छी होती है।

उत्तर : 21°, 27°, पुरानी जलोढ़

10. .... भारत की मुख्य खाद्यान्न फसल है।

(मॉडल पेपर – 2025)

उत्तर : चावल

11. चावल की फसल के लिए .... सेन्टीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है– *(RBSE – 2021)*

उत्तर : 25° से 35° सेंटीग्रेड

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत की एक खाद्य फसल का नाम बताएँ और जहाँ यह पैदा की जाती है उन क्षेत्रों का विवरण दें।

(मॉडल पेपर – 2025)

उत्तर :
- चावल भारत की प्रमुख खाद्य फसल है।
- यह मुख्यतः असम, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र के कोंकण तटीय क्षेत्र, उत्तर प्रदेश तथा बिहार में उगाई जाती है।
- पिछले कुछ वर्षों में पंजाब और हरियाणा भी चावल के प्रमुख उत्पादक राज्य बन गए हैं।

2. भारत के उत्तर–पश्चिमी भाग गेहूँ उत्पादन के लिए उपयुक्त क्यों हैं?

उत्तर :
- उत्तर–पश्चिमी भारत में शीत ऋतु की उपयुक्त जलवायु, उपजाऊ मैदान और पर्याप्त सिंचाई सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

मिशन ज्ञान
पढ़ः जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

- गेहूँ को 50 से 75 सेमी वर्षा, ठंडा मौसम तथा पकने के समय धूप की आवश्यकता होती है।
- पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में ये सभी परिस्थितियाँ उपलब्ध होने के कारण गेहूँ का उत्पादन अधिक होता है।

Trick "ठंडी हवा, उपजाऊ धरा, पानी भरपूर – उत्तर–पश्चिम में गेहूँ ज़रूर।"

3. हरित क्रांति ने गेहूँ उत्पादन को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर :
- हरित क्रांति के दौरान उन्नत बीजों, रासायनिक उर्वरकों, सिंचाई सुविधाओं तथा आधुनिक कृषि तकनीकों का व्यापक उपयोग किया गया।
- इससे विशेष रूप से पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गेहूँ की उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- परिणामस्वरूप भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बना और किसानों की आय में भी वृद्धि हुई।

4. शुष्क क्षेत्रों में बाजरा और रागी की खेती क्यों उपयुक्त मानी जाती है?

उत्तर :
- बाजरा और रागी कम वर्षा तथा कठिन जलवायु परिस्थितियों में भी अच्छी तरह उग जाते हैं।
- बाजरा बलुई और उथली काली मिट्टी में जबकि रागी लाल, काली, बलुई और दोमट मिट्टी में उगाई जाती है।
- इन फसलों को अपेक्षाकृत कम जल की आवश्यकता होती है।
- इसलिए शुष्क क्षेत्रों के किसानों के लिए ये महत्वपूर्ण फसलें हैं।

5. दालों को भूमि की उर्वरता बनाए रखने वाली फसल क्यों कहा जाता है?

उत्तर :
- दलहनी फसलें वायुमंडल से नाइट्रोजन ग्रहण कर मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने में सहायता करती हैं।
- अरहर को छोड़कर अधिकांश दलहन फसलें भूमि में नाइट्रोजन स्थिरीकरण करती हैं।
- इसी कारण इन्हें फसल चक्र में शामिल किया जाता है।
- इससे मिट्टी की गुणवत्ता बनी रहती है और अन्य फसलों का उत्पादन भी बेहतर होता है।

वाणिज्यिक फसलें

रिक्तस्थान –

1. गन्ना एक .... तथा .... कटिबंधीय फसल है, जिसे ....°C से ....°C तापमान की आवश्यकता होती है।

उत्तर : उष्ण, उपोष्ण, 21, 27

2. गन्ने की खेती के लिए .... से .... सेमी वार्षिक वर्षा तथा .... जलवायु आवश्यक होती है।

उत्तर : 75, 100, गर्म एवं आर्द्र

3. भारत .... के बाद विश्व का .... सबसे बड़ा तिलहन उत्पादक देश है।

उत्तर : चीन, दूसरा

4. भारत में मुख्य रूप से .... किस्म की कॉफी पैदा की जाती है, जिसे प्रारम्भ में .... से लाया गया था।

उत्तर : अरेबिका, यमन

5. कॉफी की खेती मुख्य रूप से ...., ... तथा .... राज्यों में की जाती है।

उत्तर : कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. गन्ना भारत की महत्वपूर्ण नकदी फसल क्यों माना जाता है?

उत्तर :
- गन्ना भारत की प्रमुख नकदी फसल है क्योंकि इससे चीनी, गुड़, खांडसारी और शीरा जैसे अनेक उत्पाद प्राप्त होते हैं।
- यह कई उद्योगों के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराता है तथा किसानों को आर्थिक लाभ प्रदान करता है।
- इसके उत्पादन से रोजगार के अवसर भी बढ़ते हैं।
- इसलिए भारतीय कृषि और उद्योग दोनों में इसका विशेष महत्व है।

2. तिलहन फसलों का आर्थिक महत्व स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :
- तिलहन फसलें खाद्य तेलों का प्रमुख स्रोत हैं और भारतीय भोजन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।
- मूंगफली, सरसों, सोयाबीन तथा सूरजमुखी से तेल प्राप्त किया जाता है।
- कुछ तिलहनों का उपयोग साबुन, प्रसाधन सामग्री तथा अन्य उद्योगों में भी होता है।
- इसलिए तिलहन फसलें कृषि, उद्योग और उपभोक्ता आवश्यकताओं की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें

3. **चाय की खेती के लिए अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों का वर्णन कीजिए।**

उत्तर : • चाय की खेती के लिए उष्ण एवं आर्द्र जलवायु, ह्यूमस और जीवांश युक्त गहरी मिट्टी तथा अच्छी जल निकासी वाले ढालदार क्षेत्र आवश्यक होते हैं।

• वर्ष भर समान रूप से होने वाली वर्षा इसकी कोमल पत्तियों के विकास में सहायक होती है।

• पाला रहित वातावरण और पर्याप्त श्रम उपलब्धता भी चाय उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती है।

Trick **"गरम–गीली, ढलान काली; बारिश, पाला खाली, मजदूर निराली।"**

वाणिज्यिक फसलें

रिक्तस्थान –

1. भारत विश्व में फलों और सब्जियों के उत्पादन में .... के बाद .... स्थान पर है।

उत्तर : चीन, दूसरे

2. .... आम, ... लीची तथा .... सेब उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं।

उत्तर : महाराष्ट्र, बिहार, हिमाचल प्रदेश

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. **कपास की फसल हेतु आवश्यक भौगोलिक दशाएँ बताइए– (कोई दो)** *(RBSE – 2021)*

उत्तर : 21° – 30° सेल्सियस तापमान उपयुक्त होता है।
50 – 100 सेमी वर्षा तथा अच्छी जलनिकासी वाली काली मिट्टी उपयुक्त होती है।

प्रौद्योगिकीय एवं संस्थागत सुधार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

5. **कृषि वर्ष में एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्र–** *(RBSE – 2024)*

(अ) सकल कृषित क्षेत्र
(ब) शुद्ध बोया क्षेत्र
(स) परती भूमि
(द) चरागाह **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. स्वतंत्रता के बाद कृषि सुधारों के लिए ...., ... तथा .... को प्राथमिकता दी गई।

उत्तर : चकबंदी, सहकारिता, जमींदारी उन्मूलन

2. प्रथम पंचवर्षीय योजना में .... को प्रमुख लक्ष्य बनाया गया था तथा .... का कार्य आवश्यक माना गया।

उत्तर : भूमि सुधार, चकबंदी

3. 1960 और 1970 के दशक में .... क्रांति तथा .... क्रांति जैसी कृषि सुधार रणनीतियाँ प्रारम्भ की गई।

उत्तर : हरित, श्वेत

4. 1980 तथा 1990 के दशकों में .... कार्यक्रम शुरू किया गया जो .... तथा .... सुधारों पर आधारित था।

उत्तर : व्यापक भूमि विकास, संस्थागत, तकनीकी

5. किसानों को कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराने हेतु ...., ... तथा .... की स्थापना की गई।

उत्तर : ग्रामीण बैंक, सहकारी समितियाँ, बैंक

6. कृषि क्षेत्र में ...., ... तथा .... जैसी प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा हेतु फसल बीमा की व्यवस्था की गई।

उत्तर : सूखा, बाढ़, चक्रवात

7. भारत सरकार ने किसानों के हित में .... तथा .... योजना प्रारम्भ की।

उत्तर : किसान क्रेडिट कार्ड, व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना

8. विनोबा भावे द्वारा चलाए गए भूदान–ग्रामदान आंदोलन को .... क्रांति भी कहा गया।

उत्तर : रक्तहीन

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. **सिंचाई ने किस प्रकार फसल प्रारूप, मृदा एवं सामाजिक परिदृश्यों को परिवर्तित कर दिया ?** *(RBSE – 2024)*

उत्तर : सिंचाई के विकास से फसल प्रारूप में परिवर्तन हुआ, नकदी फसलों का उत्पादन बढ़ा, मृदा में जलभराव व लवणता जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई तथा किसानों की आय, रोजगार और जीवन स्तर में सुधार से सामाजिक परिदृश्य भी बदला।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

2. भारत में प्रौद्योगिकीय एवं संस्थागत सुधारों की आवश्यकता क्यों पड़ी?

उत्तर :
- भारत में लंबे समय तक कृषि पारंपरिक तरीकों से की जाती रही।
- बढ़ती जनसंख्या की खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कृषि उत्पादन बढ़ाना आवश्यक था।
- सिंचाई, उन्नत बीज, उर्वरक तथा आधुनिक तकनीकों के प्रयोग के साथ–साथ भूमि सुधार, सहकारिता और ऋण सुविधाओं जैसे संस्थागत सुधारों की आवश्यकता महसूस हुई।
- इन सुधारों ने कृषि विकास को गति प्रदान की।

3. हरित क्रांति ने भारतीय कृषि को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर :
- हरित क्रांति के अंतर्गत उन्नत बीज, रासायनिक उर्वरक, सिंचाई सुविधाएँ तथा आधुनिक कृषि तकनीकों का उपयोग बढ़ाया गया।
- इससे विशेषकर गेहूँ और चावल के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- किसानों की आय बढ़ी और देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ा।
- हालांकि इसका लाभ प्रारंभ में कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रहा।

Trick **"बीज–खाद–पानी से बढ़ी पैदावार, बढ़ी कमाई, देश आत्मनिर्भर; पर लाभ रहा सीमित क्षेत्र।"**

4. भूदान आंदोलन की शुरुआत कैसे हुई?

उत्तर :
- विनोबा भावे तेलंगाना के पोचमपल्ली गाँव में ग्रामीणों से बातचीत कर रहे थे।
- वहाँ भूमिहीन किसानों ने आजीविका के लिए भूमि की मांग की।
- इसी दौरान श्री रामचंद्र रेड्डी ने 80 भूमिहीन ग्रामीणों के लिए 80 एकड़ भूमि दान करने की घोषणा की।
- इस घटना से भूदान आंदोलन की शुरुआत हुई और बाद में यह पूरे देश में फैल गया।

मिशन ज्ञान

For better experience
DOWNLOAD APP
mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER
www.MISSIONGYAN.com

5 खनिज तथा ऊर्जा संसाधन

मानचित्र

1. भारत के मानचित्र पर निम्नलिखित ऊर्जा संयंत्र अंकित कीजिए–

सिंगरौली	कोरबा	रामागुंडम	तलचर	नेवेली	उरण
परली	गाँधीनगर	ध्रुवरन	तारापुर	रावतभाटा	नरौरा
काकरापार	कलपक्कम	कैगा			

उत्तर :

2. भारत के मानचित्र पर निम्नलिखित स्थान अंकित कीजिए–

बोंगईगाँव	चंद्रपुरा	नामरूप	कोलकाता	संथालडीह	विजयवाड़ा
तूतीकोरिन	भुसावल	वानकबाड़ी	विशाखापट्नम	पारादीप	मार्मागाओ
मंगलूरु	सिंगरेनी	डिगबोई	नहरकटिया	मुंबई हाई	बसीन

उत्तर :

3. भारत के मानचित्र पर निम्नलिखित स्थान अंकित कीजिए–

विजयपुर	झाबुआ	कलोल	हजीरा	सोनीपत	अंता
गुरुग्राम	मेकुम	मोरन	जंजी	कटनी	बालाघाट
बिलासपुर	बेलाडिला	गुआ	गया	बल्लारि	शिवमोग्ग

उत्तर :

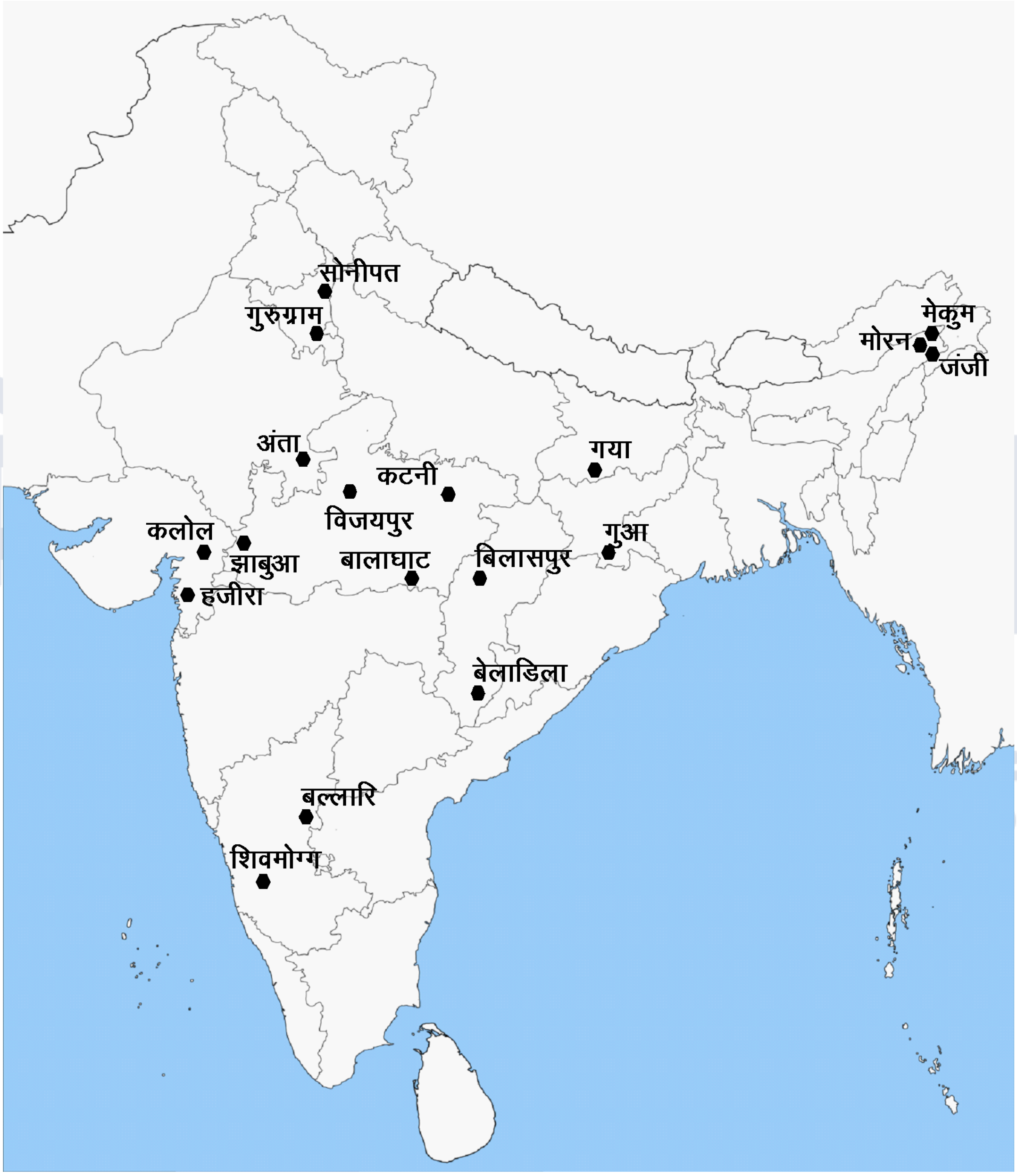

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

PYQs

1. भारत के मानचित्र पर निम्नलिखित स्थान अंकित कीजिए–

अजमेर	बड़ोदरा	अंकलेश्वर	नेल्लोर	जामनगर	कोच्चि
अमृतसर	अहमदाबाद	हल्दिया	नासिक	बरौनी	अमरकंटक
कुद्रेमुख	रत्नागिरी	चित्रदुर्ग	चिक्कमंगलुरू	म्यूरमंज	

उत्तर :

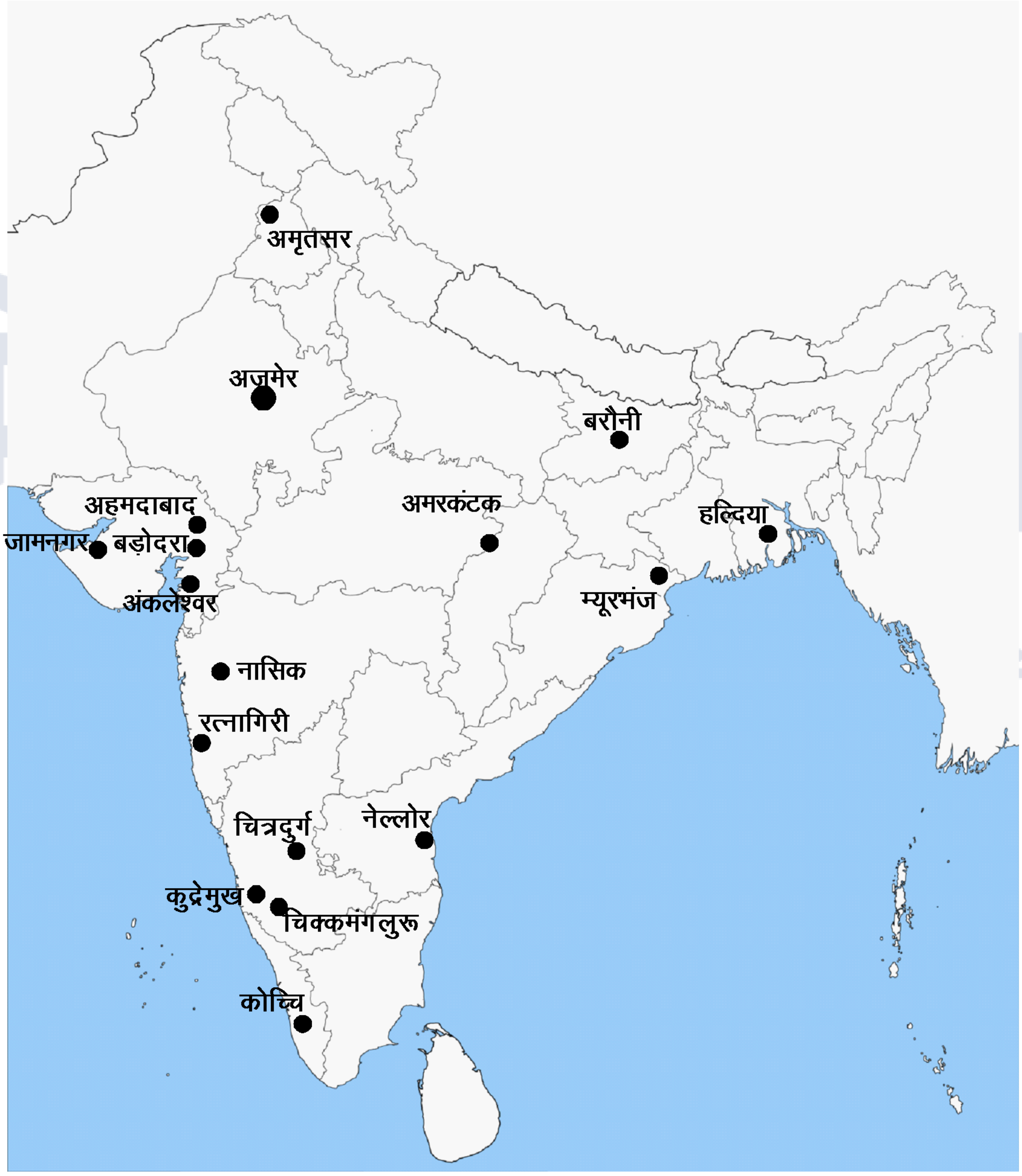

6 विनिर्माण उद्योग

विनिर्माण का अर्थ एवं महत्व

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. विनिर्माण उद्योगों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सही है?
(अ) ये केवल कृषि क्षेत्र को रोजगार उपलब्ध कराते हैं।
(ब) ये कृषि के आधुनिकीकरण में सहायक होने के साथ कृषि पर निर्भरता भी कम करते हैं।
(स) इनका आर्थिक विकास से कोई संबंध नहीं होता।
(द) ये केवल कच्चे माल का उत्पादन करते हैं। **(ब)**

2. औद्योगिक विकास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सही है?
(अ) यह केवल विदेशी व्यापार को बढ़ावा देता है।
(ब) यह बेरोजगारी एवं गरीबी उन्मूलन में सहायक होने के साथ क्षेत्रीय असमानताओं को भी कम करता है।
(स) इसका रोजगार से कोई संबंध नहीं है।
(द) यह केवल बड़े शहरों तक सीमित है। **(ब)**

3. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–
1. विनिर्मित वस्तुओं का निर्यात विदेशी मुद्रा अर्जित करता है।
2. कृषि एवं उद्योग एक–दूसरे के पूरक हैं।
3. किसान उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के लिए उद्योगों पर निर्भर रहते हैं।

सही उत्तर है–
(अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3
(स) 1, 2 और 3 (द) केवल 1 और 3 **(स)**

रिक्तस्थान –

1. विनिर्माण उद्योग .... के आधुनिकीकरण में सहायक होते हैं, ... पर निर्भरता कम करते हैं तथा .... एवं .... क्षेत्रों में रोजगार उपलब्ध कराते हैं।

उत्तर : कृषि, कृषि, द्वितीयक, तृतीयक

उद्योगों का वर्गीकरण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. उद्योगों का वर्गीकरण प्रयुक्त कच्चे माल के आधार पर किया जाता है। निम्नलिखित में से कौन–सा समूह कृषि आधारित उद्योगों का सही उदाहरण है?
(अ) सूती वस्त्र, चीनी, चाय एवं वनस्पति तेल
(ब) सीमेंट, लौह–इस्पात, मशीन एवं पेट्रो–रसायन
(स) एल्युमिनियम, सीमेंट, कागज एवं इस्पात
(द) लौह–इस्पात, चाय, मशीन एवं चीनी **(अ)**

2. आधारभूत एवं उपभोक्ता उद्योगों के संबंध में निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए।
(अ) आधारभूत उद्योग सीधे उपभोक्ताओं के उपयोग की वस्तुएँ बनाते हैं।
(ब) उपभोक्ता उद्योगों के कच्चे माल पर अन्य उद्योग निर्भर रहते हैं।
(स) लौह–इस्पात आधारभूत उद्योग है, जबकि चीनी एवं पंखा उपभोक्ता उद्योग हैं।
(द) आधारभूत एवं उपभोक्ता उद्योगों में कोई अंतर नहीं है। **(स)**

3. स्वामित्व के आधार पर उद्योगों के वर्गीकरण के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन–सा युग्म सही नहीं है?
(अ) BHEL – सार्वजनिक क्षेत्र
(ब) SAIL – सार्वजनिक क्षेत्र
(स) OIL – संयुक्त क्षेत्र
(द) बजाज ऑटो – संयुक्त क्षेत्र **(स)**

4. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–
1. सूती वस्त्र, ऊनी वस्त्र एवं चीनी उद्योग कृषि आधारित उद्योग हैं।
2. लौह–इस्पात, सीमेंट एवं मशीन उद्योग खनिज आधारित उद्योग हैं।
3. पेट्रो–रसायन उद्योग कृषि आधारित उद्योगों में शामिल है।

सही उत्तर है –

(अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3

(स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3 **(अ)**

5. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. आधारभूत उद्योगों के उत्पादों पर अन्य उद्योग निर्भर रहते हैं।
2. चीनी, कागज एवं सिलाई मशीन उपभोक्ता उद्योगों के उदाहरण हैं।
3. लौह–इस्पात उद्योग उपभोक्ता उद्योग का उदाहरण है।

सही उत्तर है –

(अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3

(स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3 **(अ)**

6. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. BHEL एवं SAIL सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग हैं।
2. बजाज ऑटो एवं डाबर निजी क्षेत्र के उद्योग हैं।
3. OIL संयुक्त क्षेत्र का उदाहरण है।
4. महाराष्ट्र के चीनी उद्योग सहकारी क्षेत्र के उदाहरण हैं।

सही उत्तर है –

(अ) केवल 1, 2 और 3

(ब) केवल 2, 3 और 4

(स) 1, 2, 3 और 4

(द) केवल 1 और 4 **(स)**

रिक्तस्थान –

1. भार एवं कच्चे माल के आधार पर .... एवं ... . भारी उद्योग माने जाते हैं, जबकि .... उद्योग हल्के उद्योग का उदाहरण है।

उत्तर : लौह–इस्पात, सीमेंट, विद्युतीय

कृषि आधारित उद्योग

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. कृषि आधारित उद्योगों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन–सा विकल्प सही है?

(अ) ये उद्योग मुख्यतः खनिज एवं धातुओं को कच्चे माल के रूप में उपयोग करते हैं।

(ब) सूती वस्त्र, पटसन, रेशम, ऊनी वस्त्र, चीनी एवं वनस्पति तेल उद्योग कृषि से प्राप्त कच्चे माल पर आधारित हैं।

(स) सीमेंट, मशीन एवं पेट्रो–रसायन कृषि आधारित उद्योग हैं।

(द) कृषि आधारित उद्योगों का कृषि से कोई संबंध नहीं होता। **(ब)**

2. वस्त्र उद्योग के संबंध में निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सही है?

(अ) यह केवल तैयार वस्त्रों का निर्माण करता है तथा कच्चे माल पर निर्भर नहीं रहता।

(ब) यह देश का एकमात्र ऐसा उद्योग है जो कच्चे माल से लेकर उच्च मूल्यवर्धित उत्पाद तक संपूर्ण उत्पादन श्रृंखला में आत्मनिर्भर है।

(स) यह केवल निर्यात के लिए कार्य करता है।

(द) इसका औद्योगिक उत्पादन में कोई योगदान नहीं है। **(ब)**

सूती वस्त्र उद्योग

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. प्राचीन भारत में सूती वस्त्र हाथ से कताई एवं हथकरघे पर बुने जाते थे।
2. अठारहवीं शताब्दी के बाद विद्युत चालित करघों का प्रयोग प्रारम्भ हुआ।
3. औपनिवेशिक काल में भारतीय सूती वस्त्र उद्योग को इंग्लैंड के मशीन निर्मित कपड़ों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ी।

सही उत्तर है–

(अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3

(स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3 **(द)**

2. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. सूती वस्त्र उद्योग का पशुपालन से घनिष्ठ संबंध है।
2. यह उद्योग किसानों, कताई, बुनाई, रंगाई, डिजाइन, पैकेजिंग एवं सिलाई से जुड़े लोगों को रोजगार देता है।
3. इस उद्योग के विकास से रसायन, पैकेजिंग एवं इंजीनियरिंग उद्योगों की भी मांग बढ़ती है।

सही उत्तर है–

(अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3

(स) 1, 2 और 3 (द) केवल 1 और 3 **(ब)**

3. **निम्न कथनों पर विचार कीजिए–**

1. भारत विश्वस्तरीय सूत उत्पादन करता है।
2. भारत में बुने जाने वाले सभी वस्त्र उच्च गुणवत्ता वाले धागे से ही बनाए जाते हैं।
3. बुनाई का कार्य हथकरघों, विद्युत करघों तथा मिलों में किया जाता है।
4. खादी उद्योग बुनकरों को उनके घरों पर रोजगार उपलब्ध कराता है।

सही उत्तर है–

(अ) केवल 1, 3 और 4
(ब) केवल 1 और 2
(स) केवल 2, 3 और 4
(द) 1, 2, 3 और 4 **(अ)**

4. **बंबई में पहली कपड़ा मिल किस वर्ष लगी थी?** *(RBSE – 2025)*

(अ) 1852 (ब) 1854
(स) 1860 (द) 1862 **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. मशीन उद्योग के युग से पहले अंतर्राष्ट्रीय कपड़ा बाज़ार में भारत के रेशमी और .... उत्पादों का ही दबदबा रहता था– *(RBSE – 2024)*

उत्तर : सूती

2. भारत का पहला सफल .... उद्योग .... में .... में स्थापित किया गया, जबकि प्रारम्भ में इसका विकास मुख्यतः .... एवं गुजरात तक सीमित था।

उत्तर : सूती वस्त्र, 1854, मुंबई, महाराष्ट्र

3. सूती वस्त्र उद्योग .... से घनिष्ठ रूप से जुड़ा है तथा इसके विकास से ...., ... और .... उद्योगों की मांग भी बढ़ती है।

उत्तर : कृषि, रसायन, पैकेजिंग, इंजीनियरिंग

4. भारत में बुनाई का कार्य ...., ... तथा .... में किया जाता है, जबकि .... उद्योग बुनकरों को घर पर रोजगार उपलब्ध कराता है।

उत्तर : हथकरघों, विद्युत करघों, मिलों, खादी

5. **भारत का प्रथम सूती वस्त्र उद्योग कहाँ लगाया गया ?** *(मॉडल पेपर – 2025)*

उत्तर : मुंबई।

पटसन उद्योग

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. **भारत में अधिकांश पटसन उद्योगों का संकेन्द्रण पश्चिम बंगाल में हुगली नदी के किनारे होने का प्रमुख कारण कौन–सा है?**

(अ) केवल सस्ता श्रम उपलब्ध होना।
(ब) केवल कोलकाता बंदरगाह की सुविधा होना।
(स) कच्चे पटसन की निकटता, जल परिवहन, प्रचुर जल, सस्ता श्रम तथा कोलकाता बंदरगाह की सुविधा।
(द) केवल अनुकूल जलवायु होना। **(स)**

2. **निम्न कथनों पर विचार कीजिए–**

1. भारत पटसन एवं पटसन निर्मित वस्तुओं का सबसे बड़ा उत्पादक है।
2. अधिकांश पटसन उद्योग पश्चिम बंगाल में हुगली नदी के किनारे स्थित हैं।
3. यह औद्योगिक पट्टी लगभग 98 किमी लंबी तथा 3 किमी चौड़ी है।

सही उत्तर है–

(अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3
(स) 1, 2 और 3 (द) केवल 1 और 3 **(स)**

3. **बंगाल में देश की पहली जूट मिल किस वर्ष प्रारम्भ हुई?** *(RBSE – 2024)*

(अ) 1855 (ब) 1860
(स) 1862 (द) 1872 **(अ)**

4. **पटसन व पटसन निर्मित सामान का सबसे बड़ा उत्पादक देश कौन–सा है?** *(RBSE – 2023)*

(अ) भारत (ब) बांग्लादेश
(स) चीन (द) श्रीलंका **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. भारत का पहला .... उद्योग .... में .... के निकट .... नामक स्थान पर स्थापित किया गया।

उत्तर : पटसन, 1855, कोलकाता, रिशरा।

2. सन् .... के विभाजन के बाद अधिकांश .... भारत में रहीं, जबकि लगभग .... पटसन उत्पादक क्षेत्र .... में चले गए।

उत्तर : 1947, पटसन मिलें, तीन–चौथाई, बांग्लादेश

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

चीनी उद्योग

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. भारत चीनी उत्पादन में विश्व में दूसरा स्थान रखता है।
2. गुड़ एवं खांडसारी उत्पादन में भारत का प्रथम स्थान है।

सही उत्तर है–

(अ) 1 और 2 सत्य (ब) केवल 2 सत्य
(स) केवल 1 सत्य (द) 1 और 2 असत्य **(अ)**

2. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. चीनी उद्योग एक मौसमी उद्योग है।
2. यह सहकारी क्षेत्र के विकास के लिए उपयुक्त माना जाता है।
3. महाराष्ट्र में चीनी उद्योग के विकास का प्रमुख कारण अधिक सुक्रोज युक्त गन्ना एवं सफल सहकारी समितियाँ हैं।

सही उत्तर है–

(अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3
(स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3 **(द)**

3. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. हाल के वर्षों में चीनी उद्योग का विस्तार दक्षिणी एवं पश्चिमी भारत में हुआ है।
2. महाराष्ट्र की अपेक्षाकृत आर्द्र जलवायु चीनी उद्योग के लिए अनुकूल मानी गई है।
3. महाराष्ट्र में गन्ने में सुक्रोज की मात्रा उत्तर भारत की अपेक्षा अधिक होती है।

सही उत्तर है–

(अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3
(स) 1, 2 और 3 (द) केवल 1 और 3 **(स)**

रिक्तस्थान –

1. देश की लगभग .... प्रतिशत चीनी मिलें .... एवं .... में स्थित हैं, जबकि हाल के वर्षों में .... में भी इनकी संख्या बढ़ी है।

उत्तर : 60, उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र

2. चीनी उद्योग में प्रयुक्त .... एक .... कच्चा माल है तथा परिवहन के दौरान इसमें .... की मात्रा घटती है, इसलिए मिलें प्रायः .... क्षेत्रों के निकट स्थापित की जाती हैं।

उत्तर : गन्ना, भारी, सुक्रोज, गन्ना उत्पादक

लौह–इस्पात उद्योग

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. लौह–इस्पात उद्योग को उद्योगों की रीढ़ (Backbone Industry) कहा जाता है।
2. यह एक आधारभूत उद्योग है।
3. अनेक इंजीनियरिंग एवं मशीन निर्माण उद्योग इसके उत्पादों पर निर्भर रहते हैं।

सही उत्तर है–

(अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3
(स) 1, 2 और 3 (द) केवल 1 और 3 **(स)**

2. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. स्वतंत्रता के समय भारत में केवल टिस्को, भारतीय लौह एवं इस्पात कंपनी तथा विश्वेश्वरैया लौह एवं इस्पात संयंत्र कार्यरत थे।
2. स्वतंत्रता के बाद भिलाई, राउरकेला एवं दुर्गापुर में सार्वजनिक क्षेत्र के इस्पात संयंत्र स्थापित किए गए।
3. बोकारो इस्पात संयंत्र सोवियत संघ के सहयोग से स्थापित किया गया।

सही उत्तर है–

(अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3
(स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3 **(द)**

3. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. उदारीकरण एवं निजीकरण के बाद निजी क्षेत्र के इस्पात उद्योगों का विकास हुआ।
2. विशाखापट्टनम भारत का पहला तटीय (Coastal) इस्पात संयंत्र है।
3. सलेम, विजयनगर एवं पारादीप प्रमुख इस्पात केंद्रों में शामिल हैं।

सही उत्तर है–

(अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3
(स) 1, 2 और 3 (द) केवल 1 और 3 **(स)**

रिक्तस्थान –

1. लौह–इस्पात उद्योग के स्थानीयकरण में ...., ..., ... तथा .... की उपलब्धता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

उत्तर : लौह–अयस्क, कोकिंग कोयला, चूना पत्थर, जल

एल्युमिनियम, रसायन, उर्वरक, सीमेंट एवं मोटरगाड़ी उद्योग

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. एल्युमिनियम उद्योग का प्रमुख कच्चा माल बॉक्साइट है।
2. एल्युमिनियम हल्की, जंगरोधी एवं उत्तम चालक धातु है।
3. एल्युमिनियम का उपयोग विमान, बर्तन, विद्युत एवं परिवहन उद्योगों में किया जाता है।

सही उत्तर है–

(अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3
(स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3 **(द)**

2. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. नाइट्रोजनयुक्त उर्वरक उद्योग प्राकृतिक गैस पर आधारित है।
2. उर्वरकों का संतुलित उपयोग कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सहायक होता है।

सही उत्तर है–

(अ) 1 और 2 सत्य (ब) केवल 2 सत्य
(स) केवल 1 सत्य (द) 1 और 2 असत्य **(अ)**

3. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. मोटरगाड़ी उद्योग का विस्तार उदारीकरण के बाद तीव्र गति से हुआ।
2. यह उद्योग अनेक सहायक उद्योगों को भी बढ़ावा देता है।
3. दिल्ली, गुरुग्राम, पुणे, चेन्नई एवं बेंगलुरु प्रमुख मोटरगाड़ी निर्माण केंद्र हैं।

सही उत्तर है–

(अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3
(स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3 **(स)**

1. निम्न में से कौन–सा उद्योग बॉक्साइट को कच्चे माल के रूप में प्रयोग करता है? *(मॉडल पेपर – 2026)*

(अ) एल्यूमिनियम प्रगलन
(ब) कागज
(स) सीमेंट (द) लोहा तथा इस्पात **(अ)**

3. निम्न में से कौन–सा उद्योग चूना पत्थर को कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त करता है? *(मॉडल पेपर – 2025)*

(अ) कागज (ब) सीमेंट
(स) स्टील (द) मोटरगाड़ी **(ब)**

6. निम्न में से अधात्विक खनिज है– *(RBSE – 2025)*

(अ) बॉक्साइट (ब) सीसा
(स) अभ्रक (द) सोना **(स)**

10. कौन–सा प्रगलन उद्योग भारत में दूसरा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण धातु शोधन उद्योग है? *(RBSE – 2023)*

(अ) लौह अयस्क प्रगलन
(ब) एल्यूमिनियम प्रगलन
(स) ताँबा प्रगलन
(द) सीसा प्रगलन **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. सीमेंट उद्योग के लिए ...., ... एवं .... प्रमुख कच्चे माल हैं, जबकि इसके निर्माण में . ... की पर्याप्त उपलब्धता आवश्यक होती है।

उत्तर : चूना पत्थर, सिलिका, जिप्सम, ऊर्जा

2. रसायन उद्योग में ...., ..., ... एवं .... जैसी वस्तुओं का निर्माण किया जाता है, जिनका उपयोग उद्योग एवं दैनिक जीवन दोनों में होता है।

उत्तर : उर्वरक, अम्ल, प्लास्टिक, औषधियों

सूचना प्रौद्योगिकी एवं इलेक्ट्रॉनिक उद्योग

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. बेंगलुरु भारत की इलेक्ट्रॉनिक राजधानी के रूप में प्रसिद्ध है।
2. इस उद्योग का सर्वाधिक संकेंद्रण बेंगलुरु, नोएडा, मुंबई, चेन्नई, हैदराबाद एवं पुणे में है।

सही उत्तर है–

(अ) 1 और 2 सत्य (ब) केवल 2 सत्य
(स) केवल 1 सत्य (द) 1 और 2 असत्य **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. सूचना प्रौद्योगिकी एवं इलेक्ट्रॉनिक उद्योग में ...., ..., ... तथा .... जैसे अनेक इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का निर्माण किया जाता है।

उत्तर : ट्रांजिस्टर, टेलीविजन, टेलीफोन, कंप्यूटर

2. भारत में सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग की सफलता का प्रमुख आधार .... एवं .... का निरंतर विकास है, जिसने देश को .... स्तर पर विशेष पहचान दिलाई।

उत्तर : हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, वैश्विक

मिशन ज्ञान
पढ़ें सब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

औद्योगिक प्रदूषण एवं पर्यावरणीय निम्नीकरण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. औद्योगिक प्रदूषण मुख्यतः वायु, जल, भूमि एवं ध्वनि प्रदूषण के रूप में दिखाई देता है।
2. ताप विद्युत गृहों एवं कारखानों से बिना ठंडा किया गया गर्म जल नदियों में छोड़े जाने से तापीय प्रदूषण होता है।
3. तापीय प्रदूषण का जलीय जीवों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

सही उत्तर है–

(अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3

(स) केवल 1 और 3 (द) 1, 2 और 3 **(द)**

2. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. मशीनें, जनरेटर, ड्रिल एवं निर्माण कार्य ध्वनि प्रदूषण के प्रमुख स्रोत हैं।
2. ऊँची चिमनियाँ, इलेक्ट्रोस्टैटिक प्रीसिपिटेटर एवं स्क्रबर वायु प्रदूषण को कम करने में सहायक हैं।

सही उत्तर है–

(अ) 1 और 2 सत्य (ब) केवल 2 सत्य

(स) केवल 1 सत्य (द) 1 और 2 असत्य **(अ)**

3. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. औद्योगिक अपशिष्ट जल का प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक शोधन किया जा सकता है।
2. वर्षा जल संचयन एवं अपशिष्ट जल का पुनर्चक्रण जल संरक्षण के प्रभावी उपाय हैं।
3. उद्योगों में ऊर्जा दक्ष मशीनों तथा साइलेंसर के प्रयोग से ध्वनि एवं ऊर्जा प्रदूषण कम किया जा सकता है।

सही उत्तर है–

(अ) केवल 1 और 2 (ब) केवल 2 और 3

(स) 1, 2 और 3 (द) केवल 1 और 3 **(स)**

रिक्तस्थान –

1. कागज, ..., ... एवं .... उद्योग रंग, अम्ल, लवण तथा भारी धातुओं से .... प्रदूषण फैलाते हैं।

उत्तर : रसायन, चमड़ा, इलेक्ट्रोप्लेटिंग, जल

7 राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ

परिवहन, संचार एवं व्यापार का परिचय

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. आधुनिक विश्व को 'एक बड़ा गाँव' बनाने में किसका सबसे अधिक योगदान रहा है?

(अ) कृषि
(ब) परिवहन एवं संचार
(स) सिंचाई
(द) खनन **(ब)**

2. निम्न में से कौन परिवहन, संचार और व्यापार के संबंध को सही दर्शाता है?

(अ) तीनों एक–दूसरे से असंबंधित हैं।
(ब) केवल परिवहन आवश्यक है।
(स) तीनों एक–दूसरे के पूरक हैं।
(द) केवल व्यापार आवश्यक है। **(स)**

रिक्तस्थान –

1. वस्तुओं एवं सेवाओं को .... स्थल से ....स्थल तक पहुँचाने के लिए .... की आवश्यकता होती है।

उत्तर : आपूर्ति, माँग, परिवहन

2. परिवहन के तीन प्रमुख प्रकार ...., ... तथा .... हैं।

उत्तर : स्थल, जल, वायु

3. परिवहन, ... तथा .... एक–दूसरे के .... हैं।

उत्तर : संचार, व्यापार, पूरक

4. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास से .... तथा .... के प्रभाव क्षेत्र में व्यापक वृद्धि हुई है।

उत्तर : परिवहन, व्यापार

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. परिवहन से क्या आशय है?

उत्तर : वस्तुओं एवं सेवाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने की प्रक्रिया को परिवहन कहते हैं।

2. परिवहन, संचार और व्यापार को एक–दूसरे का पूरक क्यों कहा जाता है?

उत्तर : क्योंकि व्यापार के लिए परिवहन तथा सूचना के आदान–प्रदान के लिए संचार आवश्यक है; तीनों मिलकर आर्थिक गतिविधियों को संचालित करते हैं।

3. भारत विश्व से किन साधनों के माध्यम से जुड़ा हुआ है?

उत्तर : रेल, जल परिवहन, वायु परिवहन, समाचार–पत्र, रेडियो, दूरदर्शन, सिनेमा तथा इंटरनेट के माध्यम से।

सड़क परिवहन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सीमा सड़क संगठन (BRO) की स्थापना कब की गई?

(अ) 1950 (ब) 1960
(स) 1970 (द) 1980 **(ब)**

2. स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना का संचालन किसके द्वारा किया जाता है?

(अ) भारतीय रेल
(ब) भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI)
(स) सीमा सड़क संगठन (BRO)
(द) नीति आयोग **(ब)**

3. "स्वर्णिम चतुर्भुज" योजना किस परिवहन से संबंधित है?

(मॉडल पेपर – 2026)

(अ) रेल परिवहन (ब) वायु परिवहन
(स) जल परिवहन (द) सड़क परिवहन **(द)**

4. निम्न में से भारत में प्रमुख परिवहन साधन कौन–सा है?

(मॉडल पेपर – 2025)

(अ) पाइपलाइन परिवहन
(ब) रेल परिवहन
(स) वायु परिवहन
(द) सड़क परिवहन **(द)**

रिक्तस्थान –

1. भारत विश्व का .... सबसे बड़ा सड़क जाल वाला देश है तथा इसका सड़क जाल लगभग .... लाख किमी. लंबा है।

उत्तर : दूसरा, 62.16

2. उत्तर–दक्षिण गलियारा .... से ....तथा पूर्व–पश्चिम गलियारा .... से ....तक जाता है।

उत्तर : श्रीनगर, कन्याकुमारी, सिलचर, पोरबंदर

3. राज्य की राजधानियों को ––––––––– से जोड़ने वाली सड़कें ––––––––– कहलाती हैं।

उत्तर : जिला मुख्यालयों, राज्य राजमार्ग

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण एवं रख–रखाव कौन करता है? *(मॉडल पेपर – 2026)*

उत्तर : राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) द्वारा।

2. सड़क परिवहन रेल परिवहन की अपेक्षा अधिक सुविधाजनक क्यों माना जाता है?

उत्तर : इसका निर्माण कम लागत में होता है तथा यह घर–घर सेवा उपलब्ध कराता है।

3. स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर : देश के प्रमुख महानगरों दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई व मुंबई के बीच दूरी एवं यात्रा समय को कम करना।

4. प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना का उद्देश्य लिखिए।

उत्तर : प्रत्येक गाँव को वर्षभर चलने योग्य पक्की सड़क से प्रमुख नगरों से जोड़ना।

5. सीमा सड़क संगठन (BRO) का महत्व बताइए।

उत्तर : यह सीमावर्ती एवं दुर्गम क्षेत्रों में सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण सड़कों का निर्माण एवं रख–रखाव करता है।

6. कच्ची और पक्की सड़क में एक अंतर लिखिए।

उत्तर : पक्की सड़कें सीमेंट, कंक्रीट या तारकोल से बनी होती हैं और वर्षभर उपयोगी रहती हैं, जबकि कच्ची सड़कें वर्षा ऋतु में प्रायः अनुपयोगी हो जाती हैं।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. स्वर्णिम चतुर्भुज महाराजमार्ग की व्याख्या कीजिए। *(RBSE – 2020)*

उत्तर : स्वर्णिम चतुर्भुज महामार्ग भारत की सबसे बड़ी राजमार्ग परियोजना है, जो दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता को चार एवं छह लेन वाले राजमार्गों द्वारा जोड़ती है। इसका उद्देश्य तेज़, सुरक्षित और सुगम सड़क परिवहन उपलब्ध कराना है।

रेल परिवहन एवं पाइपलाइन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निम्नलिखित में से कौन–सी रेल परिवहन की समस्या है?

(अ) बिना टिकट यात्रा
(ब) जंजीर खींचना
(स) रेल सम्पत्ति की चोरी
(द) उपर्युक्त सभी **(द)**

2. भारत में रेल परिवहन का प्रमुख उपयोग किसके लिए किया जाता है?

(अ) केवल यात्रियों के लिए
(ब) केवल माल ढुलाई के लिए
(स) यात्रियों एवं वस्तुओं दोनों के परिवहन के लिए
(द) केवल पर्यटन के लिए **(स)**

रिक्तस्थान –

1. भारत की पहली रेलगाड़ी .... में .... से .... के बीच चलाई गई थी।

उत्तर : 1853, मुंबई, ठाणे

2. भारतीय रेल को वर्तमान में .... रेल क्षेत्रों में विभाजित किया गया है तथा यह देश का सबसे बड़ा .... क्षेत्र का उपक्रम है।

उत्तर : 17, सार्वजनिक

3. उत्तरी मैदान में ...., ... तथा .... के कारण रेलमार्गों का विकास अधिक हुआ है।

उत्तर : समतल भूमि, सघन जनसंख्या, कृषि व संसाधनों

4. पाइपलाइन द्वारा ...., ... तथा .... का परिवहन किया जाता है।

उत्तर : कच्चा तेल, पेट्रोलियम उत्पाद, प्राकृतिक गैस

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारतीय रेलवे को कितने खण्डों में बाँटा गया है ? *(मॉडल पेपर – 2025)*

उत्तर : 17।

2. हिमालयी क्षेत्र में रेलमार्गों का विकास कठिन क्यों है?

उत्तर : ऊँचे पर्वत, दुर्गम स्थलाकृति, विरल जनसंख्या तथा आर्थिक कठिनाइयों के कारण।

3. पाइपलाइन परिवहन का एक प्रमुख लाभ लिखिए।

उत्तर : इसमें परिवहन के दौरान हानि एवं विलंब लगभग नहीं के बराबर होता है तथा संचालन लागत कम होती है।

4. **हजीरा–विजयपुर–जगदीशपुर (HVJ) पाइपलाइन का महत्व लिखिए।**

उत्तर : यह प्रमुख गैस पाइपलाइन है, जो गैस क्षेत्रों को उर्वरक कारखानों एवं विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों से जोड़ती है।

5. **रेल परिवहन की अपेक्षा सड़क परिवहन की बढ़ती महत्ता के दो कारण लिखिए।** *(RBSE – 2023)*

उत्तर : सड़क परिवहन घर–घर (Door-to-door) तक पहुँच की सुविधा प्रदान करता है।

यह कम दूरी पर शीघ्र, सस्ता तथा लचीला परिवहन उपलब्ध कराता है।

जल परिवहन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. **भारत का लगभग 95% विदेशी व्यापार किस माध्यम से होता है?**

(अ) रेलमार्ग (ब) सड़कमार्ग
(स) समुद्री मार्ग (द) वायुमार्ग **(स)**

2. **ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित राष्ट्रीय जलमार्ग कौन–सा है?**

(अ) राष्ट्रीय जलमार्ग–1
(ब) राष्ट्रीय जलमार्ग–2
(स) राष्ट्रीय जलमार्ग–3
(द) राष्ट्रीय जलमार्ग–4 **(ब)**

3. **राष्ट्रीय जलमार्ग–1 किन दो स्थानों के बीच है?**

(अ) सदिया–धुबरी (ब) हल्दिया–प्रयागराज
(स) कोट्टापुरम–कोल्लम
(द) काकीनाडा–पुदुचेरी **(ब)**

7. **भारत की समुद्री तट रेखा की लम्बाई है?** *(RBSE – 2025)*

(अ) 7516.6 किमी. (ब) 7761.6 किमी.
(स) 7156.6 किमी. (द) 7615.6 किमी. **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. जल परिवहन परिवहन का सबसे .... साधन है तथा यह .... एवं .... वस्तुओं के परिवहन के लिए उपयुक्त है।

उत्तर : सस्ता, भारी, स्थूलकाय

2. भारत में अंतर्देशीय जलमार्गों की कुल लंबाई लगभग .... किमी. है तथा इसमें केवल .... किमी. मार्ग ही मशीनीकृत नौकाओं द्वारा तय किया जाता हैं।

उत्तर : 14500, 5685

3. राष्ट्रीय जलमार्ग–1 .... से .... तथा राष्ट्रीय जलमार्ग–2 .... से .... तक है।

उत्तर : हल्दिया, प्रयागराज, सदिया, धुबरी

4. भारत का सबसे बड़ा प्राकृतिक बंदरगाह .... तथा सबसे प्राचीन कृत्रिम बंदरगाह .... है।

उत्तर : मुंबई, चेन्नई

5. कोलकाता एक .... बंदरगाह है तथा बढ़ते व्यापार को कम करने के लिए .... सहायक बंदरगाह विकसित किया गया।

उत्तर : नदीय, हल्दिया

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. **जल परिवहन को सबसे सस्ता परिवहन साधन क्यों माना जाता है?**

उत्तर : क्योंकि इसमें भारी एवं स्थूलकाय वस्तुओं का कम लागत में परिवहन किया जा सकता है तथा यह ऊर्जा–कुशल और पर्यावरण अनुकूल भी है।

2. **दीनदयाल (कांडला) बंदरगाह का विकास क्यों किया गया?**

उत्तर : देश के विभाजन के बाद कराची बंदरगाह के पाकिस्तान में चले जाने से उसकी कमी को पूरा करने तथा मुंबई बंदरगाह का भार कम करने के लिए।

3. **राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या–3 का मार्ग तथा इसकी कुल लंबाई लिखिए।**

उत्तर : राष्ट्रीय जलमार्ग–3 केरल में पश्चिमी तटीय नहर (कोट्टापुरम से कोल्लम तक), उद्योगमंडल तथा चम्पकारा नहरों से मिलकर बना है। इसकी कुल लंबाई 205 किमी. है।

4. **राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या–4 किन–किन नदियों एवं नहरों से होकर गुजरता है? इसकी कुल लंबाई भी लिखिए।**

उत्तर : राष्ट्रीय जलमार्ग–4 काकीनाडा – पुदुचेरी नहर, गोदावरी नदी तथा कृष्णा नदी के विस्तृत भाग से होकर गुजरता है। इसकी कुल लंबाई 1078 किमी. है।

5. **राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या–5 किन–किन नदी एवं नहर तंत्रों से मिलकर बना है? इसकी कुल लंबाई लिखिए।**

उत्तर : राष्ट्रीय जलमार्ग–5 महानदी डेल्टा, ब्राह्मणी नदी तथा पूर्वी तटीय नहर से मिलकर बना है। इसकी कुल लंबाई 588 किमी. है।

मिशन ज्ञान
पढ़ो अब चाहें, जहाँ चाहें जैसे चाहें!

वायु परिवहन एवं संचार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–**
   1. **बड़े शहरों में डाक वितरण को शीघ्र बनाने के लिए छह डाक मार्ग बनाए गए हैं।**
   2. **इनमें राजधानी मार्ग, मेट्रो चौनल, ग्रीन चौनल, बिजनेस चौनल, भारी चौनल तथा दस्तावेज़ चौनल शामिल हैं।**

   (अ) केवल 1 सही है।
   (ब) केवल 2 सही है।
   (स) 1 और 2 दोनों सही हैं।
   (द) 1 और 2 दोनों गलत हैं। **(स)**

2. **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–**
   1. **संचार सेवाओं ने लंबी दूरी तक संदेश भेजना सरल बना दिया है।**
   2. **आधुनिक संचार का विकास सूचना एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के विकास से संभव हुआ है।**

   (अ) केवल 1 सही है।
   (ब) केवल 2 सही है।
   (स) 1 और 2 दोनों सही हैं।
   (द) 1 और 2 दोनों गलत हैं। **(स)**

3. **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–**
   1. **भारत में समाचार–पत्र लगभग 100 भाषाओं एवं बोलियों में प्रकाशित होते हैं।**
   2. **भारत में सर्वाधिक समाचार–पत्र हिन्दी भाषा में प्रकाशित होते हैं।**

   (अ) केवल 1 सही है।
   (ब) केवल 2 सही है।
   (स) 1 और 2 दोनों सही हैं।
   (द) 1 और 2 दोनों गलत हैं। **(स)**

4. **दूरसंचार का सबसे आधुनिक माध्यम है–** *(RBSE – 2025)*

   (अ) टेलीग्राफ (ब) ई–मेल
   (स) टेलीफोन (द) फैक्स **(ब)**

5. **वायु परिवहन का राष्ट्रीयकरण किया गया–** *(RBSE – 2024)*

   (अ) 1983 (ब) 1973
   (स) 1963 (द) 1953 **(द)**

रिक्तस्थान –

1. वायु परिवहन परिवहन का सबसे ...., ... तथा .... साधन है।

उत्तर : तीव्र, आरामदायक, प्रतिष्ठित

2. प्रथम श्रेणी की डाक .... मार्ग से तथा द्वितीय श्रेणी की डाक .... एवं .... परिवहन द्वारा भेजी जाती है।

उत्तर : वायु, स्थल, जल

3. उड़ान (UDAN) योजना का उद्देश्य .... संपर्क को बढ़ावा देना तथा .... नागरिकों के लिए हवाई यात्रा को सुलभ बनाना है।

उत्तर : क्षेत्रीय, आम

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. **जनसंचार के प्रासंगिक माध्यम कौन–कौन से हैं?**

उत्तर : जनसंचार के प्रमुख एवं प्रासंगिक माध्यम हैं– रेडियो, दूरदर्शन (टेलीविजन), समाचार–पत्र, पत्रिकाएँ, सिनेमा तथा इंटरनेट।

2. **उत्तर–पूर्वी राज्यों में वायु परिवहन का विशेष महत्व क्यों है?**

उत्तर : क्योंकि वहाँ ऊँचे पर्वत, घने वन, बड़ी नदियाँ तथा दुर्गम स्थलाकृति होने के कारण वायु परिवहन अधिक उपयोगी है।

3. **डिजिटल भारत कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य क्या है?**

उत्तर : भारत को ज्ञान आधारित डिजिटल समाज एवं डिजिटल अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करना।

4. **प्रथम श्रेणी एवं द्वितीय श्रेणी की डाक में क्या अंतर है?**

उत्तर : प्रथम श्रेणी की डाक वायु मार्ग से भेजी जाती है, जबकि द्वितीय श्रेणी की डाक का परिवहन मुख्यतः स्थल एवं जलमार्ग से किया जाता है।

5. **जनसंचार के किन्हीं चार प्रमुख साधनों के नाम लिखिए।**

उत्तर : रेडियो, दूरदर्शन, समाचार–पत्र तथा सिनेमा।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं पर्यटन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. **निम्नलिखित में से पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए प्रारम्भ की गई योजना कौन–सी है?**

   (अ) स्वदेश दर्शन 2.0 (ब) प्रसाद योजना
   (स) पर्यटन मित्र (द) उपर्युक्त सभी **(द)**

पढ़ें अब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. **किसी देश का अंतरराष्ट्रीय व्यापार उसकी आर्थिक समृद्धि का सूचक माना जाता है।**
2. **अंतरराष्ट्रीय व्यापार को राष्ट्र का आर्थिक बैरोमीटर भी कहा जाता है।**

(अ) केवल 1 सही है।
(ब) केवल 2 सही है।
(स) 1 और 2 दोनों सही हैं।
(द) 1 और 2 दोनों गलत हैं। **(स)**

रिक्तस्थान –

1. दो देशों के बीच वस्तुओं का आदान–प्रदान .... कहलाता है, जबकि इसका प्रमुख आधार .... एवं .... हैं।

उत्तर : अंतरराष्ट्रीय व्यापार, आयात, निर्यात

2. यदि .... का मूल्य .... से अधिक हो तो उसे .... व्यापार संतुलन कहते हैं।

उत्तर : निर्यात, आयात, अनुकूल

3. भारत के प्रमुख निर्यातों में ...., ... तथा .... उत्पाद शामिल हैं।

उत्तर : रत्न एवं आभूषण, रसायन, कृषि

4. भारत के प्रमुख आयातों में ...., ... तथा .... शामिल हैं।

उत्तर : कच्चा पेट्रोलियम, मशीनें, आधार धातुएँ

5. भारत .... महाशक्ति के रूप में उभरा है तथा .... के माध्यम से विदेशी मुद्रा अर्जित कर रहा है।

उत्तर : सॉफ्टवेयर, सूचना प्रौद्योगिकी

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. दो देशों के मध्य वस्तुओं के व्यापार को .... कहते हैं। *(मॉडल पेपर – 2025)*

उत्तर : अंतरराष्ट्रीय व्यापार

1. अंतरराष्ट्रीय व्यापार को राष्ट्र का आर्थिक बैरोमीटर क्यों कहा जाता है?

उत्तर : क्योंकि यह किसी देश की आर्थिक प्रगति एवं समृद्धि का प्रमुख सूचक होता है।

2. पर्यटन से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को क्या लाभ होता है?

उत्तर : पर्यटन रोजगार, विदेशी मुद्रा अर्जन, स्थानीय हस्तकला एवं सांस्कृतिक उद्योगों को बढ़ावा देकर अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करता है।

3. विदेशी पर्यटक भारत में किस प्रकार के पर्यटन के लिए आते हैं?

उत्तर : विदेशी पर्यटक भारत में विरासत पर्यटन, पारिस्थितिकी (ईको) पर्यटन, रोमांचकारी पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन तथा व्यावसायिक पर्यटन के लिए आते हैं।

लोकतांत्रिक राजनीति–2 (राजनीति विज्ञान)

1 सत्ता की साझेदारी

बेल्जियम और श्रीलंका

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निम्न में से किस देश की सीमा बेल्जियम से लगती है ?

(RBSE – 2025)

(अ) फ्रान्स (ब) ब्रिटेन
(स) स्पेन (द) इटली **(अ)**

2. श्रीलंका में रहने वाले 'हिंदुस्तानी तमिल' किन्हें कहा गया है?

(अ) जो हाल ही में भारत से व्यापार के लिए श्रीलंका गए हैं।
(ब) जो औपनिवेशिक शासनकाल में बागानों में काम करने के लिए भारत से लाए गए लोगों की संतान हैं।
(स) जो केवल उत्तर और पूर्वी प्रांतों के मूल निवासी हैं।
(द) जो बौद्ध धर्म का पालन करने वाले तमिल हैं। **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. श्रीलंका में सिंहली भाषी अधिकांश लोग .... (धर्म) है।

(RBSE – 2025)

उत्तर : बौद्ध (थेरवाद बौद्ध)

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. बेल्जियम किस राज्य से क्षेत्रफल में छोटा है?

उत्तर : हरियाणा राज्य से।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. श्रीलंका में सिंहली और तमिल धर्म के आधार पर किन–किन संप्रदायों से जुड़े हैं?

उत्तर : 1. अधिकतर सिंहली–भाषी लोग बौद्ध धर्म को मानते हैं।
2. तमिल–भाषी लोगों में कुछ हिंदू हैं।
3. और कुछ मुसलमान हैं।

2. बेल्जियम की जातीय बनावट कैसी है?

उत्तर : 1. 59% लोग फ्लेमिश इलाके में रहते हैं और डच बोलते हैं।
2. 40% लोग वेलोनिया क्षेत्र में रहते हैं और फ्रेंच बोलते हैं।
3. 1% लोग जर्मन बोलते हैं।

Trick "59 डच–फ्ले, वे–40 फ्रेंच, 1 जर्मन।"

3. ब्रुसेल्स में भाषाई स्थिति कैसी है?

उत्तर : 1. ब्रुसेल्स बेल्जियम की राजधानी है।
2. यहाँ 80% लोग फ्रेंच बोलते हैं।
3. 20% लोग डच भाषा बोलते हैं।

4. बेल्जियम में डच–भाषी लोगों में नाराज़गी क्यों थी?

उत्तर : 1. फ्रेंच–भाषी लोग अधिक समृद्ध और ताकतवर थे।
2. डच–भाषी लोगों को आर्थिक विकास और शिक्षा का लाभ बहुत बाद में मिला।
3. इस असमानता के कारण डच–भाषी लोगों में नाराज़गी थी।

5. श्रीलंका की सामाजिक संरचना कैसी है?

उत्तर : 1. सबसे बड़ा समूह सिंहलियों का है।
2. सिंहलियों की आबादी 74% है।
3. तमिलों की आबादी 18% है।

Trick सिं–74, तमि–18

सिं = सिंहली 74 = 74%
तमि = तमिल 18 = 18%

6. जातीय या एथनीक समूह का क्या अर्थ है? अथवा 'एथनीक' या 'जातीय' सामाजिक विभाजन की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर : 1. यह साझी संस्कृति पर आधारित सामाजिक विभाजन है।
2. समूह के सदस्य समान पूर्वजों से उत्पत्ति मानते हैं।
3. ऐसे समूह के सदस्यों का धर्म या राष्ट्रीयता एक होना जरूरी नहीं है।

श्रीलंका में बहुसंख्यकवाद

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. श्रीलंका स्वतन्त्र राष्ट्र बना–

(RBSE – 2022, 2026, Model Paper 2025)

मिशन ज्ञान पढ़ः जब चाहे, जहाँ चाहें

(अ) 1946 (ब) 1947
(स) 1948 (द) 1949 **(स)**

2. सिंहली समुदाय के नेताओं ने किस आधार पर शासन पर प्रभुत्व जमाना चाहा?
(अ) आर्थिक शक्ति (ब) सैन्य शक्ति
(स) बहुसंख्या (द) विदेशी सहायता **(स)**

3. श्रीलंकाई तमिलों ने 1980 के दशक तक उत्तर–पूर्वी श्रीलंका में किस चीज़ को बनाने की माँग को लेकर अनेक राजनीतिक संगठन बनाए?
(अ) स्वतंत्र सिंहली राष्ट्र
(ब) नया विश्वविद्यालय
(स) स्वतंत्र तमिल ईलम (सरकार)
(द) नया धार्मिक केंद्र **(स)**

4. सिंहली समुदाय का सम्बन्ध किस देश से है? *(RBSE – 2026, 2024)*
(अ) बेल्जियम (ब) भूटान
(स) श्रीलंका (द) नेपाल **(स)**

रिक्तस्थान –

1. विश्वविद्यालयों और सरकारी नौकरियों में .... को प्राथमिकता दी गई।

उत्तर : सिंहलियों

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. श्रीलंका में अधिकांश आबादी दो जातीय समूहों में बँटी हुई है। इन समूहों के नाम लिखिये। *(RBSE – 2026)*

उत्तर : 1. सिंहली, 2. तमिल

2. स्वतंत्र तमिल राज्य की मांग का नाम क्या था?

उत्तर : तमिल ईलम।

3. बहुसंख्यकवाद से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : 1. यह एक ऐसी मान्यता है कि अगर कोई समुदाय बहुसंख्यक है तो वह अपने मनचाहे ढंग से देश का शासन कर सकता है।
2. इसके तहत वह अल्पसंख्यक समुदाय की ज़रूरतों या इच्छाओं की अवहेलना कर सकता है।

4. श्रीलंका में को राजकीय धर्म के रूप में अंगीकार किया गया ? *(RBSE – 2024)*

उत्तर : बौद्ध धर्म को।

5. श्रीलंका में 1956 में किस भाषा को राजभाषा घोषित किया गया ? *(RBSE – 2024)*

उत्तर : सिंहली को एकमात्र राजभाषा बनाया गया।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. 1956 के कानून के प्रमुख प्रभाव क्या थे?

उत्तर : 1. सिंहली को एकमात्र राजभाषा बनाया गया।
2. तमिल भाषा को महत्व नहीं दिया गया।

2. श्रीलंकाई तमिलों की प्रमुख मांगें क्या थीं?

उत्तर : 1. तमिल को राजभाषा बनाया जाए।
2. क्षेत्रीय स्वायत्तता दी जाए।
3. शिक्षा और रोजगार में समान अवसर मिलें।

Trick **भा–स्व–समा**

भा = भाषा (तमिल को राजभाषा)
स्व = स्वायत्तता (क्षेत्रीय स्वायत्तता)
समा = समान अवसर (शिक्षा और रोजगार)

3. श्रीलंका में गृहयुद्ध के क्या परिणाम हुए?

उत्तर : 1. हजारों लोगों की मृत्यु हुई।
2. अनेक परिवार शरणार्थी बन गए।
3. सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन में समस्याएँ उत्पन्न हुईं।

4. बहुसंख्यकवाद क्या है?

उत्तर : 1. बहुसंख्यक समुदाय की प्रभुता की मान्यता है।
2. इसमें बहुसंख्यक समुदाय अपनी इच्छा से शासन करता है।

5. "श्रीलंका में सरकार की नीतियों के कारण सिंहली व तमिल समुदाय में सम्बन्ध खराब हुए।" ऐसी कोई दो नीतियाँ संक्षेप में स्पष्ट कीजिये। *(RBSE – 2025)*

उत्तर : 1. भाषा और संस्कृति की उपेक्षा हुई।
2. राजनीतिक अधिकारों और अवसरों में असमानता महसूस की गई।

बेल्जियम की समझदारी

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. बेल्जियम में केंद्रीय सरकार की अनेक शक्तियाँ किसे सौंप दी गई हैं?
(अ) सामुदायिक सरकारों को
(ब) क्षेत्रीय सरकारों को
(स) नगरपालिकाओं को
(द) संसद को **(ब)**

2. सामुदायिक सरकार को किन विषयों पर निर्णय लेने का अधिकार है?
(अ) रक्षा और विदेश नीति
(ब) संस्कृति, शिक्षा और भाषा
(स) न्यायपालिका
(द) कराधान **(ब)**

मिशन ज्ञान
पढ़ो जब चाहे, जहाँ चाहे, जैसे चाहे!

3. बेल्जियम के नेताओं का मानना था कि देश की एकता किससे संभव है?

(अ) एक भाषा लागू करने से

(ब) विभिन्न समुदायों और क्षेत्रों की भावनाओं का आदर करने से

(स) सेना की शक्ति बढ़ाने से

(द) सभी शक्तियाँ केंद्र में रखने से **(ब)**

4. बेल्जियम के नेताओं ने 1970 और 1993 के बीच अपने संविधान में कितनी बार संशोधन किए?

(अ) दो बार (ब) तीन बार

(स) चार बार (द) पाँच बार **(स)**

5. सामुदायिक सरकार की व्यवस्था किस देश में की गई?

(RBSE – 2024)

(अ) भारत (ब) बेल्जियम

(स) श्रीलंका (द) जर्मनी **(ब)**

6. किस देश में सत्ता का बंटवारा सामाजिक समूहों में होने पर 'सामुदायिक सरकार' दिखाई देती है?

(RBSE – 2023)

(अ) श्रीलंका (ब) भारत

(स) बेल्जियम (द) ब्रिटन **(स)**

7. बेल्जियम की राजधानी का नाम है–

(RBSE – 2022, 2024 & 2026)

(अ) कोलम्बो (ब) बैंकाक

(स) नेमूर (द) ब्रुसेल्स **(द)**

रिक्तस्थान –

1. यूरोपीय संघ का मुख्यालय .... में स्थापित किया गया।

उत्तर : ब्रुसेल्स

2. बेल्जियम के नेताओं ने क्षेत्रीय अंतरों और सांस्कृतिक .... को स्वीकार किया।

उत्तर : विविधता

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. बेल्जियम की सामुदायिक सरकार का चुनाव कौन लोग करते हैं?

उत्तर : इस सरकार का चुनाव एक ही भाषा (डच, फ्रेंच और जर्मन) बोलने वाले लोग करते हैं, चाहे वे जहाँ भी रहते हों।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. सत्ता की साझेदारी के दृष्टिकोण से बेल्जियम मॉडल क्या है?

उत्तर : क्षेत्रीय सरकार –

1. केंद्रीय सरकार की अनेक शक्तियाँ क्षेत्रीय सरकारों को सौंपी गईं।
2. क्षेत्रीय सरकारें केंद्रीय सरकार के अधीन नहीं हैं।
3. उन्हें स्वतंत्र रूप से कार्य करने का अधिकार दिया गया।

सामुदायिक सरकार –

1. यह तीसरे स्तर की सरकार है।
3. इसका चुनाव एक ही भाषा बोलने वाले लोग करते हैं।
3. इसे संस्कृति, शिक्षा और भाषा से जुड़े मामलों पर निर्णय लेने का अधिकार है।

Trick **श–स्व–का**

श = शक्तियों का हस्तांतरण

स्व = स्वतंत्र कार्य

का = केंद्र के अधीन नहीं

"शक्ति मिली, स्वतंत्रता मिली, केंद्र से अलग भूमिका मिली।"

2. बेल्जियम और श्रीलंका की नीतियों में मुख्य अंतर क्या था?

उत्तर : 1. बेल्जियम ने सत्ता में साझेदारी का मार्ग अपनाया।

2. विभिन्न समुदायों की भावनाओं का सम्मान किया गया।

सत्ता की साझेदारी क्यों ज़रूरी है?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सामाजिक टकराव आगे बढ़कर किस रूप में बदल सकता है?

(अ) सांस्कृतिक विकास

(ब) आर्थिक समृद्धि

(स) हिंसा और राजनीतिक अस्थिरता

(द) शिक्षा सुधार **(स)**

2. वैध सरकार किसे माना गया है?

(अ) जिसमें केवल बहुमत का शासन हो

(ब) जिसमें सभी समूह भागीदारी के माध्यम से जुड़े हों

(स) जिसमें सेना का नियंत्रण हो

(द) जिसमें केवल एक दल शासन करे **(ब)**

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. सत्ता की साझेदारी को क्या कहा गया है?

उत्तर : लोकतंत्र की आत्मा

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. सत्ता की साझेदारी क्यों जरूरी है? दो कारण लिखिए। *(RBSE – 2023 & 2025)*

उत्तर : राजनीतिक व्यवस्था के स्थायित्व –

1. विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच टकराव का अंदेसा कम हो जाता है। चूँकि सामाजिक टकराव आगे बढ़कर अक्सर हिंसा और राजनीतिक अस्थिरता का रूप ले लेता है इसलिए सत्ता में हिस्सा दे देना राजनीतिक व्यवस्था के स्थायित्व के लिए अच्छा है।
2. सत्ता की साझेदारी दरअसल लोकतंत्र की आत्मा है।

2. युक्तिपरक और नैतिक तर्कों में अंतर बताइए।

उत्तर : 1. युक्तिपरक तर्क लाभकारी परिणामों पर जोर देता है।
2. नैतिक तर्क सत्ता–बँटवारे के मूल महत्त्व पर बल देता है।
3. दोनों सत्ता–साझेदारी के समर्थन में अलग–अलग आधार प्रस्तुत करते हैं।

सत्ता की साझेदारी के रूप

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. लोकतंत्र का एक बुनियादी सिद्धांत क्या है?
(अ) सरकार ही शक्ति का स्रोत है
(ब) न्यायपालिका ही शक्ति का स्रोत है
(स) जनता ही सारी राजनीतिक शक्ति का स्रोत है
(द) संसद ही शक्ति का स्रोत है **(स)**

2. निम्न में से एक शक्ति के ऊर्ध्वाधर वितरण का उदाहरण है– *(RBSE – 2026)*
(अ) कार्यपालिका (ब) न्यायपालिका
(स) विधायिका (द) सामुदायिक सरकार **(द)**

3. आरक्षित चुनाव क्षेत्र व्यवस्था का उद्देश्य क्या है?
(अ) चुनाव टालना
(ब) केवल महिलाओं को मतदान देना
(स) विभिन्न सामाजिक समूहों को हिस्सेदारी देना
(द) न्यायपालिका को मजबूत करना **(स)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. दबाव समूह और हित–समूह शासन को कैसे प्रभावित करते हैं?

उत्तर : 1. सरकार पर नीतिगत दबाव बनाते हैं।
2. समितियों में भागीदारी करते हैं।
3. अपने सदस्य वर्ग के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

Trick नी–सम–हि

नी = नीतिगत दबाव
सम = समितियों में भागीदारी
हि = हितों का प्रतिनिधित्व

2. सत्ता की साझेदारी के चार प्रमुख रूप लिखिए।

अथवा

आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में सत्ता की साझेदारी के अलग–अलग तरीके क्या हैं? इनमें से प्रत्येक का एक उदाहरण भी दें।

उत्तर : 1. शासन के विभिन्न अंगों के बीच।
2. विभिन्न स्तरों की सरकारों के बीच।
3. विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच।
4. राजनीतिक दलों, दबाव समूहों और आंदोलनों के माध्यम से।

3. शासन के विभिन्न अंगों के बीच सत्ता के क्षैतिज वितरण की क्या विशेषताएँ हैं और इसे नियंत्रण तथा संतुलन की व्यवस्था क्यों कहते हैं?

उत्तर : 1. इसमें सरकार के विभिन्न अंग (विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका) एक ही स्तर पर रहकर अपनी–अपनी शक्ति का उपयोग करते हैं।
2. इसके तहत कोई भी एक अंग सत्ता का असीमित उपयोग नहीं कर सकता क्योंकि हर अंग दूसरे पर अंकुश रखता है।
3. उदाहरण के लिए, कार्यपालिका सत्ता का उपयोग करती है पर वह संसद के अधीन होती है, और न्यायपालिका की नियुक्ति कार्यपालिका करती है पर न्यायपालिका ही कार्यपालिका और विधायिका पर अंकुश रखती है।

4. सत्ता की साझेदारी में 'नियन्त्रण एवं सन्तुलन की व्यवस्था' को संक्षेप में स्पष्ट कीजिये– *(RBSE – 2022)*

उत्तर : 1. जनता राजनीतिक शक्ति का स्रोत होती है।
2. विभिन्न समूहों के विचारों को सम्मान मिलता है।
3. सार्वजनिक नीतियों में सभी की भागीदारी होती है
4. प्रत्येक अंग दूसरे पर नियंत्रण रखता है।
5. सत्ता का संतुलन बना रहता है।
6. किसी एक संस्था का प्रभुत्व नहीं होता।

मिशन ज्ञान
पढ़ें अब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

2 संघवाद

संघवाद क्या है?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. संघीय शासन व्यवस्था में सर्वोच्च सत्ता किसके बीच बँटी होती है?

(अ) राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के बीच
(ब) संसद और न्यायपालिका के बीच
(स) केंद्रीय प्राधिकार और उसकी विभिन्न आनुषंगिक इकाइयों के बीच
(द) जनता और सरकार के बीच **(स)**

2. एकात्मक शासन व्यवस्था में केंद्रीय सरकार क्या कर सकती है?

(अ) राज्य सरकार को आदेश नहीं दे सकती
(ब) केवल न्यायालय को आदेश दे सकती है
(स) प्रांतीय या स्थानीय सरकारों को आदेश दे सकती है
(द) किसी को भी आदेश नहीं दे सकती **(स)**

3. विभिन्न स्तरों की सरकारों के अधिकार–क्षेत्र किसमें स्पष्ट रूप से वर्णित होते हैं?

(अ) संसद में
(ब) न्यायालय में
(स) संविधान में
(द) चुनाव आयोग में **(स)**

4. संघीय व्यवस्था में संविधान के मौलिक प्रावधानों में बदलाव कैसे किया जा सकता है?

(अ) केंद्र सरकार अकेले कर सकती है
(ब) राज्य सरकार अकेले कर सकती है
(स) न्यायालय कर सकता है
(द) दोनों स्तर की सरकारों की सहमति से **(द)**

5. संघीय शासन व्यवस्था का एक उद्देश्य क्या है?

(अ) केवल क्षेत्रीय विविधताओं को समाप्त करना
(ब) केवल राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना
(स) देश की एकता की सुरक्षा और क्षेत्रीय विविधताओं का सम्मान करना
(द) राज्यों की शक्तियों को समाप्त करना **(स)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. संघीय शासन व्यवस्था की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर : 1. सर्वोच्च सत्ता केंद्र और विभिन्न इकाइयों के बीच बँटी होती है।
2. सरकार के दो या अधिक स्तर होते हैं।
3. प्रत्येक स्तर का अपना अधिकार–क्षेत्र होता है।
4. अधिकार संविधान में स्पष्ट रूप से वर्णित होते हैं।
5. संविधान के मौलिक प्रावधान दोनों स्तरों की सहमति से ही बदले जा सकते हैं।

संघीय शासन व्यवस्था के दोहरे उद्देश्य –

i. देश की एकता की सुरक्षा करना और उसे बढ़ावा देना।
ii. क्षेत्रीय विविधताओं का सम्मान करना।

Trick

"संघ का 5S Formula" ☆
"संघ में 5S से सत्ता सुरक्षित रहती है।"

S1 — सत्ता का बँटवारा → केंद्र और इकाइयों के बीच सर्वोच्च सत्ता विभाजित।
S2 — स्तरों की सरकार → दो या अधिक स्तर की सरकार।
S3 — सीमा (अधिकार–क्षेत्र) → हर स्तर का अपना क्षेत्र और अधिकार।
S4 — संविधान सुरक्षा → अधिकार संविधान में लिखे होते हैं।
S5 — सहमति से संशोधन → मौलिक प्रावधान दोनों की सहमति से बदलते हैं।

2. भारत और बेल्जियम की संघीय व्यवस्था में समानता और अंतर बताइए।

उत्तर : समानता–

1. भारत और बेल्जियम दोनों में संघीय शासन व्यवस्था है।
2. दोनों देशों में केंद्र और राज्य/प्रांतीय सरकारों के बीच सत्ता का बँटवारा किया गया है।

अंतर–

1. बेल्जियम में 1993 में संवैधानिक बदलावों के बाद प्रांतीय सरकारों को संवैधानिक अधिकार देकर एकात्मक शासन से संघीय शासन अपनाया गया।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

2. भारत में संविधान ने आरंभ से ही केंद्र और राज्य सरकारों के बीच शक्तियों का बँटवारा किया था।

Trick

"1993 की बेल, संविधान का भारत" OR "बेल्जियम की बेल 1993 में, भारत की नींव संविधान में।"

दोनों संघीय, दोनों में सत्ता साझी; बेल्जियम 1993 में बदला, भारत संविधान से बना।
बेल = बेल्जियम
बेल्जियम की घंटी 1993 में बजी, तब संघीय बना।
भारत = संविधान
संविधान ने शुरुआत से संघीय बनाया।
"बेल्जियम की बेल 1993 में, भारत की नींव संविधान में।"

भारत में संघीय व्यवस्था

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. संघ सूची के विषयों पर कानून बनाने का अधिकार किसे है?
(अ) राज्य सरकार को
(ब) पंचायतों को
(स) केंद्र सरकार को
(द) केंद्र और राज्य दोनों को **(स)**

2. विवाह, गोद लेना और उत्तराधिकार जैसे विषय संघीय व्यवस्था की किस सूची में आते है – *(Model Paper – 2026)*
(अ) संघ सूची (ब) राज्य सूची
(स) समवर्ती सूची (द) अवशिष्ट विषय **(स)**

3. निम्नलिखित में से कौन राज्य सूची का विषय है?
(अ) विदेशी मामले (ब) बैंकिंग
(स) पुलिस (द) मुद्रा **(स)**

4. निम्नांकित में से संघ सूची का विषय नहीं है– *(Model Paper – 2025)*
(अ) राष्ट्रीय सुरक्षा (ब) विदेशी मामले
(स) बैंकिंग (द) शिक्षा **(द)**

5. केंद्र और राज्य के कानूनों में टकराव होने पर कौन–सा कानून मान्य होगा?
(अ) राज्य सरकार का कानून
(ब) पंचायत का कानून
(स) केंद्र सरकार का कानून
(द) दोनों अमान्य हो जाएंगे **(स)**

6. कंप्यूटर सॉफ्टवेयर जैसे अवशिष्ट विषय किसके अधिकार क्षेत्र में आते हैं?
(अ) राज्य सरकार (ब) केंद्र सरकार
(स) पंचायत (द) नगरपालिका **(ब)**

7. अनुच्छेद 371 के तहत विशेष शक्तियाँ किन राज्यों को प्राप्त हैं?
(अ) पंजाब और हरियाणा
(ब) बिहार और झारखंड
(स) असम, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश और मिज़ोरम
(द) गुजरात और महाराष्ट्र **(स)**

8. संविधान में शक्तियों के बँटवारे में बदलाव के लिए संसद के दोनों सदनों में कितने बहुमत की आवश्यकता होती है?
(अ) साधारण बहुमत
(ब) आधा बहुमत
(स) दो–तिहाई बहुमत
(द) तीन–चौथाई बहुमत **(स)**

9. शक्तियों के बँटवारे से जुड़े विवादों का निर्णय कौन करता है?
(अ) चुनाव आयोग
(ब) संसद
(स) उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय
(द) राज्यपाल **(स)**

10. भारतीय संविधान में पुलिस किस सूची के अन्तर्गत है? *(RBSE – 2025)*
(अ) संघ सूची (ब) राज्य सूची
(स) समवर्ती सूची (द) अवशिष्ट विषय **(ब)**

11. भारतीय संविधान में कम्प्यूटर सॉफ़्टवेयर निम्न में से किस विकल्प में आता है? *(RBSE – 2024)*
(अ) संघ सूची (ब) राज्य सूची
(स) समवर्ती सूची (द) अवशिष्ट विषय (बाकी बचे) **(द)**

12. भारत में संघ सूची, राज्य सूची तथा समवर्ती सूची में क्रमशः कितने विषय हैं? *(RBSE – 2022)*
(अ) 97, 66, 47 (ब) 66, 97, 47
(स) 47, 66, 97 (द) 97, 47, 66 **(अ)**

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. समवर्ती सूची के विषयों पर कानून बनाने का अधिकार किनके पास होता है?
उत्तर : केंद्र सरकार और राज्य सरकार दोनों के पास।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत में संघीय व्यवस्था के विविध स्तर बताते हुए इनमें शक्ति वितरण की सूचियों की विवेचना कीजिये। *(RBSE – 2023)*

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

अथवा

भारत में संघीय व्यवस्था की समीक्षा कीजिए।

(Model Paper – 2025)

उत्तर : 1. **संघ सूची –**

- इसमें राष्ट्रीय महत्व के विषय शामिल हैं।
- प्रतिरक्षा, विदेशी मामले, बैंकिंग, संचार और मुद्रा इसके उदाहरण हैं।
- इन विषयों पर कानून बनाने का अधिकार केवल केंद्र सरकार को है।

2. **राज्य सूची –**

- इसमें प्रांतीय और स्थानीय महत्व के विषय शामिल हैं।
- पुलिस, व्यापार, वाणिज्य, कृषि और सिंचाई इसके उदाहरण हैं।
- इन विषयों पर केवल राज्य सरकार कानून बना सकती है।

3. **समवर्ती सूची –**

- इसमें ऐसे विषय शामिल होते हैं जिनमें केंद्र और राज्य दोनों की रुचि होती है।
- शिक्षा, वन, विवाह, गोद लेना और उत्तराधिकार इसके उदाहरण हैं।
- इन विषयों पर केंद्र और राज्य दोनों कानून बना सकते हैं।
- टकराव होने पर केंद्र का कानून मान्य होता है।

Trick "र–ब–स–मु–वि"–संघ सूची–"रवि बैंक से संदेश और मुद्रा लेकर विदेश गया।"

र = रक्षा ब = बैंकिंग
स = संचार मु = मुद्रा
वि = विदेशी मामले

"पु–व्य–कृ–सिं" – राज्य सूची

"पुलिस ने व्यापारी के कृषि–सिंचाई क्षेत्र की रक्षा की।"

पु = पुलिस व्य = व्यापार और वाणिज्य
कृ = कृषि सिं = सिंचाई

"शि–व–वि–गो–उ" – समवर्ती सूची

शिव विवाह करके गोद और उत्तराधिकार समझा।

शि = शिक्षा व = वन
वि = विवाह गो = गोद लेना
उ = उत्तराधिकार

2. शासन के संघीय और एकात्मक स्वरूपों में मुख्य अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 1. **संघीय शासन व्यवस्था–**

- सरकार के दो या अधिक स्तर होते हैं।
- केंद्र और राज्य सरकारों के बीच शक्तियों का बँटवारा होता है।
- राज्य सरकारों के पास अपनी शक्तियाँ होती हैं।
- केंद्र सरकार राज्य सरकार को कोई खास कार्य करने का आदेश नहीं दे सकती।

2. **एकात्मक शासन व्यवस्था–**

- शासन का मुख्य रूप से एक ही स्तर होता है।
- बाकी इकाइयाँ केंद्र के अधीन होकर काम करती हैं।
- केंद्रीय सरकार प्रांतीय या स्थानीय सरकारों को आदेश दे सकती है।
- सभी प्रमुख अधिकार केंद्रीय सरकार के पास होते हैं।

3. आपके मतानुसार संघीय शासन की कोई दो प्रमुख विशेषताएँ कौन सी हैं? संक्षेप में लिखिए।

(RBSE 2024, 2022 & Model Paper 2024)

उत्तर : 1. सरकार के दो या अधिक स्तर होते हैं।
2. केंद्र और राज्य सरकारों के बीच शक्तियों का बँटवारा होता है।
3. राज्य सरकारों के पास अपनी शक्तियाँ होती हैं।
4. केंद्र सरकार राज्य सरकार को कोई खास कार्य करने का आदेश नहीं दे सकती।
5. संघवाद का अर्थ बताते हुए संघीय व्यवस्था के गठन के तरीकों को सोदाहरण समझाइये।

4. संघवाद का अर्थ बताते हुए ?इसकी मुख्य विशेषताओं को समझाइए। *(Model Paper – 2023)*

उत्तर : संघीय शासन व्यवस्था–

1. सरकार के दो या अधिक स्तर होते हैं।
2. केंद्र और राज्य सरकारों के बीच शक्तियों का बँटवारा होता है।
3. राज्य सरकारों के पास अपनी शक्तियाँ होती हैं।
4. केंद्र सरकार राज्य सरकार को कोई खास कार्य करने का आदेश नहीं दे सकती।
5. संविधान ने दो स्तरीय शासन व्यवस्था का प्रावधान किया।
6. इसमें संघ सरकार और राज्य सरकारें शामिल थीं।
7. बाद में पंचायतों और नगरपालिकाओं के रूप में तीसरा स्तर जोड़ा गया।

संघीय व्यवस्था कैसे चलती है?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निम्नलिखित में से किस राज्य का गठन संस्कृति, भूगोल अथवा जातीय विविधता को सम्मान देने के लिए किया गया?

(अ) गुजरात (ब) महाराष्ट्र
(स) नगालैंड (द) पंजाब **(स)**

2. **भारतीय संविधान में हिंदी को किस रूप में मान्यता दी गई है?**
(अ) राष्ट्रभाषा (ब) संपर्क भाषा
(स) राजभाषा (द) अंतरराष्ट्रीय भाषा **(स)**

3. **लगभग कितने प्रतिशत भारतीयों की मातृभाषा हिंदी है?**
(अ) 30% (ब) 40%
(स) 50% (द) 60% **(ब)**

4. **2011 की जनगणना के अनुसार हिंदी बोलने वालों का प्रतिशत कितना था?**
(अ) 40.00% (ब) 43.63%
(स) 45.50% (द) 50.00% **(ब)**

5. **रामचंद्र गुहा के अनुसार भाषावार राज्यों के गठन का क्या प्रभाव पड़ा?**
(अ) देश कमजोर हुआ (ब) राज्यों के बीच संघर्ष बढ़ा
(स) देश की एकता मजबूत हुई
(द) भाषाओं की संख्या कम हुई **(स)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. **भारत की भाषायी विविधता, भाषा–नीति की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।**

उत्तर : भाषायी विविधता की प्रमुख विशेषताएँ –
1. 2011 की जनगणना में 1300 से अधिक भाषाएँ दर्ज की गईं।
2. समूहबद्धता के बाद 121 प्रमुख भाषाएँ पाई गईं।
3. 22 भाषाएँ आठवीं अनुसूची में शामिल हैं।
4. हिंदी सबसे बड़ी भाषा है, परंतु यह केवल 43.63% लोगों की मातृभाषा है।

भाषा–नीति की प्रमुख विशेषताएँ –
1. किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं दिया गया।
2. हिंदी को राजभाषा माना गया।
3. हिंदी के अलावा 21 भाषाओं को अनुसूचित भाषा का दर्जा दिया गया।
4. हिंदी के साथ अंग्रेज़ी के प्रयोग की भी अनुमति दी गई।

2. **भाषायी राज्यों के गठन की आवश्यकता क्यों पड़ी ? गठन से भारत को क्या लाभ हुआ?**

उत्तर : 1. भाषायी राज्यों के गठन की आवश्यकता–
- एक भाषा बोलने वाले लोगों को एक राज्य में संगठित करने के लिए।
- प्रशासन को अधिक प्रभावी बनाने के लिए।
- लोकतांत्रिक आकांक्षाओं को सम्मान देने के लिए।
- विविधता को स्वीकार करने के लिए।

2. गठन से भारत को लाभ –
- देश अधिक एकीकृत और मजबूत बना।
- भाषायी विविधता को सम्मान मिला।
- लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूती मिली।
- क्षेत्रीय पहचान और राष्ट्रीय एकता दोनों सुरक्षित रहीं।
- भारत में 'केन्द्र–राज्य सम्बन्धों' में आये बदलावों की विवेचना कीजिये।

3. **भारत में 'केन्द्र–राज्य सम्बन्धों' में आये बदलावों की विवेचना कीजिये।** *(RBSE – 2022)*

उत्तर : 1. केंद्र में गठबंधन सरकारों का दौर शुरू हुआ।
2. सत्ता में साझेदारी बढ़ी।
3. राज्य सरकारों की स्वायत्तता का सम्मान बढ़ा।
4. संघीय भावना को मजबूती मिली।

भारत में विकेंद्रीकरण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. **केंद्र और राज्य सरकार से शक्तियाँ लेकर स्थानीय सरकारों को देने की प्रक्रिया को क्या कहते हैं?**
(अ) संघवाद (ब) केंद्रीकरण
(स) विकेंद्रीकरण (द) वैश्वीकरण **(स)**

2. **स्थानीय निकायों के चुनावों को नियमित रूप से कराना किसके द्वारा अनिवार्य बनाया गया?**
(अ) संसद के प्रस्ताव द्वारा
(ब) न्यायालय के आदेश द्वारा
(स) संवैधानिक संशोधन द्वारा
(द) राज्य सरकारों द्वारा **(स)**

3. **किसी जिले की सभी पंचायत समितियों को मिलाकर किसका गठन होता है?**
(अ) नगर निगम (ब) ग्राम सभा
(स) जिला परिषद् (द) नगरपालिका **(स)**

4. **नगर निगम के निर्वाचित पदाधिकारी को क्या कहते हैं?**
(अ) सरपंच (ब) पार्षद
(स) मेयर (महापौर) (द) प्रमुख **(स)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. **स्थानीय शासन व्यवस्था के विभिन्न स्तर कौन–कौन से है? इसके गठन की प्रक्रिया बताइए।** *(Model Paper – 2023)*

उत्तर : स्थानीय शासन व्यवस्था मुख्यतः दो भागों में बाँटी जाती है– ग्रामीण स्थानीय शासन और नगरीय स्थानीय शासन।

पंचायती राज व्यवस्था की संरचना–
1. ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत होती है।
2. कई ग्राम पंचायतों को मिलाकर पंचायत समिति बनाई जाती है।

3. जिले की सभी पंचायत समितियों को मिलाकर जिला परिषद् बनाई जाती है।
4. जिला परिषद् का राजनीतिक प्रधान जिला परिषद् का प्रमुख होता है।
5. छोटे नगरों में – नगर पंचायत
6. मध्यम नगरों में – नगरपालिका
7. बड़े नगरों में – नगर निगम

ग्राम सभा और ग्राम पंचायत में संबंध –

1. ग्राम सभा में सभी वयस्क मतदाता शामिल होते हैं।
2. ग्राम सभा ग्राम पंचायत का चुनाव करती है।
3. सरपंच और पंचों का चयन ग्राम सभा द्वारा किया जाता है।

गठन की प्रक्रिया –

इन संस्थाओं के प्रतिनिधियों का चुनाव स्थानीय जनता द्वारा प्रत्यक्ष मतदान से किया जाता है। ग्राम पंचायत के मुखिया को सरपंच/प्रधान तथा नगर निकाय के प्रमुख को अध्यक्ष या महापौर कहा जाता है। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिलाओं के लिए सीटें आरक्षित होती हैं। इन संस्थाओं का कार्यकाल सामान्यतः पाँच वर्ष होता है।

Trick — **ग्राम का GSP – GSP से गाँव की सरकार**

G = ग्राम सभा
S = सरपंच
P = पंच

"सर–अध–महा"

सर = सरपंच/प्रधान → ग्राम पंचायत
अध = अध्यक्ष → नगर पंचायत/नगरपालिका
महा = महापौर → नगर निगम

"सब–चुनें–पाँच

सब = सभी वयस्क ग्राम सभा में
चुनें = पंच, सरपंच और प्रतिनिधि
पाँच = पाँच वर्ष का कार्यकाल

2. पंचायती राज व्यवस्था की संरचना स्पष्ट कीजिए और ग्राम सभा और ग्राम पंचायत में क्या संबंध है बताइए।

उत्तर : पंचायती राज व्यवस्था की संरचना

1. ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत होती है।
2. कई ग्राम पंचायतों को मिलाकर पंचायत समिति बनाई जाती है।
3. जिले की सभी पंचायत समितियों को मिलाकर जिला परिषद् बनाई जाती है।
4. जिला परिषद् का राजनीतिक प्रधान जिला परिषद् का प्रमुख होता है।

ग्राम सभा और ग्राम पंचायत में संबंध–

1. ग्राम सभा में सभी वयस्क मतदाता शामिल होते हैं।
2. ग्राम सभा ग्राम पंचायत का चुनाव करती है।
3. सरपंच और पंचों का चयन ग्राम सभा द्वारा किया जाता है।

3. 1992 के संविधान संशोधन के पहले और बाद के स्थानीय शासन के अंतर और प्रमुख समस्याएँ लिखिए।

उत्तर : 1992 के संविधान संशोधन से पहले 1992 के संविधान संशोधन के बाद स्थानीय निकायों के चुनाव नियमित रूप से कराना संवैधानिक बाध्यता नहीं थी। स्थानीय निकायों के चुनाव नियमित रूप से कराना संवैधानिक बाध्यता बना दिया गया।

निर्वाचित निकायों में आरक्षण की यह संवैधानिक व्यवस्था नहीं थी। अनुसूचित जातियों, जनजातियों, पिछड़ी जातियों तथा कम से कम एक–तिहाई पद महिलाओं के लिए आरक्षण सुनिश्चित किया गया।

स्थानीय शासन व्यवस्था की प्रमुख समस्याएँ–

1 ग्राम सभाओं की बैठकें नियमित रूप से नहीं होतीं।
2. कई स्थानों पर स्थानीय निकायों को पर्याप्त अधिकार नहीं मिले हैं।
3. राज्य सरकारें पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नहीं करातीं।
4. स्थानीय संस्थाओं की कार्यक्षमता कई बार सीमित रहती है।

4. 1992 में संविधान संशोधन कर लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था में स्थानीय निकायों को कैसे शक्तिशाली एवं प्रभावी बनाया गया ? कोई दो प्रावधान बताइये। *(RBSE – 2025)*

उत्तर : 1. स्थानीय निकायों के चुनाव नियमित रूप से कराना संवैधानिक बाध्यता बना दिया गया।
2. अनुसूचित जातियों, जनजातियों, पिछड़ी जातियों तथा कम से कम एक–तिहाई पद महिलाओं के लिए आरक्षण सुनिश्चित किया गया।

5. स्थानीय सरकारों के महत्त्व को स्पष्ट कीजिये। *(RBSE – 2022)*

उत्तर : 1. लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हुई हैं।
2. जनता की भागीदारी बढ़ी है।
3. महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ा है।
4. स्थानीय समस्याओं के समाधान में सहायता मिली है।

3 जाति, धर्म और लैंगिक मसले

लैंगिक मसले और राजनीति

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. एक विचारधारा जो अधिकारों एवं अवसरों के मामले में स्त्री व पुरूष को बराबर मानती है, वह है – *(RBSE – 2023 & 2026)*

(अ) साम्प्रदायिक (ब) नारीवादी
(स) तानाशाही (द) जातिवादी **(ब)**

2. नारीवादी आंदोलनों का मुख्य उद्देश्य क्या था?

(अ) केवल शिक्षा प्राप्त करना
(ब) महिलाओं के लिए बराबरी के अधिकार प्राप्त करना
(स) व्यापार बढ़ाना
(द) कृषि सुधार करना **(ब)**

3. निम्नलिखित में से कौन–सा देश स्कैंडिनेवियाई देशों में शामिल है?

(अ) भारत (ब) जापान
(स) स्वीडन (द) चीन **(स)**

4. भारत का वर्तमान लिंगानुपात कितना है ? *(RBSE – 2024 & 2026)*

(अ) 929 (ब) 849
(स) 919 (द) 819 **(अ)**

5. समान मज़दूरी अधिनियम का उद्देश्य क्या है?

(अ) महिलाओं को नौकरी देना
(ब) समान काम के लिए समान मज़दूरी देना
(स) केवल पुरुषों को रोजगार देना
(द) मजदूरी कम करना **(ब)**

6. विश्व की राष्ट्रीय संसदों में महिलाओं का औसत प्रतिनिधित्व कितना है?

(अ) 12% (ब) 18%
(स) 24% (द) 36% **(स)**

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. महिलाओं ने किन अधिकारों के लिए आंदोलन किए?

उत्तर : 1. वोट का अधिकार
2. शिक्षा का अधिकार
3. रोजगार के अवसर
4. राजनीतिक और वैधानिक समानता

2. महिलाओं और पुरुषों की साक्षरता दर कितनी है?

उत्तर : 54 प्रतिशत और 76 प्रतिशत

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभावों के कोई दो रूप स्पष्ट कीजिए। *(RBSE – 2024)*

उत्तर : 1. भारत में महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम मज़दूरी मिलती है।
2. केवल लड़के की चाहत और जन्म से पहले ही लड़की को खत्म कर देने (कन्या भ्रूण हत्या) की मानसिकता

2. नारीवादी आंदोलन के प्रमुख उद्देश्य क्या थे?

उत्तर : 1. महिलाओं को वोट का अधिकार दिलाना।
2. शिक्षा के अवसर बढ़ाना।
3. रोजगार में समान अवसर प्राप्त करना।
4. राजनीतिक और कानूनी समानता स्थापित करना।

3. सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भूमिका कैसे बढ़ी?

उत्तर : 1. महिलाओं ने संगठन बनाए।
2. समान अधिकारों के लिए आंदोलन किए।
3. शिक्षा और रोजगार में भागीदारी बढ़ी।
4. विभिन्न पेशों में महिलाओं की संख्या बढ़ी।

4. "भारतीय समाज अभी भी पितृप्रधान है, जिसमें महिलाओं के साथ भेदभाव होते हैं ।" इस कथन की विस्तृत विवेचना कीजिये । *(RBSE – 2025)*

उत्तर : हमारा समाज अभी भी पितृ–प्रधान है जहाँ औरतों के साथ भेदभाव और दमन होता है–

1. **साक्षरता दर** – महिलाओं में साक्षरता की दर अब भी मात्र 54 फीसदी है जबकि पुरुषों में 76 फीसदी।
2. **उच्च शिक्षा**– स्कूल परीक्षाओं के परिणाम में लड़कियाँ कई जगह लड़कों से बेहतर या बराबर प्रदर्शन करती हैं, पर आगे की पढ़ाई के दरवाज़े बंद हो जाते हैं क्योंकि माँ–बाप लड़कों की शिक्षा पर ज़्यादा खर्च करना पसंद करते हैं।
3. **ऊँचे पद**– ऊँची तनख्वाह और ऊँचे पदों पर पहुँचने वाली महिलाओं की संख्या बहुत कम है।

मिशन ज्ञान
पढ़ः जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

5. भारत में महिलाओं की स्थिति अभी भी पुरुषों से काफी पीछे है। क्यों? कोई चार कारण स्पष्ट कीजिये। *(RBSE – 2022)*

उत्तर : 1. **श्रम के लैंगिक विभाजन –**
- महिलाओं और पुरुषों के कार्य अलग–अलग बाँट दिए जाते हैं।
- घरेलू कार्य महिलाओं की जिम्मेदारी माने जाते हैं।
- बाहरी कार्य पुरुषों से जुड़े माने जाते हैं।

2. **महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व की स्थिति –**
- संसदों में महिलाओं की भागीदारी अपेक्षाकृत कम है।
- विश्व औसत 24% है।
- भारत में प्रतिनिधित्व काफी कम है।
- कुछ देशों में महिलाओं की भागीदारी अधिक है।

6. लैंगिक विभाजन का आशय बताइये। *(RBSE – 2026)*

उत्तर : समाज द्वारा स्त्री और पुरुष को दी गई असमान भूमिकाओं और श्रम के बँटवारे का एक रूप है। इसमें पुरुष और महिलाओं के कार्यक्षेत्र सामाजिक रूप से पूर्व–निर्धारित होते हैं।

महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारत में निम्न में से महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था है– *(Model Paper – 2025)*

(अ) लोक सभा (ब) राज्य सभा
(स) विधान सभा
(द) पंचायतीराज की संस्थाएं **(द)**

2. महिला आंदोलनों के अनुसार महिलाओं की समस्याओं के समाधान के लिए क्या आवश्यक है?

(अ) केवल शिक्षा (ब) केवल रोजगार
(स) सत्ता पर नियंत्रण और राजनीतिक भागीदारी
(द) केवल सामाजिक सुधार **(स)**

3. नारी शक्ति वंदन अधिनियम किन संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण सुनिश्चित करेगा?

(अ) केवल लोकसभा (ब) केवल राज्य विधानसभाएँ
(स) लोकसभा, राज्य विधानसभाएँ और दिल्ली विधानसभा
(द) केवल पंचायतें **(स)**

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. 1880 के दशक में उच्च जाति की नारियों की दयनीय दशा के बारे में लिखने वाली महाराष्ट्र की दो महिलाओं के नाम लिखिये। *(Model Paper – 2023)*

उत्तर : 1. ताराबाई शिंदे, 2. पंडिता रमाबाई

2. महिला आंदोलनों ने महिलाओं की समस्याओं के समाधान के लिए क्या आवश्यक माना?

उत्तर : 1. सत्ता पर नियंत्रण, 2. राजनीतिक भागीदारी

3. लोकसभा व विधानसभाओं में महिला सांसदों का प्रतिनिधित्व कितना है?

उत्तर : 14.36%, 5% से भी कम

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. महिला आंदोलनों के अनुसार महिलाओं की समस्याओं के समाधान के लिए राजनीतिक प्रतिनिधित्व क्यों आवश्यक है?

उत्तर : 1. महिलाओं की समस्याओं को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है।
2. निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी बढ़ती है।
3. सत्ता में हिस्सेदारी से उनके हितों की रक्षा होती है।

2. भारत में महिलाओं को राजनीति में प्रतिनिधित्व देने की स्थिति पर अपने विचार व्यक्त कीजिये। *(RBSE – 2023)*

उत्तर : 1. लोकसभा में महिला सांसदों का प्रतिनिधित्व 14.36% है।
2. राज्य विधानसभाओं में यह 5% से भी कम है।
3. भारत कई विकासशील देशों से भी पीछे है।

3. नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर : 1. वर्ष 2023 में पारित किया गया।
2. लोकसभा में 33% आरक्षण सुनिश्चित करेगा।
3. राज्य विधानसभाओं में 33% आरक्षण सुनिश्चित करेगा।
4. दिल्ली विधानसभा में भी 33% आरक्षण प्रदान करेगा।

4. महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को बढ़ाने के लिए उठाए गए दो प्रमुख कदम लिखिए।

उत्तर : 1. स्थानीय निकायों में 33% आरक्षण।
2. नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 का पारित होना।

5. महिलाओं के लिए राजनीतिक आरक्षण के क्या लाभ हैं?

उत्तर : 1. निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी बढ़ती है।
2. नेतृत्व के अवसर मिलते हैं।
3. महिलाओं की समस्याएँ प्रभावी रूप से उठाई जाती हैं।
4. लोकतंत्र अधिक समावेशी बनता है।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

धर्म, सांप्रदायिकता और राजनीति

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. गांधी जी के अनुसार धर्म का क्या अर्थ था?
(अ) केवल हिंदू धर्म (ब) केवल इस्लाम धर्म
(स) नैतिक मूल्य (द) धार्मिक अनुष्ठान **(स)**

2. राजनीति में धर्म की सकारात्मक भूमिका कब संभव है?
(अ) जब एक धर्म को विशेष दर्जा मिले
(ब) जब शासन सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार करे
(स) जब केवल बहुसंख्यक धर्म को महत्व मिले
(द) जब धर्म राजनीति पर नियंत्रण करे **(ब)**

3. सांप्रदायिकता की समस्या कब शुरू होती है?
(अ) जब लोग अपने धर्म का पालन करते हैं
(ब) जब धर्म को राष्ट्र का आधार मान लिया जाता है
(स) जब धार्मिक त्योहार मनाए जाते हैं
(द) जब लोग पूजा करते हैं **(ब)**

4. बहुसंख्यकवाद किससे संबंधित है?
(अ) सभी धर्मों की समानता
(ब) बहुसंख्यक समुदाय का प्रभुत्व
(स) धार्मिक स्वतंत्रता
(द) लोकतांत्रिक अधिकार **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. 'धर्म को राजनीति से कभी अलग नहीं किया जा सकता।' ये शब्द ———————— ने कहे।

उत्तर : गांधी

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. "धर्म को कभी भी राजनीति से अलग नहीं किया जा सकता" यह किसने कहा था? *(Model Paper – 2025)*

उत्तर : गांधी

2. पारिवारिक कानून किन मामलों से संबंधित होते हैं?

उत्तर : 1. विवाह 2. तलाक
3. गोद लेना 4. उत्तराधिकार

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. साम्प्रदायिकता के सबसे बुरे स्वरूप का एक उदाहरण दीजिये। *(RBSE – 2026)*

उत्तर : सांप्रदायिकता की समस्या : समस्या तब शुरू होती है जब धर्म को राष्ट्र का आधार मान लिया जाता है, या जब राजनीति में एक धार्मिक समुदाय दूसरे धर्म के खिलाफ़ मोर्चा खोलने लगता है और अपने विचारों को श्रेष्ठ मानने लगता है।

1. **राजनीतिक गोलबंदी** – चुनावी राजनीति में एक धर्म के मतदाताओं की भावनाओं या हितों की बात उठाने जैसे तरीके अक्सर अपनाए जाते हैं ।
2. **सांप्रदायिक हिंसा**– कई बार सांप्रदायिकता सबसे गंदा रूप लेकर संप्रदाय के आधार पर हिंसा, दंगा और नरसंहार कराती है। विभाजन के समय भारत और पाकिस्तान में भयावह सांप्रदायिक दंगे हुए थे और आज़ादी के बाद भी बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक हिंसा हुई है ।

2. धर्मनिरपेक्ष शासन के लिये भारतीय संविधान में कौनसे प्रावधान किये गये है? कोई चार की विवेचना कीजिये।
(RBSE – 2022 & Model Paper – 2024)

अथवा

"भारतीय संविधान – निर्माताओं ने धर्म निरपेक्ष शासन का मॉडल चुना है।" इस कथन की विस्तृत विवेचना कीजिये।
(RBSE – 2025)

उत्तर : भारतीय संविधान के धर्मनिरपेक्ष प्रावधान–

1. **कोई राजकीय धर्म नहीं**– भारतीय राज्य ने किसी भी धर्म को राजकीय धर्म के रूप में अंगीकार नहीं किया है। श्रीलंका में बौद्ध धर्म, पाकिस्तान में इस्लाम और इंग्लैंड में ईसाई धर्म का जो दर्जा रहा है, उसके विपरीत भारत का संविधान किसी धर्म को विशेष दर्जा नहीं देता ।
2. **धार्मिक स्वतंत्रता**– संविधान सभी नागरिकों और समुदायों को किसी भी धर्म का पालन करने, उसे मानने और उसका प्रचार करने की आज़ादी देता है ।
3. **भेदभाव का निषेध**– संविधान धर्म के आधार पर किए जाने वाले किसी तरह के भेदभाव को

3. गांधी जी के धर्म संबंधी विचारों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 1. गांधी जी धर्म को नैतिक मूल्यों से जोड़ते थे।
2. उनका धर्म किसी एक विशेष धर्म तक सीमित नहीं था।
3. वे मानते थे कि सभी धर्मों में समान नैतिक मूल्य होते हैं।

4. राजनीति में धर्म की सकारात्मक भूमिका कैसे हो सकती है?

उत्तर : 1. धर्म के आदर्श और मूल्य समाज को दिशा दे सकते हैं।
2. नैतिक मूल्यों को बढ़ावा मिल सकता है।
3. शासन सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार करे तो सकारात्मक भूमिका संभव है।

RECORDED VIDEOS | LIVE CLASSES | PDF NOTES | e-BOOKS | QUIZ | TEST SERIES
DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

5. सांप्रदायिकता लोकतंत्र के लिए चुनौती क्यों मानी जाती है?

उत्तर : 1. यह समाज में विभाजन पैदा करती है।
2. समान नागरिकता की भावना को कमजोर करती है।
3. धार्मिक पूर्वाग्रहों को बढ़ावा देती है।
4. लोकतांत्रिक एकता और सद्भाव को प्रभावित करती है।

जाति और राजनीति

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. वर्ण–व्यवस्था क्या है?
(अ) आर्थिक व्यवस्था (ब) जाति समूहों का पदानुक्रम
(स) धार्मिक व्यवस्था (द) राजनीतिक व्यवस्था **(ब)**

2. छुआछूत का व्यवहार मुख्यतः किनके साथ किया जाता था?
(अ) अगड़ी जातियों के साथ
(ब) व्यापारियों के साथ
(स) अंत्यज जातियों के साथ
(द) किसानों के साथ **(स)**

3. निम्नलिखित में से कौन जातिगत भेदभाव के खिलाफ समाज सुधारक थे?
(अ) ज्योतिबा फुले (ब) डॉ. बी.आर. आंबेडकर
(स) महात्मा गांधी (द) उपर्युक्त सभी **(द)**

4. जाति को समुदाय का मुख्य आधार मानने वाला व्यक्ति कहलाता है– *(RBSE – 2024)*
(अ) धर्मनिरपेक्ष (ब) जातिवादी
(स) साम्प्रदायिक (द) नारीवादी **(ब)**

5. 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में हिंदुओं की आबादी कितनी थी?
(अ) 14.2% (ब) 79.8%
(स) 16.6% (द) 41% **(ब)**

6. 2011 की जनगणना के अनुसार मुसलमानों की आबादी कितनी थी?
(अ) 14.2% (ब) 2.3%
(स) 1.7% (द) 8.6% **(अ)**

7. 2011 में अनुसूचित जनजातियों (ST) अनुसूचित जातियों (SC) का हिस्सा कितना था?
(अ) 8.6%, 16.6% (ब) 16.6%, 8.6%
(स) 41%, 41% (द) 0.7%, 14.2% **(अ)**

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. सामाजिक विभाजन का मुख्य आधार क्या है? *(RBSE – 2022)*

उत्तर : सामाजिक विभाजनों का मुख्य आधार किसी के वैल्यू के आधार पर जज करना या वैल्यू के आधार पर अच्छा बुरा का भेद भाव करना ही सामाजिक विभाजनों का मुख्य कारण है।

2. जाति व्यवस्था में पेशा किस आधार पर चलता था?

उत्तर : वंशानुगत आधार पर।

3. दो प्रमुख समाज सुधारकों के नाम–

उत्तर : ज्योतिबा फुले, डॉ. बी.आर. आंबेडकर

4. 2011 में हिंदुओं की आबादी कितनी थी?

उत्तर : 79.8%

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. जाति व्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर : 1. जातियों का पदानुक्रम होता है।
2. पेशा वंशानुगत होता है।
3. विवाह और खानपान पर सामाजिक पाबंदियाँ होती हैं।
4. जातियों के बीच ऊँच–नीच का भेद मौजूद रहता है।

2. जातिगत भेदभाव को समाप्त करने में समाज सुधारकों की भूमिका बताइए।

उत्तर : 1. समानता और सामाजिक न्याय का प्रचार किया।
2. छुआछूत और भेदभाव का विरोध किया।
3. समाज सुधार आंदोलनों का नेतृत्व किया।
4. जाति–मुक्त समाज की स्थापना का प्रयास किया।

3. जाति व्यवस्था में बदलाव लाने वाले प्रमुख कारकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : 1. आर्थिक विकास
2. शहरीकरण
3. शिक्षा और साक्षरता का विस्तार
4. पेशा चुनने की स्वतंत्रता
5. जमींदारी व्यवस्था का कमजोर होना

4. राजनीति में जाति किस प्रकार प्रभाव डालती है?

उत्तर : 1. उम्मीदवारों के चयन को प्रभावित करती है।
2. मंत्रिमंडल गठन में ध्यान रखा जाता है।
3. चुनावों में जातिगत भावनाएँ उभारी जाती हैं।
4. विभिन्न जातियों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व देने का प्रयास होता है।

मिशन ज्ञान
पढ़ें अब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

5. आपके अनुसार राजनीति में जाति अनेक रूप ले सकती है। अपने मत के पक्ष में किसी एक रूप की संक्षिप्त विवेचना कीजिये। *(RBSE – 2026)*

उत्तर : राजनीति में जाति का स्वरूप –

1. **जातिवाद का आधार–** सांप्रदायिकता की तरह जातिवाद भी इस मान्यता पर आधारित है कि जाति ही सामाजिक समुदाय के गठन का एकमात्र आधार है और एक जाति के लोगों के हित एक जैसे होते हैं ।

राजनीति में जाति के विभिन्न रूप–

1. **उम्मीदवारों का चयन–** जब पार्टियाँ चुनाव के लिए उम्मीदवारों के नाम तय करती हैं, तो चुनाव क्षेत्र के मतदाताओं की जातियों का हिसाब ध्यान में रखती हैं ताकि उन्हें ज़रूरी वोट मिल जाएँ ।
2. **मंत्रिमंडल का गठन–** जब सरकार का गठन किया जाता है, तो राजनीतिक दल इस बात का ध्यान रखते हैं कि उसमें विभिन्न जातियों और कबीलों के लोगों को उचित जगह दी जाए ।
3. **भावनाओं को उकसाना–** राजनीतिक पार्टियाँ और उम्मीदवार समर्थन हासिल करने के लिए चुनाव के दौरान जातिगत भावनाओं को उकसाते हैं ।
4. **निचली जातियों में चेतना–** सार्वभौम वयस्क मताधिकार और 'एक व्यक्ति–एक वोट' की व्यवस्था ने उन जातियों के लोगों में नयी चेतना पैदा की है जिन्हें अभी तक छोटा और नीच माना जाता था ।

5. 'जाति का राजनीतिग्रस्त होना' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : 1. जातियाँ राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने का प्रयास करती हैं।

2. उप–जातियों को साथ लाने की कोशिश करती हैं।
3. अन्य जातियों से गठबंधन बनाती हैं।
4. राजनीतिक प्रभाव बढ़ाने के लिए मोलभाव करती हैं।

4 राजनीतिक दलों की ज़रूरत क्यों?

राजनीतिक दलों की ज़रूरत क्यों?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. लोग सामाजिक और राजनीतिक विभाजनों के लिए किसे दोषी मानते हैं?

(अ) राजनीतिक दलों को
(ब) केवल मतदाताओं को
(स) ग्रामीण समुदायों को
(द) सरकारी कर्मचारियों को **(अ)**

2. राजनीतिक दल किस उद्देश्य से काम करने वाला संगठित समूह है?

(अ) केवल सामाजिक कार्यक्रम चलाने के लिए
(ब) चुनाव लड़ने और राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए
(स) केवल लोगों को शिक्षित करने के लिए
(द) न्यायालयों का संचालन करने के लिए **(ब)**

3. किसी राजनीतिक दल की पहचान किन आधारों पर तय होती है?

(अ) उसके कार्यालय और चुनाव चिह्न से
(ब) उसके नेताओं की संख्या से
(स) उसकी नीतियों और सामाजिक आधार से
(द) उसके समर्थकों की आय से **(स)**

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. राजनीतिक दलों के प्रमुख उद्देश्यों को दर्शाते हुए राजनीतिक दलों के प्रति लोगों की राय का वर्णन कीजिए।

उत्तर : 1. **राजनीतिक दल** –

- राजनीतिक दल लोगों का एक संगठित समूह होता है।

2. **प्रमुख उद्देश्य–**

- चुनाव लड़ना होता है।
- यह सरकार में राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने का प्रयास करता है।
- यह समाज के सामूहिक हित को ध्यान में रखकर नीतियाँ बनाता है।
- यह विभिन्न कार्यक्रम भी तय करता है।
- चुनाव जीतने के बाद वह अपनी नीतियों को लागू करने का प्रयास करता है।

3. **लोगों की राय–**

- लोग लोकतांत्रिक व्यवस्था की बुराइयों के लिए दलों को जिम्मेदार मानते हैं।
- सामाजिक, राजनीतिक विभाजनों के लिए राजनीतिक दलों को जिम्मेदार माना जाता

2. राजनीतिक दलों के तीन प्रमुख हिस्सों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : **1. नेता** – दल का नेतृत्व करते हैं और उसकी नीतियों तथा कार्यक्रमों को दिशा देते हैं।

2. सक्रिय सदस्य – दल की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

3. अनुयायी या समर्थक – दल की नीतियों और विचारों का समर्थन करते हैं।

राजनीतिक दलों के कार्य

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. जनमत–निर्माण में राजनीतिक दल किस प्रकार योगदान देते हैं?

(अ) मुद्दों को छिपाकर
(ब) मुद्दों को उठाकर और उन पर बहस करके
(स) चुनावों को रोककर
(द) केवल सरकारी निर्णयों का समर्थन करके **(ब)**

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. राजनीतिक दल अपना कार्य बेहतर ढंग से करें, आपके अनुसार इसके लिए क्या–क्या उपाय किये जा सकते हैं–

(Model Paper – 2026)

उत्तर : दल–बदल कानून को सख्त करना।

आंतरिक लोकतंत्र।

अपराधियों पर रोक– चुनाव में धन और बाहुबल के प्रभाव को कम करने के लिए दागियों (आपराधिक छवि वाले नेताओं) को टिकट देने से बचना।

मिशन ज्ञान
पढ़ो जब चाहो, जहाँ चाहो, जैसे चाहो!

महिलाओं का प्रतिनिधित्व।

चुनाव का सरकारी खर्च।

2. राजनीतिक दलों के कार्यों की विवेचना कीजिये।

(RBSE – 2023 & Model Paper – 2025, 2026)

उत्तर : प्रमुख कार्यों –

कानून निर्माण में –

1. प्रस्तावित कानूनों पर औपचारिक बहस की जाती है।
2. कानूनों को विधायिका में पारित करवाना आवश्यक होता है।
3. दल के निर्देश के आधार पर सदस्य कानूनों के पक्ष या विपक्ष में निर्णय लेते हैं।

जनमत–निर्माण में–

1. समाज के महत्त्वपूर्ण मुद्दों को उठाते, बहस और चर्चा करते हैं।
2. राजनीतिक दल लोगों की समस्याओं को लेकर आंदोलन करते हैं।

नीतियों और कार्यक्रमों को दिशा देने का कार्य–

1. राजनीतिक दल अलग–अलग नीतियाँ और कार्यक्रम मतदाताओं के सामने रखते हैं।
2. मतदाता अपनी पसंद की नीतियों और कार्यक्रमों का चुनाव करते हैं।

सरकार का निर्माण और संचालन–

1. चुनावों के माध्यम से राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।
2. सत्ता प्राप्त करने वाला दल सरकार बनाता है।
3. नीतियों और बड़े फैसलों के विषय में राजनेता निर्णय लेते हैं।
4. लोगों को सरकारी मशीनरी और कल्याणकारी कार्यक्रमों तक पहुँचने में
5. राजनीतिक दल लोगों और सरकारी व्यवस्था के बीच संपर्क का माध्यम बनते हैं।
6. वे सरकारी मशीनरी तक नागरिकों की पहुँच बनाने में सहायता करते हैं।
7. वे लोगों को सरकारी कल्याणकारी कार्यक्रमों से जुड़ने में मदद करते हैं।

2. आपके मतानुसार विपक्षी दल की लोकतन्त्र में क्या भूमिका होनी चाहिये ? संक्षेप में लिखिये।

(RBSE – 2026)

उत्तर : 1. चुनाव हारने वाले दल विपक्ष की भूमिका निभाते हैं।

2. वे शासक दल की गलत नीतियों की आलोचना करते हैं।
3. वे विभिन्न मुद्दों पर अपनी अलग राय प्रस्तुत करते हैं।
4. विपक्षी दल सरकार के कार्यों पर निगरानी रखते हैं।
5. इस प्रकार वे सरकार को उत्तरदायी बनाने का प्रयास करते हैं।

राजनीतिक दल की ज़रूरत

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारतीय लोकतंत्र में .... दलीय व्यवस्था है।

(Model Paper – 2023 & 2025)

(अ) एक दलीय (ब) दो दलीय
(स) बहुदलीय (द) इनमें से कोई नहीं **(स)**

2. राजनीतिक दलों के अभाव में चुनावी उम्मीदवार किस प्रकार के होंगे?

(अ) केवल शासक दल के
(ब) स्वतंत्र या निर्दलीय
(स) केवल सरकारी कर्मचारी
(द) केवल पंचायत सदस्य **(ब)**

3. भारत में चुनाव आयोग में पंजीकृत राजनीतिक दलों की संख्या कितनी बताई गई है?

(अ) 250 से कम (ब) लगभग 500
(स) 750 से अधिक (द) केवल 100 **(स)**

4. अमरीका और ब्रिटेन में कौन–सी दलीय व्यवस्था पाई जाती है?

(अ) एकदलीय व्यवस्था
(ब) बहुदलीय व्यवस्था
(स) दो–दलीय व्यवस्था
(द) गैर–दलीय व्यवस्था **(स)**

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. राजनीतिक दलों की लोकतन्त्र में क्यों जरूरत होती है ? इसके पक्ष में अपना मत स्पष्ट कीजिये।

(RBSE – 2025, 2024)

उत्तर : लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की भूमिका

1. बड़े समाजों में प्रतिनिधित्व आधारित लोकतंत्र की आवश्यकता होती है।
2. बड़े और जटिल समाजों में विभिन्न मुद्दों पर अलग–अलग विचार होते हैं।

मिशन ज्ञान
पढ़ो जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

3. राजनीतिक दल इन विचारों को एक साथ समेटते हैं।
4. वे लोगों के विचारों और माँगों को सरकार के सामने लाते हैं।
5. इससे एक जिम्मेदार सरकार के गठन में सहायता मिलती है।
6. वे नीतियों के निर्माण, समर्थन और विरोध का माध्यम बनते हैं।
7. वे सरकार का समर्थन करने या उस पर अंकुश रखने का माध्यम बनते हैं।

राजनीतिक दल न होने पर समस्याएँ –

1. सभी उम्मीदवार स्वतंत्र या निर्दलीय होंगे।
2. उम्मीदवार बड़े नीतिगत बदलावों के बारे में प्रभावी चुनावी वायदे नहीं कर पाएँगे।
3. निर्वाचित प्रतिनिधि केवल अपने निर्वाचन क्षेत्रों के कार्यों के प्रति जवाबदेह होंगे।

2. एकदलीय शासन–व्यवस्था क्या है? इसे लोकतांत्रिक विकल्प क्यों नहीं माना जा सकता?

उत्तर : 1. एकदलीय व्यवस्था में केवल एक दल को सरकार बनाने और चलाने की अनुमति होती है।
2. अन्य दलों को सत्ता के लिए स्वतंत्र रूप से प्रतिस्पर्धा करने का वास्तविक अवसर नहीं मिलता।
3. चीन में केवल कम्युनिस्ट पार्टी को शासन करने की अनुमति है।
4. लोकतंत्र में मतदाताओं के सामने वास्तविक राजनीतिक विकल्प होने चाहिए।
5. इसलिए एकदलीय शासन–व्यवस्था को लोकतांत्रिक विकल्प नहीं माना जा सकता।

3. दो–दलीय व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : 1. इस व्यवस्था में सत्ता सामान्यतः दो मुख्य दलों के बीच बदलती रहती है।
2. देश में दो से अधिक राजनीतिक दल भी हो सकते हैं।
3. अन्य दल चुनाव लड़ सकते हैं।
4. छोटे दल कुछ सीटें भी जीत सकते हैं।
5. अमरीका में दो–दलीय व्यवस्था है।
6. ब्रिटेन में भी दो–दलीय व्यवस्था पाई जाती है।

4. बहुदलीय व्यवस्था क्या है? इसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर : 1. बहुदलीय व्यवस्था में अनेक दल सत्ता के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं।
2. दो से अधिक दलों के पास सत्ता में आने का उचित अवसर होता है।
3. दल दूसरे दलों के साथ गठबंधन करके भी सरकार बना सकते हैं।
4. भारत में बहुदलीय व्यवस्था पाई जाती है।
5. इसमें अलग–अलग विचारों को भी प्रतिनिधित्व मिलता है।
6. यह देश को राजनीतिक अस्थिरता की ओर भी ले जा सकती है।

5. राजनीति में गठनबन्धन या मोर्चा से क्या अभिप्राय है?

(RBSE – 2026)

उत्तर : 1. जब अनेक राजनीतिक दल चुनाव लड़ने के लिए आपस में हाथ मिलाते हैं, तो इसे गठबंधन या मोर्चा कहते हैं।
2. दल सत्ता में आने की संभावना बढ़ाने के लिए गठबंधन बनाते हैं।
3. बहुदलीय व्यवस्था में गठबंधन के माध्यम से सरकार बनाई जा सकती है।

राष्ट्रीय दल

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निम्न में से कौन राजनीतिक दलों को मान्यता देता है ?

(RBSE- 2025 & Model Paper – 2024)

(अ) विधि आयोग (ब) अल्पसंख्यक आयोग
(स) चुनाव आयोग (द) राष्ट्रीय महिला आयोग **(स)**

2. कम्युनिस्ट पार्टी की विशेषता है–*(Model Paper – 2023)*

(अ) सामाजिक असमानता
(ब) आर्थिक सुधार अपनाती है पर राजनीतिक सत्ता पर एकाधिकार बनाए रखती हैं
(स) आर्थिक असमानता
(द) राजतन्त्र का समर्थन **(ब)**

3. कांशीराम ने निम्न में से किस दल का गठन किया?

(RBSE- 2026 & Model Paper – 2024)

(अ) समाजवादी पार्टी
(ब) लोक दल
(स) बहुजन समाज पार्टी
(द) जनता दल **(स)**

4. **भारतीय जनता पार्टी ने निम्न में से किसका नेतृत्व किया?** *(RBSE – 2026)*

(अ) संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन
(ब) राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन
(स) संयुक्त मोर्चा
(द) वाम मोर्चा **(ब)**

5. **निम्न में से कौन–सा दल "राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन" का हिस्सा है ?** *(RBSE – 2025)*

(अ) भारतीय जनता पार्टी
(ब) इण्डियन नेशनल कांग्रेस
(स) कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया
(द) आम आदमी पार्टी **(अ)**

6. **पूर्वोत्तर भारत की पहली राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा किस दल को प्राप्त हुआ?**

(अ) मिजो नेशनल फ्रंट
(ब) असम गण परिषद्
(स) नेशनल पीपुल्स पार्टी
(द) नागा पीपुल्स फ्रंट **(स)**

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **राष्ट्रीय दल और राज्य स्तरीय दल की मान्यता की शर्तों को स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर : 1. देश की प्रत्येक राजनीतिक पार्टी को निर्वाचन आयोग में पंजीकरण कराना पड़ता है।
2. निर्वाचन आयोग सभी राजनीतिक दलों को समान मानता है।
3. बड़े और स्थापित दलों को कुछ विशेष सुविधाएँ दी जाती हैं।
4. मान्यता प्राप्त दल को अलग चुनाव चिह्न मिलता है।
5. इस चिह्न का प्रयोग केवल पार्टी का अधिकृत उम्मीदवार कर सकता है।
6. राज्य स्तरीय दल की मान्यता के लिए विधानसभा चुनाव में कम से कम 6 प्रतिशत मत प्राप्त करना आवश्यक है।
7. इसके साथ उस दल को कम से कम दो विधानसभा सीटें जीतनी होती हैं।
8. राष्ट्रीय दल की मान्यता के लिए लोकसभा चुनाव या चार राज्यों के विधानसभा चुनावों में कुल मतों का कम से कम 6 प्रतिशत प्राप्त करना आवश्यक है।
9. इसके साथ लोकसभा चुनाव में कम से कम चार सीटें जीतना आवश्यक है।

2. **क्षेत्रीय दलों की प्रकृति और उनकी प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।** *(Model Paper – 2023)*

उत्तर : 1. राष्ट्रीय दलों के अतिरिक्त अन्य प्रमुख दलों को निर्वाचन आयोग राज्यीय दल के रूप में मान्यता देता है।
2. इन दलों को सामान्यतः क्षेत्रीय दल कहा जाता है।
3. यह आवश्यक नहीं है कि उनकी विचारधारा या दृष्टिकोण केवल क्षेत्रीय हो।
4. कुछ दलों का संगठन अखिल भारतीय स्तर का होता है।
5. ऐसे दलों को केवल कुछ क्षेत्रों में ही चुनावी सफलता मिलती है।
6. समाजवादी पार्टी और राष्ट्रीय जनता दल की कई राज्यों में इकाइयाँ हैं।
7. बीजू जनता दल अपनी क्षेत्रीय पहचान को लेकर सचेत है।
8. सिक्किम लोकतांत्रिक मोर्चा और मिजो नेशनल फ्रंट की भी स्पष्ट क्षेत्रीय पहचान है।
9. तेलंगाना राष्ट्र समिति भी अपनी क्षेत्रीय पहचान पर जोर देती है।

राजनीतिक दलों के लिए चुनौतियाँ

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **"राजनीतिक दलों के समक्ष वंशवाद एक बड़ी चुनौती है।" इस कथन पर अपना मत स्पष्ट कीजिए।** *(RBSE – 2024)*

अथवा

भारत में राजनीतिक दलों के लिए निम्न चुनौतियों पर अपना मत स्पष्ट कीजिये।

i. पार्टी के भीतर लोकतन्त्र का अभाव ।
ii. वंशवाद की चुनौती । *(RBSE – 2025)*

उत्तर : पार्टी के भीतर लोकतन्त्र का अभाव –

1. राजनीतिक दलों में शक्ति प्रायः एक या कुछ नेताओं के हाथों में केंद्रित हो जाती है।
2. दलों के पास सदस्यों की खुली सूची नहीं होती।
3. नियमित रूप से संगठनात्मक बैठकें नहीं की जातीं।
4. आंतरिक चुनावों का आयोजन भी नहीं होता।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहो, जहाँ चाहो, जैसे चाहो!

5. कार्यकर्ताओं के साथ आवश्यक सूचनाएँ साझा नहीं की जातीं।
6. सामान्य कार्यकर्ता पार्टी के भीतर होने वाली गतिविधियों से अनजान रहता है।
7. वह नेताओं से जुड़कर निर्णयों को प्रभावित नहीं कर पाता।
8. पार्टी के नेता दल के नाम पर सभी निर्णय लेने लगते हैं।
9. नेताओं से असहमति रखने वाले सदस्यों के लिए पार्टी में बने रहना कठिन हो जाता है।
10. पार्टी की नीतियों के स्थान पर नेता के प्रति निष्ठा अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

वंशवाद की चुनौती –

1. वंशवाद की चुनौती आंतरिक लोकतंत्र की कमी से जुड़ी हुई है।
2. अधिकांश दल अपना कार्य पारदर्शी तरीके से नहीं करते।
3. सामान्य कार्यकर्ताओं को नेतृत्व तक पहुँचने के पर्याप्त अवसर नहीं मिलते।
4. कई नेता अपने परिवार के सदस्यों को शक्तिशाली पदों पर पहुँचाते हैं।
5. अनेक दलों में शीर्ष पद एक ही परिवार के सदस्यों के पास रहता है।
6. इससे योग्य और मेहनती कार्यकर्ताओं के अवसर कम हो जाते हैं।
7. अनुभवहीन और बिना जनाधार वाले लोग भी शक्तिशाली पदों पर पहुँच सकते हैं।

2. राजनीतिक दलों में धन और अपराधी तत्वों की बढ़ती भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर : राजनीतिक दलों में धन और अपराधी तत्वों की बढ़ती भूमिका –

1. राजनीतिक दलों की मुख्य चिंता चुनाव जीतने की होती है।
2. चुनाव जीतने के लिए वे कई बार उचित और अनुचित दोनों प्रकार के तरीकों का प्रयोग करते हैं।
3. दल ऐसे उम्मीदवारों को टिकट देते हैं जिनके पास अधिक धन होता है।
4. धन जुटाने में सक्षम उम्मीदवारों को भी प्राथमिकता दी जाती है।
5. अमीर लोग और बड़ी कंपनियाँ राजनीतिक दलों को अधिक धन देती हैं।
6. ये धनदाता पार्टी की नीतियों और निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं।
7. कई बार दल चुनाव जीतने की क्षमता रखने वाले अपराधियों का समर्थन करते हैं।
8. राजनीतिक दल अपराधी तत्वों की सहायता भी लेते हैं।
9. लोकतंत्र समर्थक राजनीति में धनवान लोगों और बड़ी कंपनियों की बढ़ती भूमिका से चिंतित हैं।
10. यह स्थिति निष्पक्ष और लोकतांत्रिक राजनीति के लिए चुनौती बनती है।

दलों को कैसे सुधारा जा सकता है?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. राजनीतिक दलों में सुधार की आवश्यकता क्यों है?

(अ) राजनीतिक दलों की संख्या घटाने के लिए
(ब) राजनीतिक दलों के सामने मौजूद चुनौतियों का सामना करने के लिए
(स) सभी चुनावों को समाप्त करने के लिए
(द) केवल नए दलों का गठन करने के लिए **(ब)**

2. दल–बदल विरोधी कानून का मुख्य उद्देश्य क्या था?

(अ) सांसदों और विधायकों को दल बदलने से रोकना
(ब) चुनावों में मतदान कम करना
(स) राजनीतिक दलों की संख्या बढ़ाना
(द) उम्मीदवारों को संपत्ति छिपाने की अनुमति देना **(अ)**

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. दल–बदल विरोधी कानून की आवश्यकता और उसके प्रभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : 1. सांसदों और विधायकों को दल बदलने से रोकने के लिए संविधान में संशोधन किया गया।
2. निर्वाचित प्रतिनिधियों के दल बदलने की घटनाएँ तेजी से बढ़ रही थीं।
3. कई प्रतिनिधि मंत्री पद के लालच में दल बदलते थे।
4. कुछ प्रतिनिधि पैसे के लोभ में भी दूसरे दल में चले जाते थे।
5. नए कानून के अनुसार दल बदलने वाले सांसद या विधायक को अपनी सीट गँवानी पड़ती है।
6. इस कानून के कारण दल–बदल की घटनाओं में कमी आई है।
7. कानून ने पार्टी नेतृत्व की शक्ति को बढ़ा दिया है।
8. सांसदों और विधायकों को पार्टी नेतृत्व के फैसले मानने पड़ते हैं।

मिशन ज्ञान पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

9. इसके कारण पार्टी के भीतर विरोध का स्वर उठाना कठिन हो गया है।
10. इस प्रकार कानून के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव हैं।

2. भारत में राजनीतिक दलों में सुधार हेतु क्या प्रयास किये गये हैं? किन्हीं तीन सुधारों की विवेचना कीजिए।

(RBSE – 2024 & Model Paper – 2024)

उत्तर : 1. **पहला प्रयास दल**–बदल विरोधी कानून है।
2. इस कानून के अंतर्गत दल बदलने वाले सांसद या विधायक को अपनी सीट गँवानी पड़ती है।
3. **दूसरा प्रयास** उम्मीदवारों के लिए शपथपत्र देना अनिवार्य करना है।
4. शपथपत्र में संपत्ति और आपराधिक मामलों की जानकारी देनी होती है।
5. **तीसरा प्रयास** राजनीतिक दलों के सांगठनिक चुनावों को अनिवार्य करना है।
6. सभी दलों के लिए आयकर रिटर्न भरना भी आवश्यक किया गया है।
7. इन प्रयासों का उद्देश्य राजनीतिक दलों में जवाबदेही और पारदर्शिता बढ़ाना है।
8. इन सुधारों की कुछ सीमाएँ भी हैं।
9 दल–बदल कानून ने पार्टी के भीतर असहमति व्यक्त करना कठिन बनाया है।
10. शपथपत्र की सूचनाओं की सत्यता जाँचने की व्यवस्था नहीं है।
11. सांगठनिक चुनाव कई बार केवल औपचारिकता बनकर रह जाते हैं।

3. दल–बदल विरोधी कानून की प्रमुख सीमा क्या है?

उत्तर : 1. कानून के कारण सांसदों और विधायकों के दल–बदल में कमी आई है।
2. इसके साथ ही पार्टी नेतृत्व की शक्ति बढ़ गई है।
3. निर्वाचित प्रतिनिधियों को पार्टी नेतृत्व के फैसलों का पालन करना पड़ता है।
4. वे पार्टी के निर्णय के विरुद्ध आसानी से आवाज नहीं उठा सकते।
5. असहमति व्यक्त करने की उनकी स्वतंत्रता सीमित हो जाती है।
6. पार्टी के भीतर विरोध का स्वर उठाना कठिन हो गया है।
7. इस प्रकार दल–बदल रोकने वाला कानून आंतरिक बहस को भी कमजोर कर सकता है।

4. राजनीतिक दलों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए क्या सुझाव दिए गए हैं?

उत्तर : 1. राजनीतिक दलों को महिलाओं को न्यूनतम अनुपात में चुनावी टिकट देना चाहिए।
2. टिकटों में महिलाओं का हिस्सा लगभग एक–तिहाई होना चाहिए।
3. यह व्यवस्था सभी राजनीतिक दलों पर लागू की जानी चाहिए।
4. केवल चुनावी टिकट ही नहीं, बल्कि दल के प्रमुख पदों पर भी महिलाओं को स्थान मिलना चाहिए।
5. राजनीतिक दलों के बड़े पदों पर महिलाओं के लिए आरक्षण होना चाहिए।
6. इन उपायों से महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ सकती है।

5. "खराब राजनीति का समाधान ज्यादा और बेहतर राजनीति है" कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 1. राजनीति की कमियों को केवल राजनीति से दूर रहकर समाप्त नहीं किया जा सकता।
2. आम नागरिकों की निष्क्रियता से सुधार करना कठिन हो जाता है।
3. लोगों को लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए।
4. सुधार चाहने वाले लोगों को राजनीतिक दलों में शामिल होना चाहिए।
5. अधिक जन–भागीदारी से राजनीतिक दलों पर जवाबदेही बढ़ती है।
6. सक्रिय नागरिक दलों के निर्णयों और कामकाज को प्रभावित कर सकते हैं।
7. लोकतंत्र की गुणवत्ता लोगों की भागीदारी पर निर्भर करती है।
8. इसलिए खराब राजनीति को अधिक सक्रिय, जिम्मेदार और बेहतर राजनीति से सुधारा जा सकता है।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

5 लोकतंत्र के परिणाम

लोकतंत्र के परिणामों का मूल्यांकन कैसे करें?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निम्नलिखित में से कौन सा लोकतंत्र से बेहतर शासन है? *(RBSE – 2026)*

(अ) राजतंत्र (ब) अधिनायकतंत्र

(स) सैनिक शासन (द) इनमें से कोई नहीं **(द)**

2. लोकतंत्र को शासन की अन्य व्यवस्थाओं से बेहतर क्यों माना गया है?

(अ) यह सभी समस्याएँ तुरंत समाप्त कर देता है

(ब) यह नागरिकों में समानता को बढ़ावा देता है

(स) यह चुनावों को समाप्त कर देता है

(द) यह राजनीतिक दलों पर रोक लगाता है **(ब)**

3. निम्नलिखित में से कौन–सा तत्व अधिकांश लोकतांत्रिक देशों में पाया जाता है?

(अ) वंशानुगत शासन

(ब) औपचारिक संविधान

(स) चुनावों पर पूर्ण रोक

(द) नागरिक अधिकारों का अभाव **(ब)**

4. लोकतंत्र नागरिकों के लिए क्या सकता है?

(अ) उनके सभी लक्ष्य स्वयं प्राप्त कर सकता है

(ब) उन्हें प्रयास करने से रोक सकता है

(स) लक्ष्यों को प्राप्त करने की स्थितियाँ बना सकता है

(द) सभी सामाजिक बुराइयाँ तुरंत मिटा सकता है **(स)**

5. नागरिकों मे समानता को बढ़ावा देने वाली शासन व्यवस्था कौनसी है ? *(Model Paper – 2026)*

(अ) लोकतंत्र (ब) अधिनायक तंत्र

(स) राजतंत्र (द) सैन्य तंत्र **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. लोकतंत्र का सीधे–सीधे अर्थ .... की राय से शासन करना नहीं है। *(Model Paper – 2026)*

उत्तर : जनता

2. लोकतंत्र व्यक्ति की .... को बढ़ाता है।

उत्तर : गरिमा

3. लोकतांत्रिक व्यवस्था .... समानता पर आधारित होती है। *(Model Paper – 2026)*

उत्तर : राजनीतिक (Political)

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. "लोकतन्त्र" को आप सबसे बेहतर क्यों मानते है ? कारण बताइये। *(RBSE – 2025)*

उत्तर : 1. यह नागरिकों में समानता को बढ़ावा देता है।

2. यह व्यक्ति की गरिमा को बढ़ाता है।

3. यह फैसलों में बेहतरी लाता है।

2. आपके मतानुसार, लोकतन्त्र के लिये कोई दो आवश्यक स्थितियाँ लिखिये *(RBSE – 2025)*

उत्तर : 1. लोगों का शासक चुनने और उस पर नियंत्रण रखने का अधिकार।

2. नियमित और निष्पक्ष चुनाव लोकतांत्रिक शासन की गुणवत्ता का एक प्रमुख पैमाना हैं।

3. सभी लोकतांत्रिक देशों के परिणाम एक जैसे क्यों नहीं होते?

उत्तर : क्योंकि उनकी सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियाँ अलग होती हैं।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. लोकतंत्र को शासन की अन्य व्यवस्थाओं से बेहतर मानने के कोई तीन कारण लिखिए।

उत्तर : 1. यह नागरिकों में समानता को बढ़ावा देता है।

2. यह व्यक्ति की गरिमा को बढ़ाता है।

3. यह फैसलों में बेहतरी लाता है।

4. यह टकरावों को टालने और सँभालने का तरीका देता है।

5. इसमें गलतियों को सुधारने की गुंजाइश होती है।

2. लोकतंत्र के परिणामों पर गहराई से विचार करना क्यों जरूरी है?

उत्तर : 1. लोकतंत्र के सिद्धांत और व्यवहार में अंतर दिखाई दे सकता है।
2. लोगों की सभी अपेक्षाएँ पूरी नहीं होतीं।
3. यह समझना जरूरी है कि लोकतंत्र की वास्तविक क्षमताएँ क्या हैं।
4. लोकतंत्र के समर्थन में नैतिक और युक्तिपरक कारणों की जाँच की जा सकती है।

3. लोकतंत्र के परिणामों का उचित मूल्यांकन कैसे किया जा सकता है?

उत्तर : 1. लोकतंत्र से की जाने वाली उचित अपेक्षाओं को पहचाना जाए।
2. उसके वास्तविक कामकाज और रिकॉर्ड की जाँच की जाए।
3. अलग–अलग देशों की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियों को ध्यान में रखा जाए।
4. उसकी उपलब्धियों के साथ उसकी सीमाओं को भी समझा जाए।
5. यह देखा जाए कि नागरिक लोकतांत्रिक अवसरों का उपयोग किस प्रकार करते हैं।

उत्तरदायी, ज़िम्मेवार और वैध शासन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. लोकतंत्र में सबसे बड़ी चिंता क्या होती है?
(अ) सरकार का तेजी से फैसले लेना
(ब) लोगों का शासक चुनने और उस पर नियंत्रण रखने का अधिकार
(स) विधायिका को समाप्त करना
(द) सार्वजनिक चर्चा को सीमित करना **(ब)**

2. निम्नांकित में से किस शासन प्रणाली में उत्तरदायी सरकार का गठन होता है– *(Model Paper – 2025)*
(अ) लोकतंत्र (ब) राजतंत्र
(स) तानाशाही (द) ये सभी **(अ)**

3. लोकतंत्र में कामकाज मुख्यत किसके आधार पर चलता है?
(अ) बल प्रयोग और दंड
(ब) आदेश और प्रतिबंध
(स) बातचीत और मोलतोल
(द) गुप्त फैसलों **(स)**

4. लोकतांत्रिक सरकार से किस प्रकार के व्यवहार की उम्मीद की जाती है?
(अ) वह नियमों की उपेक्षा करे
(ब) वह जनता के प्रति जवाबदेह हो
(स) वह नागरिकों को निर्णय प्रक्रिया से दूर रखे
(द) वह सभी सूचनाएँ गुप्त रखे **(ब)**

5. लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ किस मामले में अधिक सफल रही हैं?
(अ) प्रत्येक फैसले पर सार्वजनिक बहस कराने में
(ब) सभी नागरिकों से सूचनाएँ छिपाने में
(स) नियमित और निष्पक्ष चुनाव कराने में
(द) भ्रष्टाचार को पूरी तरह समाप्त करने में **(स)**

6. लोकतांत्रिक शासन निश्चित रूप से अन्य शासनों से किस मामले में बेहतर है?
(अ) फैसलों की गति में
(ब) भ्रष्टाचार समाप्त करने में
(स) वैध शासन प्रदान करने में
(द) सभी माँगें पूरी करने में **(स)**

रिक्तस्थान –

1. .... शासन प्रणाली में अंतिम शक्ति जनता में निहित होती है।
उत्तर : लोकतांत्रिक

2. लोगों को .... प्रक्रिया में भागीदारी करने में सक्षम होना चाहिए।
उत्तर : निर्णय

3. सरकारी फैसलों की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त करने की व्यवस्था को .... कहते हैं।
उत्तर : पारदर्शिता

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. किस प्रकार के शासन को अच्छा शासन माना जाता है– *(Model Paper – 2026)*
उत्तर : जो लोकतांत्रिक, उत्तरदायी और जनहितैषी हो।

2. लोकतंत्र के कोई दो लाभ बताइए। *(Model Paper – 2023)*
उत्तर : 1. उत्तरदायी और वैध शासन,
2. समानता और गरिमा को बढ़ावा

3. पारदर्शिता क्या है?
उत्तर : फैसलों और उनकी प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त करने की व्यवस्था।

4. लोकतांत्रिक शासन को वैध क्यों माना जाता है?
उत्तर : क्योंकि यह लोगों द्वारा चुना गया शासन होता है।

5. लोकतंत्र की समर्थन प्राप्त करने की क्षमता किसका उदाहरण है?
उत्तर : लोकतंत्र के एक परिणाम का।

मिशन ज्ञान
पढ़ो आप चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

6. लोकतंत्र की दो चुनौतियाँ लिखिए।

(Model Paper – 2023)

उत्तर : गरीबी और आर्थिक असमानता
गलत सूचना और संस्थाओं का क्षरण

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. आप लोकतन्त्र को उत्तरदायी, जिम्मेदार और वैध शासन मानते है। क्यों? संक्षेप में बताइये। *(RBSE – 2023)*

उत्तर : उत्तरदायी, जिम्मेदार शासन –

1. लोगों को अपना शासक चुनने का अधिकार मिलता है।
2. लोग शासकों पर नियंत्रण रख सकते हैं।
3. नागरिक निर्णय प्रक्रिया में भाग ले सकते हैं।
4. सरकार लोगों की जरूरतों और उम्मीदों पर ध्यान देती है।
5. सरकार अपने फैसलों के लिए जनता के प्रति जवाबदेह होती है।

वैध शासन –

1. यह लोगों द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों का शासन होता है।
2. इसे जनता की स्वीकृति प्राप्त होती है।
3. लोग इसे अपनी शासन व्यवस्था मानते हैं।
4. यह जनता की इच्छा के आधार पर बनता है।
5. इसकी वैधता चुनाव और जनसमर्थन से आती है।

2. कुछ लोग लोकतांत्रिक सरकारों को कम प्रभावी क्यों मानते हैं?

उत्तर : 1. लोकतंत्र में बातचीत और मोलतोल के आधार पर काम होता है।
2. फैसलों से पहले विभिन्न नज़रियों का ध्यान रखा जाता है।
3. सरकार को विधायिका का सामना करना पड़ता है।
4. आवश्यक प्रक्रियाओं को पूरा करने में समय लगता है।
5. इससे फैसले लेने की गति धीमी दिखाई दे सकती है।

3. अलोकतांत्रिक सरकारें तेजी से फैसले कैसे ले सकती हैं?

उत्तर : 1. उन्हें विधायिका की स्वीकृति की आवश्यकता नहीं होती।
2. वे बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक नजरियों की उपेक्षा कर सकती हैं।
3. उन्हें विस्तृत सार्वजनिक चर्चा नहीं करनी पड़ती।
4. वे आवश्यक लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को पूरा किए बिना फैसला ले सकती हैं।

4. लोकतंत्र और भ्रष्टाचार के संबंध को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 1. लोकतांत्रिक सरकार से भ्रष्टाचार–मुक्त शासन की अपेक्षा की जाती है।
2. लोकतांत्रिक व्यवस्था भ्रष्टाचार से पूरी तरह मुक्त नहीं है।
3. भ्रष्टाचार के सामान्य उदाहरण इस कमजोरी को दिखाते हैं।
4. लोकतांत्रिक सरकारों का रिकॉर्ड इस क्षेत्र में प्रभावशाली नहीं रहा है।
5. यह कहने का आधार नहीं है कि गैर–लोकतांत्रिक सरकारें कम भ्रष्ट होती हैं।

5. लोकतांत्रिक शासन की कमियाँ होने के बावजूद लोग उसका समर्थन क्यों करते हैं?

उत्तर : 1. लोकतंत्र लोगों को अपना शासक चुनने का अधिकार देता है।
2. यह लोगों की अपनी शासन व्यवस्था होती है।
3. नागरिक सरकार पर नियंत्रण रख सकते हैं।
4. लोगों को चुने हुए प्रतिनिधियों का शासन अधिक स्वीकार्य लगता है।
5. वे लोकतंत्र को अपने देश के लिए उपयुक्त मानते हैं।

आर्थिक संवृद्धि और विकास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निम्नलिखित में से कौन–सा आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाला कारक नहीं बताया गया है?

(अ) वैश्विक स्थिति
(ब) अन्य देशों से सहयोग
(स) आर्थिक प्राथमिकताएँ
(द) राजनीतिक भाषणों की संख्या **(द)**

रिक्तस्थान –

1. आर्थिक संवृद्धि के मामले में .... का रिकॉर्ड थोड़ा बेहतर था।

उत्तर : तानाशाहियों

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. लोकतंत्र की कोई दो आर्थिक उपलब्धियां बताइयें।

(Model Paper – 2024)

उत्तर : आर्थिक विकास और समृद्धि।
आर्थिक असमानता और गरीबी में कमी।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. लोकतन्त्र में आर्थिक संवृद्धि और विकास की स्थिति का विश्लेषण कीजिये। *(RBSE – 2026)*

उत्तर : 1. तानाशाही का रिकॉर्ड केवल थोड़ा बेहतर बताया गया है।

2. गरीब देशों की तुलना में दोनों व्यवस्थाओं का अंतर नगण्य है।

3. शासन व्यवस्था का मूल्यांकन केवल विकास दर से नहीं किया जा सकता।

1. आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले कारकों

- देश की जनसंख्या का आकार।
- देश की वैश्विक स्थिति।
- अन्य देशों से मिलने वाला सहयोग।

2. आर्थिक विकास दर में अंतर के बावजूद लोकतंत्र बेहतर विकल्प

- उसका मूल्य केवल आर्थिक संवृद्धि से तय नहीं होता।
- लोकतंत्र का संबंध लोगों के गहरे मूल्यों से है।
- आर्थिक प्रदर्शन शासन व्यवस्था के मूल्यांकन का केवल एक आधार है।

2. लोकतांत्रिक शासन में आर्थिक असमानता किस प्रकार बनी रह सकती है?

उत्तर : 1. राष्ट्रीय आय का बड़ा हिस्सा ऊपरी आय–वर्ग के पास केंद्रित हो सकता है।

2. गरीब वर्ग को आय का बहुत छोटा हिस्सा मिल सकता है।

3. गरीब लोगों के सामने अवसरों की असमानता बनी रह सकती है।

4. लोकतंत्र आय के समान वितरण की स्वतः गारंटी नहीं देता।

5. विभिन्न लोकतांत्रिक देशों का आर्थिक प्रदर्शन अलग–अलग हो सकता है।

असमानता और गरीबी में कमी तथा सामाजिक विविधताओं में सामंजस्य

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. लोकतांत्रिक व्यवस्था मुख्य रूप से किस समानता पर आधारित होती है?

(अ) राजनीतिक समानता (ब) आर्थिक समानता

(स) सांस्कृतिक समानता (द) संपत्ति की समानता **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. भोजन, कपड़ा, मकान, शिक्षा और इलाज .... जरूरतें हैं।

उत्तर : बुनियादी

2. बहुमत का शासन धार्मिक, नस्लीय या .... बहुसंख्यक समूह का शासन नहीं होता।

उत्तर : भाषायी

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. लोकतन्त्र में बहुमत से किसका सम्मान करने की अपेक्षा की जाती है ? *(RBSE – 2025)*

उत्तर : आर्थिक असमानता को कम करना।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. लोकतंत्र में सामाजिक विविधताओं के सामंजस्य हेतु किन शर्तों को पूरा किया जाना आवश्यक है ? किन्हीं दो शर्तों को स्पष्ट कीजिए। *(RBSE – 2024)*

उत्तर : 1. बहुमत को अल्पमत के हितों का ध्यान रखना चाहिए।

2. बहुमत और अल्पमत को मिलकर काम करना चाहिए।

3. प्रत्येक नागरिक को बहुमत का हिस्सा बनने का मौका मिलना चाहिए।

4. किसी व्यक्ति को जन्म के आधार पर बाहर नहीं रखा जाना चाहिए।

5. विभिन्न समूहों को फैसलों और चुनावों में भागीदारी का अवसर मिलना चाहिए।

2. राजनीतिक समानता और आर्थिक असमानता के बीच विरोधाभास स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 1. लोकतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति को समान राजनीतिक दर्जा मिलता है।

2. चुनाव में हर व्यक्ति के मत का समान महत्त्व होता है।

3. इसके बावजूद आय और संपत्ति का बड़ा भाग थोड़े से धनवान लोगों के पास रहता है।

4. गरीब लोगों को जीवन–यापन के लिए बहुत कम साधन मिलते हैं।

5. इस प्रकार राजनीतिक समानता के साथ आर्थिक असमानता बढ़ सकती है।

3. लोकतंत्र को समावेशी बनाए रखने की आवश्यक शर्तें लिखिए।

उत्तर : 1. बहुमत को अल्पमत के हितों का ध्यान रखना चाहिए।

2. बहुमत और अल्पमत को मिलकर काम करना चाहिए।

3. प्रत्येक नागरिक को बहुमत का हिस्सा बनने का मौका मिलना चाहिए।

4. किसी व्यक्ति को जन्म के आधार पर बाहर नहीं रखा जाना चाहिए।

5. विभिन्न समूहों को फैसलों और चुनावों में भागीदारी का अवसर मिलना चाहिए।

मिशन ज्ञान
पढ़ें अब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

नागरिकों की गरिमा और आज़ादी

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. लोकतंत्र का आधार क्या है?

(अ) आर्थिक संवृद्धि की चाह

(ब) गरिमा और आज़ादी की चाह

(स) एक ही दल का शासन

(द) एक ही दल का शासन **(ब)**

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. महिलाएँ गलत व्यवहारों के विरुद्ध किन दो आधारों पर संघर्ष कर सकती हैं?

उत्तर : वैधानिक और नैतिक आधार पर।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. "लोकतन्त्र में नागरिकों की गरिमा व आजादी में वृद्धि होती है।" इस कथन का विश्लेषण कीजिये । *(RBSE – 2026)*

उत्तर : 1. प्रत्येक व्यक्ति सम्मानपूर्ण व्यवहार चाहता है।

2. सम्मान न मिलने से टकराव पैदा हो सकते हैं।

3. गरिमा और स्वतंत्रता की इच्छा लोकतंत्र का आधार है।

4. लोकतंत्र इन मूल्यों को कम–से–कम सिद्धांत में स्वीकार करता है।

5. इस मामले में लोकतंत्र अन्य शासन प्रणालियों से आगे है।

2. महिलाओं की स्थिति लोकतांत्रिक और अलोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में किस प्रकार अलग होती है?

उत्तर : 1. लोकतंत्र महिलाओं की गरिमा और समानता को सिद्धांततः स्वीकार करता है।

2. महिलाएँ अन्याय के विरुद्ध कानूनी संघर्ष कर सकती हैं।

3. उन्हें अपने अधिकारों के पक्ष में नैतिक आधार मिलता है।

4. अलोकतांत्रिक व्यवस्था में व्यक्तिगत स्वतंत्रता को वैधानिक मान्यता नहीं मिलती।

5. वहाँ व्यक्ति की गरिमा को नैतिक आधार भी प्राप्त नहीं होता।

3. जातिगत भेदभाव बने रहने के बावजूद लोकतंत्र की उपलब्धि क्या है?

उत्तर : 1. जातिगत भेदभाव को उचित नहीं माना जाता।

2. उसके पक्ष में कानूनी बल नहीं होता।

3. उसे नैतिक समर्थन भी प्राप्त नहीं होता।

4. भेदभाव से प्रभावित लोग समान दर्जे की माँग कर सकते हैं।

5. वे समान अवसर के लिए लोकतांत्रिक अधिकारों का उपयोग कर सकते हैं।

4. लोकतन्त्र को पुर्नपरिमाषित करने के लिये इसमें जोड़ने के कोई दो बिन्दु बताइये। इसलिए मतदान नागरिकों के लिए महत्त्वपूर्ण लोकतांत्रिक साधन है। *(RBSE – 2023)*

उत्तर : 1. नागरिकों की सक्रिय भागीदारीरू लोकतंत्र केवल चुनाव में मतदान करने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि जनता को शासन और नीति–निर्माण (जैसे जनसुनवाई, ग्राम सभा) में निरंतर सक्रिय रूप से भाग लेना चाहि

2. समानता और सामाजिक–आर्थिक न्यायरू सभी नागरिकों को जाति, धर्म, लिंग या आर्थिक स्थिति के भेदभाव के बिना समान अवसर मिलने चाहिए, जिससे वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना हो।

मतदान का महत्व–

1. मतदान नागरिकों के लिए सबसे महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक साधन है क्योंकि इसके माध्यम से जनता अपने प्रतिनिधि चुनती है और सत्ता पर अपना नियंत्रण रखती है।

2. यह नागरिकों को सरकार की नीतियों को दिशा देने और आवश्यकता पड़ने पर शांतिपूर्ण तरीके से सत्ता बदलने का अधिकार प्रदान करता है।

मिशन ज्ञान पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें

आर्थिक विकास की समझ

1 विकास

विकास क्या है?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. विकास का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?

(अ) केवल आय बढ़ाना

(ब) जीवन को बेहतर बनाना

(स) केवल उद्योग बढ़ाना

(द) केवल व्यापार बढ़ाना **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. अलग–अलग लोगों के लिए विकास के लक्ष्य .... हो सकते हैं।

उत्तर : अलग–अलग

2. विकास का अर्थ केवल अधिक .... प्राप्त करना नहीं है।

उत्तर : आय

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. एक भूमिहीन ग्रामीण मजदूर के विकास के किन्हीं दो लक्ष्यों का उल्लेख कीजिए। *(RBSE – 2023)*

उत्तर : भूमिहीन ग्रामीण मजदूर के विकास के लक्ष्य हैं–

1. काम करने के अधिक दिन और बेहतर मजदूरी।
2. उनके बच्चों को स्थानीय स्कूल में उत्तम शिक्षा मिलना।

इसके अलावा सामाजिक भेदभाव न होना और गाँव में नेतृत्व का अवसर मिलना भी उनके विकास के लक्ष्य हो सकते हैं।

2. एक व्यक्ति का विकास दूसरे के लिए हानिकारक कैसे हो सकता है?

उत्तर : यदि कोई उद्योगपति कारखाना लगाकर लाभ कमाता है, लेकिन उससे किसानों की जमीन छिन जाती है या प्रदूषण फैलता है, तो यह किसानों और स्थानीय लोगों के लिए हानिकारक हो सकता है।

आय और अन्य लक्ष्य

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भूमिहीन ग्रामीण मजदूर के लिए विकास का मुख्य लक्ष्य क्या हो सकता है?

(अ) अधिक मजदूरी और अधिक काम के दिन

(ब) महँगी मशीनें

(स) विदेशी व्यापार

(द) बड़ी फैक्ट्री **(अ)**

2. राष्ट्रीय विकास का अर्थ है–

(अ) केवल अमीरों का विकास

(ब) पूरे देश का विकास

(स) केवल उद्योगों का विकास

(द) केवल शहरों का विकास **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. राष्ट्रीय विकास में सभी वर्गों के .... का ध्यान रखा जाता है।

उत्तर : हितों

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. आय के अलावा लोग विकास के लिए क्या चाहते हैं?

उत्तर : लोग आय के अलावा सम्मान, सुरक्षा, स्वतंत्रता, समान व्यवहार, अच्छी शिक्षा, अच्छा स्वास्थ्य और प्रदूषण–मुक्त वातावरण चाहते हैं।

2. आर्थिक विकास क्या है? प्रति व्यक्ति आय और राष्ट्रीय आय की परिभाषा लिखो।

(Model Paper - 2023; RBSE - 2023)

उत्तर : आर्थिक विकास को आय से मापा जा सकता है, लेकिन विकास के लिए केवल आय पर्याप्त नहीं है। जीवन की गुणवत्ता, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और सम्मान भी जरूरी हैं।

राष्ट्रीय आय : किसी देश के सभी निवासियों की कुल आय को राष्ट्रीय आय कहा जाता है।

प्रति व्यक्ति आय : देश की कुल आय को उसकी कुल जनसंख्या से भाग देने पर प्राप्त आय को प्रति व्यक्ति आय या औसत आय कहते हैं।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

Trick आय + जीवन की गुणवत्ता + शिक्षा + स्वास्थ्य + सुरक्षा + सम्मान = वास्तविक विकास

Trick राष्ट्र के सभी निवासियों की आय = राष्ट्रीय आय

औसत आय / प्रतिव्यक्ति आय

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. प्रति व्यक्ति आय का सूत्र क्या है?

(अ) कुल आय × जनसंख्या

(ब) कुल आय ÷ कुल जनसंख्या

(स) जनसंख्या ÷ कुल आय

(द) कुल आय + जनसंख्या **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. भारत में प्रति व्यक्ति आय वाले राज्यों में .... की आय सबसे अधिक है। *(RBSE – 2022)*

उत्तर : हरियाणा *(वर्तमान में : सिक्किम और गोवा)*

2. औसत आय को .... आय भी कहते हैं। *(Model Paper-2023; RBSE – 2023)*

उत्तर : प्रति व्यक्ति

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. औसत आय क्या है?

उत्तर : किसी देश की कुल आय को उसकी कुल जनसंख्या से भाग देने पर औसत आय प्राप्त होती है। इसे प्रति व्यक्ति आय भी कहते हैं।

2. प्रति व्यक्ति आय का सूत्र लिखिए।

उत्तर : प्रति व्यक्ति आय = कुल आय ÷ कुल जनसंख्या

विश्व बैंक का विकास मापदंड

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. विश्व बैंक देशों की तुलना मुख्य रूप से किस आधार पर करता है?

(अ) क्षेत्रफल (ब) जनसंख्या

(स) प्रति व्यक्ति आय (द) सैन्य शक्ति **(स)**

रिक्तस्थान –

1. विश्व बैंक देशों की तुलना मुख्य रूप से .... आय के आधार पर करता है।

उत्तर : प्रति व्यक्ति

2. अधिक औसत आय वाला देश सामान्यतः अधिक .... माना जाता है।

उत्तर : विकसित

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. विश्व बैंक के अनुसार विकास के आधार पर देशों की तुलना के लिए किस मापदंड का प्रयोग किया जाता है? *(Model Paper - 2025)*

उत्तर : प्रति व्यक्ति आय।

विश्व बैंक देशों का वर्गीकरण प्रतिव्यक्ति आय के आधार पर करता है। लेकिन इसकी सीमा यह है कि इससे आय के वितरण, शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता की पूरी जानकारी नहीं मिलती।

2. विश्व बैंक देशों का वर्गीकरण किस आधार पर करता है?

उत्तर : विश्व बैंक देशों का वर्गीकरण मुख्य रूप से प्रति व्यक्ति आय के आधार पर करता है।

आय और अन्य मापदंड/सार्वजनिक सुविधाएँ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निम्नलिखित में से कौन–सा गैर–आय संकेतक है?

(अ) प्रति व्यक्ति आय (ब) साक्षरता दर

(स) कुल आय (द) मजदूरी **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. विकास के लिए आय के साथ–साथ शिक्षा और .... भी जरूरी हैं।

उत्तर : स्वास्थ्य

2. सड़क, विद्यालय और अस्पताल .... सुविधाओं के उदाहरण हैं।

उत्तर : सार्वजनिक

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. सरकार हमें कौन–कौन सी सार्वजनिक सुविधाएँ उपलब्ध करवाती है? कोई दो सुविधाओं का वर्णन कीजिए। *(RBSE - 2025)*

उत्तर : सार्वजनिक सुविधाएँ वे सुविधाएँ हैं जो सरकार या समाज द्वारा सभी लोगों के लिए उपलब्ध कराई जाती हैं।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें।

उदाहरण –

1. स्वास्थ्य सुविधाएँ – ये लोगों को स्वस्थ जीवन जीने में सहायता करती हैं।
2. शिक्षा सुविधाएँ – ये साक्षरता और जीवन–स्तर को बेहतर बनाती हैं।

इसके अलावा सार्वजनिक वितरण प्रणाली और सुरक्षित पेयजल भी सार्वजनिक सुविधाएँ हैं।

2. शिशु मृत्यु दर से आप क्या समझते हैं? *(RBSE - 2024)*

उत्तर : ***शिशु मृत्यु दर :*** किसी वर्ष में प्रति एक हजार जीवित जन्मों पर एक वर्ष की आयु पूरी करने से पहले मरने वाले बच्चों की संख्या को शिशु मृत्यु दर कहते हैं।

सूत्र

शिशु मृत्यु दर

$$\frac{\text{एक वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु संख्या}}{\text{उसी वर्ष के जीवित जन्मों की कुल संख्या}} \times 1000$$

मानव विकास रिपोर्ट / मानव विकास सूचकांक

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. मानव विकास सूचकांक में मुख्य रूप से कौन–से संकेतक शामिल होते हैं?

(अ) स्वास्थ्य, शिक्षा और आय
(ब) केवल आय
(स) केवल जनसंख्या
(द) केवल क्षेत्रफल **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. विकास के लिए आय के साथ–साथ शिक्षा और .... भी जरूरी हैं।

उत्तर : स्वास्थ्य

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. यूएनडीपी द्वारा प्रकाशित मानव विकास रिपोर्ट में देशों की तुलना किस आधार पर की गई है? किन्हीं दो का उल्लेख कीजिए। *(RBSE - 2026)*

उत्तर : मानव विकास रिपोर्ट देशों की तुलना केवल आय के आधार पर नहीं, बल्कि जीवन की गुणवत्ता के आधार पर करती है। इसके मुख्य आधार हैं–

1. आय
2. स्वास्थ्य / जीवन प्रत्याशा

2. यूएनडीपी द्वारा प्रकाशित मानव विकास रिपोर्ट देशों की तुलना किस आधार पर करती है?

(Model Paper - 2026)

उत्तर : UNDP की मानव विकास रिपोर्ट देशों की तुलना आय, स्वास्थ्य / जीवन प्रत्याशा और शिक्षा के आधार पर करती है। यह केवल आय वाले मापदंड से अधिक व्यापक है।

3. UNDP मानव विकास रिपोर्ट देशों की तुलना शैक्षिक स्तर, ... और प्रति व्यक्ति आय के आधार पर करती है।

(RBSE - 2023)

उत्तर : स्वास्थ्य / जीवन प्रत्याशा।

4. मानव विकास रिपोर्ट किसके द्वारा प्रकाशित की जाती है?

(Model Paper - 2023; RBSE - 2023)

उत्तर : मानव विकास रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम यानी UNDP द्वारा प्रकाशित की जाती है।

5. मानव विकास सूचकांक के कोई दो घटक लिखिए।

(RBSE - 2022)

उत्तर : मानव विकास सूचकांक के घटक हैं–

1. आय।
2. स्वास्थ्य / जीवन प्रत्याशा।

धारणीयता / सतत विकास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. स्थायी विकास का अर्थ है–

(अ) वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करना और भविष्य की पीढ़ियों का ध्यान रखना
(ब) केवल वर्तमान पीढ़ी का विकास
(स) प्राकृतिक संसाधनों को समाप्त करना
(द) अधिक प्रदूषण करना **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. स्थायी विकास में वर्तमान आवश्यकताओं के साथ .... पीढ़ियों का भी ध्यान रखा जाता है।

उत्तर : भविष्य की

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

2. प्राकृतिक संसाधनों का समझदारी से उपयोग करना .... विकास के लिए जरूरी है।

उत्तर : स्थायी

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. सतत् पोषणीय विकास पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(Model Paper, 2026, RBSE - 2026, Model Paper, 2024, RBSE - 2022)

उत्तर : सतत् पोषणीय विकास में वर्तमान आवश्यकताएँ पूरी की जाती हैं, लेकिन भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को हानि नहीं पहुँचाई जाती। इसके लिए भूजल, जंगल, मिट्टी, जल और तेल जैसे संसाधनों का सावधानी से उपयोग आवश्यक है।

> **Trick** वर्तमान का विकास + भविष्य की रक्षा = सतत् पोषणीय विकास

प्राकृतिक संसाधन, तेल संसाधन और पर्यावरण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सार्वजनिक सुविधा का उदाहरण है–

(अ) निजी कार (ब) सरकारी विद्यालय
(स) निजी मकान (द) आभूषण **(ब)**

2. भूजल का अत्यधिक उपयोग किस समस्या को जन्म दे सकता है?

(अ) भूजल स्तर में कमी
(ब) वर्षा में वृद्धि
(स) जंगलों में वृद्धि
(द) आय में तुरंत वृद्धि **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. सड़क, विद्यालय और अस्पताल .... सुविधाओं के उदाहरण हैं।

उत्तर : सार्वजनिक

2. पेट्रोलियम एक .... संसाधन है।

उत्तर : अनवीकरणीय

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. कल्पना करें कि तेल संसाधन खत्म होने पर इनका हमारी जीवन शैली पर क्या प्रभाव होगा?

उत्तर : कच्चा तेल सीमित संसाधन है। यदि तेल संसाधन समाप्त हो जाएँ तो ऊर्जा, परिवहन और उत्पादन प्रभावित होंगे। तेल की कमी से कीमतें बढ़ेंगी और लोगों पर आर्थिक भार पड़ेगा। इसलिए ऊर्जा के वैकल्पिक साधन और संसाधनों का संरक्षण आवश्यक है।

2. पर्यावरण में गिरावट के कुछ उदाहरण लिखिए।

(Model Paper - 2025)

उत्तर : पर्यावरण में गिरावट के उदाहरण हैं–

1. जल प्रदूषण
2. स्वच्छ वातावरण की कमी
3. भूजल स्तर का घटना
4. जंगलों और मिट्टी का क्षरण

विकास की धारणीयता के लिए इन समस्याओं पर ध्यान देना जरूरी है।

2 भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक

आर्थिक गतिविधियाँ एवं क्षेत्रक

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. रेलवे तथा डाकघर किस क्षेत्रक के उदाहरण हैं? *(RBSE - 2026)*

(अ) प्राथमिक (ब) द्वितीयक
(स) तृतीयक (द) कृषि **(स)**

रिक्तस्थान –

1. एक वस्तु का प्राकृतिक संसाधनों से उत्पादन .... क्षेत्रक की गतिविधि है। *(Model Paper - 2025)*

उत्तर : प्राथमिक

2. .... क्षेत्रक को कृषि एवं संबंधित क्षेत्रक भी कहा जाता है। *(RBSE - 2025)*

उत्तर : प्राथमिक क्षेत्रक

3. तृतीयक क्षेत्रक को .... भी कहा जाता है। *(RBSE - 2024)*

उत्तर : सेवा क्षेत्रक

4. भारत में सर्वाधिक रोजगार प्रदान करने वाला क्षेत्रक .... क्षेत्रक है। *(RBSE - 2022)*

उत्तर : प्राथमिक क्षेत्रक *(वर्तमान में : तृतीयक क्षेत्रक)*

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. प्राथमिक क्षेत्रक से आप क्या समझते हैं? *(RBSE – 2023)*

उत्तर : वह क्षेत्रक जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का प्रत्यक्ष उपयोग करके वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है, प्राथमिक क्षेत्रक कहलाता है।

2. प्राथमिक क्षेत्रक में कौन–कौन सी गतिविधियाँ आती हैं? *(RBSE – 2022)*

उत्तर : कृषि, पशुपालन, मत्स्य पालन, वानिकी और खनन।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. जीविका के लिए लोग विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं। उन्हें विभिन्न क्षेत्रकों में वर्गीकृत कीजिए। *(Model Paper - 2026)*

उत्तर : प्राथमिक – कृषि, मत्स्य पालन
द्वितीयक – उद्योग, निर्माण
तृतीयक – बैंक, परिवहन, शिक्षा

प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रक

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. एक वस्तु का अधिकांशतः प्राकृतिक प्रक्रिया से उत्पादन किस क्षेत्र की गतिविधि है? *(Model Paper - 2024)*

(अ) प्राथमिक (ब) द्वितीयक
(स) तृतीयक (द) उपर्युक्त सभी **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. कृषि एवं पशुपालन .... क्षेत्रक के अंतर्गत आते हैं।

उत्तर : प्राथमिक

2. बैंक, परिवहन एवं संचार .... क्षेत्रक के उदाहरण हैं।

उत्तर : तृतीयक

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. द्वितीयक क्षेत्रक किसे कहते हैं?

उत्तर : वह क्षेत्रक जिसमें कच्चे माल से वस्तुओं का निर्माण किया जाता है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. प्राथमिक क्षेत्रक को कृषि एवं संबंधित क्षेत्रक क्यों कहा जाता है?

उत्तर : इसमें कृषि, पशुपालन, वानिकी, मत्स्य पालन तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित गतिविधियाँ शामिल होती हैं।

2. विभिन्न क्षेत्रकों की परस्पर निर्भरता उदाहरण सहित समझाए।

उत्तर : किसान गन्ना उगाता है (प्राथमिक), चीनी मिल उससे चीनी बनाती है (द्वितीयक), फिर परिवहन और व्यापार के माध्यम से चीनी बाजार तक पहुँचती है (तृतीयक)। इस प्रकार तीनों क्षेत्रक एक–दूसरे पर निर्भर हैं।

Trick

किसान उगाए, मिल बनाए,
व्यापारी बाजार पहुँचाए

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

तीनों क्षेत्रकों की तुलना एवं परस्पर निर्भरता

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. तीनों क्षेत्रकों में सबसे पहले कच्चा माल कौन उपलब्ध कराता है?

(अ) प्राथमिक क्षेत्रक (ब) द्वितीयक क्षेत्रक

(स) तृतीयक क्षेत्रक (द) सार्वजनिक क्षेत्रक **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. तीनों क्षेत्रक एक–दूसरे पर .... होते हैं।

उत्तर : निर्भर

2. तीनों क्षेत्रकों के संतुलित विकास से .... का विकास होता है।

उत्तर : अर्थव्यवस्था

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. तृतीयक क्षेत्रक का मुख्य कार्य क्या है?

उत्तर : सेवाएँ प्रदान करना।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रकों की तुलना कीजिए।

उत्तर : प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रकों की तुलना–

प्राथमिक	द्वितीयक	तृतीयक
कच्चा माल उपलब्ध कराता है	वस्तुओं का निर्माण करता है	सेवाएँ प्रदान करता है
कृषि, खनन	उद्योग, कारखाने	बैंक, परिवहन, शिक्षा

2. तृतीयक क्षेत्रक अन्य दोनों क्षेत्रकों की सहायता कैसे करता है?

उत्तर :
- परिवहन की सुविधा देता है।
- बैंक ऋण उपलब्ध कराते हैं।
- संचार सेवाएँ उपलब्ध होती हैं।
- बीमा और विपणन की सेवाएँ प्रदान करता है।

सकल घरेलू उत्पाद

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. GDP की गणना किस अवधि के लिए की जाती है?

(अ) एक माह (ब) छह माह

(स) एक वर्ष (द) पाँच वर्ष **(स)**

रिक्तस्थान –

1. GDP की गणना भारत में .... द्वारा की जाती है।

उत्तर : राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO)

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. सकल घरेलू उत्पाद को परिभाषित कीजिए।

(Model Paper - 2026, Model Paper - 2024, Model Paper - 2022,)

उत्तर : किसी देश की भौगोलिक सीमा के भीतर एक निश्चित वर्ष में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के कुल मौद्रिक मूल्य को सकल घरेलू उत्पाद (GDP) कहते हैं।

Trick — **देश की सीमा में, एक साल का अंतिम माल–सेवा का कुल दाम** = GDP

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. GDP की गणना में केवल अंतिम वस्तुओं को ही क्यों शामिल किया जाता है? *(RBSE - 2026)*

उत्तर :
- दोहरी गणना से बचने के लिए।
- मध्यवर्ती वस्तुओं का मूल्य पहले से अंतिम वस्तु के मूल्य में शामिल होता है।
- सही राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने के लिए।

अंतिम वस्तुएँ एवं मध्यवर्ती वस्तुएँ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. GDP की गणना में किस वस्तु का मूल्य शामिल किया जाता है?

(अ) मध्यवर्ती वस्तुएँ (ब) अंतिम वस्तुएँ

(स) कच्चा माल (द) अर्द्धनिर्मित वस्तुएँ **(ब)**

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. मध्यवर्ती वस्तु किसे कहते हैं?

उत्तर : वह वस्तु जिसका उपयोग दूसरी वस्तु बनाने में किया जाता है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. वर्ष 2000 में प्राथमिक क्षेत्रक = ₹52,000 करोड़, द्वितीयक = ₹48,000 करोड़ और तृतीयक = ₹1,35,000 करोड़। (i) GDP ज्ञात कीजिए। (ii) तृतीयक क्षेत्रक प्राथमिक से कितना अधिक था? *(RBSE - 2025)*

उत्तर : GDP = ₹52,000 + 48,000 + ₹1,35,000

= ₹2,35,000 करोड़।

अंतर = 1,35,000 – 52,000 = ₹83,000 करोड़।

तृतीयक क्षेत्रक का योगदान प्राथमिक क्षेत्रक से ₹83,000 करोड़ अधिक था।

2. सकल घरेलू उत्पाद की गणना में मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्य को शामिल क्यों नहीं किया जाता है? *(RBSE - 2026)*

उत्तर :
- मध्यवर्ती वस्तुओं का मूल्य अंतिम वस्तु में पहले ही शामिल होता है।
- अलग से जोड़ने पर दोहरी गणना होगी।
- सही GDP ज्ञात करने के लिए केवल अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य जोड़ा जाता है।

3. आप विभिन्न क्षेत्रकों से उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य की गणना कैसे करेंगे? उचित उदाहरण सहित समझाइए। *(RBSE - 2024)*

उत्तर :
- प्रत्येक क्षेत्रक की अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का वार्षिक मौद्रिक मूल्य ज्ञात किया जाता है।
- मध्यवर्ती वस्तुओं का मूल्य अलग से नहीं जोड़ा जाता।
- तीनों क्षेत्रकों के अंतिम उत्पादन का कुल मूल्य GDP कहलाता है।

रोजगार के विभिन्न रूप एवं क्षेत्रक में रोजगार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. ग्रामीण क्षेत्रों में अतिरिक्त रोजगार किस क्षेत्र में बढ़ाया जा सकता है? *(RBSE - 2026)*

(अ) केवल कृषि (ब) लघु उद्योग एवं डेयरी
(स) केवल बैंक (द) केवल परिवहन **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. रोजगार बढ़ाने के लिए सरकार को .... निवेश बढ़ाना चाहिए।

उत्तर : सार्वजनिक

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. छिपी हुई बेरोजगारी क्या है?

उत्तर : जब आवश्यकता से अधिक लोग एक ही कार्य में लगे हों, तो उसे छिपी हुई बेरोजगारी कहते हैं।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. ऐसे चार उपायों की सूची बनाइए जिससे कृषि क्षेत्र में अतिरिक्त रोजगार का सृजन हो सके। *(RBSE - 2026)*

उत्तर :
- सिंचाई सुविधाओं का विस्तार।
- डेयरी, पशुपालन, मत्स्य पालन और बागवानी को बढ़ावा।
- खाद्य प्रसंस्करण एवं लघु उद्योगों की स्थापना।
- ग्रामीण सड़क, भंडारण और बाजार सुविधाओं का विकास।

2. खुली बेरोजगारी और प्रच्छन्न बेरोजगारी में अन्तर कीजिए। *(Model Paper - 2025 & 2023)*

उत्तर : खुली बेरोजगारी में व्यक्ति काम करने को इच्छुक और योग्य होते हुए भी कोई काम प्राप्त नहीं कर पाता।

प्रच्छन्न बेरोजगारी में आवश्यकता से अधिक लोग किसी कार्य में लगे रहते हैं और कुछ लोगों को हटाने पर भी उत्पादन में कमी नहीं आती।

Trick
खुली = काम नहीं
प्रच्छन्न = काम में जरूरत से ज्यादा लोग

3. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, 2005 की रणनीति बताइए। *(Model Paper - 2025)*

उत्तर : ग्रामीण परिवार के इच्छुक वयस्क सदस्यों को वर्ष में कम–से–कम 100 दिनों के रोजगार की कानूनी गारंटी दी जाती है; रोजगार न मिलने पर बेरोजगारी भत्ता दिया जाता है।

4. बेरोजगारी से क्या अभिप्राय है? बेरोजगारी के दो प्रकारों का उल्लेख कीजिए। *(Model Paper - 2024)*

उत्तर : जब काम करने योग्य और इच्छुक व्यक्ति को प्रचलित मजदूरी दर पर काम नहीं मिलता, तो इसे बेरोजगारी कहते हैं। इसके प्रमुख प्रकार हैं–

(1) खुली बेरोजगारी और
(2) प्रच्छन्न बेरोजगारी।

संगठित एवं असंगठित क्षेत्रक

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निम्न में से कौन–सी एक असंगठित क्षेत्रक से संबंधित गतिविधि है? *(RBSE - 2024)*

(अ) विद्यालय में शिक्षक
(ब) कारखाने में श्रमिक
(स) अस्पताल में डॉक्टर
(द) दैनिक मजदूरी वाला श्रमिक **(द)**

रिक्तस्थान –

1. सरकारी कार्यालय .... क्षेत्रक का उदाहरण है।

उत्तर : संगठित

2. दिहाड़ी मजदूर .... क्षेत्रक में कार्य करते हैं।

उत्तर : असंगठित

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. संगठित क्षेत्रक में रोजगार की अवधि कैसी होती है? *(RBSE - 2024)*

उत्तर : रोजगार नियमित और निश्चित होता है तथा सेवा–शर्तें नियमों के अनुसार होती हैं।

2. ग्रामीण क्षेत्र में असंगठित क्षेत्रक के श्रमिकों का संरक्षण कैसे हो सकता है? कोई एक उदाहरण दीजिए। *(RBSE - 2023)*

उत्तर : न्यूनतम मजदूरी, निश्चित कार्य–घंटे और सामाजिक सुरक्षा लागू करके; जैसे खेतिहर मजदूर को न्यूनतम मजदूरी दिलाना।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. असंगठित क्षेत्रक की कोई दो रोजगार गतिविधियों का उल्लेख कीजिए। *(RBSE - 2025)*

उत्तर : दिहाड़ी मजदूरी तथा फल–सब्जी बेचना/फेरी लगाना।

2. संगठित एवं असंगठित क्षेत्रक में कोई दो अन्तर लिखिए। *(RBSE - 2022)*

उत्तर : संगठित क्षेत्रक में रोजगार नियमित व सुरक्षित; असंगठित क्षेत्रक में अनियमित व असुरक्षित।
संगठित क्षेत्रक में वेतन, अवकाश, पी.एफ., पेंशन; असंगठित क्षेत्रक में सामान्यतः इनका अभाव।

3. असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की प्रमुख समस्याएँ लिखिए। *(RBSE - 2026)*

उत्तर : 1. नौकरी की सुरक्षा का अभाव।
2. कम एवं अनियमित वेतन।
3. पेंशन, पी.एफ. एवं चिकित्सा सुविधा का अभाव।
4. कार्य के निश्चित घंटे नहीं होते।

सार्वजनिक क्षेत्र एवं निजी क्षेत्र

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निजी क्षेत्र का स्वामित्व किसके पास होता है?
(अ) सरकार
(ब) निजी व्यक्ति या कंपनी
(स) पंचायत
(द) संसद **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. सार्वजनिक क्षेत्र का मुख्य उद्देश्य .... है।

उत्तर : जनकल्याण

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. निजी क्षेत्र क्या है?

उत्तर : वह क्षेत्र जिसका स्वामित्व निजी व्यक्ति या कंपनियों के पास होता है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. सरकार हमें कौन–कौन सी सार्वजनिक सुविधाएँ उपलब्ध करवाती है? कोई दो सुविधाओं का वर्णन कीजिए। *(RBSE - 2025)*

उत्तर :
- शिक्षा – सरकारी विद्यालय, महाविद्यालय, छात्रवृत्ति।
- स्वास्थ्य – सरकारी अस्पताल, टीकाकरण, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र।

2. एक देश के आर्थिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्रक की भूमिका का विश्लेषण कीजिए। *(Model Paper - 2026)*

उत्तर : सार्वजनिक क्षेत्रक आधारभूत सुविधाएँ, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, बिजली और सिंचाई जैसी आवश्यक सेवाएँ उपलब्ध कराता है। यह जनकल्याण, रोजगार सृजन, क्षेत्रीय संतुलन और देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3. सार्वजनिक क्षेत्रक तथा निजी क्षेत्रक में अन्तर कीजिए। *(Model Paper - 2024, RBSE - 2023)*

उत्तर : **सार्वजनिक क्षेत्रक** का स्वामित्व और संचालन सरकार के पास होता है तथा इसका मुख्य उद्देश्य जनकल्याण होता है; ***उदाहरण***– भारतीय रेलवे।

निजी क्षेत्रक का स्वामित्व व्यक्ति या कंपनी के पास होता है तथा इसका मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है;

उदाहरण – टाटा या रिलायंस।

Trick
सार्वजनिक ⟶ सरकार का, जनता के लिए
निजी ⟶ कंपनी का, लाभ के लिए

शिक्षा ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें

3 मुद्रा और साख

मुद्रा–विनिमय का माध्यम

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. वस्तु–विनिमय प्रणाली की प्रमुख कठिनाई क्या है? *(Model Paper - 2024)*

(अ) मुद्रा की अधिकता
(ब) आवश्यकताओं का दोहरा संयोग
(स) बैंकों की कमी
(द) ब्याज की ऊँची दर **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. वस्तु–विनिमय प्रणाली में .... का दोहरा संयोग होना आवश्यक है। *(Model Paper - 2023)*

उत्तर : आवश्यकताओं

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. मुद्रा के कार्य पर टिप्पणी लिखिए– *(Model Paper - 2024)*

उत्तर : मुद्रा विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य करती है। व्यक्ति अपनी वस्तु बेचकर मुद्रा प्राप्त करता है और उससे अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ या सेवाएँ खरीद सकता है। इस प्रकार मुद्रा आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या को समाप्त करके विनिमय को सरल बनाती है।

Trick
मुद्रा = बेचने और
खरीदने के बीच का माध्यम

मुद्रा के आधुनिक रूप – करेंसी

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारतीयों द्वारा किन धातुओं के सिक्के मुद्रा के रूप में इस्तेमाल किए जाते थे? *(RBSE - 2025)*

(अ) चाँदी (ब) सोना
(स) ताँबा (द) ये सभी **(द)**

रिक्तस्थान –

1. भारत में करेंसी नोट .... जारी करता है। *(Model Paper - 2025 & 2023, RBSE - 2025)*

उत्तर : भारतीय रिज़र्व बैंक

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. आधुनिक मुद्रा के मुख्य रूप कौन–से हैं?

उत्तर : कागज़ के नोट और सिक्के।

2. एक रुपये का नोट कौन जारी करता है?

उत्तर : भारत सरकार।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. करेंसी को विनिमय का माध्यम क्यों स्वीकार किया जाता है?

उत्तर : करेंसी को सरकार द्वारा वैध मुद्रा घोषित किया गया है। इसलिए देश के सभी लोग इसे भुगतान के रूप में स्वीकार करते हैं।

बैंकों में निक्षेप एवं माँग जमा

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. बैंक में जमा धन को क्या कहा जाता है?

(अ) ऋण (ब) निक्षेप
(स) ब्याज (द) मुद्रा **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. चेक एक .... के माध्यम से भुगतान करने का साधन है।

उत्तर : बैंक खाते

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. माँग जमा क्या है? *(Model Paper - 2025)*

उत्तर : बैंक खाते में जमा वह धन, जिसे लोग अपनी आवश्यकता के अनुसार माँग करने पर निकाल सकते हैं, माँग जमा कहलाता है।

माँग जमा पर बैंक ब्याज देते हैं और आवश्यकता पड़ने पर जमाकर्ता धन निकाल सकता है। चेक के माध्यम से भी इस जमा से भुगतान किया जा सकता है।

मिशन ज्ञान
पढ़ो जब चाहो, जहाँ चाहो, जैसे चाहो!

RECORDED VIDEOS | LIVE CLASSES | PDF NOTES | e-BOOKS | QUIZ | TEST SERIES
DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

Trick

बैंक में जमा, माँग पर पैसा;
ब्याज भी मिले, चेक से भुगतान।

2. अश्विन अपनी दादी के साथ बैंक शाखा में जाता है। नकद राशि निकालने के लिए खाली चेक पर आवश्यक विवरण भरने हैं। चेक पर की जाने वाली आवश्यक पूर्तियों का विश्लेषण कीजिए। *(RBSE - 2025)*

उत्तर : नकद राशि निकालने के लिए चेक पर निम्नलिखित विवरण भरे जाते हैं–

1- pSd tkjh djus dh rkjh[k fy[kh tkrh gSA

2- Hkqxrku çkIr djus okys O;fä dk uke fy[kk tkrk gSA Lo;a ds fy, pSd tkjh djus ij ^Lo;a* fy[kk tkrk gSA

3- Hkqxrku dh tkus okyh jkf'k vadksa esa fy[kh tkrh gSA

4- ogh jkf'k 'kCnksa esa fy[kh tkrh gSA

5- [kkrkèkkjd fuèkkZfjr LFkku ij gLrk{kj djrk gSA

pSd cSad dks [kkrkèkkjd ds [kkrs ls fy[kh xbZ jkf'k dk Hkqxrku djus dk vkns'k nsrk gSA

बैंकों की ऋण संबंधी गतिविधियाँ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. बैंकों की आय का प्रमुख स्रोत क्या है?

(अ) करेंसी जारी करना

(ब) जमा राशि रखना

(स) ऋण पर लिए और जमा पर दिए गए ब्याज का अंतर

(द) चेक जारी करना **(स)**

रिक्तस्थान –

1. बैंक जमा राशि का एक छोटा हिस्सा अपने पास .... के रूप में रखते हैं।

उत्तर : नकद

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. बैंक की आय का मुख्य स्रोत क्या है?

उत्तर : जमा और ऋण के ब्याज की दरों का अंतर।

साख की दो विभिन्न स्थितियाँ – अवसर और जोखिम

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सलीम ने ऋण का उपयोग किस उद्देश्य से किया?

(अ) घर खरीदने के लिए

(ब) उत्पादन के कार्यशील खर्च पूरे करने के लिए

(स) जमीन खरीदने के लिए

(द) बीमारी के इलाज के लिए **(ब)**

2. सलीम के मामले में ऋण ने क्या भूमिका निभाई?

(अ) नकारात्मक

(ब) सकारात्मक

(स) सकारात्मक और नकारात्मक दोनों

(द) कोई भूमिका नहीं **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. कर्ज चुकाने में असफल होने पर स्वप्ना .... में फँस गई।

उत्तर : कर्ज–जाल

2. ऋण उपयोगी होगा या नहीं, यह परिस्थिति के .... और हानि होने पर मिलने वाले सहयोग पर निर्भर करता है।

उत्तर : जोखिमों

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. फसल खराब होने पर किसान को क्या कठिनाई होती है?

उत्तर : फसल खराब होने पर किसान की आय कम हो जाती है। वह ऋण नहीं चुका पाता और उसे नया ऋण लेना या अपनी संपत्ति बेचनी पड़ सकती है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. साख ग्रामीण क्षेत्रों के छोटे किसानों के लिए अवसर भी है और जोखिम भी। किसी किसान के उदाहरण से समझाइए कि ऋण कैसे फायदेमंद तथा हानिकारक हो सकता है। *(Model Paper - 2025)*

उत्तर : ऋण उपयोगी होगा या हानिकारक, यह परिस्थितियों और जोखिमों पर निर्भर करता है।

- यदि किसान ऋण लेकर बीज, खाद, कीटनाशक, पानी और कृषि उपकरणों की व्यवस्था करता है तथा उसकी फसल अच्छी होती है, तो वह फसल बेचकर ऋण चुका सकता है। इससे उसकी आय बढ़ती है और ऋण उसके लिए लाभदायक बन जाता है।
- इसके विपरीत, यदि फसल कीटों या किसी अन्य कारण से नष्ट हो जाती है, तो किसान ऋण नहीं चुका पाता। ब्याज के कारण कर्ज बढ़ता जाता है। उसे नया ऋण लेना या अपनी जमीन का कुछ हिस्सा बेचना पड़ सकता है। इस प्रकार वह कर्ज–जाल में फँस जाता है।

Trick

1. फसल अच्छी हुई :
ऋण → बीज–खाद → अच्छी फसल → बिक्री → ऋण चुकाया → आय बढ़ी
2. फसल खराब हुई :
फसल नष्ट → ऋण नहीं चुका → ब्याज बढ़ा → नया कर्ज/जमीन बेची → कर्ज–जाल

2. अनौपचारिक ऋणदाताओं द्वारा वसूली जाने वाली अत्यधिक ब्याज दर का गरीब परिवारों पर क्या प्रभाव पड़ता है? उदाहरण सहित समझाइए। *(Model Paper - 2026)*

उत्तर : अनौपचारिक ऋणदाता प्रायः बहुत अधिक ब्याज वसूल करते हैं। इससे गरीब परिवार की आय का बड़ा हिस्सा ऋण और ब्याज चुकाने में खर्च हो जाता है तथा अपनी जरूरतों के लिए बहुत कम धन बचता है।

उदाहरण के लिए, एक गरीब मजदूर बीमारी या रोजमर्रा के खर्च के लिए भूमिस्वामी से ऊँची ब्याज दर पर ऋण लेता है। कम आय के कारण वह पुराना ऋण नहीं चुका पाता और उसे नया ऋण लेना पड़ता है। ब्याज बढ़ते रहने से कर्ज का बोझ बढ़ता जाता है और वह कर्ज–जाल में फँस जाता है।

3. एक निर्धन महिला ने गाँव के महाजन से खेती के लिए ऋण लिया। समय पर कर्ज न चुका पाने पर उसे अपनी पैतृक जमीन का कुछ हिस्सा बेचना पड़ा। इस घटना के संदर्भ में ग्रामीण क्षेत्र में साख की समस्याओं का विश्लेषण कीजिए। *(RBSE - 2025)*

उत्तर : ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों को बीज, खाद, कीटनाशक, पानी, बिजली और उपकरणों के लिए ऋण की आवश्यकता होती है। ऋण की अदायगी मुख्यतः फसल से होने वाली आय पर निर्भर रहती है।

- यदि फसल खराब हो जाए, तो किसान ऋण नहीं चुका पाता। महाजन ऊँची ब्याज दर वसूल करता है, जिससे कर्ज लगातार बढ़ता जाता है। किसान को पुराना ऋण चुकाने के लिए नया ऋण लेना पड़ सकता है। अंततः उसे अपनी जमीन या अन्य संपत्ति बेचनी पड़ती है।
- इस प्रकार ऋण किसान की आय बढ़ाने के बजाय उसकी स्थिति खराब कर देता है और वह कर्ज–जाल में फँस जाता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण की आवश्यकता

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. किसान सामान्यतः ऋण कब लेते हैं?
(अ) फसल बेचने के बाद
(ब) ऋतु के आरंभ में
(स) वर्ष के अंत में
(द) फसल कटने के बाद **(ब)**

2. ग्रामीण क्षेत्रों में कर्ज की आवश्यकता मुख्यतः किसलिए होती है? *(Model Paper - 2023)*
(अ) आवास के लिए
(ब) फसल उगाने के लिए
(स) विदेश यात्रा के लिए
(द) पारिवारिक आय के लिए **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. कृषि आगतों की खरीद और फसल की बिक्री के बीच कम–से–कम .... महीने का अंतराल होता है।

उत्तर : 3 – 4

2. ऋण की अदायगी मुख्यतः फसल से होने वाली .... पर निर्भर करती है।

उत्तर : कमाई

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. फसल खराब होने पर किसान को क्या कठिनाई हो सकती है?

उत्तर : ऋण चुकाना कठिन हो सकता है।

2. ग्रामीण क्षेत्रों में साख की मुख्य माँग किस आर्थिक गतिविधि से जुड़ी है?

उत्तर : कृषि से

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. फसल खराब होने पर किसान की ऋण स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर : फसल खराब होने पर किसान को पर्याप्त आय नहीं मिलती। इससे वह ऋण की अदायगी नहीं कर पाता। ब्याज के कारण कर्ज बढ़ सकता है और किसान को नया ऋण लेना या अपनी संपत्ति का कुछ हिस्सा बेचना पड़ सकता है।

औपचारिक और अनौपचारिक ऋण के स्रोत

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. ऋण के औपचारिक स्रोतों में शामिल नहीं है–

(अ) बैंक (ब) सहकारी समितियाँ
(स) साहूकार (द) इनमें से कोई नहीं **(स)**

रिक्तस्थान –

1. साहूकार, व्यापारी और रिश्तेदार ऋण के ....स्रोत हैं।

उत्तर : अनौपचारिक

2. औपचारिक ऋण संस्थाएँ .... के नियमों के अनुसार कार्य करती हैं।

उत्तर : भारतीय रिज़र्व बैंक।

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. औपचारिक और अनौपचारिक ऋण में क्या अंतर है?

उत्तर : औपचारिक ऋण सरकारी नियमों और संस्थाओं के माध्यम से दिया जाता है, जबकि अनौपचारिक ऋण निजी व्यक्तियों या गैर–संस्थागत स्रोतों से प्राप्त होता है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. साख से आप क्या समझते हैं? भारत में औपचारिक क्षेत्रक में साख की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

(Model Paper - 2024)

उत्तर : साख का अर्थ –

- साख या ऋण एक ऐसी सहमति है, जिसमें उधारदाता कर्जदार को धन, वस्तुएँ या सेवाएँ उपलब्ध कराता है और बदले में भविष्य में भुगतान करने का वादा लेता है।

भारत में औपचारिक क्षेत्रक की साख –

- बैंकों और सहकारी समितियों द्वारा दिए गए ऋण औपचारिक क्षेत्रक की साख में शामिल होते हैं। भारतीय रिज़र्व बैंक औपचारिक ऋण स्रोतों की कार्यप्रणाली पर नज़र रखता है।
- आरबीआई यह देखता है कि बैंक आवश्यक नकद शेष बनाए रखें और केवल बड़े व्यापारियों को ही नहीं, बल्कि छोटे किसानों, छोटे उद्योगों और छोटे कर्जदारों को भी ऋण दें। बैंकों को समय–समय पर यह जानकारी देनी पड़ती है कि वे कितना ऋण, किन लोगों को और किस ब्याज दर पर दे रहे हैं।

Trick

धन/वस्तु/सेवा अभी लो, भुगतान
भविष्य में करो।
बैंक–सहकारी ऋण दिलाएँ, RBI
नियमों से चलवाए

निर्धनों के लिए ऋण एवं बांग्लादेश का ग्रामीण बैंक

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. प्रो. मोहम्मद यूनुस के संबंध में असत्य कथन है–

(Model Paper - 2026)

(अ) बांग्लादेश में ग्रामीण बैंक के संस्थापक
(ब) 2006 में शांति के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित
(स) 2006 में अर्थशास्त्र हेतु नोबेल पुरस्कार से सम्मानित
(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं **(स)**

रिक्तस्थान –

1. ग्रामीण बैंक मुख्य रूप से .... को छोटे ऋण प्रदान करता है।

उत्तर : निर्धन महिलाओं

2. छोटे ऋण लेने वाले लोग मिलकर .... का निर्माण करते हैं।

उत्तर : स्वयं सहायता समूह

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. ग्रामीण बैंक कहाँ स्थापित किया गया?

उत्तर : बांग्लादेश में।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. ग्रामीण बैंक से प्राप्त ऋण का उपयोग किन कार्यों में किया जाता है?

उत्तर : ऋण का उपयोग पशुपालन, सिलाई, हस्तशिल्प, छोटी दुकान, खेती तथा अन्य छोटे व्यवसाय शुरू करने में किया जाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. निर्धन परिवारों को औपचारिक स्रोतों से ऋण प्राप्त करने में किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?

उत्तर : निर्धन परिवारों के पास प्रायः बैंक में जमा पूँजी, नियमित आय और गिरवी रखने योग्य पर्याप्त संपत्ति नहीं होती है। आवश्यक दस्तावेजों की कमी के कारण भी उन्हें बैंक से ऋण प्राप्त करने में कठिनाई होती है। इसलिए वे साहूकारों तथा अन्य अनौपचारिक स्रोतों से अधिक ब्याज दर पर ऋण लेने के लिए विवश हो जाते हैं। इससे उनके कर्ज के जाल में फँसने का खतरा बढ़ जाता है।

मिशन ज्ञान
पढ़ो जब चाहो, जहाँ चाहो, जैसे चाहो!

4 वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

वैश्वीकरण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. निम्न में से कौनसी विभिन्न देशों के बीच परस्पर सम्बन्ध और तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया है?

(RBSE - 2023 & 2024)

(अ) निजीकरण (ब) राष्ट्रीयकरण
(स) वैश्वीकरण (द) उदारीकरण **(स)**

रिक्तस्थान –

1. .... व्यापार विभिन्न देशों के बाजारों को जोड़ता है।

उत्तर : विदेशी

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. वैश्वीकरण का एक प्रमुख लाभ बताइए।

उत्तर : उपभोक्ताओं को अधिक वस्तुएँ और बेहतर विकल्प उपलब्ध होते हैं।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. वैश्वीकरण से आप क्या समझते हैं?

(Model Paper - 2025, RBSE - 2023)

उत्तर : विभिन्न देशों के बीच परस्पर संबंध और तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया वैश्वीकरण कहलाती है। यह अधिक विदेशी व्यापार, विदेशी निवेश, वस्तुओं, सेवाओं, प्रौद्योगिकी और निवेश के आदान–प्रदान से संभव होता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ वैश्वीकरण की प्रक्रिया में मुख्य भूमिका निभाती हैं।

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. बहुराष्ट्रीय कंपनियों का उद्देश्य नहीं है–

(Model Paper - 2026)

(अ) लाभ अर्जित करना
(ब) व्यापार को विदेशों में फैलाना
(स) अपनी वस्तुओं और सेवाओं को विदेशों में बेचना
(द) स्थानीय कंपनियों को बढ़ावा देना **(द)**

रिक्तस्थान –

1. देशों की अर्थव्यवस्थाओं के आपसी जुड़ाव को .... कहते हैं।

उत्तर : वैश्वीकरण

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत की किन्हीं दो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के नाम लिखिए।

(Model Paper - 2026)

उत्तर : टाटा मोटर्स और इन्फोसिस।

अन्य उदाहरण : रैनबैक्सी, एशियन पेंट्स, सुंदरम फास्टनर्स।

2. बहुराष्ट्रीय कम्पनी किसे कहते हैं?

(Model Paper - 2025 & RBSE - 2024)

उत्तर : वह कंपनी जो एक से अधिक देशों में उत्पादन पर नियंत्रण अथवा स्वामित्व रखती है, बहुराष्ट्रीय कंपनी कहलाती है।

विदेशी व्यापार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. विदेशी व्यापार का मुख्य प्रभाव क्या होता है?

(अ) बाजार अलग–अलग हो जाते हैं।
(ब) बाजारों का एकीकरण होता है।
(स) उत्पादन बंद हो जाता है।
(द) कीमतें हमेशा बढ़ जाती हैं। **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. दो देशों के मध्य वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार को .... कहते हैं। *(Model Paper - 2025)*

उत्तर : विदेशी व्यापार

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. विदेशी व्यापार विभिन्न देशों के बाजारों को जोड़ने या एकीकरण में सहायक होता है। इस कथन को उदाहरण की सहायता से स्पष्ट कीजिए। *(Model Paper - 2026)*

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें

DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

उत्तर : विदेशी व्यापार से एक देश की वस्तुएँ दूसरे देश के बाजारों में पहुँचती हैं। इससे उपभोक्ताओं को अधिक विकल्प मिलते हैं और उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ती है। उदाहरण के लिए, भारत में दूसरे देशों में बनी वस्तुएँ बिकती हैं और भारतीय वस्तुएँ भी विदेशों में बेची जाती हैं। इस प्रकार विदेशी व्यापार विभिन्न देशों के बाजारों को आपस में जोड़ता है।

Trick विकल्प – प्रतिस्पर्धा – आयात – निर्यात – जुड़ाव

उदारीकरण / व्यापार अवरोधक

रिक्तस्थान –

1. सरकार द्वारा अवरोधों अथवा प्रतिबंधों को हटाने की प्रक्रिया .... के नाम से जानी जाती है।

(Model Paper - 2026)

उत्तर : उदारीकरण

2. .... व्यापार अवरोधक का एक उदाहरण है।

(Model Paper - 2025)

उत्तर : आयात पर कर

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. **विदेशी व्यापार के उदारीकरण से आप क्या समझते हैं?**

(RBSE - 2024)

उत्तर : विदेशी व्यापार के उदारीकरण का अर्थ है कि सरकार द्वारा व्यापार पर लगाए गए अवरोधों या प्रतिबंधों को कम या हटा दिया जाए। इससे व्यापारी अधिक स्वतंत्रता से निर्णय ले सकते हैं कि वे क्या आयात या निर्यात करना चाहते हैं। सरकार पहले की तुलना में कम नियंत्रण करती है।

विश्व व्यापार संगठन / WTO

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. **अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से सम्बन्धित नियमों को निर्धारित करता है–** *(RBSE - 2024)*

(अ) W.T.O. (ब) U.N.O.

(स) R.B.I. (द) ये सभी **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. WTO का पूरा नाम .... है।

(Model Paper - 2026)

उत्तर : World Trade Organization / विश्व व्यापार संगठन

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. **विश्व व्यापार संगठन का कार्य क्या है?**

उत्तर : विश्व व्यापार संगठन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के नियम बनाता है और व्यापार को अधिक स्वतंत्र बनाने का प्रयास करता है।

5 उपभोक्ता अधिकार

उपभोक्ता शोषण एवं उपभोक्ता जागरूकता

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. **उपभोक्ता शोषण का मूल कारण है–** *(RBSE - 2023)*
   (अ) बेरोजगारी (ब) अशिक्षा
   (स) गरीबी (द) इनमें से कोई नहीं **(ब)**
2. **कृषि उत्पादों की गुणवत्ता का प्रमाण–चिह्न है–**
   (अ) ISI (ब) AGMARK
   (स) Hallmark (द) ISO **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. वस्तु खरीदते समय उपभोक्ता को .... अवश्य लेना चाहिए।

उत्तर : बिल

2. सोने के आभूषणों की शुद्धता .... चिह्न से प्रमाणित होती है।

उत्तर : हॉलमार्क

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. **उपभोक्ता जागरूकता क्या है?**

उत्तर : अपने अधिकारों और वस्तु की गुणवत्ता के प्रति सचेत रहना उपभोक्ता जागरूकता कहलाता है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. **वस्तु खरीदते समय उपभोक्ता को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?**

उत्तर : उपभोक्ता को वस्तु का मूल्य, मात्रा, निर्माण तिथि, समाप्ति तिथि, गुणवत्ता चिह्न, गारंटी तथा बिल या रसीद की जाँच करनी चाहिए।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम एवं कानूनी सुरक्षा

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. **उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम कब लागू हुआ?** *(Model Paper - 2025 & RBSE - 2025)*
   (अ) 1985 (ब) 1986
   (स) 1994 (द) 1999 **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. नया उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम वर्ष .... में बनाया गया।

उत्तर : 2019

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. **जिला स्तर पर उपभोक्ता शिकायतों की सुनवाई कौन करता है?**

उत्तर : जिला उपभोक्ता आयोग।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. **उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम, 1986 के निर्माण की जरूरत क्यों पड़ी?** *(Model Paper - 2024)*

उत्तर : उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम, 1986 के निर्माण की जरूरत इसलिए पड़ी क्योंकि विक्रेता अनेक अनुचित व्यावसायिक व्यवहारों में शामिल होते थे और बाजार में उपभोक्ताओं को शोषण से बचाने के लिए पर्याप्त कानूनी व्यवस्था उपलब्ध नहीं थी। उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा, शिकायतों के निवारण तथा क्षतिपूर्ति की व्यवस्था करने के लिए यह अधिनियम बनाया गया।

Trick
शोषण – अधिकार
– शिकायत – क्षतिपूर्ति

उपभोक्ताओं के अधिकार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. **निम्न में से उपभोक्ता का अधिकार नहीं है–** *(Model Paper - 2025)*
   (अ) सूचना पाने का अधिकार
   (ब) चयन का अधिकार
   (स) सुरक्षा का अधिकार
   (द) कीमत में कमी का अधिकार **(द)**

मिशन ज्ञान
पढ़ो जब चाहें, जहाँ चाहें जैसे चाहें

RECORDED VIDEOS | LIVE CLASSES | PDF NOTES | e-BOOKS | QUIZ | TEST SERIES
DOWNLOAD MISSION GYAN APP!

रिक्तस्थान –

1. अपनी पसंद की वस्तु या सेवा चुनने को .... का अधिकार कहते हैं।

उत्तर : चुनने

2. अपने अधिकारों और कानूनों की जानकारी प्राप्त करना उपभोक्ता .... का अधिकार है।

उत्तर : शिक्षा

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम, 1986 के तहत उपभोक्ता को प्रदत्त किन्हीं दो अधिकारों के नाम लिखिए। *(Model Paper - 2026)*

उत्तर : उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम, 1986 के तहत उपभोक्ता को दिए गए दो अधिकार हैं–

1. सूचना पाने का अधिकार 2. चयन का अधिकार

2. 'चयन के अधिकार का प्रयोग' आप कैसे कर सकते हैं? एक उदाहरण दीजिए। *(RBSE - 2026)*

उत्तर : उपभोक्ता को वस्तु या सेवा प्राप्त करते समय अपनी पसंद की वस्तु चुनने का अधिकार होता है।

उदाहरण : यदि दुकानदार दंतमंजन के साथ ब्रश खरीदने के लिए बाध्य करे, जबकि उपभोक्ता ब्रश नहीं खरीदना चाहता, तो यह चयन के अधिकार का उल्लंघन है। इसी प्रकार नया गैस कनेक्शन लेते समय चूल्हा खरीदने के लिए दबाव डालना भी चयन के अधिकार का उल्लंघन है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. क्षतिपूर्ति पाने का अधिकार क्या है?

उत्तर : दोषपूर्ण वस्तु, खराब सेवा या अनुचित व्यापारिक व्यवहार से हुई हानि के बदले मुआवजा, वस्तु बदलवाने या धन वापसी का अधिकार क्षतिपूर्ति पाने का अधिकार कहलाता है।

उपभोक्ता संगठन, एकजुटता एवं शिकायत निवारण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. शिकायत दर्ज कराते समय उपभोक्ता को क्या सुरक्षित रखना चाहिए?

(अ) केवल विज्ञापन (ब) बिल और रसीद

(स) खाली पैकेट (द) दुकान का नाम मात्र **(ब)**

2. उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करने वाले समूह कहलाते हैं–

(अ) व्यापारिक संगठन

(ब) उपभोक्ता संगठन

(स) उत्पादक संगठन

(द) सरकारी विभाग **(ब)**

रिक्तस्थान –

1. उपभोक्ता की शिकायत के समाधान को शिकायत .... कहते हैं।

उत्तर : निवारण

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. उपभोक्ता अपनी एकजुटता का प्रदर्शन कैसे कर सकते हैं? *(Model Paper - 2026)*

उत्तर : उपभोक्ता संगठनों और उपभोक्ता दलों के माध्यम से मिलकर अनुचित व्यापार, मिलावट, कम वजन, गलत सूचना और शोषण के विरुद्ध आवाज उठा सकते हैं। वे उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग में शिकायत दर्ज करा सकते हैं तथा जागरूकता अभियान, पोस्टर, चर्चा और सामूहिक प्रयासों द्वारा उपभोक्ता आंदोलन को मजबूत बना सकते हैं।

Trick आवाज़ – शिकायत – जागरूकता – आंदोलन

राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारत में राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस मनाया जाता है– *(Model Paper - 2026 & RBSE - 2023)*

(अ) 24 दिसम्बर (ब) 24 मार्च

(स) 24 सितंबर (द) 24 जनवरी **(अ)**

रिक्तस्थान –

1. राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस उपभोक्ता .... के विरुद्ध जागरूकता फैलाता है।

उत्तर : शोषण

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. उपभोक्ता को किन व्यापारिक व्यवहारों से सावधान रहना चाहिए?

उत्तर : अनुचित और भ्रामक व्यापारिक व्यवहारों से।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस का क्या महत्त्व है?

उत्तर : यह दिवस उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों, कानूनी सुरक्षा और शिकायत निवारण की प्रक्रिया की जानकारी देता है तथा उन्हें जागरूक और जिम्मेदार उपभोक्ता बनने के लिए प्रेरित करता है।

मिशन ज्ञान
पढ़ें आप चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!